A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 279 Subject RELIGION

Name of MSS राम चन्द्र चंद्रिका

Author इन्द्र जीत

Period ______ Folios 239

Script DEVANAGIRI Source Prithi pal singh

Missing Folios ______

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सेअवमृष्टविधेयांसदूषनहै जहाविधेयसोफुनही
होवे अर्थ अप्रधानहोवे॥ अथवाविधेयआगेहोयउ
द्देसपाछेहोय सोअवमृष्टविधेयांसहै जैसे है रूपद
जोकामसो यामेहैसब्दविधेयसोप्रथमकह्योरूप
उद्देसपाछेकह्यो रूपजोहैऐसेकह्योचाहीये फेरदूस
रोजोहोयकामसोदूजोकाम यासमासमैंदूजोविधे
यसोअप्रधानभयो कामउद्देसप्रधानभयो यातेकाम
जोहैदूजोऐसेकह्योचाहीये॥ ऐसेहीमनालउद्दे
समेवालकविधेयहै॥ सोप्रथमहैअरुअप्रधानहै॥
क्योंवालकजोहोयमनालसोवालकमनाल ईहाम
नालउद्देससोप्रधानहै॥ उत्तर॥ समासमैंविसेषन
पूरवहोतहै॥ यहनेमहै॥ सर्वसास्त्रमें जैसे नीलोत्प
लनीलनीरज ईहानीलविसेषनपूर्वहै तैसेवालक
इहविसेषनपूरवहीहोतहै जोपरेराखीयेतोसा
स्त्रविरुद्धहोय॥ यातेवालकमनालहीसकलदोषन
ही॥ पुनःप्रस्न॥ यहनेमनहीवनत॥ क्योंकामदेव
कृस्नदेवश्रीनामदेव इत्यादिकशब्दनमैंदेवयहवि
सेषनपूर्वनहीहै॥ देवकामऐसेपाठ्योचाहीये उत्तर
ईहायहनेमहै जहासामान्यअरुविसेषएकपदहोवे॥
तहाविसेषसब्दहीविसेषनहोतहै॥ जैसेसिंसपावृक्ष
ईहावृक्षपदसकलवृक्षनकोवाचकहै॥ यातेसामा
न्यहै॥ सिंसपाशब्दएकसिंसपानामवृक्षहीकोकहि
तहै॥ यातेविसेष॥ तिनदोऊनमैतेसोईविसेषनभयो
सिंसपारूपवृक्षहै॥ ऐसेहीदेवजोहैकामरूपदेव
इत्यादिमैंजानीये॥ यामैंप्रस्न॥ तोनीलो
जोहैकामरूप

त्पलयामैभीनीलपदसामान्यउतपलयहविसेष्यहै॥
तातेउतपलविसेषनहोयकेपूर्वभयोचाहीये॥उत्तर॥
ईहांभासकारकोयहनेमकीयोहै किगुनवाचकस
व्दतेभिन्नजहांविसेषसामान्यहोवै तहांविसेषविसे
ष्यनरूपहोतहै नीलोत्पलं ईहांनीलगुनवाचीहै॥
वालकमनालमैवालकभीगुनवाचीहै॥तातेवाल
कहीविसेषनहै॥सोपरवहै मनालनही पुनःप्रस्न
वालकमनाल नीलोत्पलइत्यादिकनमैजोवाल
कादिकपूर्वराषोगे॥तोछवमष्टविधेयांसहोयगो॥
जोपरेराषोगेतोसाब्दसंसकृहोवेंगे॥क्योंविसेषन
पूर्वचाहीये॥तातेप्रस्नहीरह्यो॥उत्तर॥वालकजोहो
वेमनालसोवालकमनाल॥नीलजोहोवेउतपल
सोनीलोत्पल॥ इत्यादिकनमैजोवालकअरनील
सब्दनिकोउद्देसकरकेमनालअरुउत्पलसब्दविधेय
है॥सोप्रधानहै तातेदूषननही॥प्रस्न॥तोद्वितीय
कामइत्यादिकमैभीद्वितीयउद्देसकरकेकामविधेय
भयो तोदोषनहीहोय॥उत्तर॥ईहांउद्देसकीयेतेअ
र्थनहीवनत क्योंद्वितीयजोहोवेकामसोद्वितीयका
म ईहांद्वितीयमेकामनहीवनत॥काममैद्वितीयसं
ख्यावनतीहै॥कामदूसरोहै यहअर्थवनतहै दूस
रोजोहोयकामसोदूजोकामहैयहनहीवने प्रस्न स
मकालयामैअघकपददूषनहै॥क्योंजववालक
मनालकोतोरेगो तवसमहीकालमैतोरदेवेगो॥
जोकिसीकालमैतोरेकिसीकालमैनहीतोरे तोस
मकालमैसोविसेषनकह्योचाहीये॥यहपदअधिकहै

3A

क्योंतोरनतेहींसवकालकोग्रहनहैजायगो याते जे
सेपुहपपराग पुसपकीरजसोईपरागकहावत
है फेरपुहपपदकहिनोअघकहै पुनःप्रस्न कठ
नकरालयामेअपुष्टार्थदूषनहै॥ क्योंजोभया
नकहोवेगो सोकठनहींहोवेगो फेरकठनअर्थ
कहिनोपुष्टनहीहै॥ यातेअपुस्टार्थभयो जैसेवि
ततव्योममेंदेषइंद॥ ईहांअकासतोविततहीहै
फेरविततकहिनोपुस्टनहीहै॥ दोऊप्रस्नकोउ
त्तर॥ ईहांअैसेअर्थकरनो॥ समकालकठनक्या
सविसमेविषेजेडेकठनदुस्पहै क्योंकोईकदुष
किसीकालमेनहीभीकठनहोते जैसेलघुधन
कीहानअैस्वर्यताकालविषैनहीकठन॥ अर्थ
यहजोसर्वकालमेंदुसहअौभयानकदुषहैतिन
कोतोरतहै॥ प्रस्न॥ पर्वलेकमीकरकेदुषतोअपने
समेसिरहींहोतहै विनासमेनहीहोत॥ अरुविनास
मेकेदुषकेदूरकरनेमेंवडाईनही॥ क्योंवेआपहीं
तेदूरहोवेंगे॥ यातेअकालयहविसेषननहीवन
त॥ औरुप्रस्न॥ दीहयहविसेषनभीनहीवनत
क्योंजवसमापायकेदुषदीरघभये॥ तवतिनकेदू
रकरनेमैंगयोराजकोकरावडाईवलभयो वे
तोभोगकेआपहीदूरहोजाहिंगे॥ दीरघताते॥
दोऊप्रस्नकोउत्तर॥ अैसेअर्थकीजै॥ अकाल
क्याजिनकोकदीनासनही॥ व्यंगकिसदावल
वानहै॥ औदीहक्यावडेहैसवदुषनमेसरदार
है॥ व्यंगकिजोकिसीतेभीनहीहटते॥ तिनको

गणेशजू नासकरत है ॥ यामै कवीस्वरकी वेनतीव्यं
गभई ॥ कितुमसमर्थ्य हो ॥ मेरे सवदुष दूरकरो ॥ प्र
स्न ॥ दुषको कहालछन है ॥ उत्तर ॥ जो जीवनको
प्रतिकूलहोय ॥ अधर्मते उपज्योहुयो सो कहीये दु
ष ॥ प्रस्न ॥ दुष तो गुन है ॥ इनविषैरूपादिक तो है
हीनही ॥ ताते अमूर्तमान है ॥ तिनको तोरना कैसे
वने ॥ तोरना तो मूर्तवाले पदार्थको वनेगो ॥ ताते
इहा नेयार्थ दूषन भयो ॥ क्यो दुषमूर्तवान ठहरा
इये तो तिनको तोरना वने ॥ फेर दुषको नासकरत
है यह लछन अर्थ विनाकू प्रयोजनके भयो ॥ लछ
नाविनाषेचके अर्थ होत है ॥ उत्तर ॥ इहा असे अर्थ
करनो ॥ वालूकसूनालको जैसे कोई तोरके डारे क
हा गेरदेवे ॥ तैसे गणेशजी दीरघदुषनको तोर
के क्या निरवलकरके डारदेत है जिसते फेर नहीं
उठै ॥ प्रस्न ॥ कमलके पत्रसमविपदाके हठको ह
रत है ॥ असे कहिनो थो ॥ कमलनीके पत्रकी उ प
मा देनको कहा प्रयोजन है ॥ उत्तर ॥ इस्त्रीको नाम
अवला है ॥ याते इस्त्रीवाचकशब्द दीयो ॥ यामे
यह जितायो कि कमलते भी निर्वल जो कमलनी
को पत्र है ॥ ताके सम ॥ अथवा विपदाके हठको प
दम क्या कमलके पत्रसमनी के हरत है ॥ क्या भली
प्रकारसों दूरकरत है ॥ कछु कवल भी ताको न
हीचलने देते ॥ व्यंगजव विपदा आवत है तवही
निर्वलकरके दूरकरदेते है ॥ जो कोई पदमनी
को कुमदनीको अर्थ करे ॥ तो सो नहीं वने ॥ क्यो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कीरदकोपेलकेदवावतहै॥तैसेहीगरोराज
अपनीलीलाहीसे ५६५

5A

ताकोस्वेतरंगहै॥विपदाकोस्यामरंगहै॥तातेईहां
स्यामकमलहीकीउपमाहै॥प्रस्न॥पापनिकोप
तालमैपेलकेभेजतहै॥यामेजोरसोपापदवाये
जानेजातहै॥तोपापकितनीकवस्तहै॥जिनपेजोर
लगायो॥उत्तर॥ईहाहाथीकेसमानगरीबराजको
स्वभाववर्नतहै॥हाथीजैसेस्वभावहीसोंविना
श्रमकेपतालकोधसायदेतहै॥जोमनहीलगा
वत॥प्रस्न॥कलंकओरंकताइनकोदूरकरकेचं
द्रमाअरुदासकोसमरावतहै॥इतनोहीकहिना
था॥वपुषशब्दकाहेकोअधककह्यो॥याकोकहाप्र
योजनहै॥उत्तर॥वपुषशब्दकेकहिनतेयहव्यंग
भयो॥किविधातानेउसपुरसकेसरीरमैलिषीजो
हैदरिद्रकीरेषाताकोदूरकरकेभागकीरेषावना
यकरकेससिपेराषतहै॥अथींकिवहुतआदरसें
राषतहै॥रंकभावकेदूरकरवेमैमहादानीजा
गये॥ईहादीहदुष विपदापाप रंकतारूपकल
ककष्टकीयांसंगुलीयो॥ त्रासविविघनरूपहैग्रंथ
केवनावनमै॥इनकेनासकर्त्तासामर्थश्रीगरीबरा
जकहे॥तातेइनसभनकोतुमनासकरो॥यहप्रा
र्थनाव्यंगभयो॥प्रस्न॥ईहारामचंद्रजीकोमंगला
चनक्योंनकीयो॥क्योंश्रीरामचंद्रजीउचतहै स्रोइ
ष्टदेवताहै कैसेश्रीरामचरित्रवनावनोहै यातेउ
चतदेवताहै स्रोवालमीकजीकेउपदेसतेइष्टदे
वताभीहैं॥तिनहीकोमंगलआदिमैजोअपहुतो॥
सोक्योंनकीयो॥उत्तर॥रामनामकेप्रतापतेश्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा
सटी
५

गणेशजूको आदि मै पूजन भयो है और श्री रघुनाथजू की
आग्या है कि जो मंगल कारज निरविघन पूरन कीया चा
है सो प्रथम गनेशजूको पूजे॥ यह अपने स्वामी की आ
ग्या मान के आदि विधेगणेशजू माने है॥ अथ वा कोई
कवूसक वित्त को अरथ श्री रामचंद्रजू पछ करत है यथा
वालमीक आदिनालन ज्यो नोरद्दारै असेयदकीजे कनाम
अपने कारथ ध्वन मंजरी मै पवन आतमा सुषरन को है॥
वालक या वाली नामा वानर कै जो हैं कक्याप्रान रूप पव
न अथवा सुषमों अरुन जो है व्रीछ कौन सेस पतनाल हो
जिनोने मिनाल की न्याई मोरडारे है अथवा वाली को जो
है कक्या आत्मा सरीर तां के नास वासके सपतनाल जिनोने
मारके डारे है क्या गेरडारा है ननाम व्रिछ को है फरके से है जे डे
राछस कठन क्या कठोर है जे किसी को भी नही मानते अरु जे
डेकराल क्या भ्यानक है जे डे काल है क्या जिनको काल
नही अथवा कनाम सुष को जो जो है विमुष सो कहिए अक
सा कौन दुषना को आलक्या जे डे यर है अरथ कि दुष रूप हैं
अरु जे डे दीह क्या वडे है कोनाम प्रथवी को अरु जडे को क्या
प्रथिवी को दुष रूप है अरथ कि जिनके भार सें प्रथवी दुषी
होत है समकाल क्या तिन संपूरन राछसन को काल क्या ना
स रूप है अरथ की सरवको नास करत है पद मनी जो है श्री
सीताजू तिनके विपतन के हठ को जे डेह यन क्या नास कर
त है पात क्या सरव की रछा करत है अथवा पद जो भगत ति
नकी विपदा है क्या असंख्यात जो भगतन की विपदा है ति
नको नीके क्या भली प्रकार सो हर कर के नास करत है अर
थ कि जो भगतजन नही भी हटाया चाहत तो भी हठ से ह

5A

दावतिहै समपंकज्यो पताल पेलपठवैं कलुषको॥ पं
कके समान जो है ज्यौ का जीवा॥ मलीन पापी जीव तिनके
पापको पेलकरके पताल मै भेजत है अरथ कि नास करत
है प्रथम पेल सबदको अरथ नहीं वनत रामचंद्र जू पछ
उत्तर॥ ऐसे अरथ कीजे पा ई ल प जो है रछा करनहारो
पुरस श्री विस्नु इ जो है लछमी ए दो ऊ जिनको लकानम
स्कार करत है फेर कैसे है दूर कै कलंक भव सीस ससम
राषत है कैसा ऐसे पदकी रक भव कया के गाल रूप है के आ
यो जो है व भीषन रावनको निकास्यो हुयो ताको दूर कहा
दूर रहीते देष देई लंका के कया सुषको कै कयाकर के सीस पै है
चंद्रमा जिनके ऐसे जो है सिव जू तिनके समान राषत है अर
थ कि आवते ई लंका वकसकरके सिव जू के समान भगतक
रके राषे केसव जो भगवान है श्री रघुनाथ जू जिनोने कौंन श्री
रघुनाथ जू कैसे है दास दासके वपुषको भगतके सरीर को सदा
रछा करन मै आपदास रूप है कौंन आप आगे है के रावनके
आमो ग्रवर छीने रछा करी है विभीषनकी फेर कैसे है गजमु
षमुषको सनमुष होत नहीं दसमुष मुष सांकरे की सांकरन
जो वे इहां ऐसे अन्वै कीजे गज हाथी सम है कारे मुष जिनके
अथ हाथी से ही है मुष जिनके ऐसे जो राछस तिन मै जे है
मुषकासे छम महावीर कुंभकरन आदिक तिनके सनमुष
हूदे ई दसमुष रावनके जे है मुष सो विपदाको देषत है अर
कि जब कुंभकरन आदिक श्री रघुनाथ जू के सनमुष भए॥
नव ही तिनको नास भयो रावनने दैथ्यान व अपनो मीमर
नो विचारकै रावनके मुष विपनन के सामुने भए है कि मोको
भी अब मारैगे॥ यामै कविने कथा सूचन करी॥ कि जैसे राव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नके मारनको भगवान प्रगटे है सो कथा मै कहोंगो ॥
प्रस्न॥ मंगल करनेको कहा फल है॥ उत्तर॥ ग्रंथ के
आदि अरु मध्य अरु अंत मै विघना के दूर होने वास
ते॥ मंगलाचरन करना जोग्य है॥ प्रस्न॥ श्रीगणेशा
यनमः॥ इतने लिषने मै ही मंगल हूया॥ तो फेर
छंद कों कीयो॥ उत्तर॥ ईहां सहजही को मंगल है॥
समस्तु मकार जो मै जोग्य है॥ आपने इष्टदेवता जारो
जाते॥ याते छंद करके मंगल कीयो॥ प्रस्न॥ तो ग्रं
थ मै लिषने को क्या प्रयोजन है॥ मन मै ही करते॥ उ
त्तर॥ जो आचार ज ग्रंथ मै ना लिषते तो मंगल के न
मस्कार अरु उस्तत अरु आसीर्वाद एह रूप मालू
म ना होते॥ प्रस्न॥ एह तो होर न ग्रंथा मै ते ही जाए
जाते॥ तुमने ग्रंथ मै क्यों कीयो॥ उत्तर॥ हमने अ
पने सिष्या के सिष्या देने वासते कीया है॥ कि हमारे
ग्रंथ मै मंगल को देष के और भी करन॥ प्रस्न॥ सि
ष्य नाम कौनका है तिसनै ग्रंथ की क्या सामर्थ है॥
उत्तर॥ सिष्य नाम तिसका है जिसने मेरा ग्रंथ प
ढ़ा है॥ अरु फेर कुछ बना उनकी इछा करता होवे
प्रस्न॥ मंगला विस्तन कहिते है॥ उत्तर॥ लल्लत पद
छंद॥ भिन्न विघन अरु विघन ध्वंस हि तवं घ क आभा
वते होय॥ हेतु असाधारन प्रारिप अस्त विघन ध्वं
स को मंगल सोय॥ प्रस्न॥ जो विघन ध्वंस का कार
न सो मंगल एतना ही कहो॥ उत्तर॥ ऐसे कालादि
क भी है॥ प्रस्न॥ तिसते विघन ध्वंस का जो मुख्य का
रन सो मंगल कहो॥ उत्तर॥ ऐसे जग्यादिक भी है॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

6A
तिनातेभीविघनपापनासहोतेहै॥प्रस्न॥तोवांछतवि
घनध्वंसकोमुख्यकारनकहोतहा तोवांछतस्वर्गादिक
है॥उत्तर॥वांछतविघनध्वंसकेमुख्यकारनतांविघन
भीहै॥क्योंजोप्रथमविघनहोंयगे॥तोपाछेध्वंसहो
यगे॥प्रस्न॥तोविघनातेभिन्न अरुवांछतविघन
ध्वंसकोमुख्यकारनसोमंगलकहो॥उत्तर॥विघन
भिन्नअरुवांछतविघनध्वंसकोकारनतोविघनध्वंस
केप्रतवंधकविघनाकाजोहैअभाव कोनस्वतःसिद्ध
विघनध्वंससोभीहै तातेयहलछनभयो जोविघना
तेभिन्नहोय औविघनध्वंसप्रतवंधकवेअभावतेभिन्न
होय वांछतविघनध्वंसकोमुख्यकारणहोयसोमंग
ल॥प्रस्न॥अनुमानप्रमानहै॥मंगलनिसफलहै॥
फलविसेषतेरहितहोनते॥सोनिसफलजैसेजलता
डनादिकहै॥उत्तर॥मंगलकाफलतांविघननासअ
थवासमाप्ति॥हसभकेमतमैप्रसिद्धहै॥प्रस्न लल
तछंद॥ननुमंगलनहिविघनध्वंसप्रतिवासमा
प्तिप्रतनहकारनकहु॥मंगलविनहूनास्तकादि
केलखनिरविघनसमाप्तिग्रंथवहु॥ वारता॥
नातांमंगलविघनध्वंसकेप्रतिकारणहै नासमा
पतकेप्रतिहै॥क्योंमंगलकरतेविनाभीनास्तक
जोहैईस्वरकेनामनलेनेवारेतिनाकेविघनातेर
हितग्रंथसमाप्तहूयेदेखीतेहै॥उत्तर॥तिनाने
औरजनममेकरयाहै॥प्रस्न॥तुमकहोगेजनमां
तरमंगलकेकरनेतेग्रंथकीसमापतिहूई॥अरु
हमकहेंगेनास्तकांकेसरीरविषेविघननासहूयेते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

7 समाप्तिहुई तोसंदेहहीरह्यो उत्तर॥जिसतरांअग्निकेसं
देहहूयेतेपरवतविषेधूंयेकोदेषकेअनुमानकरीताहै॥
तिसीतरांअनुमानहै॥किमंगलसमाप्तिफलवालाहै॥
समाप्तितेऔरफलनही॥अरुसाहितफलकेहै इसते॥
क्योंजहांजहांसमाप्तितेहोरफलनहीअरुसफलता
है तहांतहांसमाप्तिहीफलहै प्रस्न विघनाकेभोग
लैनेकरकेजोनासकोंकेसरीरविषेविघनकानास
हूयाहै सोईसमाप्तिफलवालाहोवे॥क्योंसमाप्तितेहो
रफलनहीतिसका॥अरुसफलहै उत्तर॥उक्तोरछंद
संकानयहचितधार॥अवगीतसिष्टाचार॥विघय
त्वकरगुरणवद्ध॥मंगलसफलतासिद्ध॥ पादाकुल
कछंद॥तत्रवहुरफलकीजगपासा॥भयेवुधनयहम
रमप्रकासा॥संभवजहांइष्टफलआही॥तहांअदि
ष्टकलपनानाही॥ सोरठा॥ यहअनुचितचितजा
नअपरउपस्थिततेस्रुमति॥फलसमाप्तिहींआनक
विकोविदकलपितसकल॥ वारता॥हेगुरणविघ्न
ऋद्दसंकानचित्तविषेनाधारनकरो क्योंअवगी
तक्याजेनहीहैनिंदत ऐसेसेष्टपुरसांकेयतनकावि
सैहोरणेकरकेमंगलनहीसफलतासिद्धहै॥जैसेआ
नंदतश्रेष्टपुरषांकेयतनकाविसैहोरणेकरयगपा
दिकसफलहै॥ऐसेहीमंगलहै प्रस्न इतनावधाके
कासतेकह्या॥थोडाहीकहो॥उत्तर॥जोविसैहै सो
ईसफलहै॥जोइतनाकहीये तांगपानकाविसैस्रुय
है॥क्योंगपानतेपरमआनंदहोताहै॥सोसफलहूया
चाहीये॥सोहैनही॥क्योंतिसतेपरेफेरहोरकोई

7A फलनहीहोता तिसतेअचारपददीया॥ क्योंकिअ
चारकाविसेनहीग्यानकाहीहै॥ अचारकाविसैहैसो
सफलहै प्रस्न आचारनामक्रीयाकाहै क्रीयाकावि
सैफलहोताहै फलतेआगेफलहोतानही उत्तर ई
हांआचारनामप्रयतनकाहै प्रयतनकाविसैसफ
लहोताहीहै इसतेप्रयतनकाविसैमंगलसोसफ
लहोय॥ नास्तककीकिसीविसेषक्रीयाकानामचैत
चेदनहै॥ सोभीप्रयतनकाविसैहै परश्रेष्टांकेआ
चारकाविसैनही इसतेश्रेष्टकहा॥ प्रस्न॥ वेदकेप्र
मानकूजोग्रहनकरेतिसकानामश्रेष्ट है तोविपरी
तक्रमसेकीयाजोजगपसोताकोविसैहै सफलहूया
चाहीये॥ उत्तर॥ फलकेसाधनअंसमैजोभ्रमतेर
हितहोयतिसकानामश्रेष्ट है॥ सोफलकासाधनअं
सजोजगपकनाउरगतामैभ्रमरहितहैनही फेरश्रे
ष्ट पुरषांकेप्रयतनकाविसैमारगआदिकवेनमि
तकीयाजोजगपसोभीहै परअवगीतनही क्योंव
लवानजोहैअनिष्टक्यामेदकरमतिनाकाजोना
संवंधीहोवे सोकहीयेअवगीत सोऐसानही इ
सतेअवगीतपदकस्या॥ प्रस्न जैसेमंगलकोग्रंथ
समाप्तिफलदेखनेमैआवतहै ऐसेईगंगासनाना
दिकाकाभीहोवे उत्तर॥ तहामंगलकोसफलतासिं
द्धहूयेते जहादृष्टफलवनताहोवेतहाअदृष्टकी
कलपनानहीहोती॥ मंगलकोदृष्टहीफलसंभ
वहै अरुगंगास्नानादिकाकाअदृष्टहीहै॥ प्रस्न॥
जगपकाअदृष्टफलहै परविघ्नकेजीतनेवासतेजो

कारयाहैताकोदेखतेईफलहोताहै॥ तैसेहींमंगलका
इष्टफलहैतिसकाभीअद्रिष्टजोस्वरगप्राप्तिरूपसो।
होवे॥उत्तर॥मंगलकेप्रसिद्धसमाप्तिरूपीफलदेखी
तेहूये जोओरफलकीकलपनाहैसोअजोगहै आ
रंभजोकरयाहैमैनेकर्मसोनिरविघनसमाप्तिहोवे
इसकामनानकरकेग्रंथप्रारंभमैमंगलकासमाप्ति
हीफलउपस्थितहै॥ मधुभारछंद॥मंगलसजान॥
लखियतजहान॥जनमांतरीय॥तहाकलपनीय॥
वारता॥हेसुजानजहांमंगलनहीदेखीताहै तहां
जनमांतरीयक्याकिसीहोरजनमकेविषेकीयाहू
याकलपनाकरीताहै॥प्रस्न॥जहांकादंवरीआ
दिकमेंग्रंथोमैमंगलकीयाआगे अरुसमाप्तिन
हीहूयेतहाकैसे उत्तर॥दोहा॥जिहमंगलहूकैरे २
नहीसमापतिसोध॥तहाविघनवलवानवाविपुल
विघनवुधवोध॥ वारता॥जहामंगलकीयेसमा
पतिनहीतहाविघनवलवानहै अपवावहुतेहै॥
प्रस्न॥तहाविघननासकासतेनहीहूये॥उत्तर॥पा
दाकुलकछंद॥ जानप्रचुरमंगलहीकारन॥ अ
तवलवंतप्रत्यूहनिवारन॥ वार्ता॥अत्यंतवलवा
नजोहैप्रत्यूहक्याविघनतिनाकेनिवारनेनूवडेईमं
गलनूकरनताहै प्रस्न तहाविघनाकेवरोवर
कामंगलनहीकीया तोअधकमंगलकेकरनेतेथो
डेविघनकानासनाहूयाचाहीये॥ उत्तर॥इसीतेदो
हामैकयाहै।किविघनवलवानअपवावहुतहै
तिसतेवरोवरकेकानेमनही॥वडामंगलहीकार

8A नहै पुनः प्रश्न काहूंबरीआदिकग्रंथोमे विघ्ननासन
होहुए तौनाहोवे मंगलरूपकारनने समापतीरू
पकारजहुयाचाहीये उत्तर चौपई विघ्नध्वंस
मंगलकोद्वार बरनत बहु प्राचीन विचार वारता
विघ्ननासजोहै सो मंगलकाद्वारहै ताविनास
मापतीनहीहोती एहप्राचीननयायाकोकामतहै
तहा विघ्ननासनहीभयो चरण दोहा मंगलको
फलविघ्नध्वंसहीयहनवीनमतमान मतप्रतमा
दिहेतुगनते पुनकहनसमापनजान वारता नवी
नाकेमतविषैमंगलकाफलविघ्नध्वंसहीहै प्रश्न
तौसमापतिआपहीतेहोयजावे उत्तर विघ्ननास
हुएतेबुधअरु विसेषसफुरनउत्पादिककारनके
समहूंतेसमापतिहोतिहै जैसेवरषाकेनमितजो
करीताहैकारीरीजगतिसकाफलतौवरषाकेअ
भावकादूरकरनाहीहै अरुवरषामैहोतेहीहोवे
गी ऐसेहीमंगलकोफलतौविघ्ननासहीहै अ
रसमापतितौबुधिआदिकोतेईहोवेगी प्रश्न दोहा॥
आपहीतेजिनजननकेलषियतविघ्नवियोग जिन
केमंगलकरनमैनिसफलतासंजोग वारता जिनाके
ते आपहीं विघ्नाकावियोगहै तिनाकेमंगलकीएको
निसफलताहोवे उत्तर॥ सोरठा॥ यामैइसटहमारसिध
होतनहयन्निकहो विघ्नसंकउरधारकीयोकियोमंग
लवरन वारता इसमैजोहमाराहीइष्टसिधहोतहोतहै
उहमतकहो क्योविघनहैवैतोमंगलतिनाकानास
करे प्रश्न॥ तौनिसफलमैकबीस्वरकाप्रवृतहोना
कैसेबने उत्तर तिनानेविघ्नाकीसंकाधारकैमंगलकी
याहै प्रश्न जोविघनोमैहीसंदेहरह्या किहै अथवा न

राम चं सली ६

ह्रीहै जोमंगलकरयाहीनहीचाहिए क्यों जिसवासतेक
रनाउसीमेसंदेह उत्तर जैसेस्रेष्ठपुरषोनेमंगलकि
याहै ऐसेहीसमझनाकोजोग्यहै ललितपदछंद ॥ स
दाचारुअनुमिततनवोधिकवेदनरहतप्रमान मंगल
कोनिसफलताआए यहसंकानवषांन वारता प्रथ्म
तवतिसमंगलकेनिसफलहुएतेस्रेष्ठपुरषोकेआचार
केअनुमानतेमंगलकीकारनताकेजनाउनेवालाजो
हैवेदतिसकीप्रमानतानहीरहेगी सोवेदकैसेजनाव
तोहै यथादोहा ॥ वेदप्रवोधतिमंगलहिकरतव्यताप्र
मान ॥ सिष्ट अनिंदतअलौकिकआचरण विषैसुजा
न ॥ वारता ॥ मंगलवेदबोधतकरतवनावाराहै अनिंद
तअरुअलौकिकस्रेष्ठपुरसोकेआचारकेविषैहोनक
रके जैसेजग्यआदिकतैसैहीमंगलहै स्रेष्ठपुरषोकेआ
चारको विषैभोजनभीहै परलौकिकहै यातेअलौकि
ककह्यो रातकोकिसीनेश्राध्यकिया सोस्रेष्ठपुरषोके
आचारकोविसतोहै परनिंदतहै यातेअनिंदतकह्यो ॥
आचारकोविषैजलताडनआदिकनिसफलकरमभी
है ॥ परवहस्रेष्ठोकेआचारविषैनही यातेस्रेष्टकह्यो ॥
उत्तरदोहा ॥ विघनभयेतिहहनिफलही निगमबोधतजा
न ॥ यातेहोततनिगमकोअप्रमानतामान वारता विघ
नाकेहूएतेईतिनाकेनासकोवेदजनाउताहै किमंगल
करनाइसतेवेदकोअप्रमानतानहीहोती पादाकुलक
छंद ॥ काहूनरऐसेअघभ्रमकर प्रायसचितकियोचि
तमैडर ॥ निसफलहूंतऊ तिहवैधक श्रुति ॥ होतप्रमानन
अप्रमानजुत वारता ॥ जैसेकिसीकनेपापकेभ्रमसेप्रा
श्चितकिया ॥ सोनिसफलभीहै ॥ परतिसकेजनाउनेवाला
जोहैवेदसोप्रमानहै ॥ अप्रमाननही ऐसेहीमंगलकेज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाऊणवालाचेद भी प्रमानहै॥ सोरठा॥ मंगलहैनवसे
षविघ्नध्वंसकेकहतवुध वहुरसुमततचित्तलेषविमुषस
वारना^ नवपाठादिसुभ॥ विघ्ननाकेनासका विसेषनाकरकेनां
मंगलकारनहै फेरहेवुयकानोगणेशजीके असेतात्रपा
ठादिककारनहै कोइक विघ्नके अत्यंताभावकोसमा
पतकासाधनकहतेहै॥ क्योसमापतिकेरोकनवालाजो
है विघ्नकाअभावहीसमापतीकोकरताहै तिसतेक्या
हुयाकिनास्तकांकेग्रंथ विषेतांहेरजनमनके मंगलकरे
हूए विघ्ननासहूएहे॥ अथवाअप्यतेही अत्यंतअभाव
सी तिसतेसमापतीहोईू॥ प्रश्न॥ नास्तकप्रश्नकरेहै॥
तुमारेईस्वरकोमंगलाचरनहीअजोगहै क्योईस्वरमै
प्रमाणहोयतोवनै॥ उत्तर॥ चारप्रमाणमैकोऊहोय
गो॥ प्रश्न॥ तहांप्रतक्षप्रमाणनहीक्योसोअरूपहै॥ फेर
प्रतक्षविनाअनुमाननहीहोत॥ धूमादिकांकोप्रथमप्रत
क्षहोयतौपरवतमैअगनकोअनुमानहोतहै असेहीअनु
मान विनाउपमान तिसविनासवदनहीकोईप्रमानभी
नही उत्तर॥ मानसप्रतक्षहोयमनकेसंजोगकरकेईस्व
रकोप्रतक्षकरेगो॥ प्रश्न॥ केवलमनसंजोगकारननही
कोअौरकेअतनमाकाअौरकेमनकरकेप्रतक्षहूया॥ चा
हिए नवहांमनसंजोगतोहैही इसतेअौरमैनारहिनवा
जोमनसंजोगहैसोईकारनहै क्योअपनेमनकेसंजोगक
करकेहीमैसुषीदुषीएहआतमाकामानसप्रतक्षहोत
है सोईस्वरमैपरजोमानुषताकेमनसंजोगसोंप्रतक्षन
हीहोत॥ उत्तर॥ वेदप्रमानहोय॥ प्रश्न॥ सोनहीहोततना
कोईस्वरकेमुषकेउचारणसेहीप्रमाणताहै॥ ईस्वरकेसं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देहतेवेदप्रमानमैभीसंदेहभयो उत्तर॥ प्रथवी
अंकुरादिक।हकरतासहितहै॥ कारनताते॥ जैसे
घटआदिकारजकरताजन्यहै तैसेहीप्रथवीअं
कुरादिकहै तिनकोकरताईश्वरसिद्धहोतहै प्र
स्न॥ संदेहवारोसाध्यजामैरहेसोपक्षहै जैसेप
रवतअगनसाध्यकेसंदेहवारोहै सोपक्षहै सो
ईहांजोसरवपक्षमानोतोवहुतपक्षनहीहोतजो
प्रथवीहीकहोतोअंकुरादिकप्रथवीहीहै तिन।
कोकथनव्यर्थहोय॥ इसतेपक्षकौनहै उत्तर
प्रथवीपक्षअंकुरादिकथनसामान्यविसेषन्या
यसोंहै जैसेकाहूनेकह्योवेलल्याव॥ अरुकह्यो
वडूवेलल्याउ तोवेलकहिनमैसवहीआवते
है॥ परसामान्यविसेषतासोंकथनहै तैसेईहां
प्रस्न जोएकआधारकरकेप्रथवीकोपक्षकहो
जहाप्रथवीहै तहाकरताजन्यताहै तो घटादिको
मैभीकरताजन्यतासिद्धहोयगी सोआगेहीप्रत
क्षसिद्धहै तहासिद्धसाधनदूषनभयो अरुजोप्र
थवीमात्रकोपक्षग्रहनकरोगे॥ तौप्रमाणुओंमै
भीकरताजन्यताहोयगी॥ सोतोतहाहैनही क्यों
प्रमाणुनैयायकोंकेमतमैनित्यहै अजन्यहै तोप
क्षकैसेवने॥ उत्तर॥ हमजन्यप्रथवीग्रहनक
रेंगे परमाणूयोंकीजन्यनही जन्यप्रथवीकर
ताजन्यहै कारनताते प्रस्न औरनकेमतमैअजन्य
प्रथवीहीकोऊनही॥ सवैजन्यहै तौजन्यकहि
नोनहीवनत उत्तर औरतरह अनुमानकरेंगे॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

10A

जन्यजोहैसोकरताजन्यहैकारजरूपहोनते॥प्रस्न॥यह
भीनहीबनत॥क्योंप्रथ्वीसबकहिनोव्यर्थभयोजो
तुमकहोंहोयजावे तोऔरदूखनहै पक्षअरुहेतऐ
कहीहोयजावेगे जन्यपक्षहै कारजहेतहै सोजन्य
कारजकापर्यायसबहीहै॥उत्तर॥ऐसेअनुमानकर
नो अपनेरूपकाजोहैसंबंधविसेषरूपकारज सोकर
ताजन्यहै प्रथमअभावकेजतावनेवाराकारजहो
नते जैसेघटादिकयामेभिन्नतामई प्रस्नकरताज
न्यऐहसाध्यक्योंकहितेहो क्योंप्रथ्यकारजकेउपा
दानकारनकाग्यानहोय किद्वैकपालनकेसंयोग
तेघटहोतहै फेरइछाहोवेक्यामैकरो फेरबना
वनमेजतनकरे तोइनतीनोतेकारजजन्यहोतहै
यातेतीनोतेजसकोसाध्यकहो॥उत्तर॥कारजके
उपादानकारनकाग्यानअरुइछा इनतेतोयतन
होतहैआगेयतनहोयतोकारजहोय नाहोवेतो
नाहोवे॥साइसनेमतेफेरकारजमेजतनहीका
रनहोतहै जोऐसेहीमानोगेतोएकपक्षअरुद्रष्टां
तइनमैसाध्यऐकसोनहीबनेगो क्योंक्षणकजोप
क्षतिसविषेतोकारजद्वयणुकतेउपादानकारणप
रमाणूहैसंजोगकोग्यानअरुइछातेजतनतेजन्य
साध्यहै अरुद्रष्टांतजोघटादिकतिनमेकारज
घटकेउपादानकारनकौनकपालहैसंजोगकोग्या
न अरुइछाअरुजतनतेजन्यसाध्यहै चाहीयेतो
हैऐकसो क्योंजैसेपर्वतअग्नवानहैधूमवालाहो
नते रसोईकेअस्थानकीतरां ईहांपरवतपक्षर म

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सोईकोमकानदृष्टांत।तिनमैअग्निसाध्यपरोकसोहै तैसेतहां
नही फेरजतनकीअपेक्षाकरकेतीनोतेजन्यकहिनमै
गौरवदूषनहै इसतेकृतजन्यहीसाध्यभयो कृतनाम
जतनकाहै प्रस्न जेकारजहैतेजतनजन्यहै सोपक्ष व
अद्रिष्टकर्मीकरकेहमारेजतनसोंआगेहीजन्यहै तो
सिधसाधनदूषनहोयगो॥उतर॥जैसेदोकपालां
करकेमैघटकरताहों तोदोकपालविसेषनहै ज
तनविसेष्यहै॥अैसेविसेष्यरूपजतनसोंकारजनही
होते क्योंषवरनहीपूर्वलेकिसकरकेकोनसेकारज
होतेहै॥प्रस्न॥जैसेकाजैमात्रमैजतनकोनेमसोकार
नताहै तैसेहींग्यानअरुइछाकोभीहोवे॥उत्तर॥तो
ग्यानजन्यहै यांइछाजन्यहै यांजतनजन्यसाध्यहै
अैसेसंदेहहोवेगा॥प्रस्न॥करताजन्यहीसाध्यकहो
उत्तर॥कारजमात्रकेप्रतकरताकोजनकहोनमैप्र
माननही लाघवतेयतनहीकोहै॥कारजजोहैसो
विसेष्यसंबंधसोंमिल्याहूयाजोजतनताकीकारन
ताकेजतावनबारोहै प्रथमअभावकेप्रतियोगी
क्याजतावनवारेहोनेते अैसेअनुमानभयो प्रस्न॥
ध्वंसभीकारजहै परतिसविषेविसेषसंबंधबारा
जोजतनतिसकीसमवायसंबंधसोंजोकारनताता
केजतावनबारासाध्यसोनहीं॥क्योंजैसेकपाल
दोकेसंजोगतेसमवायक्यानित्यसंबंधसोंघटहोत
है॥ तैसेध्वंसनित्यसंबंधसोंनहीहोत॥उत्तर अ
नुमानमैसत्तपदऔरदेना॥किसत्तजोहैकारज॥
सो ध्वंससत्तनहीअभावहै॥प्रस्न॥प्रथमअभाव

11A

काप्रतियोगीतांध्वंसरूपकारजहै परतैसेसाध्यवा
नानहीतोव्यभचारआया॥उत्तर॥हेतमैभीसत्तपद
देगा किसत्यवारा जोप्रपमअभावकाप्रतियो
गीहै॥ अरुऔरभीउत्तरहैजोध्वंसकोप्रयतन
जन्यकहिनमैप्रमानकोऊनही क्योंजतनतेदं
डसंजोगहोतहै आगेदंडसंजोगतेध्वंसहोताहै
यातेध्वंसमैव्यभचारनहीहोत प्रस्न तोकारज
मात्रकोप्रयतनजन्यकहिनहै सोव्यर्थहोवे उत्तर
इसकहनमैजुगतकोऊनही।।हमआर्थीनही अ
थवा कारजमात्रताकरकेसाधारनसोध्वंसभी
पक्षहै अरुप्रयतनजन्यमात्रसाध्यहै इसतेक
हीभीदोषनहीजाता॥ क्योंध्वंसरूपजोहैकारज
सोईश्वरकेजतनसोंजन्यहै इसतेकार्यमात्रको
प्रयतनसोंजन्ययहकहनासिद्धभया॥प्रस्न॥कार
जजोहैसोप्रयतनमात्रजन्यहै॥ इससाध्यमैकार्य
जोसुखादिकसोहमनआदिकजोहमारेजतनतिन
सोंअद्रिष्टद्वाराआगेहीजन्यहै फेरताकेसाधन
मैसिद्धसाधनदूषनहोतहै॥उत्तर॥कारजजोहै
सोअद्रिष्टद्वारातेरहतजोजतनहै तासोंजन्यहै प
रवअभावकेप्रतियोगीहोनते॥ इसअनुमानसों
सभकार्यमात्रप्रयतनजन्यसिद्धभयो सोऐसाजो।
नित्यअरूपाकजतनहै सोद्रव्यकेआश्रेहै गुनहो
नेतेजेजेगुनहैतेतेद्रव्यआश्रतहै जैसेघटमैरूप
आदि सोऐसेजतनकाआश्रेईश्वरहीहै॥ऐसे
अनुमानसोंईश्वरकीसिद्धभई॥ यहउनमानउप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लैछनहै औरभीजानते जगतकेउतपतसमैमैजो हूए
ककेजोउणाकाराकैमहै सोजतनसौंजन्यहै करमहोने
ते जोजोकरमहैसोसेजतनजन्यहै औसोकरमईस्व
रकेहीजतनसौजन्यहै फेरऊपरजोमेघ अरुलोक
इत्यादिमारेभकेगिरएकाअभावहै सोगिरनकेरो
कनेवारेजतनकेसहितहै॥ यारनहोनेते सोतिनके
यारनवारेजतनईस्वरहीमैवनताहै तैसेहीव्रिहमा
डकानासजतनसोजन्यहै नासरूपहोनेते सोजनई
स्वरहीकोहै घटादिकव्यवहारस्वतंत्रपुरषकरकेप्रस्त
कीआहूआहोताहै व्यवहाररूपहोनेते जैसेहूए
ल केलोकांकीकलपनाकरीहूईलिषतहै कोसोजैसेई
छाहोवैतैसेआपरआदकनकीकलपनाहोजाती
है यहियटहै यहपटहै इसव्यवहारकेकरनवारेई
स्वरहीहै वेदतेउपज्याजोजथारथग्यानहै सोवक
ताकेजथारथवाक्यकेअरथग्यानतेहूआहै सवेद
केजथारथज्ञानहोनेते सोवेदकेरचनेवाराईस्वरही
है असंसारीपुरषकारच्याहूआवेदहै वेदरूपहोनेते
अरुवेदपुरषकाकीआहूआहै॥ वाक्यरूपहोनेते
इत्यादिईस्वरकेसाधनमैअनुमानहै सोविसतारसैनही
लिषे मंगलतीनभांतकेहोतहै सोवालकत्रिनालहन्यो
इसमंगलकेकवितमैवसुननिरदेसमंगलाचरनहै॥ कौ
उचितदेवजोश्रीगणेशजू॥ अथवाइष्टदेव श्रीरामचं
द्रजू तिनोकेगुणअरुसरूपवरणनते सोईसरवोपरवि
राजमानहै समनेउतक्रिष्टहै तिनोकीजेहोयजोऔसे
स्वरननहोय तौयहीऔसीरवाद्यातमकमंगलाचरन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

12A होय जो सरवोपर है सो नमस्कार करवे जोग है ताको वंद
न हो जो ऐसे वरणन होय तो यही नमस्कारात्मक मं
गल होय ॥ अथ सारस्वती उसतत वरनन ॥ कवित्त ॥
वानी जगरानी की उदारता वषानी जाय ऐसी मत के
सव उदार कोन की भई देवता प्रसिद्ध सिद्ध रिषराज
तप वृद्ध कहि कहि हारे सभ कहि न काहू लई भावी
भूत वरतमान जगत वषानत है तदप सु क्यो हू न वषा
नी काहू पै गई वरणे पितु चार मुष पूत वरणे पांच मु
ष नाती वरणे षट मुष तदपि नई नई ॥ वारता ॥ जगत की
रानी जो श्री सारस्वती जी है तिनो की जो उदारता कही जा
य ऐसी उदारता वडी किसकी वुद्ध भई है काहू की भी
न हो अथवा ऐसी मत उदार है नेकी आगे किसकी भई
है जो कीउ यमा वानी को दीजीये देवता अरु प्रसिद्ध जो
सिद्ध है वडे तपवारे रिषीस्वरे के राजा एसभ कह कह कर
के हार गए पर पूरण काहू ने नहीं कहि लई सो देवतेउ
की कही हूई अव भावी जो आगे होयगो अरु भूत जो है चु
को अरु वर्तमान जो होत है इन तीन्यो समयो मे जगत
जाको वषानत है पर तो भी किसी तरा भी काहू ते न हो
कही गई पितु ब्रह्मा सो जाको चार मुषो कर वरणत है
ताके पूत शिवजी पांच मुषो कर वरणत है ताके पोत्र स्व
मकारतक षट मुषो कर वरणत है पर तो भी सदा नई नेन
२५ ई है ॥ प्रश्न ॥ सारस्वती जी को जगरानी कह्यो जगत की भ
नी कही तौ जगत ताको राजा भयो यहि अनुचित अर
ष भासत है ॥ उतर ॥ ऐसे अरथ कीजे जगत की जो है
वानी वचन ताकी रानी है क्या अधिष्ठात्री है स्वामनी है ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

11

म चं
नटी
रा १३
सू 13

कैसी सारस्वती जी नेहीं समर्था तीपाय बोलन है ॥ प्रश्न ॥ यह अ
नुचितार्थ दूषन नित्य है पद मैं होत है अर्थ मैं नहीं क्रि
य अर्थ की ऊपर तो यो पद मैं दूषन बन्यो रह्यो जगदीस्व
री कहै हटत है ॥ उत्तर ॥ या कवित को सीतारामचंद्र जू के प
क्ष अर्थ करनो के सिव [illegible] जो है ब्रह्मा अरु जीवन के ईस्व
र क्या स्वामी जो है विस्नु सो दोऊ जगत के करता औ पाल
क जा के अंग ते प्रगटैं सो कहीए के सव अथवा ॥ के जो
है हिरण्यगरभ भगवान अरु ईस सिवजी एह दोऊ ज
गत के आदि जिस से प्रविरत होवै सो कहीए के सव अथ
वा क क्या ब्रह्मा अरु सिवजी इन को जे जगत रचन मैं प्र
व्रित करावै सो कहीए के सव ऐसे जगत के स्वामी कौन श्री
रघुनाथ जू अरु जगरानी सीता जू या मैं अनुचित अर
थ नहीं भासत रघुनाथ जू के संगत के रघुनाथ जू जो प्र
थम जगत के राजा कहे तिन की सकति सो जगरानी भई सो
सीतारामचंद्र जू की उदारता की जो है वानी बोलन जो मं
गेसों ई देनो सो जो वरणन करी जाय काहू की उपमा दै के
तौ कहो ऐसी उदारता को किस की उपम ई है ऐसे उदार
कोऊ भी नहीं भयो जा की उपमा दीजै तातें अनसमए ई
दै ॥ प्रश्न ॥ जो कहो इन को जो उपमा कवीस्वरो दई है अरु
देते हैं ते समर्थ अरथ होई ॥ उत्तर ॥ इसी तें आगे कह्यो है देव
ता जो हैं गौरि सिवादिक प्रसिद्ध जो है मघवे जु रीते आदि औ
र समर्थ अगन के उपमान अरु सिद्धते रिषि जे अरु बडे न पवारे ५८
मुनि ॥ इत्यादिकौ की उपमा संपूरण कवि कहि कहि के हार
गए है पर समर्था इनकी तुल्यता सो संपूरण उपमा कि
सीने भी कहीं नहीं पाई है कहि को कहो की जे अरथ के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

13A

लीये फेरतीनकालकोतोजगतवर्ननकरतहै॥
परतोभीसोउदारताकीवानीकिसीतेकिसीतरा
करकेभीनहीकहीगई॥अषवाजिनकेतीनका
लकेव्रत्तांतकोतोकविजनवर्ननकरतेहै पर
सोवानीकाहूतेनहीकहीगई॥फेरच्यारमुषव्र
ह्मासोजिनकोपितुक्यामातापिताकरकेवर
नतहै॥पितुशब्ददोऊनकोवाचकहै॥क्योंमा
तशब्दकोयाकर्नमैलोपहोतहै जैसेरघुवं
सकाव्यमैजगतःपितरौ असेकह्योहै प्रस्न
पाछैउदारवानीकोवरनतेआये यहसीतारा
मजूकोविसेषनभयोतातेअर्थकीअनमिल
ताहूई उत्तर च्यारमुषव्रह्मासोजिनकीवानी
कोपिताकरकेवरनतहै क्योंजवजगतरच
नमैव्रह्माकोचिंताभई तवइनकीवानीतेचिं
तामिटी तपकीयो तिसतेपितासमव्रह्माकोर
सतेपायोयातेपितासमवरनतहै पांचमुषशि
वसोजाकोपूतक्यापवित्रकरकेवरनतहै स्याम।
कात्तिकजीजाकोनक्याउस्ततहै अनंतजाकीसोना
तीअैसेवरनतहै परतोभीनईतेनईजाकीऊ
पमाहै कहांताईकोईवरने कवित्त॥फरनपु
रानअरूपुरसपुरानपरपर नवतावेनवता
वेओरउनकोे॥दरसनदेतजिनेदरसनसमु
झैननेतनेतकहेवेदछाडभेदउनको॥जानय
हकेसोदासअनुदिनरामरामरटतरहितनडर
तपुनरूउनको॥रूपदेयअरगमाहगुनदेयगर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

माहमक्तिदेयमहमाहिनामदेयमुक्तको ॥ वारता
फरनपुरानक्यासंफनैपुरान अपवाअैश्वर्या
दिगुनकरफरनहै अरुपुरानक्याअनादिहै ॥
फेरपुरषपुरानजोहैलोमसादिकसोजाकोपर
फरनवतावेहै सभठौरव्यापककहितहै ॥ सर्वंवि
ष्णुमयंजगत ॥ औरउक्तकोनहीवतावतहै फेर
जाकोभगवानदरसनदेतहै सोदरसनजोहै
सास्त्रताकोनहींसमझवेलागे अपवासोदरस
नकोनहींसमझेक्या ऐकरूपह्वैजातहै सोरेना
रायणकोरूपहीजानतहै दूजोभावनहीजान
त वेदजाकोनेतनेतकहितहै ॥ यहनही यहन
ही चंद्रनहीसूर्यनहीअग्निनही वहकछुऔर
है ॥ भेदक्याव्रह्मभिन्न जगतभिन्न इसभेदकी
उक्तकोछाडकेसंकरमतकहितहै यहसमव्रह्म
है यहज्ञानकेकेसोदासदिनदिनप्रतिरामराम
रटतरहितहै पुनरुक्तकाव्यकेदोषतेनहीडर
त ॥ प्रस्न ॥ ऐकतोयामैकोयहसव्दअघकहै अ
रुपुनरुक्ततेक्योंनहीडरत यामैकहाचमत
कारहै उत्तर ॥ ऐसेअर्थकरनो केसोदासनहीं
डरतेहै पुनरुक्तको कोअर्थपुनरुक्तक्याहैकछु
नही क्योंवेदनेतनेतकहतहै पुनरुक्ततेनही
डर्यो यातेभगवानकेभजनमैदोषनही जाको
रूपचित्रपटआदिमैदेषनवालाकोअणिमासि
द्धकोदेतहै जासोंअनुहोजायकाहूकोनजर
नाआवे ॥ गुनसोगरमासिद्धकोदेतहै जासोंऐ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

14A सोभारीहोयजोप्रथवीसोंनसह्योजाय भक्तजोसे
वासोमहमासिद्धकोदेतहै जासोंऐसोतनवढावैजो
व्रह्मांडमैनसमावै॥सभसोंनामअधकजोमुक
तकोदेतहै अथवाजोउपासनाकरेताकोसगुणसरू
पकोअरुमारमागुणकोअरुमहमासिद्धभक्तिको
देतहै औरकछुनहीदेती अरुनामजोहैरामज
कोसोमुक्तकोदेतहै॥ जाकेअधीनयहसभहै या।
हीतेकेसोदासरामरामरटतरहितहै॥ हरिगीतका
छंद॥सनाढ्यजातगुनाढ्यहैजगसोधसुधसुभा
व॥कृष्णदत्तप्रसिद्धहैतहमिश्रपंडतराव॥ गणेशसा
सोसुतपाईयोवुधकासीनाथअगाध॥ अशेषसास्त्र
विचारकेजिनजानियोमतसाध॥४॥वार्त्ता॥सना
ढ्यजोजातहै गुनाढ्यक्यागुनोंकेसहितहै दोहरा
उपज्योतिनकेवंसमैसुतकविकेसवदास॥रामचंद्र
कीचंद्रकाकीनीविवधप्रकास॥५॥वार्त्ता॥ जिसके
सवनेरामचंद्रजोचंद्रमातिनोकीचंद्रकाक्याचांदनी
अनेकअभावरूपप्रकासोकरकेकरीहै॥ दोहरा
भाषावोलनजानईजिनकेकुलकोदास॥भाषाकवि
भोमंदमततिहकुलकेसवदास॥६॥वार्त्ता॥प्रश्न॥ ईहां
कुलशब्दद्वैवारआयोअर्थवहीहै यातेपुनरुक्तदू
षनभयो॥उत्तर॥ जोभाषाकोवोलनजानतहैऐसो
जिनकेकुलक्यासेवकहोंमैकोदासक्याकौनसेवक
है अर्थकिकोऊनही दोहरा॥ सोरहसैअठाव
नाकातकसुदिवुधवार॥रामचंद्रकीचंद्रकाज
वकीनोअवतार॥वार्त्ता॥प्रश्न॥ यामैसंवतआदि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समकहे तिथनाकहीकोनसीतिथमैग्रंथप्रारंभ
कीयो॥ उत्तर॥ पूरनब्रह्मनेजवश्रीरामचंद्रअवतौ
रकीनोहै॥ कहाजादिनरामावतारह्वैकेप्रगटेहै सो
सीजोरामनौमी तामैयहग्रंथरच्यो अथवा राम
चंद्रकीयहजोकथाहै याकोजवअवतारकीयाहैजव
चंद्रकातिथथी क्यादूजतिथसी अथवारामकीअ
रुचंद्रकीजोतिथिहोतहैक्यारामनामतीनको चं
द्रोकको उलटेअंकधरेत्रयोदसीतिथआई अथ
वासोलांसैअठवंजमासंवतथा॥ कातकमासथा॥
सुदीसुकलपछथा॥ वुधक्यावुद्धवारथा॥ आगे
वारनामसातकोसप्तमीतिथथी॥ दोहा॥ वालमी
करिषस्वपनमैदीनोदरसनचारु॥ केसवतिनसों
योंकह्योक्योंपाऊंसुखसारु॥ ८ वार्ता॥ वालमीकरि
रिषनेस्वपनमैदर्सनदीयो तवकेसवदासनेति
नसोंकह्योमैअछसुखकैसेपावों॥ श्रीछंद॥ दुख
क्योंटरहै॥ हरिजूहरहै॥ ९॥ वार्ता॥ दुखमेरो
कैसेहटै वालमीकजीनेकह्यो श्रीरघुनाथ
जूदूरकरेंगे॥ सोमराजीछंद॥ गुनोएकरूपी
सुनोवेदगावै॥ महादेवजाकोसदाचित्तलावै
१०॥ वार्ता॥ एकरूपीकोगुनोक्याविचारो॥ सुकृति
सीनोसुनोजाकोवेदगावतहै॥ अउसदाजाको
महादेवजीचित्तमैल्यावतहै ध्यानधारतहै पर
ध्यानमैरूपसंपूरनआवतनही याहीतेसदाल्या
वतेरहैकहै अथवा एकरूपीक्याजोएकरूपपूर्न
व्रह्मगुनोक्यागुनवानभयोहै अथकिसगुनहै जो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अर सदा जाको महादेव जी चित्तमें ल्यावत है॥ ध्यान धारत है पर ध्यानमें रूप संपूरण आवत नहीं याहीं दसा ल्यावते रहिनेके हैं १

15A

सुनो क्या सुन्या है हमने जाको वेद गावत है॥ नग
रूपी छंद॥ भलो बुरो न तुं गनै॥ वृथा कथा कहे
सुने॥ न राम देव गाय है॥ न देवलोक पाय है ११
वार्त्ता॥ अरु हे केसवदास तूं भले बुरेको नहीं गिनत
व्रिथा ही जो कथा है ताको कहता अरु सुनता है जब ता
ई श्रीरामदेवजुको नहीं गावेगो तब ताई देवलोकको
नहीं पावेगो॥ ११॥ षटपद छंद॥ बोलन बोल्यो बोलि
... टियो फिर ता हिन दीनो मारन मार्यो सत्रु क्रोध
मन व्रिथा न कीनो जुरन मुरे रन माहि लोक की लोक
न लोपी – दान सत्व सन मान सुजस दिस विदिसन ओ
पी मन लोभ मोह मद काम वस भयो न केसवदास भ
न श्रीरामचंद्र रुद्रादि प्रभु अवतारिय अवतार मन॥ वच
ना॥ बोलका जो श्रीरामचंद्रजी ने बुलाया है सो फेर बो
लका सबद कर के नहीं बुलाया एक ही बेर बुलावन सै
पासरायगा है जगतमें नहीं परनदीया अथवा जो ए
क वार बोल्या है काहूं को कछुक दया है सो बोल के फेर
और न हीं बोल्या का नहीं फेरा तैसे ही कीआ है जा
को एकवार दीआ है ताको फेर नहीं दीये एक ही वे
सो पूरण काम कीआ मारके जिनो ने फेर सत्रु नहीं मा
र्या एक ही बेर से विना सामरण के कियो॥ अथवा मु
कत कीओ दान अरु संच अरु सनमान ने सुजस ऊनो
क रके जिनो ने दिसा अरु विदिसा ओपीक्या सो मा जुक
का तकरी है मन जिनको मादिक सो वस नहीं भया है अव
तारिय है क्या संपूरण और अवतार है जिनोके अवतारो
की मणि है अथवा अवतारिय जो है अवतारो के धा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रनवारे तिनो मैं एहि जो आवनार है सो मम मन के सिर की
मणि है सर्व तें सेष्ट है॥१२॥ मधुछंद॥ राम नाम सब
धाम और नाम कौन काम॥ वारता॥ राम नाम के सो
है सत्य को घर है और नाम कि सकाम है मिथ्या है॥
॥१३॥ प्रियाछंद॥ सुषकंद है रघुनंदजू जग यों कहै
जगवंदजू॥ वारता॥ श्री रामचंद्र जू सुष के मूल है जग
त को वंदना करने जोग है ऐसे सर्व जगत जो कहत
है॥१४॥ तरणजा छंद॥ वरनी ए वरन सो जगत
को सरण जो॥ वारता॥ जो जगत को सरण क्या आत्म
रूप वरणन करवे जोग ताको वरनी ए अथवा जो ज
गत को आत्म स्वरूप है वरण अक्षर को न राम नाम यहि
सो वरनी ए॥१५॥ कुमारललित छंद॥ विरंच गुण देषे॥
गिरा गुणन लेषे अनंत मुष गावैं विसेषै न पावैं॥ वार
ता॥ ब्रह्मा जू जाके गुणको देषत है सरस्वती जिनके गु
ताको विचारत है अथवा लेषै क्या दिन रात लिषत है सेस
नाग जी मुषन सो गावत है परं तो भी अंतको नहीं पा
वत अनंत है अथवा विकार विसेषता करके सेषना
ग अवसान अंत को है ताको नहीं पावतै॥१६॥ दोहरा॥
मुनि पति यहि उपदेस दै जवही भए अदिष्ट॥ केसव
दास तिही करे रामचंद्र जू इष्ट॥१७॥ वारता॥ जब वा
लमीक जी ऐसे उपदेस देके अंतर ध्यान होते भए त
व तेही केसोदास ने श्री रामचंद्र जू इष्ट कीए॥ सलोक
रामचंद्र पद पद्मं व्रिंदारक व्रिंदाभिवंदनीयं केसव म
ति भू तनया विलोचन चंचरीकायते॥ वारता॥ तब तेही
श्री रामचंद्र जू के जो चरणकमल है कैसे व्रिंदारक जो दे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

16A

वत्यांके वृंद क्या सं कहत तिनोकर के वंदना करनेजो
ग्य है तिनमैके सब दास की मत अरु सीता जू के नेत्र
भ्रमर सम विचरते भए अथवा के सो दास की मत के
अरु जानकी जी के नेत्र रूपी भ्रमर विचरते भए हैं
अथवा के सब की बुध सीता जू के नेत्रों के समान ति
नमैं भ्रमर रूप ह्वै के रहि बे लगी ॥ १८ ॥ चतुष्पदी छं
द ॥ जिनको जस हंस जगत प्रसंसा मुनिमन मानस
रंता लोचन अनरूपं स्याम सरूपं अंजन अंजन
संता काल त्रेदर सी निरगुण परसी होत विलंब न ला
गै ॥ तिनके गुन कहिहौ सम सुष लहिहौ पाप पुरान
न भागै ॥ वारता ॥ जिनको जसरूपी जो है भ्रमर रूप
ह्वै के हंस के सो जगत में है प्रसंसा करत उसत तजो की
सो मुनीस्वरों के मन रूपी मान सरोवर पै रमण कर
ण वारो है फेर नेत्र जिन के सुंदर है अथवा नेत्रों के अ
नुरूप क्या जोग जो है स्याम सरूप तो को अंजन सं
त जन अंजन क्या पावन है नव के से ह्वै जानहै तीन
काल के देषन वारे अरु निरगुण ब्रह्म के परसन वा
रे हो ने है देर नहीं लगती यां ते तिसी ब्रह्म के गुण क
हत है हो जिसने सपूरन सुष पावै अरु अनेक पाप दू
र ह्वै जावै ॥ १९ ॥ दोहरा ॥ जागत जों की जोत जगए
क सरूप स्वछंद ॥ राम चंद्र की चंद्रका वरणत हौ व
हु छंद ॥ वारता ॥ एक रूप अरु स्वतंत्र जा की जोत ज
गत मै जगत है ऐसे श्री राम चंद्र जी की चंद्रका बहु
ते छंदन सो वरणत हो ॥ २ ॥ रोला छंद ॥ सुभ सू
रज कुल कलस नृपति दसरथ सम भूपति तिन के सु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१०
15
17

तसुनचारचतुरचितचारुचारुमति रामचंद्रुभव
चंद्र भरतभारथभुवभूषन लछमनअरुसत्रुघन
दीहदनवदलदूषन॥वारता॥सुभसूरजकेकुलके
कलसराजादसरथहोतेभए सपूरणप्रथिवीके
स्वामी अथवासमराजयेकेतेसूरजकुलकेकल
सभए॥तिनकेपुत्रचारभए कैसेहैंचतुरहैअरुस्व
च्छहैचित्र जिनको अरुस्वेछहैमति जिनकी एक
तोश्रीरामचंद्र जगतकेचंद्रमा दूजेभरतजीकैसे
जेहुकीप्रथिवीकेभूषन अथवाभारतवर्षभारत
षंडकेभूषन कहूभवपाठहैजोजहुभूमिकेऔज
गतकेभूषनभीऔसेअरथकीजे लछमनऔस
त्रुघनजीकैसेवडेजोराकसनकोदलताकेनासक
रणवारे॥२१॥त्रिभंगीछंद॥सरजूसरताततरनगर
वसेवर अवधनामजसधामधर अघओघविना
सीसमपुरवासीअमरलोकमानोनगर॥वारता
सरजूनामनदीकेकिनारेअयुध्याहैनामजिसका
औसोप्रिथवीमेजसकोघरनगरवसताभया पापो
केसमूहोकेनासकरनवारे जहांसपूरनपुरकेलो
गहैं सोमानोदेवतिआकेनिकरकयासमूहहीलो
कहूऐहैं रूपनकोधारकरके अथवानगरअमर
लोगकयादेवपुरीसोहै जहां अघओघकेविनासन
वारेसमपुरवासीहै॥२२॥षटपदछंद॥गाधराज
कोपुत्रसापसमसत्रु मित्रवल दानक्रिपानविधान
वस्यकीनोभुवमंडल॥केमनआपनेहाथजीतसम
इंद्रियगनअत नपवलएहीदेहमप्रजीतेरिष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

17A षति तिहुपुरप्रसिधकेसवसुमनकालअतीतागतनि
गुण तिहुअथमुतगनपगधारिये विस्वामित्रपवित्र
मुनि॥वारता॥फेरगाधराजाकेपुत्रजोहै विस्वामित्र
जौसोसंपूरणसत्रुअरुमित्रोकेवलकोसाधकरके
दानरूपीक्रिपानअथवादानअरुतरवारइनकेवि
धानसोजिनोनेपृथिवीमंडलवसकीउहै॥फेरम
नकोअपनेहाथमेकरकेअरुजगतमेइंद्रियनकेगणो
को जीतकेतपकेवलसोइसीसरीरमेछत्रीतेरषीस्वर
भयेहै तीनोपुरोमेप्रसिधहै कालजोअतीतकावती
नगयोहै अरुआगतकाजोआवनोहै तिनोकेगुनका
विचारणावारेहै अथवाकालतेरहतहै अरुपरब्रह्ममे
जिनकीगतकाप्रापतहै अैसेजोपवित्रविस्वामित्रहै
तिनोनेअथमुतरीतसोचरणधारेओकाअचानकहीअयु
ध्यामेआए अथवाअथमुतहैगतजाकी एह विसेषनकीजे
॥२३॥पधरीछंद॥ मुनिआएसरजूसरतमोर तिहदेषेउ
जलअमलनीर नवनिरषनिरषगतदुतिगंभीर कछुवर
णनलागेसुमतिधीर॥ [illegible] अतिनिपटकुटलगतजदप
आप वहुदेतसुपगतछुवतआप कछुआपनअपअप
गतचलेत फलपतननकोऊरूपफलेत॥२४ मदमतेजद
पमातंगसंग अननदयपततयावनतरंग वहुन्हायन्हाय
तिहजलसनेह वहुजातस्वरगसुकरमदेह॥२५॥वारता॥
सरजूनदीकेकिनारेमुनीस्वरआएतहांउजलअरुनिर
मलजलदेषे जलकीनवीनसोभादेषदेषकेगंभीरगतसो
कछुवरणाकरनलागे जद्यपआपजोयहसरजूहै अत्यंत
तेअत्यंतकुटलगातकहांटेढोचलतहै॥परवहुतओकेजल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

केझुवतेहैसुपगतदेतहै॥प्रश्न॥इहांवहुसवदसोअनेमकेअ
सथानमैनेमवहुतिअंबैकोदेतहै तौकहाएकहेकोसुद्धग
तनहींदेते॥उत्तर॥वहुतजोसुपरूपगतकासुकतहैवारासु
कातातिनकोदेतहै आपतोकछुकअपअपगनचलतहै
अरुपापीउंकोऊंचौफलदेतहै फेरयहप्रपजोकोमदवारे
हाथीनकोसंगहै यामैन्हावतहैपरतौभीअत्यंतपापीउंके
पवित्रकरणकारैयाकेतरंगहै फेरजहांवहुतन्हायन्हायके
तिसजलमैसनेहसोसूकरभीसहितदेहकेवहुतेस्वरग
कोजातेहै॥२६॥नवपदीछंद॥जिहतिहलसतमहांमदम
त वलवारनवारनदलयंत अंगअंगचरचेअतिचंदन
मुंडनमुरकेअभ्रकवेदन॥वारता॥फेरनगरकेजेहांतहांमहा
मदमैमत्तहुएवलवारेवानेरेकाहाथीसोभतहै जोयंतक्यातिं
सचेकरकेदलोकेवारनेवालेहै जिनोकेअंगअंगमैअत्यंत
चंदनचरचेहूएहै तिनकेमूंडनपरअभ्रकक्या गुलालअ
थवाअभ्रकरकेवेदनसिंधूरमुरकेहै॥२७॥दोहरा॥दीह
दीहदिगजनकेकेसवमनोकुमार दीनेराजादसरथहिदि
गपालनउपहार॥वारता॥वडेतेवडेमानोदिगजनकेजेपुत्र
हैसोदिगपालोनैराजादसरथकोदीनेहै भेटमै॥२८॥अर
लछंद॥देषवागअनुरागउपज्य वोलतकलपुनकोक
लसज्य राजनरतिकीसषीसुवेसन मनोकहतमनमथसंदे
सन फूलफूलतनफूरवढावत मोदतमहांमोदउपजाव
त ऊडतपरागनचित्तऊडावत भ्रमरभ्रमतनहिचित्तभ्रमा
वत॥वारता॥फेरविस्वामित्रजीकोदेषतेहुएवागसनेहकोऊप
जताभया वोलतीहूईसुंदरपुनकोजहांकोकलासोभतहै
सोमानोरतिकीसुंदररूपवारीसषीसोभतहै सोमानोकाम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

18A के संदेसे कहते है अथवा रतकामके संदेसे कहत है कांम
पे भेजवेको अरु फूलके सरीरमे फूल जो है प्रसंनता ताकों व
ढावत है फेरमोहनको प्रसंन होती है अरु महामोहको उप
जावत है अरु पराग नही उडती है अपने चित्तको उडावती
है अरु षट्पद भ्रमरन ही भ्रमते है चित्तको भ्रमावते है ॥२९॥
पान फूल छंद ॥ सुभ सरसो मैं मुनमन लौ भे सरसिज फू
ले अलि रस भूले ॥३०॥ जलचर डोलै वहु विधि बोलै ऊर
ऊरफा ही वरनन जो ही ॥ वारता ॥ तिस बागमे सुभ ताल सो
भत है जो मुनीस्वरोके मनको भी लोभायमान करत है ॥
जामे कमल फूल रहे है तिनेपर भ्रमर रातमै भूल रहे है अ
रु जलके जीव डोलत है वहुत प्रकारसे बोलत है सो ही प्रेम
ऊरफ रहित है वरनन करी नही जाती ॥३१॥ पद मावती छंद ॥
देषी वनवारी चंचल नारी तद पत्र पे पन मानो अतितप मय ले
षीअ हि ष्थिति देषी तदप दिगंवर जानो तदप दिगंवर पुष्प व
तीन रनि रषनि रषमन मोहे पुन पुन पवती तन गत अतपाव
न गारंभ महित समसो है गरभं सजो गीरत रस भोगी जगजनलौ
नक हावै जगजन लीना नगरन बीना अतिपीय के जियभावै
तपहर मावै चित्त भ्रमावै मैनन प्रेम वढावै यो दिनरातन अह
मुनभांतन कविकुल कीरत गावै ॥ वारता ॥ फेरि विस्वामि
त्रजीने फूलनकी वाडी देषी सो मानो चंचल इस्त्री है यामे स
मस्त्र यभ्रुतता है परतो भीत पही जाको थन है ऐसी है तपस्व
नी है वरषादिकको सहिवो सो ई तप है फेर अनंत यहि तप
मे विचारी है परघरमे थित है अथवा गृहीको जाके समीप छि
न है जो तपस्वनी होई सो घरमै कैसे रहे परतो भी दोऊ दिगं
वर है दिसाही जाको वस्त्र है अरु पुसपवती है फूलन करी है

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

17

जिनाके स्तनके अग्रिरतिके फूलआवतहै पुषपवती इस्त्री
19 देषीतीनहीं याकोदेषदेषके मानुषमोहततहोतहै फेरपु
सपवतीपनदोऊनकोतनहै अरुगात अत्यंतपवित्रहै सो
तोपवित्रनहींहोती फेरगरभकेसहतहै क्योंजामैफ
लऊपजतेहै अथवा जलजोतामैफिरतरहतहै याते स
गरभहै गरभाधानमैभीजलहोतहै फेरगर्भवारीनाशि
क कारीहोतहै कुरूपकारीयहसभकोसोभादेतहै औररतिंर
सकेयोगनेवारीहै रतिक्याप्रीतकोरसजामैसमर्पितकर
तहै जगतकेजनोसोंलीनकहावतहै सभदेषकेलीनहो
तेहै जगतकेजनोसोंलीनहैपरतौभीनगरमैनवीनहैजो
ज गसोंलीनहो यसोस्वामीकोमदलागे यदिपी यदेगीय
कोअत्यंतभावतहैपतिकोरमावतमैं अरुतिनकेचित्तको
अंमावतहै औसीतैसोजनकोदुषहोय सोयहिसोकको
कोप्रेमवहावतहै क्योंऔरवाटकाभीफूलीहै ऐसेराज
की दिनजोंकीरतकोकवीस्वरोंकेसमूहगावतहै॥२३॥
डाकलकाछंद॥संगलीएरिषसिष्यघने पावकसेत
पतेजसने देषतसरताउपवनभले देषनअवधपुरी
कोचले॥वारता॥तवविस्वामित्रजोबहुतेसिष्यनको
संगलीयेहुयेजोतनसेअगनकेसमानजोतपकोतेज
तामैमिलेहुयेहैनहोअरवागकोदेषतेहुयेअयुध्या
पुरीकेदेषनकोचलतेभये॥२४॥मधुभारछंद॥ऊचे
अवास प्रतध्वजप्रकास सोभितविलास सोभेप्रकास
॥वारता॥कैसीहैअयुध्या जामेऊचेमंदरहैंअरुमंदरम
दरप्रतध्वजाहै तिनोंकीसोभाकेजोविलासहै सोअकास
मेसोभतहै अथवातिसपुजाकीसोभाकेविलाससैअका
ससोभतहै॥२५॥आभीरछंद॥अतिसुंदरसतसाय॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

19A थिरनरहतपलआय समनतपैमैमान दंड धारनीजान
वारता॥सोमानोअत्यंतसुंदरखेहसा पहैअथवासाथपद
वीजानेपाईहैकैसीहैआयपलभीथिरनहीरहितीकोसतवि
चरतेहैपहहलनहै फेरसंपूरणपेमपोमेमानोऊपरजोजरी
लसतहैसोईतपकोतेजहै अरुदंडकेधारनवारीजानोसे
तजनदंडधारतहै एहयुजादंडवोसधारत है॥३५॥हरगीत
छंद॥सुमद्रोणगिरगनसिषरपरअतिउदतऔषधसीग
नो वहुवायवसवारदवहेरहिउरफदामतहुतमनो कियो
रुचिरचंडप्रतापपावकप्रगटसुरपुरकोचली कियोसरदसु न
गसुदेसघनप्रहुगंगादिवषेलतमली॥वारता॥सोमाईमान
जोद्रोणाचलकेसिषरहै तिनोपरयदिअत्यंतऔषधीसोउ
दतभईहै॥युजानहीहै॥अथवावहुतपवनकेवसकरके
जोमेघचलतेहै तिनोमैयहिवीजुरीतुकीसोभाऊरफरही
है कियोसुंदरप्रचंडप्रतापरूपीअगनस्वरगकोचलीहै
अथवासुंदरसरहिरितुकेमघोविषैस्वरगकीगंगाषेलनहै॥३६॥
दोहरा॥जीतजीतकीरतलईसत्रुनकीवहुभांत पुरपरवां
धीसोमियतमानोतिनकीपांत॥वारता॥अथवासत्रुनकी
जीतजीतकेजोकीरतलईहैवहुतप्रकारकीसोमानोपुरपर
तिनोकीपांतवांधीहुईसोभतहै॥३७॥त्रिभंगीछंद॥सुमघ
रघरसोभे रिपुगनछोभेमुनमनलोभेदेषजवे वहुदुंदभ
वाजैगगनगाजैदिग्यजलाजैसुननसवे जिहतिहस्तुति
पढही विघननवढहीजैजसमठहीसकलदिसा समसव ती
विपछमवसतजयांक्रमदेवपुरीसमदिसैनिसा॥वारता॥
समघरघरजहांसुमसोभतहैशत्रुकेसंवूहजहांछोभमा
नरहतेहैमयसोजवदेषतहैतवमुनीस्वरोकेमनलोभायमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नहोतहै बहुतेजहांनगारेवाजतहै अरुहाथीयोंके
संवूहगरजतहै जिनकोसुनतेहूयेदिग्गजलज्यामा
नहोतेहै॥ जहांतहांवेदपढीतेहै॥ विघनननहीवध
ते॥ अरुसंपूरनदिसाविषैजयअरुजसछायरहि
तहै॥ सभकोसेयक्यासेवनजोग्यहै छमक्याजोग्य
विबुधापंडतहैजहा॥ स्वर्गमैविबुधक्यादेवता या
तेदिनरातस्वर्गसमवसतहै॥ कविकुलविद्याधर
सकलकलाधरराजराजवरवेषवने॥ गणपतमु
खदायकपसुपतिलायकसूरसहायक कौनगनै
सेनापतिबुधजनमंगलगुरगनधरमराजमन
बुद्धघनी॥ वहुसुभ्रसुमनतरुकरुसामेअरुस
रतरंगनीसोभमनी॥ २६॥ वार्त्ता॥ जहाकवीस्व
रोंकेकुलसोईविद्याधरहै॥ क्योंबेनामकरविद्या
धरगंधर्वहै यहसास्त्रकेधारनतेविद्याधरोंसेहै
संपूरनकलाचतुराईयोंकेधारनबारेहै राज्योंके
राजासमजिनकेवेखवनेहूयेहै कितनेकगरणेसा
आदिकोंकेजोउपासकहै देवपुरीसमतिनाको
गणेशजसुखदायकहै कितन्याककोशिवजलला
यकहै कितन्याककेसूरयभगवानजीसहायक
है॥ तिनोकीकौनगिनतीकरसकै॥ सेनापतिजो
सूरवीरसोईसेनापतिस्वामकार्त्तिकसेहै अरु
बुद्धवानमंगलतेब्रहस्पतकेसमानहै अरुजिन
केमनमैअयककुंद्रहै तेधरमराजकीन्याईहै वहु
तेहैसुभ्रक्याउज्जलफलजिनमैस्रेसेजहांतरुब्रह
है॥ करुणामैहैक्याजहाककरुणानामाब्रक्षहै स

20A रक्यादेवत्यों कीजोनदी सरजू ताकीजहासोभास
जीहोईहै अपवास्लेषसोंअर्घ॥ जहासर्वविवि
द्याकेधारनवारेकवीश्वरोंकेसंवूहहै कैसेहै
सर्वकवताकीषानहै अरुराज्योंकेराजासेजिनकेवे
षहै॥ अरुजहांगनोकेपतिसेनानीहै अरुपरा
पालदरोगेहै गुनोमेलायकअरुसहायताके
करनवालेसूरवीरहै अनेकतिनकीकौनगि
नतीगिनै अरुसमसेनाकोपतिवुधजनक्या
वुद्धवानहै अरुमंगलोंकेगुरक्याभारीजहा
संवूहहै राजकेधरममैजिनकोमनअरुवुद्ध
वनीहै ऐसेजहामंत्रीहै फेरजहांसअउज्जल
सुमनक्याफूलनकेवृक्षहै अरुकरुणाकेवृ
क्षहै अरुमेक्यामंदारवृक्षहै गंगासमसरजो
कीसोभामिलीहोईहै दूजोअर्घ देवपुरीपक्ष
जहाकविशुक्राचार्येहै विद्याधरगंधर्वोके
संवूहहै अरुसंपूर्नेकलासंवृतकीषानऐसे
चंद्रमाहैजहां॥ अरुराज्योंकेराजाकुवेरहैजहां
श्रेष्ठवेषधारेहूये गनेसजूकेहैसबकेदेनवारे
शिवजूहैसवेदेनमेलायक अरुसहायताके
करनवारेसूर्येहै अरुस्वामकार्त्तिकेहै अरुवु
धहै मंगलहै गुरक्यावृहस्पतहै अरुगरुणाके
सहितधर्मराजहै जिनकेमनमेवडीवुधहै व
हुतेउज्जलफूलनकेवृक्षहै दयामेजिनकेसुभाव
है॥ समकोफलफूलछायाआदिदेतहै अरुआका
सनदीजहांचलतहै सुल॥ पंडतगुनमेडतगुन

दंडतमतदेखीये॥ क्षत्रियवरधरमप्रकरक्रुध
समरलेखिये॥ वैस्पसहितसत्यरहितपापप्रगट
मानिये॥ सूद्रसकतिविप्रभगतजीवजगतजा
निये॥ ४०॥ वार्त्ता॥ फेरजहांगुनसोंसोभायमा
नपंडतहे गुनोकोदंडतक्याजीततीहुईदेखी
तीहैमतजिनकी फेरक्षत्रीजहांधर्मकेसंकट
मेश्रेष्ठहै अरुजुद्धमेक्रुधतहे वैस्यजहांस
त्पकेसहितहै क्यासाचबोलतहे पापतेरहित
हे अरुसूद्रजहांश्रीदेवीजीतेव्हिनईकेभक्त
है अैसेजहांजगतकेजीवहै॥ सिंहाविलोकन
छंद॥ अतिमुनितनमनसमभोहरलो॥ कछु
बुधवलवचननजाइकले॥ पसुपंछिनादि
नरदेखजवे॥ दिनरामचंद्रगुनगुनतसवे॥
४१॥ वार्त्ता॥ विश्वामित्रजीअैसेदेखवारकेअत्यं
ततनअरुमनकोंमोहतहैनरहे॥ बुधकेवलसें
अरुवचनोसोंकछुकह्यानहीजाता॥ पसुपं
छीइस्त्रीअरुपुरखयहतवअैसेदेखेहे जोदि
नदिनप्रतिश्रीरामचंद्रजूकेगुनोकोहीविचा
रतेहे मदहद्दाछंद॥ अतिउचअगारनवनी
पगारनजनुचिंतामनहारी॥ वहुसतमखधू
पनधूपतअंगनहरिकीसीअनुहारी॥ चित्र
तवहुचित्रनपरमविचित्रनकेसवदासनिहा
री॥ जनुविश्वरूपकीअमलआरसीरची
विरंचविचारी॥ ४२॥ वार्त्ता॥ अत्यंतऊचेअगार
क्याघरोंपेवनीजोहैपोडीयो सोमानोसंद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

21A

रचिंतामणीयाहै मनइछतफलदेतौहै अथवाह
रिक्यामेघयाशिवजीतिनकीअनुहारहै वहुतेअछ
रोजगपहैतिनोकेधूपनसोंजिनकेअंगधूपतहै॥
रूपाधमजुगतहै याते फेरपरमपवित्रजोचित्रहैति
नोकरचित्रतहै सोमानोविश्वकेसरूपोंकीनिर्म
लब्रह्माने आरसीरचीहै॥ सोरठा॥ जगजसवंत
विसालराजादसरथकीपुरी॥ चंद्रसहितसभ
कालभालथलीजनुईसकी॥४३॥ वार्त्ता॥ जगत
मैवडेजसवारेजोराजादसरथहै तिनोकीयहपु
रीकैसीहै मानोशिवजीकेमस्तककीथलीहै सो
भीसदाचंद्रमाकेसहितहै यहश्रीरामचंद्रचंद्रमा
केसहितहै॥ कुंडलीयाछंद॥ पंडतअतिसगरीपु
रीमनोगिराग तगूढ॥ सिंघनजुतजनुचंडकामो
हतमूढविमूढ॥ मोहतमूढविमूढदेवसंगअदि
तीसोहै॥ सभश्रृंगारसदेहमनोरतिमनमथमोहै॥
सभश्रृंगारसदेहसकलसुखमाअतिमंडत॥ मनो
सचीविधरचीविविधविधवरनतपंडत॥४४॥
वार्त्ता॥ तिससंपूरनपुरीविषेपंडतअत्यंतहै सो
कैसेसोभतहै मानोसारस्वतीहै अपनीगूढगतन
सों॥ पुरीसरस्वतीगूढगतोंसेपंडत॥ अथवासिंह
नकेसहितचंडीभगवतीहै जोमूरखतेचतुरसभ
कोमोहनकरतहै देवत्योंकेसंगदेवमाताअदिती
है अथवासंपूरनश्रृंगारोंकेसहितहैसरीरजिनको
ऐसेरतितेकाममोहतहै प्रश्न पीछेस्वामीतेदासअ
रूमातातेपुत्रकीउपमादईहै ईहांपुरीतेपंडतोंको

२२ 22 सभ इस्त्रीकीउपमाकैसेवने उत्तर॥ ऐसेसर्पीकीजै॥ जहां
जोहैइस्त्रीपुरवसोकैसेहै मानोदेहकेसहितस्रृंगा
ररसहै तिनोनेहीतनधारेहै रतितेकामकोभीजो
मोहतहै रूपकनिसोभासोंमंडतहै सोऐसीपुरीनही
मानोइंद्रानीब्रह्मानेरचीहै सोदाऊकैसीहै अ
नेकप्रकारसोंजाकोपंडतवरनतेहै॥ छप्पै॥ म
लनहींकीजहांअधोगतकेसवगाई॥ होमहुतास
नधूमनगरलोकैमलनाई॥ दुरगतदुरग[illegible]नही
कुटलगतसरतनहीमै॥ श्रीफलकोअभलाषप्र
गटकपिकुलकेजीमै॥ अतिचंचलहैजहांचलदलै
वहुविधआननहारि॥ मनमोहनहैरिषराजजअ
दभुतनगरनिहारि॥ ४५॥ वार्त्ता॥ जहांअधोगत
क्यापापीयोंकीगतनहीहै लोकवृक्षोंकेमूलहीकी
अधोगतहैठकोजानाहै अरुमलनताजहांहोमके
अग्निकेधूममैहीहै॥ दुरगतषोटीगतकाहूनही॥
लोकाकिल्पोमैंहीदुरगतदुषसोंपहुचवोहै कुटल
कोऊनही कुटलगतक्याटेढोचलवोनदीयोमे
हीहै श्रीफलक्याकुचतिनकीचाहकाहूकोनही
सभइस्त्रीनसहितहै॥ श्रीफलनलीयेरकेफलकी
चाहलोकवानरोकेहीचित्तमैहै॥ चंचलकोऊनही
अत्यंतचंचलपीपलकेपत्रहीहै ऐसोनगरदेष
केविश्वामित्रजमोहतव्हैरहे॥ सोरठा॥ नागरन
गरअपारमहामोहतमभित्रसे॥ अस्यालताकुठा
रलोभसमुद्रअगस्तसे॥ ४६॥ वार्त्ता॥ जानगरमे
नागरक्याचतुरलोकअपारहै महामोहरूपी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

22 A

जोअंधकारहैताकोसूर्यसमहै त्रस्नारूपीवेलकेदूरक
रनकोकुहाडेकेसमहै लोभरूपीसमुद्रकेसोषनकोअ
गस्तसेहै॥ दोहरा॥विश्वामित्रपवित्रमुनिकेसबबुद्ध
उदार॥देषतसोभानगरकीगे(राजदरबार॥४७॥
वार्त्ता॥ ऐसीवडीबुद्धवारेविश्वामित्रजीनगरकी
सोभादेषतेहूये राजाकेदरबारकोगये॥ इतिश्रीम
तलोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रका
यांविश्वामित्रआगमनोनामप्रथमप्रकास:॥दोहरा
यादूसरेप्रकासमोमुनिआगमनप्रकास॥राजासों
रचनावचनरघुपतिचरितविलास॥ १॥ वार्त्ता॥
यादूसरेप्रकासमोविश्वामित्रकोआवनो राजादस
रथसोंवचनरचनाहोयगी॥ हंसछंद॥ आवतजा
तराजकेलोग॥ अमरतधारीमानोभोग॥ २॥ वार्त्ता॥
राजाकेलोकआवतेजातेकैसेसोभतेहै मानोअमरत
बानभोगहीहै॥ मालतीछंद लछ॥ आदिनगनपु
नयगनरचतरनषटछरजान॥ मनोमालतीछंदय
हकविकुलकोसुषदान॥ तिहदरबारी॥ समसुष
कारी॥ कृतजुगकैसे॥ जनुजनबैसे॥ ३॥ वार्त्ता॥ त
हादरबारकेलोककैसेहै संपूर्नसुषोंकेकरनबारे
है॥ कृतजुगक्यासतजुगकैसेमानोजनविराजतेहै
दोहरा॥ महिषमेषमृगवृषभकहुंभिरतमल्लगजरा
ज॥ लरतकहूंपायकनटतकहुंनिर्त्तकनटसाज ४
वार्त्ता॥ महिषमहे॥ मेषक्यामेढे॥ मृग॥ वृषभक्या
वैल यहभिडतेहै॥ अरुकहूंमल्लतेगजराजभिडते
है॥ अरुकहूंकपायकक्यापयादेसैफवासलडतेहै॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहूं कन्त्यके वरने वारे जो है नट सो नटत क्या नृत्य
को करते है॥ समानकाछंद दोहा॥ आदिअंत गुर सोभि
जै जगन रगन जिंह माह॥ कीनो प्रगट समान का व
रित कविन के नाह॥ देषदेषके सभा॥ विप्र मोही
यो प्रभा॥ राजमंडली लसै॥ देवलोक को हसै॥ ५॥
वार्त्ता॥ देषदेषके सभा की प्रभा क्या सोभा को मुनि मोहत
होते भये॥ कैसी राजमंडली सोभत है॥ मानो देवलोक
को हसत है॥ मल्लकाछंद लं॰॥ अष्ट वरन पद देह जम
गुर लघु के सवदास॥ मदन मल्लका नाम यह कीजे
छंद प्रकास॥ देसदेसके नरेस॥ सोभिये सभेस
वेस॥ जानिजै न आदि अंत॥ कौन दास कौन संत॥
६॥ वार्त्ता॥ देसदेसके जो राजा है सो जहां भले वे
ससों सभ सोभते है जिनको आदि अंत कछु नहीं जा
न्यो जातो॥ कौन सो दास है॥ अरु कौन माल के है॥
सभा कसे सोभत है राजा दसरथकी सेवा मे अष
वा जाको आदअंत नही जान्यो जातो ऐसो जो परव्र
ह्म तिनको कौन है ऐसो जो नही है दास अरु को
न है ऐसो जो संत क्या अष्ट साध पुरस नही है॥ दोहा
सोभत वैठे तिंह सभा सात दीपके भूप॥ तिह राजाद
सरथ लसत देवदेव अनुरूप॥ ७॥ वार्त्ता॥ सात दी
पके राजा तिस सभा मे वैठे हूये सोभते है॥ तहा रा
जा दसरथ इंद्र के समान सोभते है॥ दोहरा॥ देषति
नै तव दूरते गुदरन गो प्रतहार॥ आये विश्वामित्र
जू जनु जगको करतार॥ ८॥ वार्त्ता॥ तव विश्वामित्र
जू को देषके गुदरन क्या कहिने वास ते प्रतहार जो है

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

23A

चोपदारसो जाता भया जायके षबरदई विश्वामि
त्रजूआए हैं सो मानो दूसरे ब्रह्मा हैं ॥८॥ दोहरा ॥ उठ
धाए न्रिप सुनतही आयगहे तब पाय लैआए भि
तर भवन ज्यों सुरगुर सुरराय ॥ वार्ता ॥ सुनते ही रा
जा ऊठकर चले आके मुनीस्वर के चरण पकरे फे
र भवन मे मुनीसुर को लेआए जैसे ब्रह्मसपत को
ईद्र लैआवै ॥९॥ सोरठा ॥ सभा मय बैताल तेहीं स
मै सुपढ़ उठे केसव बुध विसाल सुंदर सूरो भूपसो
वार्ता ॥ तव तिसी समै सभा विषै वैताल जो है जस ऊ
च्चारण करणवारो सो पढ़ता भया बुध है विसाल
जाकी सूर राजा सम सुंदर ते सूरवीर हैं ॥१०॥ कवि
त्त ॥ विधके समान हैं विमानी क्रितराज हैं स विविध विबु
ध जुत मेरू सो अचल हैं दीपत दीपन अतसानो दीप
दीप यत दूसरो दलीप सो सुदछना को वल हैं सागर
उजागर कि बहु कहनी को पति छिनदान प्रीय कि धोस
रजअमल हैं सभ विपस सरथ राजे राजा दसरथ भा
गीरथ पथ गामी गंगा को सो जल हैं ॥ वार्ता ॥ राजा दसर
थ ब्रह्मा के समान हैं सो कैसे हैं जाने विमान मै कीए हैं हं
सराज कौ हंस ब्रह्मा के वाहन हैं राजा कैसे है जाने विमा
नका पालकी मे कीए है राजा अरथ कि पालकी उठाव
नवारे कहार राजा हुए हैं अथवा विमानी का मान ने र
हत कीए हैं हंस का सूरय सम राजा जिसने अथवा रा
ज हंस नाम सूरय को भी है जाने क्रितका जे रथ मै सूरज
विमानी का विसेष मान सो कीए है पूजे हैं फेर विवध
का अनेक प्रकार के जो विबुध मंडन तिनके सहत हैं ॥

यांतेसुमेरपरवतसमहै सोअनेकजोविवुधदेवतातिन
केसहतहै फेरजाकीदीपतसोभाअत्यंतदीपतीहैजासो
सातोदीपसुभायमानहोतेहै कहूंदीपज्योंअैसेपाठहै
तोदीपकसमअैसेअरथकीजेसोमानोदूसरेदीपकेस
मानहै सुदछनाक्यासुंदरउस्त्रीकोजाकेवलहै अरथकि
उस्त्रीपरमसुंदरहै अथवासुंदरजोहैदछनाकालीभग
ताकोजाकेवलहै अरुराजादसरथकेसुदछनाक्याभ
लीदछनाकोवलहै वडोदानीहै अथवाप्रसिधसमुद्र
है सोवहुतनवाहनीनदीकोपतहै अरुयहिवाहनीक्याव
हुतियासेनाकेस्वामीहै अथवानिरमलसूरजहै ताको
नहीं छिनदाक्यारात्रप्यारीहै याकोदानकीछिनप्रियहै अैसे
सरवप्रकारसोसमरथराजादसरथजूसोमतेहै श्रीभा
गीरथकेरसतेचलनेतेगंगाजीकेजलसोहैसोभीभागी
रथकेरसतेचल्योहै ॥११॥ दोहरा ॥ जद्यपईधनजरग
एअरगनकेसबदास तदपप्रतापानलनकेपलपल
वढतप्रकास ॥ वार्ता ॥ जद्यपईधनरूपीजोशत्रुनकेस
मूहथे सोतोजरगये परतोभीप्रतापरूपीअगनकोपल
पलमैप्रकासवढतहै ॥१२॥ तोमरछंद ॥ दोहरा ॥ सगनआ
दिरचहै जगनरचियेवहुसुषकंद वचनचारनोवरणमै
वरणोतोमरछंद ॥ वहुभांयपूजसुराय करजोरकरथर
पांय हसकेकह्योरिषमित्र अववैठराजपवित्र ॥ वार्ता ॥
वडेभायसोंराजानेपूजनकरके अरहाथजोरकैचरणो
मैपरे तवहसकरके विस्वामित्रजूनेकह्यो हेराजनअ
वविराजिये ॥१३॥ मुनिरुवाच ॥ सुनदानमानसहंस ॥
रघुवंसकेअवतंस मनमाहिजोअनतनेहु इकुवातमं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

24A

गेहु॥वार्ता॥सुनोहेदानरूपीमानसरोवरकेहंस हे
रघुकेवंसकेमुकट जोतुमारेमनमैसोसोअपकसने
हहे तोएकवातमोकोमांगतेदेईए॥१४॥अथत्रिनग
तछंद॥दोहा॥छंदरचैत्रैनगनकोदेहुएकगुरुअंत
प्रगटकसोयहिअत्रिनगतछंदनामभगवंत॥रा
जोवाच॥सुमतिमहारिषिसुनिए तनधनसववस
गुनिए मनमैहोयसोकहीए धनसोआपनजोलही
ए॥वार्ता॥राजउवाच॥हेस्त्रेष्टवुधवारेमहारिषतुमसु
नोमेरेसरीरअरुधनुसमआपनेवसजानिए यातेगुन
कपाविचारकेजोतुमारेमनमैहोयसोकहीए सोईध
नधनहैजोआपग्रहनकरोगे॥१५॥रिषिरूवाच॥दोध
कछंदलछन॥दोहा॥आदअंतगुरुमधपुनितीनेस
गुनविचार पदएकादसवरणकोदोधकछंदउदार॥
रामगएजवतेवनमांही राकसवैरकरैवहुधांही राम
कुमारहमैंनपठीजे तौपरपूरनजग्यकरीजे॥वार्ता॥
जवतेपरसरामजीवनकोगएहै तवतेराकसवहुतप्रका
रसोवैरुकरतहै यहिजोतुमारेरामचंद्रपुत्रहैसोहमको
दीजे तौहमजाकेजग्यकोसंपूरणकरै॥१६॥तोटक
छंदलछन॥रचपदवारहिवरणकोकेसवदाससुजा
न चारसगनकोचारमततोटकछंदवषान॥यहिवा
तसुनीन्त्रिपनाथजवै सरसेलगेआषरचितसवै मुष
तेकछुवातनजायकही अपरायविनारिषिदेहदही
वार्ता॥जवराजादसरथनेएहवार्तासुनी तवसंपूरण
वारताकेआषरतीरकेसमानचित्तकोलगे तवराजाद
सरथजीकेमुषतेकछुभीवारतानहीकहीजाती अ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परायते विनाहीरषीस्वरनेदेहद्दगपकरी॥१७॥राजो
वाच॥अतिकोमलकेसववालकना वहुदुषकर
रछैसयालकना हमहीचलहैरिषसंगअवे स
मसेनचलौचतुरंगसवै॥वार्ता॥तवराजादसर
थजीकहनलागे इनमेतोअवहीअत्यंतकोम
लवालकनाहै अरुराकसनकोमारकोअत्यंतदु
सकरहैक्यावडेवलसेमारेजानवारेहै हेरिषी
स्वरहमहीअवतुमारेसंगचलीऐ चारप्रकारकी
संपूरणसेनाकोसजकरकेमैचलो॥१८॥रिषिरुवा
च॥छप्पा॥जिनहाथनहठिहरषहरनहरनीहर
नेदन जिननकरनसिंघारकहामदमत्तगयंदन
जिनवेधतसरलेंछलैछनिपकुअरंअरमन तिन कु
वाननवाराहकाछनहिमारनसिंचन निपनाथ
नाथदसरथअकथकथाकथतयहिमानिऐ मि
गराजराजकुलकलसअववालकवियनजानिऐ
॥वार्ता॥मुनीस्वरदृष्टांतदेकैकहितहै राजकुमार
कोवालककरकेनाजानिऐ जिनहाथनसोहठ
करकेअनंदसोहरनेदनजोहैसेरकेपुत्रहरनीआंको
मारतहै जिनहाथनसोमदमेमतजोहैहाथी तिना
कोकहासिंघारनहीकरतहैकरतहीहै फेरलाष
नहीसरक्याजिनावाणासौराजाकोपुत्रलछ्यक्या
तिसानिअंकोवेधतहैकोमलमनजंकोसोति
नवाणनसोवाराहकासूरनकोअरुवाघनकोअ
रुसेरनकोकहानहीमारतहै मारतहीहैहेराजाद
सरथयहितुमअकथजोनहींजायऐसीकथाक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हितेहैं मृगराजज्योंसिंहअरुराजाइनकेकुलके
जोकलसहैतिनकोवालकअरुवूढेनाजानीये॥
सुंदरीछंद॥लं॥चारभगनकोसुंदरीछंदअवी
लोहोय॥प्रतपदद्वादसवरनकोवरनैकविजन
सोय॥ राजनमैतुमराजवडेअति॥मैमुषमाग्यो
सुदेहुमहामत॥देवसहायकहौंनरनायक है
यहकारजरामहलायक॥२०॥वार्त्ता॥राज्योवि
षेतुमअत्यंतवडेराजाहो जोहमनेमुषसोंमा
ग्यो है सोहेवडीवुद्धवारेहमकोदेवो हेराजन
तुमभीदेवत्योंकेसहायकहो परयहकारजतो
श्रीरामचंद्रजीकेहीलायकहै सुल॥मैजुकह्यो
रिषदैनसुलीजै॥काजकरोहठभरनकीजै॥
प्रानदीयेधनजाहदीयेसव॥केसवरामनजा
हदीयेअव॥२१॥वार्त्ता॥हेरिषीश्वरजोमैनेदै
नोकह्योसोलीजीये॥अपनोकार्यकरोअरुहठ
भरलकरकेभीनाकरीये प्रानभीदीयेजातेहैं॥
अरुधनभीसंपनेदीयेजातेहै परअवश्रीरा
मचंद्रजीनहीदीयेजाते॥रिषरउवाच॥राज
तज्योधनधामतज्योसव॥नारतजीसुतसोच
तजीतव॥आपनपौलुतज्योजगवंहहि॥सत्व
नटेकतज्योहरिचंदहि॥२२॥वार्त्ता॥राजाहरि
चंदनेराजतजदीयो धनअरुघरसमत्यागदी
ये अरुअपनाआपभीत्यागदीया परराजाहरि
चंदनेसत्यनहीत्याग्यो॥ राजवहेवहसाजवहे
पुर॥नामवहेवहिधामवहेगुरु॥सुठसोंसुठोई

गु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वांधतहोंमन॥ छाडतहोंन्रपसत्यसनातन॥ २३ वा
र्त्ता॥ हेराजनतेंधरमकोत्यागतहै वहीतोराजहै
अरुराजकोसाजहै वहीअजुध्यानगरहै नाम
भीरघुवंसीवहीहै धरमभीवहीहै गुरुभीवहीहै
रूठेपदार्थनसोंरूठोइमनकोतुमवांधतेहो॥
सनातनजोआदितेचल्योआयोतुमारेग्रहमैसां
चताकोछोडतहो॥ दोहरा॥ जान्योविश्वामि
त्रकेकोपउठ्योउरआय॥ राजादसरथसोंकह्यो
वचनवसिष्टवुलाय॥ २४॥ वार्त्ता॥ जवजान्यो।
किविश्वामित्रजीकेहींयेमैकोपआनकरकेउठ्यो
हैं तवराजादसरथपैंवसिष्टमुनिजीनेकह्यो॥
षटपदछंद॥ इनहींकेतपतेजजगपकीरक्षाक
रहै॥ इनहींकेतपतेजसकलरक्षसवलहरहै॥
इनहींकेतपतेजतेजवढिहेतनतरन॥ इनहींकेत
पतेजहोंहरोकारजपरन॥ कहिकेसवजैजुतआ
यहैइनहींकेतपतेजघर॥ न्रपवेगरामलछम
नदुओसोंपोविश्वामित्रकर॥ २५॥ वार्त्ता॥ हेराज
नइनविश्वामित्रजीकेहीतपकेतेजसोंजगपकीर
क्षाकरेंगे॥ अरुइनोकेहीतपकेतेजसोंसपनेरा
कसोंकेवलकोनासकरेंगे॥ अरुइनहींकेतपके
तेजसोंसरीरमेतेजवढेगो॥ करणक्याकवच
केसमान॥ अरुइनोकेहींतपकेतेजसोंसभका
र्यपूर्नहोवेगे॥ इनोकेहीतपकेतेजसोंजयाकेस
हितघरआवहिंगे॥ हेराजनतिसतेसीघ्रहींरा
मचंद्रअरुलछमनजीकोविश्वामित्रजीकेहाथ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

26A

मैसौंपीये॥ सोरठा॥ राजाअौरनमित्रजानो
विश्वामित्रते॥जिनकोअमितचरित्ररामचंद्रमे
मानीये॥२६ वार्त्ता॥ हेराजनविश्वामित्रकेसमा
नअौरूमित्रकोइनहीहै जिनकोअमितचरित्ररा
मचंद्रमेमानीयेहै॥ श्रीरामचंद्रजीविषेजिनोके
अमितक्याअप्रमानअनेकचरित्रहै॥ दोहरा॥
न्रपपैवचनवशिष्ठकेकैसेमेटेजाह॥सोंपेवि
श्वामित्रकोरामचंद्रअकुलाय॥२७॥ वार्त्ता रा
जादसरथजीसेंगुरूजोवशिष्ठमुनितिनोकेव
चनकैसेमेटेजावे याते अकुलायकरकेविश्वामि
त्रजकोश्रीरामचंद्रराजानेसौंपे॥पंकजवाटकाछं
दल॰॥ आदिभगनपुननगनरचवहुरजगनदै
आन॥पुनलघुपंकजवाटकातेरहवरनवषान॥
रामचलतन्रपकेजुगलोचन॥वारभरेभयेवारद
रोचन॥पांयनपररिषकेसजमोनहि॥केसवउठ
गयेभीतरभोनहि॥२८॥ वार्त्ता॥ रामचंद्रजकेच
लतेहूयेराजादसरथकेदोऊनेत्रजलसोंभरेहू
येमेघकीकांतकेसमानभये तवराजादसरथरि
षीश्वरकेचरनोमैपरके फेरमौनकोधारनकर
केभवनकेभीतरउठकेजातेभये॥ चामरछंदल॰
रगानजगानपुनरगानचचिवहुरोंजगानैआन॥
वहुररचोइकरगानगानचामरछंदवषान॥ वे
दमेत्रतंत्रसोधअस्त्रसस्त्रदैभले॥रामचंद्रलछमनै
सविप्रछिप्रलैचले॥लोभछोभमोहगावकामका
मनाहई॥नींदभूषप्यासत्रासवासनासवैगई २९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वार्त्ता॥ वेदकेमंत्रसैं तंत्रजोहैसाष्वताकोसोधकरके
श्रेष्टसस्त्रग्रुरुग्रस्त्रमुनीश्वरनेदीये फेरश्रीरामचं
द्रश्ररुलछमननेरोऊनकोब्राह्मनविश्वामित्रजीसी
घ्रलैकरचलतेभये॥ तवलोभग्ररुक्षेभतेमोहग्ररु
गर्वग्ररुकामतेकामना कहुंवामश्रैसोपाठहै तहां
सुंदरकामनायहसभदूरभई॥ ग्ररुनींदभूषप्यास
त्रासक्याभय वासनाचाहना यहसभजातभई रा
जाकी ग्रथवासस्त्रग्रस्त्रहरिनकीसमर्थताते रघुना
थजीकी॥ निसपालकाछंद॥ कामवनरामसवकाम
तरुदेषीये॥ नैनसुषदेनमनमैनमैलीषीये॥ ई
सजहिकामतनकैग्रतनडारीयो॥ छाडवहजगथ
ललोचननिहारीयो॥ ३०॥ वार्त्ता॥ कामवनविषेरा
काम मचंद्रजीनेसभैक्यामनोहरवृक्षदेषे॥ ग्रथवातर
क्याग्रत्यंतकामसुंदरवनदेष्यो॥ नेत्रोंकोसुषकेदेन
वारोमनविषैमैनक्याकामभैवनजान्यो शिवजूने
जहांकामकेसरीरकोग्रतनकरकेगेरदीयोहै फेर
उसस्थानकोछोडकरके जाकेजगपस्थलकोदेषते
भये॥ दोहरा॥ रामचंद्रलछमनसहिततनमनग्र
तसुषपाइ॥ देष्योविश्वामित्रकोपरमतपोवनजाइ
३१॥ वार्त्ता॥ रामचंद्रजीलघमनकेसहिततनग्ररुम
नमैग्रत्यंतसुषपायकरकेविश्वामित्रजीकोजोतपोव
नहैसोजायकरकेदेष्यो॥ इतिश्रीमतसकललोक
लोचनचकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रकायात
पोवनदर्सनोनामद्वितीयोप्रकास॥ दोहरा॥ कथात्रिती
यप्रकासमैवनवरननग्रभमान॥ रक्षनजगमुनीसको

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

27A

अवनस्वयंवरज्ञान॥ वार्त्ता॥ तीसरेप्रकासमैवनको
सुभवनिनहै अरुमुनीश्वरकेजपकोरत्तनहै सी
ताजूकेस्वयंवरकोसुनवो॥ इतनीकथाहै॥ अथवि
श्वामित्रआश्रमवर्नन॥ षटपदछंद॥ तरुतालीसत
मालतालहिततालमनोहर॥ मंजुलवंजुलतिलकव
कुलवहुनारियेरवर॥ एलाललितलवंगसंगपुं
गीफलसोहै॥ सारीसुककुलकलतचित्तकोकलअ
तमोहै॥ सुभराजहंसकलहंसकुलनाचतमत्तम
यूरगन॥ अतिप्रफुलितफलितसदारहैकेसवदास
वचित्रवन॥ १॥ वार्त्ता॥ कैसोवनहै॥ जामैवृक्षताली
सकया शब्दकेकरनेवारेहै॥ अरुतमाललगाये
तालोंकेहितवासते॥ अरुसुंदरहैतालवृक्षजामै
सुंदरवैंतकेवृक्षहै॥ वकुलहै॥ अरुवहुतेनारीय
लकेवृक्षहै॥ एलाकयाइलायचीयाकेवृक्षहै सुंद
रलौंगहै॥ पुंगीफलसुपारीयांकेवृक्षहै॥ सारकाअ
रुतोतयोंकेसंवूहकेसहितहै॥ अरुकोकलाजहांचित्त
कोअत्यंतमोहतहै॥ सुभजहांराजहंसअरुकलहंसो
केसंवूहहै॥ उनमत्तमोरनकेसंवूहजहांनाचतहै॥
अत्यंतप्रफुलतअरुफल्योहुयोसदारहतहै ऐसोपवि
त्रवनहै॥ दोहरा॥ होमधूमजुतवरनियेव्रह्मघोष
मुनिवास॥ सिंघादिकमृगमोरअहिसुभइभवैरवि
नास॥ २॥ वार्त्ता॥ होमकेधूमकेसहितमुनीश्वरैंको
वासहै॥ वर्ननकरीताहै॥ सिंहआदिकअरुमृगतेमोर
तेअहिक्यासरपइभक्याहाथीइनकोजहांवैरकोनास
रहितहै॥ स्वकीयाछंद॥ कहुंद्विजगनमिलसुभषा

अर व्रिक्ष सबद केसहि तै ४८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिपढहीं॥कहुंहरिहरिहरररटैहीं॥कहुंम्रगपति
म्रगासिक्रूपयपियहीं॥कहुंमुनिगनचितवाहिहरहिं
यहीं॥४॥वार्त्ता॥फेरकैसोआश्रमहै॥जहांकहूंक
तोब्राह्मनोकेसंकरमिलकरकेस्रुपसोवेदकोपढ
तहै॥कहूंकहरिहरिजोरटैहै औहरहरजोरटैहै
ताकोरटतेहै कहूंकसिंहनीकेदुग्धकोम्रगनके
वालकपानकरतेहै कहूंकमुनीश्वरभगवान
कोहीयमेदेखतहै॥सचीकिध्यावतहै॥नराच
छंद॥विचार्यमानब्रह्मदेवअर्चमानमानीये॥अ
दीयमानदुख्यसुख्यदीयमानजानीये॥अदंडमा ६
नदीनगरवदंडमानभेदये॥अपठ्यमानपापग्रंथ
पठ्यमानवेदये॥५॥वार्त्ता॥विचारबेकेजोगजहां
परब्रह्महीहै॥अरुअर्चवेकेजोग्यजहांदेवजोपर
मात्माहैसोईमानीयेतहै॥नादैवेकेजोग्यजहांदुख्य
हीहै॥दैवेकेजोग्यसुखहै नादंडदैवेकेजोग्यज
हादीनहीहै॥वलीनहीहै॥अरुदंडदैवेकोजोगज
हांगरवहै॥अरुभेदहैक्यामेरोतेरोकोऊनहीकरत
अथवाअदंडमानजहांदीननकोगरवहै॥ताकोको
ऊदंडनहीदेत॥अरुभेदजोभेदनकरबोहै॥पदाथी
नकोसोदंडबारोहै॥नापढवेकेजोगजहांपापहै॥
पढवेकेजोगग्रंथहै॥विकछंद॥साधुकथाकथि
येनितकेसवदासजहां॥निग्रहकेवलहैमनकोदि
नमानतहां॥पावनवाससदारिषकोसुखकोवरखै
कोवरनैरिषताहविलोकतहीहरखै॥६॥वार्त्ता॥
नित्यजहांसाधुक्याश्रेष्ठकथाहीकहीतीहै॥पकड

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाजहांकेवलमनकोहीहै॥समभमनकोवसक
रतेहै॥दिनदिनप्रमानस्रष्पीकिनित्य पवित्र
जोस्रस्थानहैरिषीष्वरको॥सोसुषकोवरषाव
तहै॥कोनहैजोतिसरिषकोवनैनकरसके॥
जाकोमैसोवासहै देषतेहूयेजाकेहृदाप्रसन्न
होतहै॥ चंचलाछंद॥रघुबेकोजग्यकूलवैठे
वीरसावधान॥होनलागेहोमकेजहांतहांसभे
विधान॥भीमभांततम्रकासुभंगलागकनेस्राय॥
वानतानरामपैननारजानछाडजाय॥७॥वार्त्ता
रष्याकरनेकोजग्यकेकिनारेसावधानहोकेसु
रवीरश्रीरामचंद्रलछमनजीवैठतेभये॥तवहो
मकेजहांतहांसंपूर्नविधानहोनलागे॥तवभीम
क्याभयानकरीतसोंतारकानामराकसनीसोस्रा
यकेभंगलागीकरने॥तवरामचंद्रजूनेवानताको
परइस्त्रीजानकरकेछोड्यानहीजाता॥सोरठा॥
रिषरउवाच॥करमकरतयहघोरविप्रनकोदस
हूंदिसा॥मत्तसहिसगजजोरनारिजाननहछो
डिये॥८॥वार्त्ता॥हेश्रीरामचंद्रजूयहब्राह्मनो
कोदसोदिसाविषेघोरकरमकरतहै॥उनमत्त
हजारहाथीकेसमानयामैजोरहै॥इस्त्रीजानके
याकोनाछोडीये॥रामोवाच॥सुसवदनाछंद॥
सुनमुनिराई॥जगसुषदाई॥कहोवसोई॥जिं
हजसहोई॥९॥वार्त्ता॥हेमुनीष्वरोंकेराजा तु
मसुनो॥तुमजगतकोसुषदायकहो॥सोवार्त्ता ह
मकोकहीये॥जिसतेजगतमैजसहोवे॥कुंडलीया

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
२९
रो

29

47

सुना [illegible] चनकी हुती दीरघ जिंभा नाम सुरनाय
कवाहि सेचरी परम पापनी नाम परम पापनी नाम
और रूपजीके विधाता नारायन सो हती चैक्र चिं
तामन दाता नारायण सो हती सकल दिज दूषन
संजुन ल्यों अब त्रिभुवन राय तारका नार हु सुसुत की
कानी॥ हे रामचंद्रजी ऐसी जो विरोचनें राकसें पुत्री नामा
एक दीरघजी भा है नाम जांको सो परम पापन इस्त्री
ई इने मारी थी अरु और एक परम पापनी इस्त्री सु
क्र की माता भार्ई थी सो चिंतामणि के समान जो सं
पूरण कामना के दैनवारे श्री नारायणजी हे तिनो
नें चक्र सो मारी सी सो कैसी थी ब्राह्मणो के दूषनो
के सहत थी तैसे ही अब हे तीन भवन के स्वामी तारका
को सहत पुत्रो के नारो॥१॥ दोहरा॥ द्विज दोषीन वि
चारीए कहा पुरष कहा नारि राम विरामन कीजीए
वान नारका तार॥ वार्ता॥ जो ब्राह्मणो को दोषी होय
ताको ना विचारीए क्या पुरष होय क्या इस्त्री होय ति
सतें हे रामचंद्रजी अब देर ना करीए याबाणसो ता
रकाको तारीए॥२१॥ मरहटा छंद॥ सुन मुनिवानी यं त
न गुणतानी जानी द्विज दुषदानी तारका सिंघारी
दारुण भारी नारी अतवल जानी मारीच विडार्यो
जेल पडता र्यो मार्यो सबल सुबाहु देवन गुन पर
ष्यो पुस पन वरष्यो हरष उठ्यो अत सुरनाहू॥ वार्ता॥ ऐ
से मुनी स्वर की वानी सुन कर के रघुनाथजूने धनु
ष पर गुण चिल्ला सो ताने आ अर जानी कि एह ब्राह्म
णो को दुष देनवारी है तब अन्पन दारुण काम या

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

29A

नकजोताडकाहै सोसिंघारकरी अत्यंतवलवारी
इस्त्रीजानकरकै मारीचजोअसुरथासोभीविडारो
कयावाणसोमारकैहटायो समुद्रतेपारकीउफेरसह
तवलकेजोसुवाहुराकूससोमास्यो देवत्योनेगुणप
रख्यो अरुफूलनकोवरषायो देवतिउकेराजाइ
द्रसोअत्यंतप्रसंनभये ॥१२॥ दोहरा ॥ पूरनजग्यभ
योजहीजान्योविस्वामित्र धनुषजग्यकीसुभकथा
लागेसुननवचित्र ॥ वार्ता ॥ जवजग्यपूरणभयोविस्वा
मित्रजूनेजान्यो तवधनुषकेजग्यकीजोसुभकथा
हैसुंदरसोसुनवेलागे ॥ चंचरीकछंद ॥ आयोतिहका
लब्राह्मणजग्यकोथलदेषकै ताहिबूफनवोलकैरि
षभांतभांतविसेषकै संगसुंदररामलछमणदेषदेषसु
हरषहीं वैठकेसवराजमंडलवरनहींसुषवरषई ॥
॥ वार्ता ॥ तिसीकालविषैजग्यकेअस्थानकोदेषक
रकेएकब्राह्मणतहांआवताभया तिसकोवुलाय
करके रिषीस्वरविसेषताकरके अनेकभांतसोपूछते
भये विस्वामित्रजीकेसंगजोहैसुंदरश्रीरामचंद्रजीअ
रलछमनजी तिनकोदेषदेषके सोब्राह्मनप्रसंनहो
तहै अरुवैठकरकैराजमंडलकोवरननकरतहैसुषको
वरषावतहै ॥१४॥ सारदूलविक्रीडतछंद ॥ कविरुवाच ॥
सीतासोभनव्याहउत्सवसभासंभारसंभावनातनका
रयंसुसमग्रव्यग्रमिथलावासीजनासोभना राजाराज
पुरोहितादिसुहिदामंत्रीमहामंत्रदा नानादेससमाग
तान्नृपगणंपूजापरासर्वदा ॥ वर्ती ॥ श्रीसीताजूके
जोहैसोभायमानविवाहितिसकेउत्सवकीजोहैसभा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
३०

संभारक्यामारीतंकीजहांसंभावनाक्याउलहोतीहै॥
अथवासंभावनाक्यासमसमाचाहतीहै अैसेवने ति
सविवाहकेहीकारयविषेसुकिआसुंदरसमग्रक्यासं
पूरणव्यग्रक्याइकठेहूएहूएमिथलापुरीकेवासील्लो
कसोभतहै राजाअरुराजाकेपुरोहतनतेआदजोहैसु
हिदजनअरुमंत्रीजोहैमहामंत्रकेदैनवारेसोसोभते
है नानाप्रकारकेदेसननेआएहैराजउकेसमूहजो
सरवदाक्यासदापूजापराक्यापूज्यमानहै अथवाम
त्रीआंदिकनकारयेमेसोभतहै अनेकदेसनतेआए
जोहैराजउकेसमूह तिनोकीपूजापराहै क्यापूजासेपू
रणहैसदा॥१५॥दोहरा॥षंडपरसकोसोभिजैसभामध्य
कोदंड मानोसषअसेषपरपरनहारवलवंड॥वार्ता॥
षंडपरसजोहैसिवजू तिनकासभाविषेकोदंडक्याधनु
षसोभतहै सामानोअसेषक्यासंपूरणपृथिवीकेधारन
वारोवडोवलकानसेसनागहै॥१६॥सवैया॥सोहतमंच
नकीअवलीगजदंतनमईछविऊजलछाई उसमनोव
सुधामैसुधारसुधाधरमंडलमंडजुन्हाई तामहिकेसवदा
सविराजतराजकुमारसभैसुषदाई देवनसाजनदेवस
भासुभसीयसुअंबरदेषनआई॥वार्ता॥तहांसभामैसि
घासनोकीपगतकैसीसोभतहै हाथीउकेदंतोमैहैक्या
गजदंतनको जिनमैकामवहूतहै याहीतेऊजलछव
जाकीछायरही सोमानोईसक्याव्रह्मानेप्रथवीविषेसु
धारकरकेचंद्रमाकेमंडलकीचांदनीमंडनकरीहै तिस
विषेजासंपूरणोकासुषदायक राजकुमारविराजतेहैसो
मानोसीताजीस्वयंवरकेदेषकेकोदेवतियाकेसहितहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

30A वसभाआईहै अथवाराजकुमारजोहैराजनकीपुत्रीसो
तामैराजतहैकैसीदेवनकीकन्यादेवांगनाकेसहितदेव
तियोकीसभासीताजूकेस्वयंवरदेषनेकोआईहै अथवा
सीताजूकोअरसुअवरक्याअपनेजोहैवरस्वैषस्वामी
श्रीरामजूतिनोकेदेषनकोदेवसभाआईहै॥१७॥दोह
रा॥नचतमंचमंचालकाकरसेकलनअपार राजनहै
जननृपनकीचिंतवृतिसुकमार॥वार्ता॥करेजोहैअ
पारहीसकल[illegible]तकपारूकठेमंचसिंघासनतिनोपर
पंचालकापूतरीआनाचतहै अथवाकरहाथनसो
जोसकलनरूकरीहैहाथमेहाथदैदेकेसोपूतरीकैसी
नाचतहै सोमानोराजिउकेचिंतनकीवृतीआविरा
जतहै॥१८॥सोरठा॥सभामध्यगुनग्रामवदीसुतसुम
सोभिजो सुमतविमतइहनामराजनकोवरननकर
त॥वार्ता॥तिससभाविषैगुणोकेहैसमूहजिनमैअै
सेवदीजनकेदूपुत्रसोभतहै सुमतअरुविमतहैनामजि
नकेसोराज्योकावरननकरतेभऐ॥१९॥दोहरा॥को
यहदेषतआपनोपुलकनवाहुविसाल सुरभसुयंवर
जनुकरीमुकलतसाषरसाल॥वार्ता॥हेविमतयहै
राजाकौनहैजोआपनोपुलकावलीकेसहितजोविसा
लवाहहैताकोदेषतहै ताकीकैसीसोभाहैमानोमुक
लितकयाषिहीजोआवकीसाषाहै तिनतेस्वअंवर
मैसुरभिकासुगंधकरीहै अथवासुरभकयावसंतरि
जै नुकेसमानहैस्वयंवरतामैआवकीसाषाप्रकासभई
है॥२०॥विमतउवाच॥सोरठा॥जिहजसपरमलमत
चंचरीकचारनफिरेदिसविदिसनअनुरतसुतामल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पीठ न्रिप॥वार्ता॥विमतउवाच॥जाकोजसरूपीसुगं
धमेउनमत्तभयो भमररूपीचॅरएाफिरतहै दिसाअ
रु विदिसानमेमगनहुयोसोयहमल्लकानगरीमे
है पीठकपासिंघासनजाकोऐसोराजाहै॥२१॥दो
हरा॥सुमतिउवाच॥जाके सुषमुषवासतेवासित
होतदिगंत सुपुतिकहोयहिकौनन्रिपसोभतसो
भअनंत॥वार्ता॥जाकेसुषमुषकपासहिजकेउसुगं
धतेदिसानकेअंतसुगंधतहोतहै अरुसोभाजाकीअ
नंतसोभतहैसोयहिकौनसोराजाहै॥२२॥विमतउवा
च॥सोरठा॥राजाराजटिगवामभालललालसोभीस
दा अतप्रसिधइहनामकासमीरकोतिलकयहि
वार्ता॥यहिराजियोकाराजाहै अथवायहिराजावा
मक्याउत्तरदिसाकेराजाहै मसतकमेजाकेलाल
सोभतहै याकोअत्यंतप्रसिधनामहै अरुकसमीरदे
सकोतिलकहै॥२३॥सुमतउवाच॥दोहरा॥निजप्र
तापदिनकरकरतलोचनकमलंकास॥पानषात
मुसकातम्रिदुकोयहि केसवदास॥वार्ता॥जोअ
पनेप्रतापकरसूरजकोभीतेजवानकरतहै अथ
वाजोअपनेप्रतापरूपीसूरजकरकेनेत्रनिरूपीक
मलनिकोप्रकासकरतहै अरुपानषातेहूयोमंद
मंदहसतहै सोयहिकौनहै॥२४॥विमतउवाच॥सो
रठा॥न्रिपमानीकसुवेसदत्यएानीयजीयभावतो॥
कटनटसुपटसुदेसकलकांचीसुममंडली॥वार्ता॥
राजअग्रामेमानी है अरुसुंदरहैवेसजाको दछन
दिसारूपीजोइस्त्रीहैताकेचित्तकोभावतोहै अथवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

31A चतुर इस्त्रीअं के चित्त को भावत है कमर के किनारे सुं
दर लपेट्यो हूयो है वस्त्र जा को सुंदर कांचीपुरी मे है सु
भ मंडली जा की ॥ २५ ॥ सुमति उवाच ॥ दोहरा ॥ कुंड
लपरसन मिस कहत कहो कोन यहि राज सभ सरा
सन गुन करो करनालंवत आज ॥ वार्ता ॥ कुंडलो
के परसने के वहाने कर के कहित है कि सिव जी के स
रासन क्या धनुष को गुन चिलो सो आज कर णो ताई लं
वत करोगो सो यहि कोन सो राजा है ॥ २६ ॥ सोरठा ॥ जा
नहु वुध निधान मत राजत्या राज को समर समुद्र स ‘स
मान जानत सुभ अवगाह के ॥ वुध को चरम न सदे को ‘वार्ता
राजा इस राजा को जानो समुद्र के समान जो जुध ता को
सभ रीत सो अवगाहन करन जानत है ॥ २७ ॥ सुमति उ
वाच ॥ दोहरा ॥ अंगराग रंजत रुचिर भूषण भूषत देह
कहत विदूषक सो कछू सुपन कोन निप एह ॥ वार्ता ॥ भूष
णो सो सु भायमान जो देह सो अंगराग जो है अरगजा ता
सो रंजत क्या प्रसंन है विदूषक क्यान के लीए सो कछू क
हत है सो कहो यहि कोन राजा है ॥ २८ ॥ सोरठा ॥ चंदन
चित्रत अंग सिंधु राज यहि जानियें वहुत वाहनी संग मु
कता माल विसाल उर ॥ वार्ता ॥ चंदन सों चित्रत है अं
ग जा को सो यहि सिंधु देस को राजा है वडी है सेना संग
जा के अरु मोतिओ की माला है विसाल हृदय विषे जि
नो के ॥ २९ ॥ दोहरा ॥ सगरे राजसमाज के कहे गोत गु
न गुन ग्राम देस प्रभाव सुभाव सभ कुल वल विक्रम
नाम ॥ वार्ता ॥ संपूरण राज के समाज के गोत अरु गु
णो के समूह कहे है देसन को प्रभाव अरु सभ सुभाव

तेकु लोकेवलस्वरूपरामप्रेमरूत्यादिक ॥३१॥ कवित्त॥
विमतउवाच॥ पावकपवनमुनयंनगपत्तगपित्रजेतेजो
नवंतजगजोतषिनगाएहै असुरप्रसिधसिधतीरथ
सकलसिंधुकेसबचराचरजेवेदनवताएहै अजरअम
रअजअंगीऔअनंगीसववरनसुनावैऐसेकोनैगुन
पाएहै सीताकेसुयंवरकोरूपअवलोकवेकोभूपन
कोरूपधरविस्वरूपआएहै॥वार्ता॥पावककयअग
नतेपवनतेमुनीसुरपंनगकयासरपअरुपत्तगकयाप
छीअरुपितरऔरजितनेजोरवारेजगतविषेजोतसो
ऊनेगाएहै फेरअसुरतेप्रसिधजोहैसिंधुअरुसंपूरण
तीरथतेसंमुद्रऔरजोचरतेअचरजीववेदोनेवताए
है औरजोनसेजीवजरानेरहतअरुम्रितनेरहतहै अ
जनमहैअंगवारेहै अरुजोअंगतेरहतहै सभनोकोजो
वरननकरकेसुनावेऐसेतोकिसकवीस्वरनेगुनपाए
है अरथकीकाहूतेनहीवरनेजाते जेश्रीसीताजूके
स्वयंवरकेरूपकेदेषवेकोलोकआएहै मानोराजिओं
केरूपधारनकरकेविस्वकेहीरूपनहोंआएहैग॥३१॥वि
मतउवाच॥सोरठा॥कह्योविमतयहिदेरसकलसभा
हिसुनायकै वहुऔरकरफेरसमहीकोसमुझायके॥वार्ता॥
संपूरणसभाकोतिससमैसुनायकरकेविमतनामावंदी
जननेयहिटेरिकरिकेकह्यो चारोतरफहाथकोफेरकर
केसंपूरणोंकोसमुझायकरकेकह्यो॥३२॥गीतकाछंद॥
कोऊआजराजसमाजमैवलसंभुकोधनुकरषहै पुन
स्रवनकेपरमानआन सुचित्तमैअतिहरषहै वहुराजहोय
किरंककेसबदासमोसुषपायहै न्रिपकंन्यकायहितासु

32A केउरपुषपमालानायहै ॥ वार्ता ॥ जोकोऊ आजरागे
याकेस माजविषेवलसोसिवजूकेधनुषकोषैचेगो फेर
कानकेपरमानलिआयकरकेसुंदरचित्तविषेवडोप्रसंन
होवेगो सोवहिराजाहोवे अथवाकेगालहोवेसोसुषको
पावेगो यहिराजाजनककीपुत्रीजोहैसीताजूसोफूलनकी
मालाताकेहिदयविषेपावेगी ॥ ३३ ॥ दोहरा ॥ नैकुसरास
नआसनैनजेनकेसवदास ऊ राम केअटकैसभेराजस
माजप्रकास ॥ वार्ता ॥ तवरतीकुभीधनुषआसनकोना
छोडताभयाऊदमकोकरकेसपूरणाअटकेकाथकगए
प्रकासमानजोराजेडोकेसमाजहै अथवाप्रगटहो ॥ ३४ ॥
सुंदरीछंद ॥ सकतनकरीनहिमगनकरीअव सोननयोपल
सीसनयेसव देषेजोराजकुमारनकेवर चापचढ्योनहि
आपचहेपर ॥ वार्ता ॥ इनोनेधनुषकीसकतनहीकरी
है जोसकतवलकरनेतोचढावते यातेमगनकरीहैको
सभ धनुषआगेनिवेहै सोधनुषपलकारती भीनानिमयो
सभनोकेसीसनमैहै जोराजकुमारोकेवलयेसोसभदेषे
कोधनुषनोचढ्योनहीहै अरआपधरपरचढगाए अरथ
किनिलजभए ॥ ३५ ॥ अपरंच ॥ सवैया ॥ दिगपालन
कीभुवपालनकीलोकपालनकीकिनमातगईच्वै ॥ भा
ऊभएउठआसननेकहकेसवसंभुसरासनकोछुकाहूच
ढायोनकाहूउठायोनकाहूनिकायोनअंगुलहै कछु
स्वारथभोनभयोपरमारथआएहैवीरचलेवननाहै ॥
वार्ता ॥ दिसानकेजोपालकेवारेहैआठदिगपालतिनैकी
अरुराजयोकीओरजोलोकपाललोकोकेराजातिनोकी
माताच्वैकोनगई जिनोनैकोऊवीरनजायो सिवजूकेधनु

षको देखकरकेश्रासनोतेउठउठकेसभभांडभये।
नातोकाहूनेचढायो॥नाकाहूनेउठायोश्ररुडेंग्र
गुलीभीकाहूनेनानिवायो॥नातोकछूस्वार्थभ
योनापरमार्थभयो॥श्रायेतोसेघरतेवीरक्याश्र
माहिकरकेश्ररुचलेइस्त्रीहोकरके॥सभवलद
रभयेश्रवलाभये॥इतिश्रीमत्सकललोकलोच
नचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रकायांसीतास्व
यंवरवर्ननोनामत्रितीयोप्रकाशः॥दोहा॥कथा
चतुर्थप्रकाशमेवानासुरसंवाद॥रावनसोंश्ररु
धनुषकरदससुषमानविषाद॥१॥वार्त्ता॥चोथे
प्रकासमेयहकथाश्रावेगी॥वाणासुरसोंरावन
कोसंवादहोवेगा॥श्ररुधनुषकरकेरावनकेमा
नकोदूरहिवोहोयगो॥दोहरा॥सभहीकोसभ्रु
झोसभनवलविक्रमपरमान॥सभामध्यतेहीस
मेश्रायेरावनवान॥२॥वार्त्ता॥तिससमेसभनोके
वलकेप्राक्रमकोपरमानरराजाजनकनेसमझो
सभाकेविषेतिसीसमेरावनश्ररुवानश्रावतेभये॥
डिल्लछंद॥नरनारतवै॥भयेभीतसवै॥श्रचर
जयहै॥सभदेषकहै॥३॥वार्त्ता॥तवसंपूर्नइस्त्री
पुरषभयसोंभीतहोतेभये॥देषकरकेसभकहिते
भये॥वडोश्रचरजहै॥दोहा॥हैरावनदससी
सकोदैत्यसुवाहुहजार॥कीयोसभनकेचित्तर
सश्रदभुतभयसंचार॥४॥वार्त्ता॥दससीसकोरा
वनहै॥हजारभुजाकोवाणहै सभनोकेचित्तमे
श्रदभुतश्ररुभयानकरसहोतेभये॥रावनोवाच

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

33A विजोहाछंद॥ संभुकोदंडहैराजपुत्रीकिते॥ दू
कदैतीनकैजानुलंकाहिलै॥५॥ वार्त्ता॥ कहाशि
वजूकोधनुषहै॥ अरूकहांराजपुत्रीहै॥ धनुष
केदैतीनडुकडेकरकेताकोलंकाकोलैजाहुं॥ वि
मतउवाच॥ ससवदनाछंद॥ दससुषआवो॥ ध
नुषचढावो॥ कछुवलकीजै॥ जगजसलीजै ६
वार्त्ता॥ हेरावनआवो अरूधनुषकोचढावो क
छुकवलकीजीये॥ तोजगतमैजसपाईये॥ वान
उवाच॥ सुंदरीछंद॥ दसकंठरेसठछाडदैहठ
वारवारनवोलीयो॥ अवआजराजसमाजमैवल
माजचित्तनडोलीयो॥ गिरराजतेगुरजानियेसु
रराजकोधनुहाथलै॥ सुषपायताहिचढायके
घरजाहुरेजसमाथलै॥ ७॥ वार्त्ता॥ रेमूरष
रावनयाहठकोछाडदैवारंवारनावोलीयो॥
आजइससमैंराजपोकेसमाजविषेवलकोसजो
चित्तकोनाडुलाईये॥ गिरराजक्याकैलासतेभी
भारोशिवजूकोधनुषजानीये ताकोहाथमैलैके
अरूसुषपायकेफेरचढायकेघरजावो॥ जसको
ऐसेहाथमैलैकरके॥ रावनउवाच॥ मंथनाछंद
वानीकहीवान॥ कीनीनसोकान॥ अच्छापिआनी
न॥ रेवंदिकाकीन॥ ७॥ वार्त्ता॥ जोवाणासुरने
वानीकही॥ सोरावननेकानमैभीनाकरी॥ अर्थ
किवासूनी॥ अच्छापक्याअवहील्याऊरेवंदीजन
कानीनक्याराजाकीकन्यकाको कहूंकानीनभी
पाठहै॥ अपवाअच्छापिक्याहुनतांईभीतेनेनही
ल्यांदीराजाकीकन्या यहक्याकीयातेने॥ वाणउवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चा॥ विजोहाछंद॥ जोपैजीयजोर॥ तजोसमसोर॥
सरासनतोर॥ लहोजसकोर॥ ८॥ वार्त्ता॥ जोतेरे
प्रानोमैजोरहै॥ तोसमसोरकोतजो॥ धनुषकोतो
रकेकरोरजसकोपावो॥ अथवाजसकीकोरक्या
पांतिकोपावो॥ रावनउवाचकवित्त॥ वज्रकोअषर्व
गर्वगंज्योजिहपर्वतारजीत्योहैसपर्वसर्वभाजेलै
लैअंगना॥ षंडतअषंडआसकीनीहैजलेसपासचंद
नसीचंद्रकासोंकीनीचंदवंदना॥ दंडकमैकीनोका
लदंडहीकोमानषंडमानोकीनीकालहिकेकाल
षंडषंडना॥ केसवकोदंडभिसदंडअैसेदंडोअवमे
रेवाहुदंडनकीवडीयेविहंडना॥ ९॥ वार्त्ता॥ जिस
पर्वतारिक्याइंद्रकोजोघावज्रकोअषर्वक्याभारी
गर्वसोगंजनकीयोहै॥ अरताकोजीत्योहै॥ तवसं
फनेजोहैसपर्वदेवतासोदेवांगनाकोलैलैकरके
भाजगये॥ फेरआसक्यासीघ्रहींजलेसक्यावरु
नकीजोनाषंडनहोनबारीफाहीसोमैनेषंडत
करीहै॥ चंदनसोसोभाबानचांदनीकेसहित
चंद्रमानेवंदनाकरीहै॥ फेरकालकोदंडकोजो
मानहैअहंकारसोमैनेएकघडीकमैषंडनकर
दीयोहै॥ सोमानोकालकोजोकालहैतिसकेमा
नकीषंडषंडनाकरीहै॥ अर्थकिकालकोकाल
भीमेरेसनमुषनहीहोत॥ अथवाकालकेकाल
कीषंडनाकरी॥ अर्थकिकालकोनिरभैकरअ
पनेआधीनराष्यो॥ अथवाकालकेकालसमकी
षंडषंडनाकरी॥ कालकीघडीमोपैनहीआवत
है॥ अवअैसेहीवीसभुजदंडनसोंधनुषकोदंडो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

34A गो॥ मेरेभुजदंडनकोवडोअडंवरहै॥ वानउवाच॥
तुरंगमछंद॥ वहुतवदनजाके॥ विविधवचनताके
वहुभुजजुतजोई॥ सवलकहीयेसोई॥ १०॥ वार्ता॥
जिसकेवहुतेमुषहै॥ तिसकेनानाप्रकारकेवचनहै
अरजोवहुतभुजोंकेसहितहैसोईवलकेसहितहै
दोहरा॥ अतिअसारभुजभारहीवलीहोहुकंगेवा
न॥ ममवाहनकीजगतमैसुनदसकंठविधान॥
११॥ वार्त्ता॥ भुजनकोअत्यंतभारतेरोअसारहैवृथा
है॥ तुमहेवानवलीहोवोगेघरमै॥ तववानवोल्या
हेरावनमेरीवाहनकोजगतमैविधानहैकथन
ताकोसुने॥ सवैया॥ होजवहीजवपूजनजात
पितापदपावनपापविनासी॥ देषफिर्योतवही
तवकेसवसातरसातलकेजुविलासी॥ लेअप
नेभुजदंडअषंडकरोंछितमंडलछत्रप्रभासी॥
जानेकोकेसवकेतकबारमैसेसकेसीसनदीनउ
सासी॥ १२॥ वार्त्ता॥ मैजवजवपूजनकरबेको
जातथा अपनेपिताकेचरनोंको कैसेचरनहै
जोपापोंकेदूरकरनबारेहै॥ अरुपवित्रहै॥ सोत
वतवदेषकेफिरतासी जोसातोरसातलोंकेवि
लासकरनबारेलोकथेतिनको॥ तवअपनेभुज
दंडनकेजोअषंडदंडहै तिनोपैलेकरकेप्रथ्वी
मंडलकोछत्रीकीसोभासीकीयो॥ प्रस्न या
मैगतसंस्कृतदूषनहै॥ छितमंडलकोछत्रीकी
प्रभासोकीयोअैसेकसोचहीये॥ सीयहइस्त्री।
लिंगहै उत्तर॥ अैसेसर्घकरनो॥॥ छितमंडलको
छत्रीकीसोभासोकीयो॥ तवताकीजोसीक्या

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
३५
35

33

सोभा है अरु उसासी उसास लैवो सहारा है सो देऊन को
कोन जानत है कितनेक वार मैंने सेसनाग जी के सीस नये
दीए है ॥२३॥ रावन उवाच ॥ कमल छंद ॥ तुम प्रवल जो
हु ते भुजन वल संजुते पितु हम भुव ल्यावते जगतें सफा ज
वते ॥ वा० टी० ॥ जो तुम भुजन के वल सो संजुगत प्रवल है ते
तो पिता को प्रिथवी मै ल्यावते अरु जगत मे जसु को पावते
॥२४॥ वान उवाच ॥ तोमर छंद ॥ पितु आनिए किहि ओक
दिये दछ नास म लोक यहि जानि रावन दीन पितु ब्रह्म
ह के रस लीन ॥ वा० टी० ॥ पिता को किस स्थान मै ल्याईए सं
पूरण लोक तो तिनो नै दछना मे दे दीए है हे दीन रावण
यही जान कर के पिता ब्रह्म के रस मे लीन रहते है ॥२५॥ प्र
पंच ॥ सवैया ॥ कैटभ सो नरकासुर सो पल मै मधु सो मुर
सो जिन मारयो लोक चतुरदस रछक के सव पूरन वेद पु
रान विचारयो श्री कमला कुच कुंकम मंडत पंडत देव अ
देव निहारयो सो कर मांगन को वलु पै करतार हूं कै क
रतार पसारयो ॥ वा० टी० ॥ जिस हाथ ने कैटभ असुर जैसे
अरु नरकासुर जैसे अरु एक पल मै मधु जैसे मुर जैसे
मारे है ॥ प्रश्न ॥ मधु कैटभ हजार वरष जुध कर मारे है
औरसे हू और भी तिन को पल मे कहिवो कैसे वने ॥ उत्तर ॥
पल मै को अरण्य पल नाम मास को है जो मास मै है क्या
सथूल है अथवा इहां नाम कहू पर ताह को नथे यहि नही
कह्यो तो ते असे अरण्य पलक्या मास विषे है मे क्या ममता
जिन को सो कोन मांसाहारी असुर जो एह थे फेर जो चौद
ह लोकन को रछक संपूरण वेद अरु पुराणो ने विचारयो
है सो भावान जो है लछमी ता के कुचन को जो लग्यो हु
यो है केसर सो ता सों मंडत है अरु कि तिन पे विहार कर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

35A णकारोहै पंडितअरुदेवतातेअदेवतासमनोनेदेख्योहैके
सरलग्यो अथवारूनोनेदेख्योहैसमसान्तीहै सोईहाथमा
गनेकोराजावलकेपासकरतारजोविह्मातोकेभीकर
तारकयारचनवारेनारायणनेपसार्योहै ॥अ॥ इहांहाथ
कोवलवानवरणनहै तहांश्रीकमलाकुचकुंकममंडित
कहवेकेसवने ॥उत्तर॥ मांगनकेसमेविषेयहिअरथअ
त्यनपुष्टहै कोजिनकेलछमीसीइस्त्रीहैतेऊसेसामर
थभीजाचनाकरतेभए ॥१६॥ दोहरा ॥ हमैतुमैनहिबूझी
येविक्रमवादअषंड अवजूयहिकहिदेयगोमदनकद
नकोदंड ॥वार्ता॥ हमारातुमारानहीसमझीताहै इहां
पराक्रमकोजोअषंडकापूरणवादहै अवयहिसिवजू
कोपनुषहीकहिदेवेगो ॥१७॥ विमतउवाच ॥ सेजुताछंद ॥
छिनवानरावनकोसुन्यो सिरराजमंडलमैधुन्यो जगदीस
अवरेछ्याकरो विपरीतवातसमैहरो ॥वार्ता॥ जवयहिवाण
अरुरावनकोछिनसुन्यो तवराजमंडलमैसिरधुनतेभए हेना
रायणजूअवरछ्याकरीए यहिजोउलटीवातहैताकोहरीए
॥१८॥ विमतउवाच ॥ दोहरा ॥ रावणवानमहांवलीजान
तसमसंसार जोदोऊधनुकरषहैताकोकहाविचार ॥वार्ता॥
रावणअरुवाणमहावलीहैसमजगतजानतहै जोदोनोई
धनुषकोचढायलेवेतोताकोकैसेविचारहोवेगो ॥१९॥
वाणउवाच ॥ सवैया ॥ केसवओरतेओरभईगैंजानीन त
जायककूकरतारी ॥ सूरनकेमिलवेकहुआयमिल्योद
सकंठसदाअवचारी वाहगयेवककवादत्रियायहिमूल
नभाटसुनावतगारी चापचढायवकीरतकोवहिराज
करेतेरीराजकुमारी ॥वार्ता॥ वानकहनलागेदेषोओर
तेओरहोगईहैकरतारकीवातककूजानीनहीजाती ह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

३६ 36 मतोसूरूप्पाकेमिलवेकोआयेपै जाकेविचारनही
किपहजगतजननीहै॥ऐसोसूरूपरावनमिलगयो
तासोंव्रपाहीवकवादवढगयो॥ट सोयहहमारी
हीभूलनहै॥चूकहै॥हेभाटविमततंरगारीमतस्म
को नाव क्योंहमैंतोधनुषकोचढायवेकीरतकेवास
तेहै अरुतेरीवहराजकुमारीराजकरोहमकोकछु
प्रयोजननही॥रावनोवाच॥ वंधुछंद॥मोकहरोक
सकैकहुकोरे॥जुद्धजुरेजमहूंकरजोरे॥राजसभा
तिनकाकरलेषों॥देषकेराजसुताधनदेषों॥२१॥
वार्त्ता॥रावनवोल्योमोकोकौनरोकसकेगो जुद्ध
मैजुरेतेमोआगेजमनेभीहाथजोरेहै॥राजसभाको
तिनकेकेसमानजानतहों॥राजाकीपुत्रीकोदेषके
पाछेधनुषकोदेषोंगो॥वानउवाच॥सवैया॥वा
नकह्योतवरावनसोंअववेगचढाउसरासनको॥
वातवनायवनायकहाकहेंछाडदैआसनवास
नको॥जानतहोंअवजानतनाहनैतंअपनेमदना
सनको॥ऐसेहीकैसेमनोरथपूजतफजेविनाअ
पसासनको॥२२॥वार्त्ता॥तववानने रावनसोंक
ह्योअवतंधनुषकोवेगचढाउ॥अरुवातैवनाय
वनायकेकहाकहितहै॥आसनवासनकोतंछो
डदै क्यापाषंडछोडदे॥मैतोजानतहोंतेरमदको
इहांनासहोयगो अरुतंनहीजानतहैअपनेमद
केनासनको इसतरांकैसेमनोरथपूरनहोयगो
राजाजनककीसासनआग्यातौकेपूरीकरेविना
रावनउवाच॥वंधुछंद॥वाननवाततुमैकहआवै
सोईकहोजियतोहजोभावै॥काकरहोंहमयोंहीक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

36A रेगो। हेहे राजकरी सो करेगो ॥ वार्त्ता ॥ हे बाण तेरे कोवा
तकहनी हनी आवती है तब बाण वोल्यो सो ई कहे जो
तेरे चित्त को भावै फेर रावण कह्यो तूं क्या करेगो तब
बाणने कह्यो हम उसी तरै करेंगे जैसी है ये हे राजाने
करी थी ॥ २३ ॥ रावन उवाच ॥ दंडक छंद ॥ भोर ज्यों भ्र
मरभूत वासकी गने सजुत मानो मकरंद बुंद माल
गंगाजलकी ॥ उडत पराग पटनाल सी बिसाल बाहु क
ह्या कह्या के सोदास सोभा पल पल की आयुय सगनस
रबमंगला समेत सरबपरवत उडाय गतकी नी है कम
लकी जानत सकल लोक लोकपाल दिगपाल जान
तनबानबात मेरे बाहुबलकी ॥ वार्त्ता ॥ हे बाण मेने कै
करः लासपरबत को उठायके कमल की गत करी कैसे भू
त जो है सिवजू के गण अरु वासुकी सरपगण सजू के सहि
त सो ई तो भ्रमर के समान ता मै भ्रमते हैं अथवा भूत क्या
प्रानी अरु गंगाजलकी जो माला सो ई मानो मकरंदकी
बूंद है उडत है पराग सो पटवस्त्र पारबती जूको जहां मेरी
जो बिसालभुजा है सो ई ताकी नाल सी सोभत है तिससमै
की पल पल की सोभा कह्या ता ई कह्या तब सब बस्त्रों के स
हत जो थे गण अरु सरबमंगला क्या श्री पारबती के
सहत जो थे सरब क्या सिवजू तिससमेतों के सहत प
रबत को उठाय करके कमल की गत करी सो या को
संपूरन लोक जानत है अरु लोकपालने दिगपाल जा
नत है हे बाण तूं मेरे भुजों के बल की बात को नहीं जान
त है ॥ २४ ॥ बान उवाच ॥ मधुभार छंद ॥ तजके सुरार ॥
रिस चित्त मार दसकेठ आन चतु कुये पान ॥ वार्त्ता ॥
तिस रार को त्याग करके अरु चित्त मे रिस को मार करके ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तँ रावणने आयके धनुषको हाथसों छुयो ॥२५॥ वि
मत उवाच ॥ तुम बलनिधान धनुअनपुरान योसज
हु अंग नहि होय भंग ॥ का॰टी॰ ॥ तब विमतने कह्यो हे रा
वण तुम बलके घर हो अरु यह धनुष अत्यंत पुरानो
है ऐसे अंगमे सजीजो यो टूटनो जाय अथवा तुम
ने तो ऐसे अंग सज्या है देषिये भंग नाहीं होय जाय ॥
॥ विजया ॥ षंडन मान भयो सम को न्रिपमंडल हा
रर ह्यो जगती को व्याकुल वाहू निराकुल बुध धको
बल विक्रम लंक पती को कोर उपाय करे कहि केस
ब को हू न छोडत भूमर तीको मूर विभूतन सुभाव
प्रभाव ह ज्यों न चले चित जोगजती को ॥ का॰टी॰ ॥ तब
सभको अहंकार दूर होत भयो संपूरण प्रिथवीको
जो राजमंडल सो हारि रह्यो भुजा सभनकी व्याकुल
भई अरु बुध अस कत होय गई लंकाके स्वामी राव
णके बलको भी पराक्रम थाकि गयो अरु करोरां ही उ
कि॰ पाय करे परे सितरां भी एक रतीक भी प्रिथवीको ध
नुषको नहीं छोडत है जैसे मूरका वडी जो है विभू
तनो के सुभाव के प्रभाव सो जती जोगी को चित्त नहीं
चलत है ॥२६॥ पधटका छंद ॥ धनु अतपुरान लं
केसजान यह वान तवान सोकहीआन होय पलकम
हि लैहो चढाय कछु तुम हू धौ देषौ चहाय ॥ का॰टी॰ ॥ य
ह धनुष अत्यंत पुरानो है रावणने जान्यो यह वारजा
वाणा सो रावणने कह्यो मे पलकमे चढाय लेऊंगो पर
कछुक तुम भी देषो ॥२७॥ वाण उवाच ॥ दोहरा ॥ मेरे
गुरको धनुष है सीता मेरी माय दुहूं भांत असमंजसे क
न चले सुष पाय ॥ का॰टी॰ ॥ मेरे गुरून को धनुष है अरु

37A सीताजूमेरीमाताहे सोदोऊप्रकारसा धनुषकोहाथ
लगायवोअरुजोगताहे ऐसेवाणतेसुषकायकेचल
तेभयो॥२९॥रावनउवाच॥मोटकछंद॥अवसीयली
येविनहौनटरो वहूजाऊनतोलगनेमघरे जोलौन
सुमोअपनेजनको अनआरतसवदहतेरनको॥वा
र्ता॥अवसीताजूकेलीएविनामेनहीहटोगो अरुतव
तोईकहूंनहीजावोगोयहिनेमधारतहो जवतांईकिसी
आपनेमानुषकोरणमैमारेहूएकोआरतपरावान
सवदनहीसुनोा॥३०॥विसलऊवाच॥काहूकैसरमास हू
रमारीय आरतसवदअकासपुकारीय रावनकेवहि
कानपरोजव छोडस्वयंवरजातभयोतवा॥वार्ता॥कि
सीनेकहीकसरमानामजोवभीषनकी इस्त्रीताकोवा
णमारयो ताने आरतपीराकोसवदअकासविषपुकारा
जववहिसवदरावणकेकानमेपरा तवहीस्वयंवरको
छोडकेजाताभया॥३१॥दोहरा॥जवजानेसमकेभ
येसमहूविप विनभेग धनुषपरयोलैमवनमैराजाज
नकअभंग॥वार्ता॥जवराजाजनकनैजानेसमनोके
सरवप्रकारसे विनदूरभएकाहूतेधनुषनाचलो तवसे
अभंगजोधनुषसोसूरमेलैकेधरयो॥३२॥इतिश्रीमत
सकललोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचं
द्रकायांवानरावनसंवादवरननोनामचतुरथमःप्र
कासः॥४॥दोहरा॥याप्रकासपंचमकथारामगवनमि
थलाह ऊधारनगोतमघरनस्तुतअरुनोहेआह॥वा
र्ता॥इसपंचमप्रकासमैपहिकथाहोयगी रघुनाथजू
कोगमनहोयगोजनकपुरिको गौतमकीनारकोऊ

धारणहोयगो॥१॥दोहरा॥मिथलापुरकेवचनअरु
धनुरभंगनिरधार जैमालाहुंदमअमरवरैंनफूलअ
पार॥२॥वार्ता॥मिथलापुरकोजोपतिराजाजनक
तासोंवचनहोयगो फेरनिसचेकरधनुषकोभंग
होयगो श्रीरघुनाथजूकोजैमालाहोयगी देवतान
गारेवजायफूलनकीवरषाकरैंगे॥२॥विमलनकूवा
चा॥तारकछंद॥जवआनभईसमकोदुचताई क
हिकाहूपैमेटसकेहूनजाई सीयसंगलीएरिषकी
त्रियआई॥३करराजकुमारमहासुषदाई॥वार्ता॥
जवसमनेकोदुचताईआनकरभई जो किसीत
रेमीकाहूतेमेटीनहीजाती तिससमैकहिकया
पहिवारतासतानेदरिषिकीइस्त्रीनेसीताजूपैक
हीअरुजिसतेसुनीथीसोकोऊइस्त्रीरिषकेजग्य
मैरामजूकोदेषआईथी ताकोसंगलीएहूएरिष
कीइस्त्रीसीताजूपैआई अपवाकैसीदुचताईभई
जोकाहूपैकिसीतरांनकहीजाय नमेटीजाय तव
सीताजूकोसंगलीयेरिसपैरिषकीइस्त्रीआई
तानेकह्योऐकराजकुमारमहासुषदायकआने
है ३॥मोहनछंद॥सुंदरवपुअतिस्यामलसो
है॥देवतसुरनरकोमनमोहै॥आनियल
षोसियकोवरसोहै॥रामकुमारयहिदेषिऐजैसे
वार्ता॥अत्यंतसुंदरजिनकोस्यामसरीरसोभतहै॥
देषतेहूएजोदेवताअरुमानुषसमकेमनकोमोह
तहै ऐसेसोदेषकेसीताजूकोवरल्याईऐ जैसेश्रीरघु
नाथजूकुमारअवस्याजुगतदेषीतेहै॥४॥तोटक

38A कछंद॥विस्वामित्रउवाच॥रिषराजमुनीयहवातजत
ही सुषपायचलेमिथलाहतही वनरामसिला
देषीजवही त्रियसुंदररूपभईतवही॥वार्ता॥ज
वयहिकथाविस्वामित्रजूनेब्राह्मननतेऐसेसुनी॥
तवहीसुषपायकेमिथलापुरीकोचलतेभए॥
वनविषेएकश्रीरामचंद्रजूनेजवसिलादेषी तव
हीवहिसिलासुंदरईस्त्रीकेरूपहोतीभई॥५॥विस्वा
मित्रउवाच॥सोरठा॥गोतमकीयहिनारिईद्रदो
षदुरगतभई देषतुमैनरवार परमपतितपावन
भई॥वार्ता॥यहिहेरामचंद्रजूगोतमरिषकीस्त्री
थी सोयाकीईद्रकेदोषकरकेऐसीषोटीगतभई
थी अवहेनरकासुरकेमारनेवारेतुमकोदेषकर
केपरमपतितथीसोपवित्रहेगई॥६॥कुसमवचित्रा
छंद॥तिहअतिरूरेरघुपतिदेषे समगुनपूरेतनम
नलेषे यहिवरमांगोदियोनकाहू तुममममन
तेकहूनजाहू॥वार्ता॥तिसनेअत्यंतसुंदरजोश्री
रघुनाथजूदेषेहेसपूरणगुणकरकेपूरणतन
अरमनसोविचारे तवकह्योहेनाथमैयहिवरमा
पनेमागतहूं जोकाहूकोनहीदीयो तुममेरेमन
तेकवीभीनजावोसदामनमैवसो॥७॥कलहंस
छंद॥यहताहुवरदैचलेश्रीरघुनाथजू अतिसु
रसुंदरलसेयोरिषसाथजू॥जनुसिंघकेसुतदु
योसिपहश्रीरघुवनजीवदेषतयोसवैमिथला
गए॥वार्ता॥तहांतिसकोवरदेकरकेचलतेभए
श्रीरघुनाथजू॥अत्यंतसूरवीरअरसुंदरसरिषी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

३९

39

ष्वरकेसाथसोभतेहै॥ सोतिनोकीकैसीसोभाभईहै
मानोसेरकेपुत्रप्रसिद्धश्रीव्यासोभासोंमिलेहूये अ
थवासिद्धकीलछमीसोमिलेहूये॥ किंवासिद्धअरु
लछमीसोमिलेहूये॥सिद्धसेविश्वामित्रजू॥वन
केजीवनकोदेषतेहूयेऐसेसंपूर्नमिथुलापुरीको
जातेभये॥विश्वामित्रउवाच॥दोहरा॥काहूकोन
भयोकहूंऐसोसगुननहोत॥पुरपेठतश्रीराम
केभयेमित्रउद्दोत॥९॥वार्त्ता॥किसीकोकहींभी
नहीभयोऐसोसगुन अरुनाहोतहै जोपुरविषै
प्रवेसहोतेहूयेमित्रक्यासूर्यकोउदोतउदैहैवो।
भयोहै॥श्रीरामोवाच॥ चौपई॥वहुराजतिसूरज
अरुनयरे॥जनुलछमनकेअनुरागभरे॥चित
वतचित्तकुमदनीत्रसे॥अतिचोरचकोरचितासी
लसे॥ १०॥वार्त्ता॥तववहुतअत्यंतलालरंगकेसू
रजभगवानसोभतहै मानोश्रीलछमनजीकेसने
हमैभरेहै॥यातेलालहै॥जाकोदेषतेहूयेकुमद
नीयोंकेचित्तभयमानहूयेहै चोरअरुचकोरोंकी
चितासीसोभतहै क्योंदोऊनकोयाकेउदैदुषहो
तहै॥लछमनउवाच॥षटपदछंद॥अरुनगात
अतिप्रातपदमनीप्राननाथभय॥मानहुकेसव
दासकोकनदकोकप्रेममय॥परपूरनसिंधूरपू
रकैधोमंगलघट॥किधोसक्रकोछत्रमढ्योमा
नकमयूषपट॥कैश्रोनतकलतकपालयहकिल
करालकंकालको॥ललतलालकैधोंलसतादिग।
भामनिकेभालको॥ ११॥वार्त्ता॥कमलनीयोंकेप्रा

39A

नोकोस्वामीजोहैसूरजसोप्रातकेसमेविषेअत्यंत
अरुनसरीरकेभयेहै सोकेसवदासकविकहित
है कोकनदजोहैकमलअरुकोकयाचकवेतिनो
केप्रेममैभयोहै यातेलालहै॥अथवासिंधूरसों
फरनकीयोहूयोपरपूरनयहमंगलकोघटहै॥
सोआगेमिल्योहैरामजूको॥अथवाइंद्रकोयह
छत्रहै कैसोहैसो मानकरूपीवस्त्रसोंमढ्योहूयो
है अथवारुधरसोंकलतक्याजुगतयहकपाल
है कनालक्याभयानककिलनिश्चैकरकेकंका
लीभगवतीकेहाथको॥अथवा दिसारूपीजोइ
स्त्रीसोभतहै ताकेमस्तककोयहसेंदरलालहै तोट
कछंद॥पसरेकरकुमदनलाजमनो॥किधोपद
मनकेसुखदेनमनो॥जनुरित्तसवैइहत्रासभगे
जनुजानचकोरफंदानडगे॥१२॥वार्त्ता॥याके
पसरेजोहै करक्याकिरण सोकिरणनहीमानो
कुमदनीयांकोलाजपसरीहै॥याहीतेमुंदगई
है अथवाकमलोंकीकोरूयहसुखदायकवरूप
सरीहै अरुमानोतारेइसीभयसोंसमभागेहै॥
यहकुमदनिकोवैरीसोहमारोभीवैरीहै तोच
कोरभीफंदनमेलुकगयेहै॥श्रीरामोवाच॥चं
चरीकछंद॥व्योममैमनिदेखीयेअतिलालश्री
सुखसाजहीं॥सिंधुमैवडवागनीजनुज्वालमा
लविराजहीं॥पदमरागनिकीमनोदिवधूर
फरतसीभई॥सूरवाजनकीखुरीअततित्तता
तिनकीहई॥१३॥वार्त्ता॥अथवाआकासमैयह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनिदेषीतीहै॥ याकीलालसोभा जुभा वहीसोंसज रहीहै अथवाआकासरूपीसमुद्रकेविषेवडवाग्नकीलाटकीमालाहै अथवापदमरागजोहै लालमनीयातिनोकीदिवच्याआकासमैधूरपूरनसीभईहै॥ कैसेसूरजकेजोघोडेमरोणाकेपरवतपैसोंआयेहै तिनोकीजोहैषुरीकीअत्यंततीछनतातासोंतिसघोडेकीहतीहोईधूरपूरनसीभईहै॥ विश्वामित्रउवाच॥ सोरठा॥ चढ्योगगनतरूधायदिनकरवानरअरुनमुष॥ कीनोमुकमहरायसकलतारकाकुसमविन॥ १४॥ वार्त्ता तवविश्वामित्रजूनेकह्यो हास्यसोंवचन आकासरूपीवृत्तपैधायकरकेचढ्योहै सूरजजरूपीजोलालमुषकोवानरहै॥ तिसनेसंपूर्नतारेरूपीजोफूलहै तिनोतेविनामुकमहरायकेकरदीयो अथवादोऊनकीउपमाहै॥ सूरजतोदेषोगगनमैधायकेचढ्योहै वरवृत्तपैचढ्योहै जवचढ्यो तवसूरजनेतोआकासकोमुकमहरायकेतारोंकेविनाकीयो वानरनेवृछकोफूलनविनकीयो॥ लछमनउवाच॥ दोहा॥ जहींवारुनीकीकरीरंचककरूचद्विजराज॥ तहींकीयोभगवंतविनसंपतिसोभासाज॥ १५॥ वार्त्ता॥ तवलछमनजूनेभीतैसेईकह्यो॥ जवद्विजव्राह्मणोंकेराजाचंद्रमानेरतीकभीवारुणीक्यापश्चमदिसाकीचाहकरी तवहींसूरजभगवाननेविनासंपदाकेअरुसोभाकेसाजतेविनाकीयो॥ तोमरछंद॥ चहुंभा

40A

गवागतडाग॥ अतदेखिजैवडभाग॥ फलफूलसोभसंजु
क्त॥ अलयोंरमैजनुमुक्त॥ १६ वार्त्ता॥ चारोतरफजिसन
गरकेवागतेतलावहै देवडेभागनवारेश्रीरामचंद्रजू
अवदेखीये फलअरुफूलसोभाकेसंजुक्तहै॥ तिनोपरभ्र
मरश्रैसेरमतेहै मानोमुक्तहीवरहेहै॥ यातेईहांहीवसेहै
श्रीरामोवाच॥ दोहा॥ तिननगरीतिननागरीप्रतप
दहंसकहीन॥ जलजहारसोभेनजहप्रगटपयोध
रपीन॥ १७॥ वार्त्ता॥ तवश्रीरघुनाथजूनगरसोभाक
हिवेलागे॥ तिक्यातेनहीहैनगरीयां॥ अरुतिक्याते
नहीहैइस्त्रीयां कोनसीयां॥ जोपदपदप्रतहंसजो
है परमहंसअथवापंडतजनतिनोकरकेअरुक्या
सुखकरकेहीनहै सोनगरीयानही॥ अरुजोचरन
चरनप्रतिहंसकजोहैविछुयानूपरतिनोकरकेहीं
नहैसोइस्त्रीयांनही॥ फेरजलकेजोहैजहारक्या
संवरहसोजहांनहीसोभते अरुप्रगटहीपयोधरजो
हैमेघपीनक्यास्थूलसोजहांनहीसोभते तेनगरी
यानही॥ अरुजलजक्यामोतीयोंकेहारतेप्रगटही
मोटेपयोधरक्याकुच॥ जहांनहीसोभतेहै तेइस्त्रीया
नही अथवाश्रोरअर्थ नकारकोपीछेतेअन्वैकर
अर्थकरनो॥ तिक्यातेईनगरीयाहै तेईइस्त्रीयाहै॥
कोनसीजोपदपदप्रतिपंडतोकरकेतेसुखकरकेही
ननक्यानहीहै॥ सोनगरी॥ अरजोचरणप्रतिन
परोंकरकेरहितक्यानहीहैतेइस्त्रीया फेरजल
केसंवरहजहांसोभतेहै अरुक्यावृत्तजहांसोभतेहै
अरुप्रगटहीहैवडेमेघजहांसोनगरीया॥ अरुजल
जक्यामोतीयोंकेहारोंकीसोभतीहैक्याउरस्तितिजहां॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तेप्रगटहीहैपीनकुचजहांसोइस्त्रीया प्रस्न॥यहगुरो
प्रतिरघुनाथजीकीउक्तहै तामैस्लेषकरनगरीग्ररू
इस्त्रीकीएकताकहनीसंजोगहै॥उत्तर॥यातेग्रौर
ग्रर्थकीजे॥नगरकेसमीपजोहोयसोकहीयेनाग
रीकोनतलावी तासोंएकताकरग्रर्थकीजै॥ तेतला
वीनहीहै॥जोपदपदप्रतहंसोकरकेग्ररुकनामप्रान
कोसोप्रानबारेजोजलजीवतिनोकरकेहीनहै ग्ररु
जलजक्याकमलोंकेसंकुहजहानहीसोभतेहै ग्ररु
प्रतष्ठजहांवडेपयोधरक्याकनारेनहीहै नगरी
प्रतिवैसेहीग्रर्थ॥ ग्रथवाग्रोरग्रर्थ॥तिनोनगरी
योंविषेपदपदप्रतिहंसकजोपरमहंसभगतजनसो।
हीनक्यारहितहोतेहै॥किनोमैजहांजलजसंघोके
संकुहनहीसोभतहै॥संघशब्दउपलछनकहे संस।
ग्रादिग्रोरभीपजनकेसाधनलीजै॥ग्ररुप्रगटहीं
जलकेधारनेवारेजोपयोधरतलावपीनवडेसोज
हांनहीसोभतहै ग्ररुतिनोतलावीयोंमेपदपदप्र
तिहंसकजोहंससोहीनहोतेहै॥किनोमै जहाजलके
संकुहनहीसोभतेहै ग्ररुवडेकिनारेप्रगटनहीसो
भतेहै॥ ग्रथवाग्रोरग्रर्थ॥तिनोनगरीयोविषेजल
केसंकुहनहीसोभतेहै ग्ररुवडेतलावप्रगटहीनहीं
सोभतहै किनोमेजहांपदपदप्रतहंसजोजीवप्रा
नीसोकहीभीनहीहै ग्ररुतिनोतलावीयोमेजल
जक्याकमलोंकेसंकुहनहीसोभतहै ग्ररुप्रगटहीपी
नकिनारेनहीसोभतहैकिनोमे जहापदपदप्रति
क्यास्थानस्थानप्रतिहंसकहीभीनहीहै॥सवैया
सातहुदीपनकेग्रवनीपतिहाररहेजियमेजवजाने

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

41A वीसविसेव्रतभंगभयोस्रुकहोअवकेसवकोधनुताने ॥
सोककीआगलगीपरफूरनआयगयेघनस्यामविहाने
जानकिकेजनकादिककेसवफलउठेतरुपुन्यपुराने १८
वार्त्ता ॥ सातोदीपोंकेराजाजवहाररहेचित्तविषयहरा
जाजनकनेजान्यो अरुवीसविसेमेरोव्रतभंगभयोहै सो
कहोअवकोनधनुषताने पुरविषेपूरनसोककीआग
लगीहूईथी तवघनस्यामजोमेघनकेसमश्रीरघुना
थजूसोसवेरेहींआयगये सोमानोश्रीजानकीजूके
अरजनकादिकोंकेपुरानेक्यापिछलेजनमकेजोपु
न्यरूपीव्रक्षथेसोफलउठे॥ दोधकछंद॥ आयगये
रिषराजहिलीने॥ मुष्यसतानंदविप्रप्रवीने॥ देषदो
ऊभयेपांयनलीने॥ आसिषसीरषवासलैदीने॥ १९॥
वार्त्ता॥ इतनेहींमैरिषीस्वरराजाजनककोलीयेहूये
आयगये॥ जिनोमैमुष्यसतानंदजूचतुरब्राह्मणहै॥
तवदेषकरकेदोनोभाईसतानंदकेचरनोमैलीनभये
कहानमस्कारकरी॥ तिसनेसीरषक्याअिरकोसूं
घकेआसीर्वाददीये विश्वामित्रउवाच॥ सवैया॥ के
सव(मिथलाधिपहैजगमैजिनकीरतवेलवईहै॥
दानक्रपाननकैसिंगारीवसुधानिजहाथनजीतल
ईहै॥ अंगछसातकआठनसोंभवतीनहुंलोकमैसि
द्धभईहै॥ वेदत्रईअरुराजसिरीपरपूरनतासभजो
गमईहै॥ २०॥ वार्त्ता॥ तवविश्वामित्रजीजनककी
उस्तुतिकरकहबेलागे॥ (येहमिथुलापुरीकेस्वामी
है जगतमैजिनोनेकीरतरूपीवेलवीजीहै दानक
रकेअरुक्रपानतरवारकरकेसंपूरनप्रथवीजिनो

अपनेहाथनजीतलईहै॥ अंगजोहैन्यायकेछेअथ
वाथछकर्मअरुसातजप अपवासातसिद्ध अरुआठ
जोग इनसोंभवक्याजनमकरके जिनकीतीनोंहीलो
कनमैसिधीभईहै॥ वेदत्रईजोहैतीनोवेदअरुराज
सिरीराजलछमीइनमैजोपरफुरनताहैसोसभजा
कीजोगमैमिलीहोईहै॥ जनकउवाच॥ सोरठा॥
जिनअपनेतनसुरनमेलतपोमैअगनमै कीनेउमव
रनतेई विस्वामित्र ए॥ वार्ता॥ जेवजनकजूनेकह्यो
जिनोंनेअपनोसरीररूपीसुरनतपोमयजोहैअगन
ताविषैमेलकरके उतमवरणकोकीयाहैछत्रीतेब्राह्म
नभयेतेईएविस्वामित्रजूहैं॥२१॥ लछमनउवाच॥ मैदि
नछंद॥ जनरराजवंत जगजोगवंत तिनकोउदोत किहि
भांतहोत॥ वार्ता॥ फेरलछमनजूनेकह्यो जेडेजनराजवा
रेहै अरुसाईजोगवारेहै क्याजोगीस्वरहै तौकहोइनके
जोगकोउदोतक्याप्रकासकैसेहोतहै॥ श्रीरामउवाच॥
स्रा सवैया॥ छत्रनकैदिदैकाहूछूईनछिए विजनादैवान
डगो नचुटेंवदैनिसवासरकेसवलोकनकेनमतेजम
गे भवभूषनभूषनहोतनहीमदमत्तगजादिमखीन
लगे जलहूथलहूपरपूरनश्रीनीमकेकुलअपमुन
जोतजगे॥ वार्ता॥ छत्रीयेतेआददेकेजेजोतकाहूनेभी
हीं नहींछूहै अरुविजनादिकसतजुगमैविसषराजा
थेसोजोवीजनाआदिकक्यापंषेआदिककीवानक्या
पवनसेथे तेभीडुलाकेरकेकहाहिलकरकेछैकोप्राप
तभऐ काहूतेनाछूईगई अथवापंषेआदकीअनेक
तरहिकीपवनभीडुलैक्याचलै परताकोनहीछोवनहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

42A फुरिवह्हिजोनचढतअरुवपतहैयहिनाचढेनावपै
दिनअरुरातमै अरुजोकेआगेलोकोकेजोहैअंध
कारकेसमानतेजसोभागजातहै अरुयहिजोतसंसा
रकेभूषनोकरकेसोभायमानहीहोतोहै औररा
उाकेसमानअपनेहीसोभायमानहै मदमैउनमत्तहुवो
जोगजादिमषीकाकजलकीस्याहीसमहै सोताको
नहीलागतहै अरुजलविषेभीतेथलविषेभीजाकीप
रपूरणसोभाहै असीनिमकेकुलविषेअदभुतजोत
जागतहै॥२३॥जनकउवाच॥तारकछंद॥यहिकीर
तऔरनरेसनसोंहै सुनदेवअदेवनकोमनमोहै हम
कोंवपुरासुनिऐसुनिराई समभ्यामकूसातककीठकु
राई॥वारता॥जवराजाजनकनेकह्योयहिकीरततौ
औरराजिउाकीसोभतहै मोरिअसीनही जोसुनके
देवताअरअदेवतासभनोकेमनकोमोहतहै हमकौ
नगरीवहैहै मुनीस्वरोकेराजातुमसुनो समभ्यैसात
गामकीठकुराईहै॥२४॥विस्वामित्रउवाच॥सवैया॥
आपनेआपनेठौरनतौभुवपालसभैभुयपालेसदा
ई केवलनामहीकोभुयपालकहावतहै भुअपाल
नजाई भूपनकीतुमहीपरदेहविदेहनमैकलकीर
तगाई केसबभूषनकीभवभूषनभूतलतैतनपाऊपजा
ई॥वार्ता॥तवविस्वामित्रजनकनेकह्यो अपनेअपनेअस
थान तोसंपूरणराजाप्रिथवीकोपालतेहीहै परेहुके उ
वलनामकेहीभुवपालहै तिनोनेप्रिथवीपालीनहीजा नै
ज ती सोराउाकीतुमनेहीदेहधारणकरी पैतुमारेसुद
रकीरतविदेहियाविषेगाईहै औरतुमनेकैसीप्रथिवी
सेवीहैसंसारमेजोसोभाकीभूषनअसीभूतलक्याप्रि

राम चं
सटी
४३

यवीनेपुत्रीउपजाईहै॥२५॥जनकउवाच॥दोहरा॥र
हि विपकीचितचातुरी जिनकीकहाअकेथ लोकनकी
रचनारुचिररचवेको जिसमंथ॥वारता॥इसप्रकार
कीजिनोकेचित्रकीचतुराईहै तिनोकीकथावारता
है सोअकथकथाकहीनहीजातीहै क्योंलोकोकोकी
सुंदररचनाकेवनावनकोसामरथमानहै॥२६॥विज
यछंद॥लोकनकीरचनाकिहिचित्रजहीपरपूरनवुध
विचारी हूगईकेसवदासतिहीसमसमअकासप्रका
सितभारी॥सुपसलोकसमानलसीदुतरोषरईद्रिग
दीहतुमारी होतभएतवसूरसूथापरजावकसुंभस
धारंगधारी॥वार्ता॥लोकोकीरचनाकीजवतुमनेचि
त्रमैपरपूरनवुधविचारी किलोकोंरचिए तवहीरचना
हूगई प्रिथवीअरुआकासभारीप्रकासमानभरो ज
वसुपसलोकाकेसमानरोषमेमिलीहूईतुमारीविसा
लद्रिष्टकीसोभासोभतीभई तवसूरजभगवानतो
जावककेरंगलालभए अरुचंद्रमासोंगोरहोतभयो
॥२७॥श्रीरामउवाच॥दोहरा॥केसवविस्वामित्रकी
रोषगईद्रिगजान संध्याज्यौंत्र्यौलोकमैकिहनउपासी
आन॥वार्ता॥विस्वामित्रकोरोषसोमिलीहूईद्रिष्टजा
नकरके कौननहीसेवतासभहीसेवतहैसंध्याकेसमा
न जैसेसंध्याजवअरुणहोतहैतवतीनलोकमैताको
कौननहीसेवत॥२८॥जनकउवाच॥तोटकछंद॥ऐ
सुनकौनकेसोभहिसाजै सुंदरस्यामलगोरविराजै जा
नतहोजियसोदरदोऊ कैकमलाविमलापतकोऊ॥
॥वार्ता॥तवविस्वामित्रजूनेकह्यौ सुंदरजोस्यामरूप
केहै सोतोश्रीरामचंद्रजीहै अरुजौगोरहै सोश्रीलछ

वारता॥जनकजौविस्वामित्रसेपूछतेहै॥एपुत्रकिसकेहैंसो भासेता
जेहूयेएकसुंदरस्यामसरूपएकगोररूपविराजतेहैंमैहिरदेविषेजा
नताहूदोऊभाईहैलछमीअरपारवतीकेपतीविस्नुमहादेवहैकोई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

43A मनजूनामकरकेकहीतेहै इनोंकोंसमस्तआसीरवाददेतेहै
सूरजकेकुलकेसोभादेनवारेहै ॥२०॥ दोहरा॥ न्रिपमनद
सरथान्रिपनकेप्रगटेचारुकुमार रामभरथलछमनलल
ने अरुसत्रुघ्नउदार॥वार्ता॥राजिऊकीमणीजोराजादस
रथहै तिनोकेचारपुत्रप्रगटभए सुंदररामजू अरुभरथ
जू अरुलछमनजू तेसत्रुघनजू॥२१॥कवित्त॥दाननकेसी
लपरिदानकेप्रहारीदिनदानवारज्योनिदानदेषिपेसुभा
यकै दीपदीपहूकेअवनीपनकेअवनीपप्रथुसमकेसादा
सदासद्विजगायकै आनंदकेकंदसुरपालकसेवालसेप
ददारिप्रियसायमनवचकायकै देहपरमधारीपैविदेह
राजजूसेराजेराजनकुमारऐसेदसरथरायकै॥वार्ता॥
दानीजोहेकरणआदिकतिनोकेसीलकाउनमसुभा
वपैपरायेजोदानवालछनाकरकेदानकोजसुताके
प्रहारीकादूरकरणवारेहै इनकेदानआगेसबकोदान
छेपजातहै अथवादानीउकेसेहैसीलजिनकेअरुपरजोसा
त्रुतिनकेदानवामदकेप्रहारीहै दिनकोदीनकैजो दी
नजनोकोदानवारकामगवानकेसमानसुषदातेहै सुभा
वकासुंदरजोभावकियादेवपूजनआदनोकेनिदानका
अंतसीमादेषीतेहै दीपदीपकेजोहैराजातिनोकोराजा
है अरुराजाप्रिथुकेसमानव्राह्मनेगऊअनकेदासहै॥
आनंदकेमूलइंद्रकेवालकजयंतसेहै फेरमनवचनक्र
मकरकेसाधुहै अरुपरदारजोपरइस्त्रीतिनकोप्रियला
गतहै॥अथवा॥परजोसेष्ठविवाहतारइस्त्रीश्रीसीताजू
सोहैप्यारीजिनको अथवासीताजूकोप्रियहै किवापर
रजोसत्रुतिनकेदारकाविदारकसोहैप्रियजिनको
जोकोआपनीदेहकोग्याननहीहायसेविदेहग्यानी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिनोग्यानीऊकेराजासेदेहको जोपरमसुभावताकेपार
नवारे राजादसरथकेपुत्रसोमतहै अथवादेहपारपरम
ह्वोहै ॥२३॥ सोरठा ॥ जबतैंबैठेराजराजादसरथभूमिमैं सुष
सोयोसुरराजतादिनतेंसुरलोकमैं ॥ वार्ता ॥ जबतेराजादसर
थप्रिथवीमेराजपरबैठेहै तबते इंद्रसुषपूरवकसोयोहै
॥२३॥ स्वागताछंद ॥ राजराजदसरथतनैजू रामचंद्रभुवचं
द्रभुवचंद्रबनैजू त्योविदेहसमहूअरुसीता ज्योचकोरतन
यासुभगीता ॥ वार्ता ॥ सोराराजितूकेराजाजेहैदसरथजू
तिनोकेपुत्रहै तिनोमैश्रीरामचंद्रजूजोप्रिथवीकेचंद्रमाव
नेहै तैसेहीदसरथकेसमानहैराजनतुमहो अरुसीताजूकी
सुभकथाचकोरकीपुत्रीसमहै ॥२३॥ विस्वामित्रउवाच ॥ तार
क ॥ रघुनाथसरासनचाहतदेष्यो अतईकरराजसमाजन स
लेष्यो ॥ जनकउवाच ॥ रिषहैवहिमंदरमोकमगाऊ गहि
ल्यावहिगेजननजूथबुलाऊ ॥ वार्ता ॥ तबविस्वामित्रजूनेक
ह्यो जोराजितूनेअत्यंतदुषकरराज्योहै सोधनुषरघु
नाथजूदेष्योचाहतहै तबजनकजूनेकह्योहेरिषीस्वरव
हिमंदरविषेहैगो जोकहोतोमगायलेवो परवाकोजनो
केसमहूठायकेल्यावेगे तिनोकोबुलायलेवो ॥ प्रश्न ॥
इहांरिषिहैंवहयापाठमैहैसबदवियेयसोप्रिथमकह्यो
अरुअप्रयोगभयो वहिमंदरयहसबदउद्देससोपाछेक
कह्यो यातेअवमिष्टविधेयांसदूषनभयो ॥ उतर ॥ जब
रिषनेधनुषमांग्यो तबजनकनेकहाहेरिषहैक्यावडोषे
दहै कोअपनेब्रिनकोभगजोपीछेभयोताकेसुमरणते
ऐसेकह्यो अथवाताकेमगावनेमैषेदकह्यो ॥२४॥ विस्वा
मित्रउवाच ॥ अवलोककहाकरवेअपार रिषराजकहि
यहिकाविकार रनराजकुमारहिदेहुजान सबजानतहैवे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

44A लकेनिपान॥वार्त्ता॥अवअपारलोककथाकरनेहै वि
स्वामित्रजूनेयहवारवारवातकही उनाराजकुमारोको
जानदीजिए संपूरणवलकेनिपानकोजाननेहै॥३५॥ज
नकउवाच॥दंडकछंद॥वज्रतेकठोरहैकैलासतेविसा
लकालदंडतेकरालसभकालकालगावही केसवत्रैलो
क्यकेविलोकहारदेससमछांडचंद्रचूडएकओरकोच
ढावही पंनगप्रचंडपतिप्रभुत्योपनचपीनपरवतारपख
तप्रमानमानपावही विनाउकअनेकहूपैआवेनापिना
कनाहिकोमलकमलपानरामकैसेल्यावही॥३६॥वार्त्ता॥
नवजनकजूनेकह्यो सोधनुषवज्रतेभीकठोरहै अरुकै
लासतेवडोहै कालकाजमराजकेदंडतेभीभयानक
है सभसमैविषैजाकोकालकाभयानकगावतेहै ती
नलोकके देवताजाकोदेखकेहारगएहै॥प्रश्न॥देवतातीं
नलोकमैकैसेवने॥उत्तर॥देवनामराजाकोहै तीनलो
ककेराजाजाकोदेखकेहारगएहै एकचंद्रचूडजोहैसिव
जू तिनोकोछोडकेओरकोनहैजोचढावे सरयाकोजो
हैप्रचंडक्यातेजवानस्वामीसेसनागतिसकेसमानइस
प्रभुक्यासामर्थ्यवानधनुषकोचिल्लाहै अरुपरवतारजो
हैइद्रताकोजोपरवतसुमेरसोउसकेप्रनामकेमानना
कोपावतनहै विनाइककयासिवजीकेविनाअनेकोपैवी
धनुषनहीआवतहै ताकोकमलसेकोमलहैहाथजि
नकेऐसेश्रीरामचंद्रजूकैसेल्यावेगे॥प्रश्न॥इहांसि
वजूनेविनाओरकोनपैचढै यहिअरथहेवारआयो
यतेपुनरुकतदूषनभयो॥उत्तर॥विनाईकनामगणेस
जूकोहै अनेकजोगणेसजूहोयतिनोपैभीयहनाआ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वै॥प्रश्न॥विस्नुनसिवदेवीगणेससूरजादपांचोसमहै
तातेयहिकहिवोअनुचितहै॥उत्तर॥गणेसजूसोजोहै
बलवानकौनअनेकसूरवीरतिनोपैभीनाआवै अथ
वाविसेषजोहैगिनतीकेनायकक्यासेनानीसूरमाति
नोपै अथवाविसेषताकरकेजोनाक्यानरोंकीगिनती
मेइकहैसुखराजासूरवीरतिनअनेकोपैभीनाआवै अ
थवा जनकजूग्यानीहैतातेकह्यो एकजोहैपरब्रह्मप
रमातमातिससेविनाअनेकोपैभीनाआवैसोचाहेनौका
हूरूपपरल्यावै॥२६॥विस्वामित्रउवाच॥दोहरा॥राम
हत्योमारीचजिहथ्योतारकासुबाहु॥लछम
नकोयहधनुषदैतुमपिनाककोजाहु॥वार्ता॥हेराम
जिसबाणसोतुमनेमारीचमारयोहै अरुतारकातेसु
बाहुमारेहै सोयाधनुषकोलछमनजूकोदैकेतुमपि
नाककेलैवेकोजावो॥२७॥जनकउवाच॥त्रिभंगीछंद॥
सगरेनरनायकअसुरविनायकरछसपनहीयहारग
ए काहूनउठायेखलनखुडायेटस्योटस्योनभीन
भए इनराजकुमारनअतसुकमारनलैआएहोपेज
करेब्रितभंगहिमारोभयोतिहारोरिषवतपनेजनजा
नपरे॥वार्ता॥सगरनजोनरनायकराजअरअसुरो
केविसेषराजाओरराछसपतकोनरावणआदएहसंपू
रणहिदेकरकेहारगये किसीनेनाउठाय नाअसथान
तेछुडायआअरथकिअसथानतेओरअसथानमेंभी
नारख्योगयो अरुहटाआहूआहटिआभीनासम
डरगए इनोअल्पनकोमलराजकुमारोकोआपलैआए
हो ताकीप्रतग्याकरतेहोनहीइसनेकवचननाहै अर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

45A हमारो व्रितनो भंगभयो हे रिषीस्वर तुमारे तपको तेज
जान्यो नही परत तिहारे तप तेज ते जो ए बालक तेसे तो जोरे
॥३८॥ विस्वामित्र उवाच॥ तोमर छंद॥ सुन रामचंद कुमा
र धनुख्या निए हवार पुन वेग ताहि चाहाऊ जस लोक
लोक पठाऊ॥ वारता॥ हे श्री रामचंद्र कुमार जू इस समे
धनुषको ल्याईये फेर ताको वेग चढायके लोक लोक मे
जसको भेजिये॥३९॥ जनक उवाच॥ दोहरा॥ रिषहि दे
षहरषे हीए रामदेष कुमलाई धनुष देष डरये महाचिंता
चित डुलाई॥ वार्ता॥ तब जनक जू रिषीस्वर को तो देषके
हिदे मै प्रसन होते भए अरु श्री रामचंद जू को देषके कु
मलावते भए धनुष को देषके डरे महाचिंता मे चित डोल
तभया॥ प्रनहारनि॥ रामचंद कटेसो धटका थ्यो लीला
सो हरिको धनु सांध्यो नेकुनाह करपल्लव सो छै फूल
मलज्यो टूक करो है॥ वार्ता॥ श्री रामचंद्र जू ने तब कम
रसो वस्त्र बांध्यो लीला करके ही शिव जू के धनुषको
सांध्यो रतीकु हाथकी अंगुली से छैके कै फूलकी मू
ल क्याहु ही कीनरां ताको टूक टूक के कर दीये ४१ विजय
छंद ३ तमगाथ स नाथ अवै धनु औरपुनाथ जू
हाथ कलीनो॥ निर्गुण ते गुणवंत कस्यो सुरव के
प्रावसंत असन्त नहीनो ऐसे थ्यो जब ही तब ही किये
संपुत ती चूक कहा धन राचन कीनो। राजकुमार ति
हा वह सनेहसों संभु को सर्चस रासत कीनो॥ वा
र्ता॥ ३ तम है गाथ कथाक था जिनकी ए हेसे जो अंबठ
स्वामी औरपुनाथ जू तिनने जब धनुषको हाथ
मै लीयो तब निर्गुण ते गुणवान करयो अरु संत

ने अ्रसंतसमनोकोसुषदीयो संतजननतोधनुषकेटूटतेई
सुषीभये अ्रसंतराकसजेविवादकरतेसेराजिअ्रनालनेसुषी
भये जहमारोकह्योभयो ३नराजिअ्रांतेनौंढाया जवरघु च
नाथजूनेधनुषचढायो तवीहीतीतीछनजोहैकटाछरू
पीनारानचकावाणनदीनतिनासोसंजुगतसीताजूनेकी
यो राजकुमारीजोहै श्रीजानकीजी तिनोनेसनेहसोदेषक
साचोध रके सिवजूवैकीयो राजकुमारीजोहै श्रीजानकीजी तिनो
नुकीयो नैसनेहसेंदेषकरके शिवजूकोसाचोधनुषकीयो तोरवि
नाथा ताकेसहतिकीयो ॥४२॥ सतानंदउवाच ॥ दंडकछंद ॥
प्रिथवटंकोरकुकफारसंसारमद दंडकोदेंडरह्योमंडनवषं
वलपाल डको चालअचलाअचलहालदिगपालरिषराजकेवच
नपरचंडको सोधदेईसकोवोध जगदीसकोक्रोधउजाय
भ्रिगुनंदवलदंडको वाधवरस्वरगकोसाधअपवरगध
नुभंगकोसवदगायो भेदव्रह्मंडको ॥ वार्ता ॥ प्रथमकोदंड
कया धनुषके टंकारनेसंसारकोजोमदसोफुककयाफुकाय
केफारदीयो काहूतेकछुभीनासुनागिआ ॥ फेरदेंडकया
हैथरीलगनोषंडोकोमंडरह्योछायरह्यो अचला प्रिथ
वीमेचालपरीकेपायमानभई परवतहालनेलागे अरु
वलवानदिगपालहालनेलागे तवविस्वामित्रजूके
वचनकोपालनकरके अरु सिवजूकोसोधवरदेके
अरु श्रीनारायणकोवोधदेके अरथकीजगायके अ
रपरसरामजोवलवानतिनकोक्रोधउपजायके अरस्व
रगकोसाधकयावेयकेमुकतकोसाधकरकेकहालें
चकरके ऐसेधनुषके भंगकोसवदसंपूरणव्रिह्मंड
कों भेदकरकेगयो ॥४३॥ जनकउवाच ॥ दोहरा ॥ = ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

46A

सतानंदआनंदमततुमजुहूतेउनसाथ वरजेकाहिनेंजे
व धनुषनोस्योहोरघुनाथ॥वार्ता॥जवजनकनेकह्योहे
सतानंदआनंदजुगनमतवारेतुमजोउनकेसाथसे जवर
घुनाथजूनेतोस्याध्यानवकौनावरजे॥४४॥सतानंदऊ
वाच॥तोमरछंद॥सुनराजराज विदेह जवहोगयेऊह
गेह कछुमेनजानीवात कवितोरयो धनुतात॥वार्ता॥
हेराजनकेराजा जनकतुमसुनो जवमेउसठोरविषेगयो
कछुमीमेरेतेवारतानहीजानीगईहे किसवधनरघुना
थजूनेधनुषतोरदीयो॥प्रतिहारनिदोहरा॥सीताजूरघु
नाथकोअमलकमलकीमाल पहिराईजनुसवनकी
हिदयावलभूपाल॥वार्ता॥तवसीताजूनेश्रीरघुनाथ
जूकोनिरमलजोकमलोकीमालाहेसोपहिराईसोमानो
सपूरणराजियोकेहिदयोकीयेगनहे॥४६॥चित्रपदाछंद॥
सीयजवहीपहराई रामहिमालसुहाई दुंदभिदीहिवजाई
फूलनहीवरषाई॥वार्ता॥श्रीरामचंद्रजूकोजवसुंदरश्रीसी
ताजूनेमालायहिराई तववडेनगारेवजाऐअरुफूलन
कीवरषाकरी॥४७॥इतिश्रीमनसकललोकलोचनचको
रचितामनश्रीरामचंद्रचंद्रकायांयंत्रेरमेगवरननोनाम
पंचमोप्रकासः॥५॥दोहरा॥छठेप्रकासकथारुचिर
दसरथआगमजान लगनोतसवश्रीरामकोदानविधा
नवषान॥वार्ता॥छठेमप्रकासमेसुंदरयहिकथाहोयगी रा
जादसरथकोआगमन श्रीरामचंद्रजूकोलगनउतसव॥
अरुदानकोविधान॥सतानंदऊवाच॥राजाजनकप्रति
तोमरछंद॥विनतीरिषराजकीचितधरो चतुरभेयनकेअव
व्याहकरो अववोलकुवेगवरातसवे पठीयोसमदोमुषका
यअवै॥वार्ता॥तवसतानंदनेकह्योश्रीविस्वामित्रजूकीवि

दुहिता

नैनमचित्तमैधारनकरो जोअवचारोभाइयोकेव्याहकरो
अरुअववेगहीवरातनकोवुलावोचरोजोहैपरीअंक्यावेटि
आसोसुषपायकरकेसमदैक्याविदाकरो ॥२॥ दोहरा ॥ प
ठईतवहीलगनलिषिअवधपुरीसुभवात राजादसरथसु
ननहीचारोचलीवरात ॥ वार्ता ॥ तवहीविवाहोकीलगनलि
षकरकेसुभवारताअयुध्यामेभेजी तवराजदसरथसोचारो
वरातासुननेहीचलतिभइआ ॥३॥ मोटकछंद ॥ आयो
दसरथविरातसजे दिगपालगयंदनदेषलजे चारहुदल
दूलहुचारवने मोहेसुरऔरनकोनगने ॥ वार्ता ॥ वरातन
कोसजकरकेराजादसरथजूआवतेभए जाकेहसतीनको
देषकरकेदिगपाललज्यामानहोतहै ऐसेहमारेहाथीन
हीहै चारोदलोविषचारोदूलोवनरहेहै सोदेवतानकोमो
हतहै औरनकीतोकहागिनतीहै ॥४॥ तारकछंद ॥ वन
चारवरातचहूदिसआई न्त्रिपचारचमूअगवानपठाईज
नुसागरकोसरतापगधारी तिनकेमिलवेकहुंवाहपसारी
वार्ता ॥ व[illegible]नकरकेचारोविरातांचारोतरफतेआईआ राजा
जनकनेचारोसेनाआगेलैनकोभेजीआं सोमानोसमु
द्रकेमिलनकोजोनदिआचलिआंहै तिनोकेमिलवेको
समुद्रनेवाहपसारीहै ऐसीदोऊतरफतेमिलनसमेसो
भाभई समुद्रसमदसरथनदिऊसीसेना ॥५॥ दोहरा ॥
वारोठेकोचारकरिकहिकेसवअनुरूप न्त्रिपदूलहुपहि
राईयोपहिराएसभभूप ॥ वार्ता ॥ तववारोठेकोजोव्योहार
हैसोकरके अनरूपक्याजैसेहोनहैतैसे राजादसरथको
पहिरायो अरुदूलोतिकोपहिरायो अरुसभराजाराजिओ
कोवस्त्रपहिराए ॥६॥ मरहटाछंद ॥ दसरथसंगातीसक
लवरातीवनवनमंडपमाफगरो आकासविलासीप्रभाप्रका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

47A सीजलजगुछजनुनषतनए अतिसुंदरनारीसभसुष
कारीमंगलगारीदैनलगीं बाजेबहुबाजैजनुयेनगाजै
जहंतिहंसबविधसोभजगी॥वार्ता॥दसरथजूके जोसंगा
तीसंगरहनवारेसंपूरणबरातीहैसोवनवनकरकेमंडप
मैजातेभए सोकैसोहैजामेंआकासविलासीजेहैचंदो
येतिनोकीसोभाप्रकासमानभईहै जिनमैमोतियोकेगु
छेनवीनसोहतरैहै अथवामोतिडोकेगुछियोकीकैसी
सोभाप्रकासमानभईहै मानोआकासविलासीतारेहै
तवअत्यंतसुंदरजोहैइस्त्रीसपूरनसुषोकेकरणवारीसो
मंगलकीगारीदैनलागी तवअनेकप्रकारकेवाजेवाजते
हैसोईमानोमेघगरजतेहै जहांतहांसभप्रकारसोसोभा
सोभतीहै॥दो॥दोहरा॥रामचंदसीतावनेसोभतहैतिह
ठौर सुवरनमैमनमेषचतसुभसुंदरसिरमौर॥वार्ता॥
तिसअस्थानमेश्रीरामचंद्रजूअरसीताजूवनेहुएसोभ
तहै सुवरणअरमणिडोमेषचत्तसुभहैसुंदरसिरपरमौ
रविराजमुकटजिनके कहंसुवरणमणिमेषचतजनुअंस
भीपाठहै तिसठौरदोऊवनेहुएकैसेसोभतहै मानोस्वर
णमेषचितमणिआहै नीलमणिसोश्रीरामजूकोप्रति
विवसीताजूकेसरीरमै॥१॥षटपदछंद॥वैठेआगयसु
न विवयविद्याधरचारनकेसवदासप्रसियसियसभअ
सुभनिवारन भारद्वाजजावालअत्रिगौतमकस्यपमु
म न विस्वामित्रपवित्रब्रह्मामनकामदेवपुन सभजगत
प्रतिष्ठतनिष्टमततग्हिवसिष्टपूजतकलस सतानंदमिल
उचरतसाषाचारसवैसरस॥वार्ता॥तहांमागयअरसू
तअरनानाप्रकारकेविद्याधरनेचारणवैठतेभए असु
भविघ्नोकेदूरकरनेवारेप्रसियसिय फेरभारद्वाजजी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अरजावालतेअत्रिऔगौतमतेकश्यपमुनि फेरप
वित्रविस्वामित्रजीअरवामदेवजू संपूरणजगतमेहै
प्रतिष्ठाजाकीअरुनिष्ठमतक्याद्रिढहै भगवानमेवुध
जोकीनहाऐसेसंतोकरपूजत श्रीवसिष्ठमुनजूहैसो
सतानंदजूसेमिलकैसाषोचारऊचारणकरतेहै
॥८॥श्रीरामज्ञानकूल॥पावकपूजोसमथसुधारी
आहुतदीनीसमसुषकारी दईनवकन्याव्यकूपनु
दीनी भावरपारीजगजसलीनो॥वार्ता॥तहांफेरस
मपनकोसुधारकरकेअगनकोपूजनकिउ॥संपू
रणकल्याणकेकरणवारीआआहुतीआदईअं
फेरकेंन्यादानदिउअरुवहुतधनदीउ॥अरुभामरी
दईक्याफेरदीरो॥तवजगतमैजसपायो॥९॥स्वागता
छंद॥राजपुत्रकनियेछविछाए॥राजरजसमडेर
हिआए हीरचीरगजवाजलुटाए सुदरीनवहूमंगलगा
ए॥वारता॥राजाजनककीपुत्रीनसेचारोराजकुमारछेव
सोछाएहूएहै तवफेरराजिउकेराजादसरथजूडेरेआ
वतेभए हीरेअरुवस्त्रतेहाथीअरुघोडेवहुतेलुटाएका
वडे तवसुंदरीउनेवडेमंगलगाए॥१०॥सोरठा॥वासर
चौथेजामसतानंदआगयादीए दसरथनृपकेधाम
आएसकलविदेहवन॥वार्ता॥फेरदिनकोचौथेपह
रमैसतानंदपुरोहितकीआग्याकेदीएतेराजादसरथ
केअस्थानविषे संपूरणजनकवनकरकेआवतेभए
॥११॥भुजंगप्रयातछंद॥काहूसोमनाडुंयवीदीहवाजै
कहूभीमभेकारकरनालसाजे कहूसुंदरीवैनवीना
वजावै कहूकिंनरीकिंनरीलैसुनावै॥वार्ता॥जिससमै
कहूकतोसोमाईवानवडेनगारेवाजतेभए कहूकम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऊ४

48A यानमेकारसवदहोनमयो अरुकहूकरनालकमेरी
वैरहीहैकहूकसुंदरीआवसीअरवीणाकोवजावतेहै
कहूंकिंनरीआकिंनरीनामजोवाजंत्रताकोलैके
सुनावतहै॥१२॥कहूंनिरतकारीनचैसोभसाजै॥क
हूंम्याइवोलैकहूंमल्लगाजै कहूमाटमाड्योकरैमान
पावै कहूलोलनीवेडिनीगीतगावै॥वार्ता॥कहूनिर
तकरनवारेसोभासेसजेहूएनाचतहै कहूमाटवो
लतहै कहूमल्लगाजतहै कहूमाटमाड्योक्यावडिआ
ईकरतेहै अरुमानपावतहै कहूकलोल्लनीअरवेडनी
जातवारीजेहैगावनवारीसोगीतगावतहै॥१३॥कहू
वैलभेसांगभिरेभीमभारे कहूएनएनीनकेहेतकारे॥
कहूवोलवाकेकहूमेषसूरे कहूंमत्तदंतीलरैलोहपू
रे॥वार्ता॥कहूवैलअरुभैसांगभिरतेहै कहूककारहार
नअरुहरणीआकेसनेहहोयरहेहै कहूकवोककवा
वकरेसवदकरतेहैकहूमेषक्यामीडेलडतेहैकहूंलो
हसोपूरणहूएउनमत्तहसतीलडतेहै॥१४॥दोहरा॥
आगेहूमसपनलीएभूपतआवनदेष राजराजामिल
वैठेउब्रिह्मब्रिह्मरिषलेष॥वार्ता॥नवराजाजनको क
आवतेदेषकेराजादसरथजूनेआगेहोकेलीएराजा
राजामिलकेवैठे।अरुब्रिह्मरिषतेब्रिह्मरिषमिलकेवै
ठे॥१५॥सतानंद सोभना सुनमारद्वारव सिष्टमुनि
जावालविस्वामित्र॥सवैहेतुमब्रह्मरिषमेंसारिसु
यचरित्र॥कीनीज्योयावेसकोकहीएकअसनजाय
स्वादकहूवेकोसमरथनगंगजोयागुरषाय॥वार्ता॥
नवसतानंदजूकहतेभए हेमारद्वाजहेवसिष्टमुनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हेजाबालहेविस्वामित्र संपूरणतुमब्रह्मरिहोअरुसं
सारमैसुयहैचरित्रजिनको जोतुमनैयावंसपरकरीहैसोएक
अंसभीनहींकहीजातीजैसेगुंगोगुडषायकरकेताकेस्वा
दकेकहिवेकोनहींसामरथहोतै॥११॥सुषट॥ज्योअत
प्यासोपावैमगमैगंगाजल प्यासनऐकेबूकेबूकैतेतापव
ल तैसैतुमतेहमकोन भयोअवणकसुष पूजेमनकेका
जजूदेषराजमुष॥वार्ता॥जैसेमगमैअत्यंतप्यासाकोऊ
गंगाजलपावैताकीएकप्यासनहीबूकती तीनेतापबु
फजातेहै तैसेतुमारेतेहमकोएकसुषनहीभयो संपूरण
मनकेमनोरथपूरणभए जोश्रीरामचंद्रजूकोमुषदेष्यो
॥१२॥जनकउवाच॥सवैया॥सिपसमाधसजेअजहूंन
कहूजगजोगनदेषनपाई रूद्रकेचित्तसमुद्रवसेनितब्रह्म
हूपैवरनींजुजाई रूपनरंगनरेषविसेषअनादअनंतजु
देवनगाई केसवगाधकेनंदहमैवहजोतसमूरतवेददि
षाई॥वार्ता॥अनेकचिरकेसिपजनजाकोसमाधलगा
वतहैअवतांई अरुजोगीजनोनेकहूंनदेषनेनहींपाई
हैजगतमै अरुजोसिवजूकेचित्तरूपीसमुद्रमैवसतहै
अरुजोसदाहै अरुब्रह्माजूतेभीवरनीनहींजातीना
जाकेरूपहैनारंगहै नाविसेनतासोजाकेरेषहैक्या चिन
है जोवेदोनेनेजाकोआदनहीअरुअंतनहीऐसेगा
ईहै सोऐसीजोतविस्वामित्रजूनेमूरतवानहमकोदि
षाईदेईहै॥१३॥नाराचछंद॥जिनकेपुरषाभुवगंगदि
ल्याए नगरीसंगस्वरगसदेहसिधाए जिनकोसुतपाह
नतेत्रियकीनी हरकेधनुभंगभूसैपुरतीनी॥वार्ता॥
जिनकेपुरषाप्रिथवीमैश्रीगंगाजूकोल्याईएहैअरुन

५९A गरीके सगरद्वै के सहतस्वरगको गए हे कौन राजा हरीचंद॥
जिनके पुत्रने पाषान रूप जो अहिल्या सो इस्त्री करी है अर
सिवजूके धनुषकौ जो है टूटन सो तीनो पुर मे भ्रमती है॥१९॥
जिन आप अदेव अनेक संघारे सवकाल पुरंदर के रषवारे॥
जिनकी महिमा महि अंत न पायो हमको वपुराज सवेदन
गायो॥वार्ता॥अरु जाने आप अनेक राकस सिंघार करे है
सम सम उ विषे पुरंदर जो हे इंद्र ताकी रछा करणवारे है जिन
की महिमा को महि क्या प्रिथवी मे काहूने भी अंत न ही पायो
है हम तो की सतन करवे को कोन कंगाल है ताको जस वेदो ५उ
ने गायो है॥२०॥विनती करजे जन ज्यो जीय लेषो दुष देषि
ऐ कालत्यो आज हू देषो यहि जान हिए हिठ ई मुष भाषी ह
म है चरणो हक के अभिलाषी॥वार्ता॥फेर जनकजूने कह्यो
हम विनती करते है मोको अपने दास जैसा जानो जिस तरां
काल दुष देषिआ है जेव नगर तैसे आज भी देषो क्या चलो
मुषते यहि हाठ तां हमने यहि जानके कही है जो हम तुमारे
चरणो के जलकी अभिलाषा करते है॥२१॥तोमरछं॥त
व रिषराज विनै यहि कीनी सुन सम को करुना रस भीनो
दसरथ राज यहे जियजानी वहि यहि एक भई रजधानी॥
॥२२॥वार्ता॥तव रिषिराज विस्वामित्रने यहि विनती करी
सुनके जनकके वचनो को सभनो को दयाके रस मे भीनी
क्या मिली हूई है जनकराजा दसरथने भी यहि जानी य
हि मिथलापुरी अरु वहि अयुध्या एक ही राजधानी है इ
न मे भेद नही॥२२॥दसरथ उवाच॥दोहरा॥हम को तुम
से न्त्रिपत की दासी दुरलभ राज पुन तुम दीनी कंन्या का
त्रिभुवन की सिरताज॥वार्ता॥फेर दसरथजूने कह्यो ह
मको तुमसा रिषिउ राज्यो की दासी भी दुरलभ है फेर तु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनेतोआपनीपुत्रीदईहै॥ जोतीनभवनकीसिरताजहै क्यागुरुहै॥ भारद्वाजजनकप्रति॥ तारकछंद॥ दुष रूषआदिसवेतुमजीते॥ रुरनरकोवपुरावलरीते॥ कुलमहिहोयवडोलघुकोई॥ प्रतिपुरषानवडोरुव डोई॥ २४॥ वार्त्ता॥ दुषअरुरूषहेराजाजनकतुमनेस भजीतेहै॥ औरुदेवताअरुमानुषकोनहेवलतेरहि तजोजीतसके॥ फेरकुलमैकोऊवडोहोतहे कोऊछो टोहोतहै परवडाईसोईहै जाकेवडेवडेहोतआयेहै॥ वशिष्ठ विजयछंद॥ एकरुषीइहलोकविलोकि यहैउहलोकनिरैपगधारी॥ एकईहादुषदेषतके सवहोतऊहारुरलोकविहारी॥ एकईहाहुऊहा मतहीनरुदेतदुहूदिसकेजनगारी॥ एकहिभांति सदाअवलोकतहैमहिमामिथुलेसतिहारी॥ स्यवा र्त्ता॥ एकतोरुषीइसलोकहीमैदेषीतेहै॥ परलोक विषेनरकमैचरनधारनवारेहोतहै॥ कहानरक गामीहोतहै॥ एकईहांतोदुषकोदेषतेहै अरुऊहादे वलोकमैविहारकरनवारेहोतहै॥ एकलोकईहा भीअरुऊहापरलोकमैभीमतहीनहोतेहै॥ तिनो कोदोऊतरफकेलोकगारीदेतहै॥ कहानिंदाकरत है॥ अरुतुमारेतोहेजनकएकहीभातकीमहिमादे षीतीहै॥ जावालि विजयछंद॥ ज्योंमनिमैअतिजोत हुतीरवतेकछुओरुमहाछविछाई॥ चंदहिवंदतहै सवकेसवईसतेवंदनताअधिकाई॥ भागीरथीहु तीयेभवपावनवावनतेअतिपावनताई॥ त्योंनिमवंस वडोईहुतोमईसीयसंयोगवडीयेवडाई॥ २६॥ वार्त्ता॥ फेरजावालिमुनिनेकह्यो जैसेमणिमैअत्यंतजोतिथी

50A परसुरजके जोप्रतापतिसनेअपकाईहीताकौछविछाईअ
रजैसेचंद्रमाकोसमवेदतहै परजोसिवजूकेसिरपरहैइसने
वेदनाकीअपकाईयोहै जैसेगंगाजूतौगगनमैपवित्रहीथी॥
परश्रीवावनजूकेचरणकोछूकरकेताकौअत्यंतपवि
त्रताईभई तैसेईनिमवंसतोवड़ाईथा परयहिजोश्रीरा
मचंद्रसोसीताजूकोसंजोगभयोतातेवड़ेतेवड़ाहोगि
आ॥२७॥विस्वामित्रउवाच॥जनकसो मालनीछंद॥
गुनगनमनिमाला चित्त चातुरयसाला जगनसुषदणी
ता पुत्रकापायसीता॥वार्ता॥जोगुणकेसंवूहरूपीम
णिउंकीमालाहैचित्तकीजोचातुरयतानाकीसालाहैक्या
घरहै अरजगतमैसुषदायकहैकथाजाकी असीसीता
जूपाईहैपुत्रीजानैं॥अषलभुवनभरताब्रह्मरुद्रादिकर
ता थिरचरअभिरामी कीरजामाननामी॥वार्ता॥अरजो
संपूरणभुवनोकोस्वामीहै ब्रह्मानेसिवजूआदकोका
करताहै अरुथिरचरसंपूरणजीवोमैसुंदरहै असेश्रीरा
मरामचंद्रजूजानेजमाईकीयोहै॥२८॥दोहरा॥पूजरराज
रिषिब्रह्मरिषबहुदमदीहवाजाई जनककनकमंदरग
एगुरसमेतसुरराय॥वार्ता॥राजरिषतेब्रह्मरिषइनको
पूजनकरकेअरुवड़ेनगारेवजायकेगुरोकेसमेतजन
जूस्वरणमंदरकोजातेभए जैसेब्रह्मपतकेसहितदेव
तनकोराजाइंद्रहोई॥२९॥चामरछंद॥आसमुद्रकेछि
तीसअरराजकोगनै राजभौनभोजकोसवैजनेगणवने
भांतभांतअन्नपानव्यंजनादजेवही देतनारगारपूर
भूरभूरभेवही॥वार्ता॥फेरसमुद्रताईजोराजाहैअर
औरजेराजाहैतिनकोकौनगिनसकैजोराजाजनकके
भवनमैभोजनककरवेकौगएहैसंपूरणलोकवनेहु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ए नवनानाप्रकारके जोअन्नहैं अरूपानहैं तिनव्यंजनो
कोजेंवतहैं तिससमैगारीउ केसमूहनकोउस्त्रीगावे
तहैं वहुततेवहुत भेदोकरके॥३०॥हरिगीताछंद॥अव
गारतुमकोदेहहमकहिकहादूलहुरामजू कछुवाप
प्रियपरहारसुनीयतकरीकहितकुवामजू कोगनेजित
नेपुरषकीनेकहतउहसंसारजू सुनकुअरचित्तदेवरन
नोकेकहोसवव्योहारजू॥वार्ता॥हेरामजू दूलोअ
वतुमकोहमकहाकहिकेगारिदैंम कछुतुमारोवापप
रहारप्रियसुनीतातहै अरुताकोकहिनेहेकुवामकरीहै
सलेषअरथयहिपरहारक्याऊनमइस्त्रीकुवामक्याप्रि
यकीरूपइस्त्री ताने जितनेपुरषकीएहैतिनकोकौनग
नै इससंसारविषै हेकुवरतुमचित्तदैकेसुनोताकेवरनन
कोसभव्योहारकहतहो॥३१॥वहुरूपमोनवजोवनाव
हुरतननमैवपुमानिरे पुनवसनरतनाकरवन्यो तन
चित्तचंचलजानीरे सुभसेषफनिमनिमालपलकाप
रतिवहतप्रवंपजू करसीसपसचमपायपूरवगानस
हजसुगंधजू॥वार्ता॥वहुतजोकेरूपहैनवीनजाकोजो
वनहै अरवहुतेरतननेमैजाकोसरीरहै अरुजाकोवस्त्र
समुद्रवन्योहै तनअरमनकरकेचंचलहै सोभायमान
जोसेसनागजूकेफणकामणिउकीमालावालायपलं
गनापैजाकोप्रवंपवपतहै कहाहैयससचमदिसामेसी
सजानै अरुपूरवमैचरणकीएहैं सरीरसहिजसुभावजो
कोसुगंधवारोहै॥३२॥वहिहरीहठहरनाष्यदैन्यजु
देषसुंदरदेहसो वलवीरजग्यवराहजूतुवलईछीनस
नेहसो हूगईविह्वलसंग्रगप्रिथुफिरसजेसकलसिंगारजू
तवकछुकदिनवसमर्ईताकेहोएसवरससारजू॥वार्ता॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प

सोहूंठसोप्रिथ्वविहिरनाछ्यदैत्यनैचुराई सूकरसरीरधारी
देषकै तिसतैवलसोसूरमाजोजगयवराहजू तिनेनैछीन
करलई तवताकेअगविमलहोयगए फेरराजाप्रथु
नेताकेअगसजेसपूरणश्रिंगारकरके तवताकेकछु
कदिनवसमई संपूरणरसोकेसारदीए॥३३॥वढि
गयोप्रभुपरलोककोनेहिरनाकस्यपनाथजू तिहमांतमो
ननभोगई भ्रमपलनछोडिउसाथजू वहअसुरश्रीन
रसिंघसोस्योलई प्रवलछिनायकै लैदई हरिहरचंदरा
जहिवहुतजीसुषपायकै॥वार्ता॥जववहिराजाप्रथुप्र
भुकेपरलोककोगयो तवतिसनेहिरणकस्यपराकस
स्वासीकीयो तिसनेअनेकनरहितरहिसोभोगीजोअ
मकरकेएकपलभीसाथनाछोड्यो सोरछसश्रीनृसि
जू हदेवनेमार्यो तिसनेप्रवलहोयकैसोछिनायलई सो
भगवाननेराजाहरीचंदकोदई चित्तमेवडेआनंदको
पायकरके॥३४॥हरिचंद विस्वामित्रकोदई तुष्टतनमन
मानकै तिहहरीवलवलवंडवरही विप्रतपसीजानकै व
लवांधछलवललई नावनदेई इंद्रहिआनके इंद्रतज
पतकरोअरजुनसहिसकरकोजानके॥वार्ता॥सोश्री
राजाहरचंदनेविस्वामित्रकोदई तनअरमनसोप्रस
नहोयकरके तिसतैवलवानराजावलनेवरही जोराव
रीसोब्राह्मणतपस्वीजानकरके हरलई फेरराजावल
कोवांधकरके छलवलसोश्रीवावनजूनेलई सोआनक
रकेइंद्रकोदई फेरतिसतेइंद्रकोत्यागकरकेसहस्त्रार्जु
नस्वामीकीउ हजारहाथकोजानकरके किवहिवडो
वलवानहै॥३५॥तवतासमदछकछकोअरजनहसो
रिषजमदगनजू परसरामनवतिहसकलजाएयोप्रव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रवलवलकी अगनजू तिह बैरनवतिनसकलख्यत्रन
मार मारवनायकै इकईसवेर जुदई विप्रन रु धरजल अ
नवायकै ॥वार्ता॥ नव तिसके मद की छवि विविषसहर्सरि
जुनु मगन है गयो तातें परसराम जू को हस्यो हास कीयो
तव परसराम जू ने ता को प्रवल जो आपने वल की अगन
है तामें संपूरण को जास्यो तिस वैर सो तव तिन परसराम
जू ने संपूरण छत्रीओ को वनायके मार मार करके इकी
सवारी जो ब्राह्मणों को दई रु धरके जल सें सनान करवा
य करके ॥मू॥ वहि रावरे पितकरी पतनीतजी विप्रन थूक
कैं अरकहित है समरावनादिक रहे ताको हूडके राहला
जमरी पतनाहि तुम सो भयो ना तो नाथ जू अव ओर मुष
निरषेन ज्यो त्यो राषी रघुनाथ जू ॥वार्ता॥ सो तुमारे पि
ताने अव इस्त्री करी है सो ब्राह्मणों ने थूक के त्याग दई थी
अर अव भी कहने है जो रावण आदिक जो हैरा जे सो ताके
हूक रहे हैं लेनको तिसते इसलाज से मरीयत है जो तुम
सो हमारो नातो भयो है अव ओरको मुष जिस कि सतरो
करना देष ऐसे है रघुनाथ जू तुम नाको राषिडो ॥३७॥ सो
रठा ॥ प्रात भए सभ भूप वनवन मंडप मै गए जहां रूप
वहु रूप सवहीं विधि सभ सो भजै ॥वार्ता॥ फेर प्रात ह्रिका
लके भए संपूरण राजा वनवन करके मंडप मै जाने भए
जहां रूप वहु तन रूपन सो संपूरवि ध करके सभ सो भजन है ॥
॥३८॥ चमानका ॥ रची वचित्र वास सी तिथं भरु जकाम
ली तहां तहां विछावने वनेवने थली थली वितानसे
तस्याह पीत लाल नील का रंग मनो दुहदि सान के समा
न विवसे जगे ॥वार्ता॥ फेर के सो हे मंडप जहां सुंदर वासी
का व स्त्रो के अस्थान तवार चे हे अरु वस्त्र मई ही हे ये भोके

52A स्रष्ट पंगनजहां अरु अस्थान अस्थान विषैजहांवकुनेवि
छावनेवनरहेहे फेरसुफेदकारेपीरेनेलालअरनीलसो
रंगेहुएजहांचंदोएबनरहेहे सोमानोदोऊतरफकेबरोबर
विंबसरूपसोसोभतहै ॥४१॥ षयटकाछंद ॥ गजमोत
नकीअवलीअपार करसनपरऊरमनसुढार फूरनरव
जनरूचरचार जह्नितह्नि अकासगंगाऊदार ॥ वार्ता ॥ अर
तहांगजमोतिऊकीअपारपंगनसोभतहै कलसोपरबना
यकरकेजोउरमतक्यापाईहुई छूटरहीहै सोमानोजहांतहां
जोऊदारगंगाहै ताकीधारानमैसुंदरसूरयपूरतहैक्याघू
ररह्योहै सूरयकेकलसगंगाकीधारासीमोतीनकीपंगत
है ॥४५॥ राजदंततनकीअवलीसुवेस तिहसुकमराजराजत
सुदेस सुभतिपकुमारकाकरतगान जनुदेवनकेपुसपक
विमान ॥ वार्ता ॥ फेरतहांकेईक अस्थानोमे अपार गजदंत
नकीपंगतनगचरहीहै तिनपरजड़ाऊफूलनकीसुंदरपंग
तहै तहांवैठाराजिऊकीपुत्रीगानकरतीहै सोकैसीसोभा
है मानो देवतिअंके पुसपकविमानहै विमानसे अस्था
न देवकुमारीसीराजकुमारी ॥४६॥ तोमरछंद ॥ रतउन
सोभनसुंदरहोलै अरथअनेकनबोलनबोलै मुषमुष
मंडलचित्तनु~~[illegible]~~मोहै मनहुअनेककलानिधिसोहै ॥
वार्ता ॥ तहांऊपरऊपरसोभायमानसुंदरीअंडोलतहै जि
नोमे अरथअनेकहै ऐसेबोलबोलतीहै अरुसहिजेईमु
षमंडलजिनकोचित्तकोमोहतहै सोमानोअनेकचंद्रमासो
भतहै ॥४७॥ भ्रिकुटविलासप्रकासितदेष धनुषमनोजमनो
मयलेष चारिचित्तहासचंद्रकनजानो मुषसुषवासनवा
सनमानो ॥ वार्ता ॥ मोहनकेविलासनकोप्रगटकोकरतीहुई ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कैसीदेषतहै मानोतांकामकेधनुषमैविचारतहै यातेहा
सरूपीचांदनी अथवाचंद्रककलाकपूरसोंतिसकामधनु
चरचितहै क्याफजतीहै अरुमुषजिनकोसहिजसुभा
वकीसुगंधसोसुगंधतहै दोहरा॥ अमलकपोलेआ
रसीवाहेचंपकमार॥ अवलोकिनोविलोकियेमृग
मदमेघनसार॥४४॥ वार्ता॥ निर्मलजिनकेदर्पनसेक
पोलहै॥ चंपककीमालासीभुजाहै अरुदेषवोजिनको
कस्तूरीतेकपूरमैदेषीयेहै॥ दोहरा॥ गतकेभारमहा
वरैअंगअंसुकेभार॥ केसवनषसिषसोभियेसोभाइ
षअंगार॥४५॥ वार्ता॥ चालकेभारकरके अरुमहावर
केभारकरके अरुअंगोकीजोअंसुहैकिरणै तिनोकेभा
रकरकेनषतेलैकेसिषाप्रयंतजोश्रृंगारहैताकीसोभा
सोभतहै॥ विजयछंद॥ वैठेजरायजरेपलकापर
रामसियासवकेमनमोहै॥ जोतसमूहरहेमढकैसुर
मलरहेवपुरानरकोहै॥ केसवतीनहुलोकनिके
अवलोकवृथाउपमाकविटोहै॥ सोभनमंडलसूर
जमाकमनोकमलाकमलापतिसोहै॥४६॥ वार्ता
जरावकेजरेहूएपलंगपरश्रीरामचंद्रजूसोभतहै सोमा
नूरएाकेमोहतहै जोतकोसमूहनहांछायकररह्योहैता
कोदेषकेदेवताभूलरहेहै अरुमानुषनोकोनहै अरुजि
नकीसोभाकोअवलोकनकरकेकहांदेषकरकेछिया
हैउपमाकवीस्वरटोलतहै तिनोकीउपमाकेजोगको
ऊनहीहै सोभायमानजोहैसूरजमंडलताकेविषेमानो
लछमीअरुलछमीपतिश्रीनारायणजूसोभतेहै जराव
कोपलंगमयोसूरजमंडल अरुसीतारामचंद्रजूलछमी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

53A नारायणसेहै॥४२॥दोहरा॥गंगाजलकीपाग।सिरसो
भतसीतानाथ सिवसिरगंगाजलकियोचंद्रचंद्रकासा
थ॥वार्त्ता॥गंगाजलनामाजोवसत्रविसेसहैताकीपाग
श्रीरामचंद्रजीकेसीसपैसोभतहैकैसीहै चंद्रमाअरु
चांदनीताकेसहितसिवजीकेसीसपैकियोगंगाजलहै
रघुनाथजूकोमुषचंद्रमाहै रूपकीऊज्यारीचांदनीहै
वस्त्रपागकोगंगाजलहैहीसबदकरकेउपमाअथवा
गंगाकेजलसोउज्जलहै॥प्रश्न॥सिवजीकीउपमारघु
नाथजूकोकैसेबने क्योंऊनकोगौररंगहैइनकोस्या
मरंगविदततहै॥उत्तर॥यद्दिपागहैकियोसिवजूकेसि
रकोगंगाजलहै ऐसेअरथकरनो॥प्रश्न॥याअरथ
मेंअपकपदटूषनहोतहै गंगाजलसिवजूकेहीसी
सकोहोतहै सिवसिरपदअपकहै॥उत्तर॥यामेंप्रौढो
कतअलंकारहै प्रौढोकतिउतकरषकोकरैअहेतुहि
हेतजमनातीरतमालसेतेरेवालअसेत रहेजैसेज
मनाकोतीरतमालकीस्यामताकोअहेतुहैपरतिसीको
उतकरषताकेवासनेहेतकीउअत्यंतस्यामताजताई॥
तैसेहीसिवजूकोसिरगंगाजलकि[illegible]ऊजलताकोअ
हेतहै परताहीकेहेतकीउ अत्यंतउजलताजताईसि
वजूकीऊजलजटानकोगंगाजलअनउजलहोयगो
अथवा॥गंगाजलसमकहितेतौऊजलताईजानीजाती
सिवसिरकोकहिनते यहिजतायो जैसेसिवजूकेसीस
कोगंगाजलतीनलोकमेंप्रकासीअरुप्रतापवानभयो
है तैसेहीयहिपागरघुनाथजूकेसीसपैधारणतेप्रताप
वानहै कोऊकहेहै सिवनामश्रीभगवानकोहै तिनकेसी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सपै कि यो गंगाजल है यहि अरथ आछो नही यामे सिर
सबद द्वैवार आवत है तांते पुनरुक्त दूषन होत है ॥ प्रश्न ॥
चंद्रमा के साथ कहे चांदनी संग ही आवत है क्यो चांदनी
चंद्रमा ते भिन्न नही फेर चंद्र का सबद कहिवो अधिक है
उत्तर ॥ तांते ऐसे अरथ कीजे श्रीरघुनाथजू के गंगाज
लकी पाग सोभत है सो यहि शिवजू के गंगाजल है कि यो
चंद्रमा है चांदनी के सहत चंद्रमा सी पाग चांदनी से ताके
पेच जैसे चंद अरु चांदनी एक है तैसे ही पाग अरु ताके
पेच एक है ॥ प्रश्न ॥ चंद्र सबद पुल्लिंग है पाग सबद इस्त्री
लिंग है पाग को चंद्रमा की उपमा कैसे बने ॥ उत्तर ॥ तां
ते ऐसो अरथ करनो सीतानाथजू सोभत है कैसे है गंगा
जलकी जिनके सीस पे पाग है सो क्या सिव है सिव कैसे
है जिनके सीस पै गंगाजल है रघुनाथजू कैसे है जिनके
सीस पै गंगाजल वस्त्र विसेष है अथवा चंद्रमा है चंद्रमा
कैसो है चांदनी के सहित है रघुनाथजू कैसे है चांदनी
जो है प्रकासता के सहित है ॥ प्रश्न ॥ या अरथ मे गंगाज
लकी पाग अरु गंगाजल वस्त्र यह एक ही अरथ द्वैवार
आयो यांते पुरुक्त दूषन होत है ॥ उत्तर ॥ तांते ऐसे अ
रथ कीजे रघुनाथजू कैसे है गंगाजलकी को अरथ गं
गाजल की करी हुई अरथ कि गंगाजल ही की रची हुई
अत्यंत उज्जल जिनके सीस पै पाग सोभत है सो कियो सि
व है सिव कैसे है सीस पे जिनके गंगाजल है अरु चंद्रमा है
कैसो चंद्रमा जो चांदनी के साथ है अरथ कि दिन रात्र जो
को प्रकास है रघुनाथजू कैसे है सिव क्या कल्याण रूप
है सीस पे जिनके गंगाजल वस्त्र विसेष है फेर चंद्रमा अरु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

5 4A चांदनी रूनके सहितहै मुषचंद्रमाहै सो भाचांदनीहै ॥प्रश्न॥
मुषको चंद्रमा समकहे है दोदनी सी सो भासा पारसा परमतें
जानी जातहै चांदनीको कहिबो व्यर्थहै॥ उत्तर॥ तौ तेग्रे
सग्रर्थकीजै गंगाजलवस्त्रकी पागसीतानाथजूके सो
भतहै कि पौ गंगाजलहै सोकैसोहै सिवजूकेतौ सीसपै
है चंद्रमासे गौर सिवजू चांदनीसे पारवतीजू तिनोके सहि
तहै रहासा ग्यवसानालक्षना सो चंद्रचंद्रका सवदतें सिव
पारवतीजू जानिऐ पागकैसीहै सिवजो परमातमा पर त्रि
ह्म श्रीरघुनाथजू तिनोके सीसपैहै ग्ररु चंद्रमासे श्रीराम
चंद्रजूते चांदनीसे जानकीजू तिनोके सहितहै॥४७॥ जोम
रछंद॥ कछु भ्रिकुटकुटलसुवेस ग्रतिग्रमलसुमिलसुदे
स विधिलिषे सोपसुतंत्र जनुजयाजयकेमंत्र॥वार्ता॥
कछुक भ्रिकुटीजिनकी कुटलहै ग्ररु सवेसतेतीषी कपा
मलोहूवेसजिनको ग्ररु सुमितक्या ऊपरते मारीहे ठसो
मानो ब्रिह्मानेसीपकरके सुदरतंत्रमासत्रनकोजयाजोहै
जीतेहूऐ तिनोके भी जीतनेके मंत्रलिषेहैं ग्रथवा जयग्र
रग्रजयऊमे विधिके तंत्र लिषेहैं॥४८॥दोहरा॥ जद्दिप
भ्रिकुटरघुनाथकी कुटलटेषियतजोन तदपसुरासुरन
रनकी निरषसुपगनहोत॥वार्ता॥ जद्यपि श्रीरघुनाथ
जूकी भ्रिगुटीऊाकी कुटलक्या टेढीजोतदेषीतहै पर
तौ भी ताको देषकरके देवता ग्ररु ग्रसुर ग्ररु मानुषरूनकी
सुपगतहोतहै॥४९॥दोहरा॥ स्रवनमकरकुंडललल
तमुषसुषमाएकत्र ससिसमीपसो भतमनो स्रवननमक
रनक्षत्र॥वार्ता॥ स्रवनकांनोमे जो मकरक्यामछके ग्रका
रके कुंडलसोभतहै ता सो मुषकीसोभाएकत्रभईहै कहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा कठी भई है सो मानो चंद्रमा के समीप मकर रासमै सब वन
न छत्र सोभत है ॥५०॥ निसपाल का छंद ॥ आनन वदन सोभ
सरसी सुरंग वर कमल नैन नासा ऊतंग ॥ जनु जुवत चि
त्त विभ्रम विलास तेई भ्रमर भ्रमत रस रूप आस ॥ वार्ता ॥
तहां सुष की सोभा सुंदरता लसी सोभत है ता मै कमल
से नेत्र है अरु नासका उतंग है सरूप जो है रसु ये के तिनो
के जो सुंदर विभ्रम आदि हावन के विलास है तेई तिन वि
षे भ्रमर भ्रमते है रूप जो है सो ई भयो रस ता की आसा
करके ॥५१॥ पधरी छंद ॥ सोभ यत दंत रुच सुभ्र उर आनि
ऐ सत्य अनरूप जनु रूपक वषानीऐ ओर रूच रेष सवि
स हि हेरयै सो यजनु ईस सुमलक्षन सवेद रो ॥ वार्ता ॥
दंतो की सुभ्र कया सोत सो भा सोभत है सत्य जो है सनो
गुनन ता के अनरूपक या समानता को मानो रूपक है अ
रु होठ की लाली की जो रेषा सहित विसेषता के मिली
हुई देषीत है सो वृह्मा ने सो य कर के मानो सुमलक्षन दी
ए है ॥५२॥ दोहरा ॥ ग्रीवा श्री रघुनाथ की लसत कंबु
की वेष सो य मनो वच काय की मानो लिषी त्रिरेष ॥ वा
र्ता ॥ श्री रघुनाथ जू की जो ग्रीवा है सो कंबु कया संष की
तरै है सो मानो मन वचन करम की व्रिह्मा ने सो प्रकर
के तीन रेषा लिषी है ॥५२॥ सुंदरी छंद ॥ सोभन दीर
घ वाहु विराजत देव सिहात अदेवन लाजत वैरन को
अहि राज वषानहु है हित कारन के ध्वज मानहु ॥ वार्ता ॥
फेर सोभायमान दीरघ जिन की भुजा विराजत है जिन को
देष के देवता तो सिहात क्या प्रसंत होत है रछक जान के
अदेव राकसते लज्यामान होत है वैरीउ को सरप सम है

55A अरु हित कथा सनेह के करनवारे जो भगवतजन तिनो
के मानो पुजा है ॥५४॥ जो उर मै भ्रिगुलात वषाने हु श्री
कर को सरसी रुह मानहु सो हन है उर मै मनु यो जनु जान
की के अनुराग रंगे मनु ॥ वार्ता ॥ फेर हीये विषे जो भ्रि
गु की लात को चिन्ह है सो मानो लछमी के हाथ को कम
ल है अर हिये विषे श्री रामचंद्र जू के मणि अैसी सो भत
है मानो सीता जू के सनेह मै रंग्यो हुयो मन है ॥५५॥ दो
हरा ॥ सोभत पन रुचर मउर देषत तिनको भाग आय
गए ऊपर मनो अंतहि को अनुराग ॥ वार्ता ॥ पन कथा पु
क पुकी की सोभा श्री रामचंद्र जू के हिदै मै सोभत है जो
देषते है तिनको मानो भाग है अथवा अंतर जो जनो पर
नेह वसत है सो मानो ऊपर अनुराग यो है ॥५६॥ पद्धरका
छंद ॥ मोतन की दुलरी सुदेस जनु वेदन के आषर सुवे
स गज मोतन की माला विसाल मनमानहु संतन के
रसाल ॥ वार्ता ॥ अरु मोतिउ की सुंदर दुलरी कैसी सो
भत है मानो वेदन के भले वेष के आषर है अर गज
मोतिऊ की जो विसाल मा है सो मानो रस भरे संतन के
मन है ॥५७॥ विशेषक छंद ॥ स्याम दुहु पग लाल लसै दु
तयो नलकी मीनहु सेवत जो नगिराज मनो जल की पा
ट जटी अंत सेन सु हीरन की अवली देषनदी कन मान
हु सेवन भांत भली ॥ वार्ता ॥ स्याम जो है दोऊ चरण तिनो
के नलकि लाल सोभा अैसी सो भत है मानो चरणन को
सारस्वती अर जमन जो के जल की जो न सेवत है अर रे
सम सो परोई हुई जो है अंगन सु फैद हीरिउ की पंगन है
सोई मानो गंगा जल के कन के है भली भांत सो सेवत है

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥५८॥ दोहरा॥ क्योंवरनौ रघुनाथछबि केसव बुध्यनुसा
र जाकी सोभा सोभ अन सो भा सम संसार॥ वार्ता॥ श्री
रघुनाथजू की छबि को कैसे वरनें सकों मैं केसव बुध्य को
तुछ है। अरु वे कैसे हैं जिनकी सोभा सो सम संसार की सो
भा सोभती है॥५९॥ दंडक छंद॥ को है दमयंती ईंदुमती
रति रात दिन होय न छबीली छबि छिन जो संगारीरो केस
जलत व लजात जात वेद ओपै जात रूप का पुरे वि रूप से निहारी
री मदन नरूपी निरूपम जो निरूप भये चंद्र बहु रूप अन
रूप कें विचारीरौ सीताजू के रूप पर देवता कें रूप को है
रूप हो को रूप तौ वार वार डारिरौ॥ वार्ता॥ श्री सीताजू के
सी है जाके आगे को न है दमयंती नलकी इस्त्री अरु इंदुमती
अजकी इस्त्री अर रति कामकी इस्त्री इनको जो रात दिन
छिन छिन मैं सींगारिए तौ भी इनकी छबीली छब नहीं हो
य फेर सीताजू के मुष आगन को देषके उपमा लजामान हो
जात है कमल की अरु जात वेद क्या अगन की अरु जात रूप
क्या सार स्वर्न की कौ तौ जाके आगे एतो कंगाल विरूप से दे
षिते है अथवा अगन मैं ओप क्या ऊपद इन पायो ऐसो जो
ल कुंदन सौं जात है फेर मदन कामदेव जब निरूप क्या नैपन रू
षेहें के रहैं उपमा ठहिरावें है तब निरूप जे सुंदर पदार्थ जि
नकी उपमा नहीं सो भी निरूपम ए क्या सीताजू की उपमा
लायक नहीं भए। अथवा काम को जो निरूपन क्या कहि
न रूपम उपमान ताकरके सो काम निरूपम भयो है ताके रूप
नहीं अनंग है अथवा मदन जो काम है कै सो निरूपन रूप
म क्या जिनकी उपमा नहीं ऐसे जो सुंदर पदार्थ से जो के
आगे निरूप है कछु नहीं सो काम भी जाके आगे निरूपम यो है

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

56A फेरचंद्रमा वहुरूप है घटत वधत है ताको तुल्य कैसे विचा
रिए सीता रूके रूप के आगे परक्या रंभ जो है देवता व्रह्मा
णी रुद्राणी आद सो भी क रूप है फेर रूप ही के जो रूप कक्या
त्यव है सोर जिनने रूप वने है सो भी सीता जू पै वार डारीए अ
थवा रूप कया चित्र ताके रूप को वारीए चित्र केवल रूप ही
को होत है कि वा रूप जो कोऊ सुरुपवान है ताके रूप को वा
रिए॥६॥गीतका छंद॥ जिहि सो भी एसषि सुंदरी अनु
दामनी वपु मंडकै घनस्याम को जनु सेवही जह मेघ वे
घन छोडकै इक अंग चर चित चारु चंदन चंद्रका तज चंद को
जनु राहु के भय सेवही रघुनाथ आनंद कंद को॥वार्ता॥
म तिंमंडप मे सुंदर सषी सोभति है बीजुरी के अनसार सरीर
को सोभायमान करके सो मानो जह जो मेघन को सवूह
है ताको छोडके घन से स्याम श्री रामजू को सेवत है एक स
षी सुंदर चंदन को अंग मे चरचित है सो मानो चांदनी चंद्र
मा को त्याग करके राहु के भै सो आनंद के मूल जो श्री राम
चंद्र जू है तिनको सेवत है॥२१॥मुष एक है तन लोल लोचन
लोक लोचन को हरै जनु जानकी संग सोभिरा सुमदेह लाज
.... नको धरै तिहि एक फूलन के विभूषन एक मोत
नके कीए जनु देवतातन छीरसागर छोर छोटन
को छीए॥वार्ता॥एकन अमुष की एचंचल नेत्र वा
री है जो लोकनके नेत्रन को हरत है मोहत है॥प्रश्न॥ या अ
रथ मे कुलटा होती है॥उत्तर॥ मुष सो एवा तेक हि तो है॥
जगत के नेत्रन को वस कर एवा रे अरु चंचल नेत्रन वारी ऐ
से नेनन क्या ओर रही है सो सषी श्री जानकी ब जू के संग ऐसी
सोभती है मानो लाज ने देह धारन कीए अथवा तिन सो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
५८

57

55

सीताजू ऐसे सोभाति है देह धारे लाज है तहां एक सषीनके
तो फूलनके भूषन हैं एकनने मोतीनके भूषन करे हैं सोमा
नो देवतानके तन छीरसागर विषे दुग्ध की छींटन सों छा
ए हुए हैं ॥ ८२ ॥ सोरठा ॥ पहरे वसन सुरंग पावक जुत
स्वाहा मनो सहिज सुगंध तन अंग मानो देवी मलकी ॥ वा
र्ता ॥ एकनके लाल वस्त्र पहरे हुए हैं सोमानो आपनी स्वा
हा जो संकतनो के सहित अगन हैं एकनके सुभाव ते सुगंध
तन अंग है सो मानो मलयपरवत की देवी है ॥ ८३ ॥ चामर छं
द ॥ मत्त दंत राज राजवाज राजराजके हेम हीर मुकता चीर चा
रु साज साजके वेष वेषवाहनी असेष वस्तु सोधिये दा
य जो विदेहराज भांति भांति को दीये ॥ वार्ता ॥ उनमत्त जो
हाथीनके राजा वडे हाथी तिनो की पंगती अरु वडे जो घो
रे तिनो की पंगतो करके फेर स्वरणाके समूह हीरे मोती अ
रु श्रेष्ठ वस्त्र इनको सजकर के तरां तरां की सेना अथवा वा
हनी वहिलां अरु सेसरणा नरां के वस्त्र सो पकरके ऐसी
भांति भांतिको राजा जनक के दाईजो दीयो ॥ ८४ ॥ वस्त्र भो
नसे वितान आसनै विछावनै अस्त्र सस्त्र अंगत्रान भोग भो
वासं नको गनै दास दासि वासि रोम पाट के कियो दायजो
विदेहराज भांति भांति दीयो ॥ वार्ता ॥ वस्त्रोंके भो
न जो तंबू सहित चंदोयनके अरु आसनने विछा
वने फेर सस्त्र अरु अस्त्रने अंगत्रान क्या सजोए अरु भोजनो
के प्रकारनको तो कोन गिनसकै फेर दासि अरु दास
ने वासक्या सुगंधा अरु वस्त्र मकैते पाटके ऐसे राजा जनक
ने भांत भांतको दायज दीयो ॥ ८५ ॥ दोहरा ॥ जनक राय पहि
राय औ राजा दसरथ साथ वृद्ध चौर गजवाज दै आस मद्धि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

57A तिनाथ॥टीका॥ राजा दसरथ को अपने साथ कहि राजा जन
क ने पहिरायो अथवा दसरथ ने जनक के पहिरायो समुद्रैयं प्र
त के जो राजा थे तिन के छत्र चौर हाथी घोडे विदा मे दे कर के
॥३९॥ निसपाल का छंद॥ दान दीए राय दसरथ सुष पायके सो
थ रिषि विप्र रिषि राजन बुलायके। नाघ जाचक कें सैल दाडु
र मयूर से मेघ जिम वरष गज वाजि पय पूर से॥टीका॥ तब
जा रा दसरथ ने सुष पायके दान दीयो विप्र रिषि अरु राजरि
षि इन को बुलाय कर के सास्त्र के अनुसार सो पकर के फेर से
पूरण जाचकन को प्रसन्न कर के कैसे थे जो डडू अर मेभन
से थे जिनो को हाथी घोडे राई भए जल के प्रवाह तिन को मेघ के
समान वरष कर के॥४०॥ इति श्रीमत सकल लोक लोचन च
कोर चिंतामन श्री रामचंद्र चंद्रकायां सीता विवाह वरननो
नाम सप्तमः प्रकासः॥७॥ दोहरा॥ इह मकास सस्नम कथा
परसराम सो वाद रघुवर सो अति रोस तिहि मे जन मान वि
षाय॥टीका॥ सात मे प्रकास की यहि कथा है परसराम सो सं
वाद होयगो अर श्री रघुनाथ जू के अनंत को पते परसरा
२ म के मान को दूर करि के होयगो॥१॥ दोहरा॥ विस्वामित्र विदा
भए फिरे जनक पहुंचाय मिले आगली फौज को परसराम अ
कुलाय॥टीका॥ जब विस्वामित्र जू विदा भए अर राजा जनक प
हुंचायके फिरे तब आगली फौज को व्याकुल से होय कर के
परसराम जी मिले॥२॥ चंचरी का छंद॥ मत्त देत अमत्त ह्वै गए
देष देषन गा जुही ठौर ठौर सु देस के सव ढुंढ भीन हिव जुहि
डार डार हू प्यार सूरन जीव लै लै भजहि काढ के तनत्रान
एकनना र वेष न सजहि॥टीका॥ जन मत्त जो हाथी से सो भी मद
से रहित ह्वै गए देष देष कर गंजना को नही करते है अरु अ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
५८
58

सथ्यानअसथ्यानविषेसुंदरजोनगारैं वाजनेभए अर
हथिआरनकोडमडारकरकेसूरमाभीजीवकोलेलेके
भाजतेभए एकसरीरनेसंजोयनिकेनिकारकरके इस्त्रि
योकेसरूपकोवनावतेहैं कि हमइस्त्रीहूंकेवचजावैं॥३॥
दोहरा॥वामदेवरिषसेकह्योपरसरामरणधीर महा
कहि देवकोधनुषकिहिनेंतोर्यो वलवीर॥वार्ता॥नववाम
देवजीरिषसोंपरसरामनेकह्यो महादेवकोधनुषकिस
नेतोरआया॥४॥वामदेवोवाच॥महादेवकोधनुषसुन
परसरामरिषिराज तोर्योरामहिकहितहींसमझोराव
नराज॥वार्ता॥सिवजूकोधनुषहैपरसरामरिषिराज
तुमसुनो राजानेतोर्योअसेराजादसरथकेकहितेही
रावणराजापरसरामनेसमझ्या॥५॥परसरामउवाच॥
अतकोमलछत्रियसुंतनकीग्रीवादलीअ पार अवकठो
रदसकंठकेकाटहुंकंठकुठार॥वार्ता॥हेकुठारतैनेअत्यं
तकोमलराजिउंकेपुत्रोंकीग्रीवादलीहै अवकठोर
जोरावणकेकंठहैतिनकोकाटे॥६॥परसरामउवाच॥
सवैया॥वापकेवांधेजुवालवलीपलनापरलैसुतहै है
नछाटै हैहयराजलीयेगहिकेसवआयोहेछुद्रजूछि
द्रनडाटै वाहरकाहर्खीयोवलत्रासनहारयस्योजुपना
लहिहाटै तोकोकुठारवड़ायकहाकहि नादसकंठके
कंठनकाटै॥वार्ता॥जोरावणप्रिथमवांधकर्यापिछा
देकरकेवलवानवालीवानरनेवांध्योहै फेरपलनाप
रलैकरकेपुत्रकेहितक्यासनेहवासनेषिलोनाकरकेव
ह्योहैक्यारच्योहै फेरछुद्रजोहैतछरावनसोछिद्रको
डाटेक्यानककरकेजोआयोहेसहस्रावाहूपैसोतिस

58ख नेनाकोपकरलीयोहै फेरपताललमैगयोतहांवलकेदासन
नेवाहरमभरकैकाढदीयोहै सोपतालकीहारनमैहारगयो
है तिसदसकंठकेजोतेकंठनकोकाटैगोतोहेकुठारतो
कोषडाईदैकेकहाकहै।।७।।सोरठा।।जद्यपिहैअनतहै
नमोहितछापिसुमारतो गुरअपराधदिलीनकेसबको
कहिछाड़िरो।।वार्ता।।जद्यपवहिअनंतदीनहैपरमैंने
तोतेतोभीमारनोहीहै क्योजोगुरोकेअपराधसोमिल्यो
हुयोहै ताकोकहाकेसछोड़ीरो।।८।।चंद्रकलाछंद।।वर
वानसिषीनअसेषसमुद्रहिसोषसषासुषहीनरहो पुनलं
कहिडाटकलंकतकै फिरपंककनेकहिकीमरहो भुज
क कैरोसषाषससेदुषदीरघदेवनकोहरहो सिनकंठकेकं
ठनकोदसकंठकेकंठनकोकठलाकरहो।।वार्ता।।सेष्ट
जोमेरोवानहैपरोचालोताकीसिषीक्याअगनसोसप्र
रणताकेसमुद्रकोसोषनकरकेहेसषावामदेवसुषपूरव
नरजामोगो फेरलंकाकोउलटावोगो स्वरणकेसमान
तायकेताकोकलंकज्ञगनकरकेस्वरणरूपीपंकचि
कटकीमरदेवोगो सिनकंठक्या सिवजूकेकंठनकोरा
वणकेकंठोकाकंठलावनावोगो।।९।।परसरामोवाच।।
संजुताछंद।।यहिकोनकोदलुदेषीरो।।कामदेवउवाच।।
यहिरामसोप्रमुलेषिरो।।परसरामोवाच।।कुटिकोनराम ऊ
विचारीरो।।वामदेवउवाच।।सरिताडकजिंमारियो।।वार्ता।।
हेवामदेवयहिदलकौनकोहै तववामदेवनेकह्योयहि
श्रीरामजूकोदलुहै फेरपरसरामनेकह्योकहोसोकौन
सोरामहै तववामदेवनेकह्यो एकवाणकरजिनोनेता
डकामारीहै।।१०।।परसरामउवाच।।त्रिभंगीछंद।।
ताडकासिंघारी त्रियनविचारीकोनवडाईताहिगनै।।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कामदेव ऊवाच॥ मारीच हूतो संग प्रवल सकल अंग
अरु सुवाहु काहू न गनै कर कितु रषवारो गुर सुष
कारी गोतम की त्रिय सु पकरी जिन रघुकुल मंड्यो
हर धनुषंड्यो सीय स्वंवर मां कवरी॥ वार्ता॥ फेर पर स
रामने कह्यो तिनोने ताडका मारी सो रस्त्री ना विचारी
तौ या मे ताकी कौनसी वडाई गिनीए तव वामदेव
ने कह्यो तिसके संग मारीच राकस था जो सस्त्रो की
विद्या के संपूरण अंगो कर के प्रवल था अर जो का
हू को भी नही गनता ओसा राकस सुवाहु था तिनो
को मार कर के जिनोने गुरो के जग्य की रछ्या करी है॥
याते गुरो को सुष के देनवारे है फेर गोतम मुनीस्व
र की जो अहिल्या सो जिनोने चरण की रज सो सु
ध करी है अर रघुकुल को जिनोने मंडन कीउ है
ते सिवजू को धनुष षंडन कीउ है तहा स्वयंवर
विषे श्री सीता जू वरी है॥ ११॥ दोहरा॥ हर हू हू को
दंड हू धनुष चढावत कष्ट देषो महिमा काल की
कीयो सु नरसिसु नष्ट॥ १२॥ वार्ता॥ सिव जू
को भी या धनुष के चढावते हुए है यदी ताई कष्ट हो
ता सो सो मानुष के एक वालक ने नास कर दीयो दे
षो काल की वडी महिमा है॥ १२॥ सवैया॥ वोरे
सवै रघुवंस कुठार की धार मै वारन वाजस र
थ हि॥ वान की वाऊ उडाय के लछमन लछ्य क
से अरहा समरथ हि राम हि वाम समेत पठै
वन कोप के भार मे भू जो भरथ हि जो धनु
हाथ गह्यो रघुनाथ तो आज अनाथ करो दस
रथ हि॥ वार्ता॥ तव परसराम वोले आज संपू

59A रएरघुवंसकोकुठारकीधारमेंडुवोऊंगा हाथीघोडेरथ
इनोकेसहित फेरवाणकीपवनसोलछमनकोउडायकेनि
सानाकरोंगा सोभरथजोसत्रुघ्नहैतोको जोरामजूनेस
त्रुगरे तोरामजूकोसीताजूकेसहितवनकोभेजोगो अ
रुभरथकोकोपकेमारमेंभूजोगो जोरघुनाथजूधनु
ष [illegible] पकरेंगेतोआजदसरथकोअनाथकरोंगो॥१४॥
सोरठा॥रामदेषरघुनाथरथतेउतरेवेगही गहतभरथ
कोहाथआवतराम विलोकियो॥वार्ता॥परसरामको
देषकरकेरघुनाथजूरथतेउतरे भरथकोहाथपकरे
हुए तवपरसरामनेरामजूआवतेदेषे॥१५॥कवित्त॥अ
मलसजलघनस्यामवपुकेसोदास चंदहूंतेचारुमुषसुष
माकोग्रामहै कोमलकमलदलदीरघविलोचननस
होदरसमानरूपन्यारोन्यारोनामहै वालकविलोक
यतपूरनपुरषगुनमेरोमनमोहयतऐसोएकधामहै॥
वैरमानवामदेवजूकोधनुषतोस्योइनजानतहोंकीसवि
स्वरामवेषकामहै॥वार्ता॥कैसेहै निरमलजोहेसहित
जलकेमघतिनसमजिनकोसरीरहै फेरचंद्रमातेभीसुं
दरसोभाकोग्रामकयासंवूह जिनकोमुषहै अरकोमल
कमलकेदलजैसेविसालजिनकेनेत्रहै एदोऊसमानरू
पकेहै एकनामहीजुदोजुदोहै वालकसेदेषीतेहैपरपूर
णपुरषसेजिनोमेगुणहै अरइनकोऐसोइकतेजजातेमे
रोमनभीमोहियतहै सोमैजानतहोएविस्वविस्वकामरूप
इस्वीरामजूहै तिनोमैवैरमानकरकेसिवजूकोधनुषतो
स्योहै॥१५॥भरथ॥हरगीताछंद॥कुसमुद्रकासमयेस्त्रुवा
कुसकेकमंडलकोलिए करमूलसरवाणनरकसोभ्रिगुलो
नसोसमकोहीए धनुवानतीछकुठारकेसवभेषलाभ्रिग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चरमसो रघुबीरकोयहिदेषीरो रसवीरसंतिक चरमसो॥वार्ता॥
तब भरथजूने एकओजोंके पासकुसाकोमुद्रकाहै अरुसम
याहै तेम्बोबाहै अरकुसाकेसहत जोकमंडलताकोलीरा
हुएहै फेरहाथकोमूलसहत व्रणक्या अटनकेहै तीरच
लावननेकांपेयेवाणकेतरकसहै अरहोरोमे भ्रिगुकीला
तसोसमकीयतहै अरु जाये धनुषतेतीरहै अरतीछन
कुहालाहैसेषलामुंजकीतहागडोहै अरऊपर भ्रिग
छालाहै सोयहिवीररसअरसतोगुणकोपरमताकेसहि
तकौनहै॥१६॥रघुनाथनराजछंद॥प्रचंडहैहयाहिराज
दंडमानजानिरो अषंडकिनलेयभूमदेयमानमानीरो अदेव
देवजेयभीतरछमानलेषिरो अमेयतेयभगतभरगमार
गवेसदेषिए॥वार्ता॥तबरघुनाथजूनेकह्योयहिप्रचंडजोस
जा हस्राबाहुआरहोहै तिनकेदंडदेनवारोहै अरुअषंडक्याजो
दूरनाहैसकैअसीजानेकीरतपाईहै अरुजोप्रिथवीकोदेनेहै
ऊनोनेएहमानेहै अरमानतेहै अथवाअषंडजोहै तिनकर
एतिसोलईजोहै प्रिथवीताकेब्राह्मनोकोदेनवारोहै अदेव
क्याअसुरअरदेवतातिनकेजीतनेवारोहै मेवानोकेराषने
वारोहैवडोजाकोतेजहै सिवजूकोभगतहै भ्रिगुवंसकोस्वा
मीहै॥१७॥तोमरछंद॥सहितभरथलछमनराम बहुकीए
आनप्रनाम भ्रिगुनंदआसिषदीन रनहोयअजैप्रवीन॥
वार्ता॥सहित भरथजूकेलछमनजूके श्रीरामजूने आयके
बहुतप्रणामकीए तबपरसरामजूने आसीरवाददीए तुम
रणमेकाहूतेनजीतेजावो॥१८॥परसरामउवाच॥सुनराम
चंदकुमार ममवचनकियउदार भ्रिगुवंसकेअवतंस मनव्रि
तहैकिहिअंस॥वार्ता॥हेरामचंद्रकुमारतुमसुनोमेरेवच
नकीरतवालेवडेदातारहै तबरामजूबोलेहेभ्रिवंसकेमुकट

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

60A तुमारेमनकीव्रितकिसअसमैहैसोकहो॥मदराछंद॥तोर
सरासनसंकरकोसुभसीयसुयंवरमोकचरी तांतेवढ्योअभ
नै मानमहासुनकैंहुमेरीनसंककरी सोअपरापअगाथपरो
अवक्योसुपरेतुमहीपोकहो वाहूहैसोऊकुठारहिकेसवआ
पनेयामकोपथगहो॥वार्ता॥तुमनेसिवजूकोधनुषतोर
करकेसीताजूस्वयंवरविषेवरीहैतिसतेतुमारेमनमैवडोअ
भमाननवढ्योहै मेरीरतीकभीसंकातुमनेनहीधारनकरी
सोअगाधअपराधपर्योहैतुमारो कैसेसुधरेतुमहीकहो
अथवारामचंद्रजूनेकह्यो सोतेअपराधपर्योहैसोकैसेसुधरे
तुमहीकहो दोऊभुजाकुठारहेकोदेकरकेअपनेघरकोरस्ता
ग्रहनकरोयहिपरसरामनेकह्यो॥२९॥श्रीरघुनाथऊवाच॥
कुंडलिआ॥टूटेटूटनहारतरुदीजैवायुहिदोष त्योअवह
रकेधनुषकोहमसोकीजतरोस हमसोकीजतरोषकाल
गतजौनजाई होनहारहूरहेमिटैमेटेनमिटाई होनहारहूँर
रहेमोहमदसवकोछूटे होउतिन्हकोवज्रवज्रतिनुकाने
टूटे॥वार्ता॥तवरामचंद्रजूवोलेटूटनेवारोहीव्रिछटूटतहै
अरपवनकोदोषदीयतहै तैसेहीहेपरसरामतुमसिवजूके पस
धनुषकोहमारेपरकोपकरतहो अरुकालकीगतनहोजा
नीजातहै होनहारतोहूहैरहितहै मिटाएतेमिटतीनही
तिसीतेमोहअरमदसमकोछूटजातहै तिनुथावज्रकेस
मानहोतहै अरुवज्रतिनुकाहैकेटूटजातहै॥३०॥राम के
वित्त॥केसवहैहयराजकोमासहलाहलकोरनषायलीयो
रे तालगमेरमहीपनकोपतसोलयियोनसिरानोहियोरे मे
रोकह्योकरकोपकरालज्योचाहतहैवहुकालजियोरे तौ
लोनहीसुषजोलोहुतोररघुनाथकोस्वोनसुपानपियोरे॥वार्ता॥
परसरामकुठारप्रतकहितहै हेकुठारतैनेहयक्यासहस्त्रार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जुनकोजेप्रमसथा विषके समान सोकेपराक्या ग्रास
करकेषायलियो तिसविषकेवास्ते औरजोराजिडो
कीमदचरची सोई मई छिनसेछोरकरदीयो परसौ
भीतेरोहींडोनासीतलभयो क्योंजोविषषान
है ताकोछिनदेतहै तेअबमेरोकह्योकरकोपमेंक
रालक्याभयानकहोहि अथवातेकोपवानहोहु अ
रभयानकहोहु जोतूचिरकालताईजीवेयोचाह
तहै तवताईतोकोसुषनहीहै जवताईरघुनाथके
रूपरूपीअंम्रितनहीपीयो॥भरथतंत्रीछंद॥वो
लनकैसोभ्रिगुपतिमुनीएसोकहीऐतनमनवनआ
वै आहवडेहोवडेपुनराषोजातेजगजसपावै चं
दनहूमेअततरप्रसेआगउठेयहगुनसमकीजै॥
हेहयहमारेन्रिपतसिंघारेजगजसलैकिनजुगजु
गजीजै॥वार्ता॥तवभरथजूनेकह्योहे परसराम
केसेवोलतहोतुमसोवारताकहीएजोतनअरमनक
रकेवनपरै तुमआदतेवडेहोब्रासनहो अपनोवड
पनराषोजिसतेसमजगतजसपावो चंदनअतसीत
लताविषमीअत्यंतसंघरषणकीएतेआगऊठआ
वतहै यहिविचारसरवथाकरीए हेरुपराजातुमने
मारयो औरराजाभीसिंघारकिये सोईजसजगतमें
पायकेक्योंनहीतुमजीवते मरनेकोक्योंहूआहै॥२२॥
राम निराजछंद॥भलीकरीभरथजैऊठउआग
आगतेचढायचौपचांपआपवानलैनिषंगतेप्रभा
वआपनोदिषाऊवालभावछाडकैरकायराजपुत्र
माहरामलेछुडायकै॥वार्ता॥परसरामनेकह्याहैभ
रथतैनेभलीकहीसरीरतेआगकोऊठाऊक्याको

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

61A

पकरू आयतूहै चोपसो धनुषको चहाऊ तरकसतेवा
नकोनिकार अपनो प्रभाव दिषाव वालकताके भाव
कोछोडकरके मोकेजुधमैहे राजपुत्रप्रसंनकरू फे
ररामजूकोछुडायलै ॥२३॥ सोरठा ॥ लीयेचापज
वहाथतितहु भईयनरोसकै वरजेश्रीरघुनाथतु
मवालकजानोकहा ॥ वार्ता ॥ तवयहिमुनकेजव
भरथलछमनसत्रुघनइनतीनोभाईउनेकोपकर
केहाथमैधनुषलीये तवश्रीरघुनाथजूनेवरजेतु
मवालकहो ॥ रघुनाथ दोहरा ॥ भगवंतनसोजी
तिएकवहूकीजेसकति जीतीयएकहीवाततेकी
नेकेवलभगत ॥ वार्ता ॥ भगवंतजोहै श्रीभगवान
केभजनवारेब्राह्मन तिनेसेजोजीतिएतोसकतका
वलकदीभीनाकरीये तिनतेएकहीवाततेजीतीता
है केवलभगतके कीएते तिनकीसेवाकरीए ॥२४॥
हरगीतकछंद ॥ जवहत्योहैहयराजइनविनछत्र
छितमंडलकस्यो गिरवेपषनमुषजीततारकनंदको
जवज्योहस्यो सुतमैनजायोरामसो यहकह्योपरवतनं
दनी ॥ वहिरेनकातीयधनधरनीमेभईजगवंदनी ॥
वार्ता ॥ जवयापरसरामनेहैहयराजाकोमास्याथा
तवविनाछत्रिउकेप्रिथवीमंडलकरदीआपा फेरपर
वतकोवेधकरकेस्वामकारतकजूनेजवक्रौचकोजी
वहस्यापावलकरके तवपारवतीजूनेकह्याथामै
नेपरसरामजूजैसापुत्रनहीजाया धन्यहैरेणुका
इस्त्रीजोप्रिथवीमेजगतकोवंदनाकरकेजोगभई
है ऐसोमहावलीपुत्रऊपजायकरके ॥२५॥ तोमर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

छंद॥ सुनरामसीलसमुद्र तुमवंधुमतअनछुद्र ममवा
डवानलकोप अवकौं उचाहनलोप॥ वार्ता॥ हे श्रीराम
चंद्र हे सीलके समुद्र तुमारे जो भाई हैं अल्पतछुद्र है षो
टो है सो मेरे कोपकी वाडवागनविषे अवव हिलोपकी
उचाहनहै॥२७॥ शत्रुघ्न दोधकछंद॥ हो भ्रिगु
नंदवलीजगमाही। रामविदाकरजैघरजांही। हौ तुमसौ
पुनजुयहि मांडौ छत्रीयवंसको वैरू लै छांडौ॥२८॥
वार्ता॥ तवशत्रुघ्नजूने कह्यौ हो भ्रिगुमुनीके पुत्र तुम
वलवानहो जगतमै श्रीरामचंद्रजूको विदा करीए घ
रको जावै फेरमै तुमारे साथ जुधकरोंगो छत्री याके वं
सको वैर लैकर के छोडोंगो॥२८॥ त्रोटकछंद॥ पर
सराम उवाच॥ यहिवातसुनी भ्रिगुनंदजवै कहि राम
हि लै घरजाहि अवै इनयै जगजीवनजो वचहै रनहो तु
मसौ फिर केर चिहै॥ वार्ता॥ यहि वार्ता जव परसरामने
सुनी तव कह्यौ श्रीरामजूको अव ही घर लै जावो हे राम
जू जो इनोंते जगमै जीवनाभै वचैगा तौ फेर तुमसों मै
जुधकरोगा॥ विश्रिस्वयुनप॥ दोहरा॥ निज अप
राधीको हनै गुरु अपराधी छांड तौ तेकठन कुठार अ
वराम हैं सो रण मांड॥ वार्ता॥ फेर विचार्यो इनने तेमे
रो अपराध कीउ है सो प्रिथम अपने अपराधीको वधो
मारो गुरके अपराधीको छोडकै तिसनेहे कठोर कुठा
र श्रीरामजूसोहितुं जुधकोकरू॥ सवैया॥ भूतल
के सव भूपनके मद भोजनतौ वहु भांत कीउंई मोद
से नरक नेदन मै दुध्याव रपान भिरायोहीं योई षा
रषंडा ननको मद के सव सो पल मै उहपा नलीयोई राम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

62A तिहारे रहौ कंठको स्वाराग न पानको चाहे कुठार पीयो रे॥
वार्ता॥ पृथ्वी के जे सपूरण राजा हे तिनके मद को भो
जन तो हे कुठार तैने बहुतन को रोकस्यो हे अरु तारक
नंदन जो हे सहस्रबाहू ताके जो मद रूपी चरवी है पक्का
वरकयाको जो कीन्याई ताको पाक्या पीय करके भी याको
हीयो न हूसीतल भयो अरु श्रीरामजिउ के जो मद है सो
षीरते बड़ो समान है सो पलमै याने पान करलीयो अ
वहे राम यहि कुठार सो तुमारा रूप रजो है पानी के स
मान ताको पान कीयो चाहत है अथवा पानन के स
म चाहत है॥३१॥ लछमन॥ त्रोटक छंद॥ जिनको अनु
ग्रहि विप्र करे तिनको कस निग्रहि चित्त परे जि
नके गेज अग्रछन सीस धरे तिनके तन सछ्यत कोन करे
वार्ता॥ जिन ब्राह्मणनको अनुग्रहि जो है कृपा सो वपा
वन है तिनको निग्रहि क्या मारवो केसे चित्तमे धारिए
जिनके ढारहूए पदके अग्रछत जगनमे सीस पै धारीत्त
हे तिनको सछत क्या याऊके सहित सरीर कोन क
रसकै॥३२॥ श्रीराम॥ मेदरा छंद॥ कंठ कुठार प
रो अरु वहार कि फूलै कि सोक अरु मोक समूरो कै चित्र
सारि चढ़ौ कि चिता तनु चंदन चित्त कि पावक पूरो लोक कै
मे लोक बड़ो अपलोक कि केसवदास जु होऊ सु होऊ
विप्रन के कुल को भृगुनंदन सूरन सूरज के कुल को ऊ
वार्ता॥ तिस समे श्री रामचंद्र जू कहते भए हे परसरा
म अब जो हमारे कंठ मे कै तो तुमारा कुहाडा परे जो वच
रहे तो फूलन को हार परे ऐसे ईकै तो सोक होय कै स से
मूल अरु सोक होय कै तो हमारो सरीर चित्रसाला मे
चढ़ो क्या चितामे चढ़ो कै तो सरीर चंदन के चित्र मे हो

यक्याअगनकेप्रवाहमैहोय जगतमैजसवड़ोकेअ
पजसवड़ो जोहोवैसोहोईये पारहमारेसूरजवंस
ड़ोकेकुलमैब्राह्मणकेकुलयेकोऊसूरवीरनहै
है ॥३३॥ रामविसेषकछंद ॥ हाथधरेहथिआ
रसवैतुमसोहतहो मारनहाररहिदेषकहामनछो
मतहो छत्रियकेकुलहेकोऊवैननहैनरचै ॥
च॥ कोरकरोऊपचारनकेसिऊमैंवचै ॥ वार्ता ॥ हा
थ थमैहैआरपरह्लऐतुमसमम्माईसोमनेहो मार
नवारेकोदेषकेमनमैक्याछोमकरतेहो छत्रीये
केकुलविषेहोकेकोऊहीनवचननहीकरतहै करो
रऊपचारक्यावचाऊकरोकिसीतरैभीतितुतेन
हीवचोगे ॥३४॥ लछमन ॥ छत्री यहूगुरलोगनके
प्रतिपालकरै भूलहूतोतिनकेगुनऔगनजीनपरै
त्योहमकेगुरदूषनहोयनएकरती ज्योंतुमहीअ
पनीजननीसुषपायहती ॥ वार्ता ॥ लछमनजूनेक
हाहेपरसरामहमछत्रीहोकरकेतोगुरलोकजोहै
तिनोकीप्रतिपालाकरतेहै जोऊनतेकछुभूलवी
हूजायतोतिनोकेगुनऔगुनोकोचित्तमेनहीधा
रतेहै अरुतैसेतोहमारेतेगुरनकोदोषएकरती
भीनहीहोता जैसेतुमनेअपनीमातासुषपायकर
राम केमारदईसी ॥३५॥ लछमनकेपुरषानकीऊपु
रषारथसेनकह्योपरई वेषवनायकीऊवनता
नकोदेषतहोसवहीहरई कूरकुठारनिहारतजे
फलताकोयहैजुहियेजरई आजुतेकैंवताको स
महाधिकछत्रियकोजुदयाकरई ॥ वार्ता ॥ नवप
रसरामजूनेकह्यो लछमनकेपुरषानकेक्यावड़ि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

63A ग्रंकापुरषारथजोवडोवलकीयोहेसोतानहीकह्योजा
ता जिसदसरथनेवनायकरकेइस्त्रीयोकोवेषकि
ग्राथा जोकोहीग्रादेषकेहरग्राजाताथाग्रेसोसु
दर हेकूरषोटेकुहाडेवह्विवेषदेषकेजोतेनेदसरथ
नजेथे तिसकाएहफलभयाहेजोहीग्राजरताहै॥ग्रा
जनेताकोमहाधिकारजोछत्रीग्रापैद्ग्राकरेगा॥२५॥
ग्रपरंचगीतकछंद॥तवएकविसतवेरमैविनछत्रकी
प्रिथवीरची वहूकुंडस्रोणतसोमरेपितुनरपनाटिक्रिया
सची उवरेजोछत्रियक्षुद्रमहीतलसोथसोपसियारहो॥
ग्रववालत्रिपनतरूनछाडहूपरमानिरहेपालहो॥कवित्त॥
तवइकीसवेरमैनेविनाछत्रिउकेप्रिथवीकरी वहूतेकुंड
ग्रा रूधरसोमरेपितरोतरपनैदतामेक्रिग्रारची जोछुद्रछे
त्रीतवप्रिथमैवचगएथे ग्रवसमनाकोसोथसोथकर
केसियारकरोगा ग्रववालकग्ररूत्रिपतेज्वानकिसीको
नहीछोडेगा हयातेरहूनयरमकोपालनकरोगा॥२७॥
रामचंद्रदोहरा॥भ्रिगुकुलकमलदिनेसमुनजीतसकल
ससार कोयाचलहैइनसिसुनपरडारतहेजगभारा॥वा
र्ता॥हेभ्रिगुकुलरूपीकमलकेसूरजसंपूरणसंसारको
जीतकरकेजोइनवालकैकेसिरपैजगतकोभारडारतहो
सोकैसेचलेगो कहासारेजगतकोकोपइनपैगेरतहोसो
कैसेचले॥२८॥सोरठा॥रामैसवैयममारडं [illegible] नहोस छरा
रप्रानहरि देहूहथिग्रारनडारहाथसमेतनिवेगकै॥
॥२९॥कवित्त॥फेरपरसरामनेकह्योहेरामसहितभाई
उकेग्रववतुमसेमारोमैप्राणोकेहरनवारोवाणछोडत
हो हाथनकेसमेतहथ्यारकोडारदैवोसीघ्रताकरके॥३०॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रीरामचंद्र ॥ षट्पदका छंद ॥ सुनसकललोकगुरजाम
दगन तुव विसिष विसेषन की जु अगन स विसेष छांड
स हिहै अषंड हर पनुषक सो जिन षंड षंड ॥ वार्त्ता ॥
तव श्रीरघुनाथजू ने कह्यो हे परसराम हे सब लोकन
के गुर तुम सुनो तुमारे विषवाणको जो हे अगन सो स
हित विसेषता के तुम छोडो तिस सब प्राणन को सो स
हेगो जाने सिवजू को पनुष षंड षंड कीयो है ॥ ४० ॥ राम
सवैया ॥ कान हिमारन के तन ज्ञान विचार विचार विरं
चके है गोकुल ब्राह्मन नारि नपुंसक जे जिन हीन स्वु
भाव भरे हैं रामक हाक हिहै तुम को तुम वालक देव अ
देव डरे हैं गाप को नंद तिहारो गुरू जिनके रिषि भेष
करे ऊवरे है ॥ वार्त्ता ॥ तव परसराम ने कहा हमारे वाण
के तन ज्ञान क्या संजोए ब्रिह्मा ने एह रचे हैं विचार विचा
र के इनो परमेरे वाण नहीं चलते कोन से गो अन के संदू
ह अरु ब्राह्मन अर इस्त्री अंर नपुंसक और जोन से जग
त में हीन सुभाव से भरे हुए हैं अरहे राम तिन वाणो को
तुम कहा सहोगे तुम वालक हो अरइनो ते देवता
अर अदेवता सभ डरगए हे अर वही है गोगाय को पु
त्र विस्वामित्र तुमारो गुरू जिनो के रिषके वेषको एवचा
व भयो है ॥ ४१ ॥ श्रीराम ॥ छपै छंद ॥ भगन भयो भव
पनुष साल पुन तुमको साले ब्रिथा होय विपसिष्ट ईस
आसनते चाले सकल लोकसंघर हुसेष सिरनेपर जा
रो सपनसिंधु मिलजाहु हो हिस वही तुमुमारे अनत
अमलजोतनारायणीक हिके सिववुक जायवरु ॥
भ्रिगुनाथसंभारकुठारमैकरो सरासनजुगत सर ॥ वार्त्ता ॥

64A ऐसे गुरो की निंदा वरन रघुनाथ जू ने सुने नाग लोक कह्यो
एह सम उपद्रव ब्रिह्म हत्या ते होत है परलचार हमल्ल
रहे तुमना टले याते कानीयरी सो मारस मनु मयै रह्यो
याते एह सम महोवे अथवा हम मारे ते रेजु यमे सम लोक
न को दुष होनो हे याते सिव को धनुष हम मारे ते भग हू गयो
तुम को वहुत सल्ल भी सल्ला अथवा ब्रिह्मा की स्रिष्ट भी
ब्रिथा हो जावो सिवजू आसन ते चलायमान हू जावो
संपूरण लोकन को सिंघार हू जावो सेसनाग जू सिर ते
प्रिथवी को डार देवो तासे समुद्र मिल जावो अरसारे
अंधकार हू जावो अरजो अत्यंत निरमल श्री नाराय
ण जोत है सो भी बुझ जावो हे परसराम तुमने तो कुहाडे
को सम भारो अर मै धनुष पे बाण को जोर तहो ॥४२॥ सा
गना छंद ॥ राम रामजवको पकस्योजू लोक लोक भु
यभूरभस्योजू वामदेव नव आपुन आरे रामदेव
कोऊ सम कारे ॥ वार्ता ॥ परसराम ने श्रीरामजू ने जी
व को पकीडो लोक लोक मे नव भूरक्यो वडो भे होनो
भयो फेरन वम हांदेवजू आप आवन भए तिनो ने दो
ऊ श्रीरामदेवजू सम फारो ॥४३॥ दोहरा ॥ महादेव को
देष कर दुहू राम सविसेष कीनो परम प्रणाम ऊन आ
सिष दीए अनेक ॥ वार्ता ॥ तव महादेव को आवने देष
करके दोऊ राम जो है परसराम ने रामचंद्रजू तिनो ने
सहित विसेषता के परम प्रणाम कीए सिवजू ने आसीर्वा
द दीए ॥४४॥ चतुषपदी छंद ॥ भ्रिगु नंदन सुनिए मन से
गुनिए रघुनंदन निरदोषी निज एअवकारी सम सुष
कारी सब ही वियसंतोषी एकै तुम होऊ और न कोऊ ए
के नाम कहायो आयुरवल पूलो चाप जू टूटो मैतनमन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुषपायो ॥वार्ता॥ फेर सिवजू ने कह्यो हे परसराम तुम
सुनो अर मन मै विचारो श्रीरामचंद्रजू निरदोषी हे आ
पणे ह अवकरी हे क्या विकार सै रहत है अर संपूरण
सुषो के करणवारे है अर सरव प्रकार कर के संतोषी है॥
अर तुम हे ऊ एक ही हो सम संसार मै औरं दूसरो को
ऊ नही हे तुम ही व्यापक हो अर तुमने अपनो नाम भी
एक ही कह्यो हे अर इस की उमर को वल तो दूर भयो
हो एह धनुष या ते जो टूट गयो हे तो या मै हमने तन
अर मन सो सुष पायो हे ॥७५॥ पधटकाछंद॥ तुम अ
मल अनंत अनाद देव नहि वेद वषानत सकल भेव॥
सब को समान नहि वेरु नेह सम भक्तै कारन धरत दे न
ह॥वार्ता॥ तव महादेव अस तुत करने मरे तुम नि
रमल हो अर अनाद क्या जो को आद नही है औ अ
ने॰ नंत जो को अंत नही है तुमारो वेद भी संपूरण भेद को
नही जानत है सम भनो को समान हो वेर अरु सनेह को
हु सो नही हे सम भगतजनो के ही वास्ते सरीर को धार
त हो औसे रघुनाथजू सो कहि के फेर कह्यो ॥७६॥ अ
व आपनयो पहिचान विप्र सम करो आगलो काज
छिप्र तवनार इन को धनुष जान भ्रिगुनाथ दीयो र
घुनाथ पान॥वार्ता॥ अब हे ब्राम्हण तू अपना आय
विचार कहा तपस्या वन आगलो कारज करो आगले
जनम को सुधारो तव यह सुनकै श्रीरघुनाथजू को
श्रीनारायणजू जानकर श्रीनारायणजू को धनुष
हाथ मै दीयो॥७७॥तोटकछंद॥ नारायन को धनुवा
न लीया अंच्यो हस देवन मोद दियो श्रीराम कह्यो
अब काहि हनो त्रैलोक के घो भय मान घनो॥वार्ता॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

65A जवश्रीनारायनजूकोसारंगधनुषलीयो तवताकोहस
केषैच्यो देवतिन्होकोअनंददीन्हो वलदेषप्रसंनभए
फेर श्रीरघुनाथजूनेकह्यो अवकिसकोमारो तववडोभ
यमानकरतीनोलोकके पायमानहोतेभए किसकोमारेगे॥
॥४८॥ दिगदेवदहेवहुवातव है भूकंपभयो गिरराज
ढहे आकासअमानविमानछए हाहासवहोयहिसव
दभए॥वार्ता॥ दिगपालकांपतेभए वहुतपवनचल
तीभई परवतगिरतेभए प्रिथवीमेकंपहोताभया॥
आकासमे अनेकदेवतिन्हके विमानआयकेछाव
तेभए सभअस्थानमेहाहाकार ऐसेसवदहोताभया॥
॥४९॥ समवदनाछंद॥ जगगुरजान्यो त्रिभुवनमान्यो
ममगतमारो समयविचारो॥वार्ता॥ परसरामनेकहा
हेनाथमैनेतुमजगतकेस्वामीजाने॥ तीनोभुवनकेमा
नवेजोगहो यासमेकोविचारकेमेरीगतकोमारो॥ याज
गतसेमेरोमरकरजायवोकहूनाहोय॥५०॥ दोहरा॥
विषईकोज्योपुसपसरगतकोहनतअनंग रामदेवऐ
सेकरीभ्रिगुपतकीगतिभंग॥वार्ता॥ विषईपुरषकोजै
सफूलनकेवाणसोकामगतकोहरतहै ऐसहीरामजू
नेपरसरामकीगतहरी॥५१॥ मरहठाछंद॥ सुरपुरग
तमानीसासनमानीभ्रिगुपतकोसुषमारो आसिष
रसभीने सवसुषदीनेअवदसकंठहिमारो अतअमल
भए खगगनचढीछविदेवनमंगलगाए सुरकुलसम
हरष्यो पुषपनवरष्यो दुंदभिहीवजाए॥वार्ता॥ स्वर
गपुरीमैजायवेकीगतिदूरकरी परसरामकीरामजूने
अभ्यामानी ताकोमारेसुषदीयो तवपरसरामनेरस
मेभरेआसीर्वाददीए अरसभवलदीरो अरकह्योअव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रा॰पु॰चे
स॰टी॰
६६
66

64

रावनकोमारो तवअंतनिरमलसूरज भगवानहोतेभए आकासमैसोभाछाई अरदेवतिऊनेमंगलगान
कीये देवतिआंकोसंमूहप्रसंनभयो अरफूलनकीवर
षाकरीवडेनगारेवजाए॥५२॥दोहरा॥सोवतसीता
नाथकोभ्रिगुहीनीहोलान भ्रिगुकुलपतिगतिहरीम
नोसुमरवहिवान॥वार्ता॥सोवतेहूऐश्रीसीतानाथ
जूकेभ्रिगुनेलातदिईसी सोमानोयहीवातसुमरण
करकेभ्रिगुकुलकेस्वामीजोहैंपरसरामतिनोकीगति
रघुनाथजूनेदूरकरी॥५३॥मधुभारछंद॥दसरथ
जगाय सभभ्रमभगाय चलेरामराय दुंदभवजाय॥
वार्ता॥फेरदसरथकेजगायकरकेसंपूरणभ्रमकोभ
जायकरकेनगारिआंकोवजायकरकेश्रीराजारामचं
द्रजूचलतेभए॥५४॥विजयछंद॥तारकातारसुवा
हुसंघारकेगोतमनारकेपातकटारे चापहतोहरको
हसकेसवदेवअदेवहुतेसभहारे सीतहिव्याहअभी
तचलेगिरगरवचढैभ्रिगुनंदउतारे श्रीगरुड़ध्वज
कोधनुलैरघुनंदनअौधपुरीपगधारे॥वार्ता॥इननेका
मकरकेश्रीरामजूआवतेभए तारकाकोतारकेअ
रसुवाहुकोमारकेगोतमकीनारजोअहिल्यातांकेपा
पदूरकीए फेरजिसतेदेवताअरअदेवतासभहाररहा
एसेअैसोसिवकोधनुषहसकरतोरयो फेरसीताजू
कोव्याहकेभयसेरहतहूऐचलतेभए रसतेमेगरव
रूपीपरवतपैचढेहूऐ श्रीपरसरामजूउतारेगरव
कोदूरकीऊतिनोनेश्रीनारायनजूकोसारंगधनुष
लेकरकेश्रीअयुध्याजीविषेचरणोंकोधारतेभए॥इति
श्रीमनसकललोकलोचनचकोरचिंतामनिश्रीरघु

२ कीं॰ ५ रुचर ५

66A वेद्रचंद्रकायांपरमरामसंवादेवरनूनोनामसप्तमो
प्रकासः॥७॥दोहरा॥अष्टमप्रकासकथ्योंअवधपुरीदेस ८५
वषान सीतवरसोंऔरवेयजनजान॥वार्ता॥आठमे दूसरथी
प्रकासमेंयहिकथाआवेगीसुंदरश्रीअयुध्याजूमे
श्रीदसरथजूकोप्रवेसहोयगो सीताजूकेवरश्रीरामजू
तिनोंकेसहित अरऔरभाइउंकेसहत॥१॥सुमुषीछंद॥
समनगरीवहुसोभभयो जिहितिहमंगलचारठयो वर
ननहूंकवराजयने ननमनबुधविवेकसने॥वार्ता॥सं
पूरणनगरीमैंनववहुतनसोभाहोतभई अरजहांतहांसुं
दरमंगलहोनभये जोंकोवहुतेकवराजवरननकरतेहै
तेनअरमनकरकेबुधअरविचारसोमिलेहूए॥मोद
कछंद॥नगरसतुति॥ऊंचीवहुवरनपताकलसें मानो
पुरदीपतसोदरसे देवीगनव्योमविमानवसे सोभेति
नकेसुभअंचलसे॥वार्ता॥तहांऊंचीवहुतेवरणका
रंगनकीपताकासोभतहै सोमानोनगरकीसोभासी
दिषाईदेतहै देवतिअंकीअं रतीअंजोविमानोंपै
देषवेकोआईअंहै तिनोकेमानोसुभअंचलसोसो
भतहै॥३॥दोहरा॥कलभनितीनेकोटपरषेलतसि
सुचहुओर अमलकमलऊपरमनोचंचरीकचितचो
र कलभजोहैहाथीकेवचातिनोकोलीएहूएकोटजो
है चारेनरफतिनोपैवालषेलतेहै ताकीकेसीसोभा
है मानोनिरमलकमलकेऊपरचित्तकेचुरावनवारे
भवरहै अवयसोकमलहै कोटकमलकीअंकलि
आहै हाथीकेवचाभवरहैं॥कलहंसछंद॥पुरआठ
आठदरवारविराजे जुतआठआठसेनाथलसाजे॥
रहेचारचारबटकापरमाने गरजांहिऔरजवआवत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जाने॥वार्ता॥नगरमें आठ आठ दरवाजे विराजत हैं॥
एक एक डेरके सो वे दरवाजे आठ आठ [redacted] जो से
ना है बलवान तिनासों सजे हुए हैं सो वहिं आठ
आठ सैना एक एक दरवाजे पै चार चार चढी रहित
है जब और आवने है तब प्रियम के पाहरू जाने है॥
॥५॥दोहरा॥ आठो दिसके सील गुन भाषा वेष वि
न चार वाहं वसन विलोकिये के सब एकहि वार॥वार्ता॥
नहं पुरसर थके दरवार विषे आठो दिसाके सील और
गुण और भाषा ने वेषवनाव और विचारवो और वाह
न और वस्त्र एतने एकही वार देषी ने हैं अथवा के सब
क्या भगवान और तिनो की जो है एकही वार क्या वा
लल छ मीताके सहित सो देषी ने हैं ॥६॥ कुसमवचि
त्रा छंद॥ अति सुभ वीथी रजपर हरै चंदन लीपी
पुसपन परै चुहि दिस दिपत सुवरनमए कलस
विराजत मनमयनए॥वार्ता॥ अत्यंत सुभ जो गली
है सो भूर रहित है और चंदन सो लीपी का चरचित
है फूलनकौं पारे है दोनो तरफ जिनोने ग्रहि जो है
सुवरणके सो मए क्या षचत जहा करवारे है तिनो
पै मणी डाके षचित कलस विराजत हैं॥७॥तामरस छं स
द॥ घरघर घंटन के रव राजै विच विच सषजु फा
लरवाजै पटहि पषावज आवक सो है मिलस
हिनाई सो मन मोहै॥वार्ता॥ घर घर विषे घंटिडो
के सबद वाजत है तिनो के वीच मे संबते फालर वाज
त है और पटह क्या ढोल और पषावज आवक एवा
जे जहा सो भत है सहिनाई सो मिलकर के सभ के
मनको मोहत है ॥८॥ हीर छंद॥ संदर सब सुंदर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

67A प्रति मंदर परयोवनी मोहन गिरिग्रिगन परमानहुम
हिमोहनी भूषनगन भूषततन भूरि चितनचोरहीं॥
देषत जन मोहत मन नकानन यन कोरही॥ वार्ता॥ सुंदरी
ओ जो है इस्त्री ओ तेसम सुंदर मंदर मंदर प्रतिवनी ओ
हुई ओ सो मति ओ है मोहनेवारे जो है सुवरण को प
रवतता के ऊपर मानो मोहनी ओ है भूषनो के संवू
हो करके जिनके सरीर सोभत है मनके मोहनवारे
वडे है चरित्र जिनके देषते हुए जिनके सरीर मनको
मोहत है तीरसी जो नेत्रन की कोर है तासो॥ ६॥ सु
दरी छंद॥ संकर से लैही मनमोहन सिपन कीतन ओ
जन सोहत पदमन ऊपर पदमन मानो रूपन ऊपर
दीपत जानो॥ वार्ता॥ सो मदलन पर चढी कैसी है मा
नो कैलास परवत पै चढी हुई सिप पुरषो की ओ पु
त्री ओ मन को चुरावत है अथवा कमलो के ऊपर ल
छमी ओ है अथवा रूपन के ऊपर मानो सोभा है॥ १०॥
कीरत सी जय मंजुन सोहत श्री पत मंदर की मन मो
हन ऊपर मेर मनो मन रोचन स्वरण लता जनु लोच
त लोचन॥ वार्ता॥ सो मानो जैके मंजुगत कीरकी
श्री क्या सोभा है अथवा श्री मरगाकानजू के मंदर
की मणि ओ है अथवा मन को प्रसंन करणवारी ओ
सुमेर परवत के ऊपर मणि ओ है अथवा जिनको दे
षने के नेत्र लोभाय होत है ऐसी स्वरण की लता है॥
॥ ११॥ विसेषक छंद॥ एक लीए कर दरपन चंदन चि
त्र करै सोहत है मन मानहु चंदन चंद्र धरै नैन विला
स नन ओ वर लालन जो मजगी मानहु राजत राग
नहै अनुरागरंगी॥ १२॥ वार्ता॥ एक इस्त्री तहां हाथ मे
दरपन को लीए हुए चंदन के चित्र को करती है सो मा

नो चांदनी को धारण कीए हूए चंद्रमा मन को मोहत है॥ पे
रक ईक विसाल नेत्रवारी ऊकी लाल वस्त्रो विषे औसी जोत
जगत है मानो सनेह मै भरी हूयीं रागनि औसो भत है॥
अथवा रागनी क्या प्रीत ही देह धरे सोभत है श्री भग
वान जू के देषवे को॥१२॥ नीलन चोलन को पहिरे इक
चितहरै मेचक की दुति मानहु दामन देह धरै एकन
केतन सूक्ष्म सारी जरायजरी सूरक रावलसी जनु
पदमन देह धरी॥ वार्ता॥ एक नील वस्त्रन को पहिरे
हूए मन मोहत है सो मानो मेचक की छटा मै बीजुरी
औ है देह को धारे हूए अरु एकन के सरीर विषे जराऊ
सो जरी हूई साडी सोभत है सो मानो सूरज की किरण
की पांतसी है पदमनियो के सरीर को धारण कीए हू
ए१३॥ तोटक छंद॥ वरषै कुसमावलि एक यनी सुभ
सोभन कोमलतासी वनी वरषै सुष फूलन लायक की
जनु है तरुनी रत नायक की॥ वार्ता॥ एक स्त्री फूलन
की पांत को वहुत वरषावत है सो मानो सो भाग्यमान
हूई सुभ काम की वेलसी सोभत है अरु एक लायक
की इस्त्री फलने फूलन को वरषावत है सो मानो का
म की इस्त्री रतसी है॥१४॥ दोहरा॥ मोर मणगज पर
चढे श्री रघुनाथ विचार तिन हद्देष वरनन करत न
गर नागरी नार॥ वार्ता॥ सवेर के हूए ते श्री रघुनाथ
जू हाथी पै चढते भए विचार के क्या सुभ समै तिन की
छवि को देषके सपूरन नगर की चतुर इस्त्री वरनन कर
त है॥१५॥ तोटक छंद॥ तमपुंज लीए गहि मानन म
नो गिर अंजन ऊपर सोम मनो मनमथ विराजत सो
म धरै जनु राजत काम सिंगार करै॥ वार्ता॥ यह हस
थी नही मानो अंधकार को समूह सूरज ने पकर लीयो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

68A है तापैचढ्योहै अथवाकजलकेपरवतपैचंद्रमाहै॥
सोभाधारनकीपैमानोकामदेवसोभतहै अथवाका
मक्याभोगतापैस्यामसिंगाररसहैकहूचौथीतुकमें
ऐसभीपाठहै कियोभासतलोमहिदानपरैक्यामा
नोलोमकेऊपरदानहै॥१६॥ मरहठाछंद॥ आनंद
प्रकासीसमपुरवासीकरतनदोरादोरी आरतीऊ
तारैसरवसवारैअपनीअपनीपौरी पढमंत्रअसेष
नकरअभिषेकनआसिषदेरविसेष कुंकुमकरपू
रनम्रिगमदचूरनवरषतवरषावेष॥ वार्ता॥ आनं
दसोप्रकासमानहूये तवसंपूरनपुरलोगदौरादौरी
करतेहै राजकीसीघ्रतासो श्रीरघुनाथजूपैआरती
उतारतहैसुंदरऊविदेषसरवस्ववारतहै अपनीअप
नीपौरक्यादरवाजेपरसंपूरणमंत्रनकोपढकेकर
नेहैतिलकनकोसहितविसेषताकेआसीर्वादनको
देकरके फेरकेसरअरकपूरकीअरकसतूरीकेचूर
णकोवरषाकीतरहिसोवरषावतहै॥१७॥ तोमरछं
द॥इहविधश्रीरघुनाथ गहेभरथकेहाथ पूजतलो
कअपार गयराजदरबार॥ वार्ता॥ इसप्रकारश्रीर
घुनाथजूभरथकेहाथकोपकरेहूए अनेकलोकनसो
पूजतहूयेराजदरबारकोजातेभये॥१८॥ गए एकही
वार चारोराजकुमार सहितवधूटसनेह कौसल्याके
गेह॥ वार्ता॥ एकहीसमेचारोराजकुमारजातेभयेकहां॥
श्रीकौसल्याकेघरविषसहितउस्त्रीयाकेसनेहकरके॥
॥१९॥ त्रिभंगीछंद॥ वाजेवहुवाजनतोरनसाजतसुन
सुरलाजनदुखभाजै नाचततनवनारीसुवनसिंगारीग
नमनहारीसुखसाजै वीनानविजावैगीतनगावैमुनन

रिझावे मनरीझे भूषनपट द्वीजे सवरसभीजे देषनजी
जेहसलीजे ॥ वार्ता ॥ नवतहां वाजे अनेकप्रकारके वज
तेभये अरु तोरणक्यालाहूमें मसजे कैसेजामंगलकीसो
भाकोसुनके देवताभीलाजतहै औसेदेवमैपुरीनहीं ॥
अरजांकोदेषदुषदूरहोतहै तहां फूलसों सिंगारीहू
ईनवीननारीनाचतहैं जिनकी गतिमनकेहरणवारी
सुषकोउपजावतहै अरमनमेप्रसंनहोयकेवीणाको
वजावतीहैं अरगीतनकोगावतीहैं जिनोकरमुनी
स्वरोकोभीरिझावतहै तिनोकोभूषनअरवस्त्रदेई
तहै सभलोकरसमेभीजतहैं देषतेहूए जिनकोजीव
यतुहै औसीमोहनीहैतिनसोतहांहासकरीयतुहै ॥
अथवादेषतेहूए जिनसेजोहसलेईयततौजीवयत
है ॥ २० ॥ सोरठा ॥ रघुपतिपूरनचंद्रदेषदेषसमसुषव
ढो दिनदूनेआनंदताछिनतेतिहपुरचढ्यो ॥ २१ ॥
इतिश्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामनश्री
रामचंद्रचंद्रकायांरघुपतिसभ्रातदसरथनगरप्रवे
सवरननोनामअष्टमोप्रकासः ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ यहि
प्रकासनोमेकथारामगमनवनजान जनकनंदनी
कोसुक्तिवरननरूपवषान ॥ वार्ता ॥ इसनौमेप्रका
समेश्रीरामजूकोवनगमनहोयगो सीताजूकेसु
न्यओरूपकोवरननहोयगो ॥ १ ॥ दोहरा ॥ रामचंद्र
लछमनसहितधररापेदसरथ विदाकरेनतुम्हार
कोसंगसत्रघनभरथ ॥ वार्ता ॥ श्रीरामचंद्रजूलछ
मनकेसहतएकसमेराजादसरथनेधररापे अरभ
रथतेसत्रुघनजीनानकेकोविदाकीए ॥ २ ॥ तोटक
छंद ॥ दसरथमहांमनमोदरये तिनवोलवशिष्ट

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

69A सुमंत लाए दिन एक कह्यो सुभ सो भरयो हम चाहत राम
हि राज दयो ॥ वार्ता ॥ फेर राजा दसरथ मन मे वडे आनं
द सो मिले हूए तिनो ने वसिष्ट मुन अर सुमंत नाम मंत्री
सो बुलाय लीए अर कह्यो हे मुनी व हि एक दिन कहो
जो सुभ से भासो होय मिलि डाहूयो ता दिन हम श्रीराम
चंद्र जू को राज दीयो चाहत है ॥ ३ ॥ यह दिवान भरथ की मा
य सुनी पठऊ वन राम हि वुयगुनी तिह मंदर मो नि
ऽसो विनियो वरदेउ सु तो हम को जु दये ॥ वार्ता ॥ जव
यह दिवारता भरथ की माता केकई ने सुनी ताने श्रीराम
जू को वनमे भेजो असे मनमे विचारी फेर तिसने एक
दिन अपने घर मे राजा सो वेनती करी सु तो कंयाऊ पर
पीछे जो तुमने हम को वर दीआ था कि जो इक्षा होय
सो वर मांग लीजो सो अव देवो हम मांगे है ॥ ४ ॥ नृप
वात कही हस हेर हीयो वर मांग सुलोचन मैं जु दीयो ॥
केकई ऊवाच ॥ नृपनो विसेष भरथ लहै वर षैवनचौ सु
दस राम रहे ॥ वार्ता ॥ हस करता को दि देषि देषके राजा ने
कह्यो हे स्त्री तेने उन वारी जो मै प्रथम वर दीयो है सो मां
ग तव केकई ने कह्यो राजा ता को जो विसेष है राजति
लक सो तो मेरो पुत्र भरथ पावे अरु श्रीरामजू चौदां व
रष वनमे रहे ॥ ५ ॥ पषटकाछंद ॥ यह दिवान लगी ऊर
वज्र तूल हीय फट्यो सु ज्यो जीरन दुकूल उठ चले
विपनक हू सुनत राम तज तात मात तिय वंधु धाम ॥
वार्ता ॥ यह दिवान राजा के ही ए वज्र के समान लगी तव
हीयो असे सो सवद कीयो मानो पुरानो वस्त्र फटा तिस
समय दिवारता सुनते ही श्रीरामजू वन को ऊठ चले ता
ज कर के माता अर पिता अर उस्त्री ते भाई अरथ रस
म को ॥ ६ ॥ हरिलीला छंद ॥ छूटे सबै सब नि के तो

कितपयास विद्याविनोदगुनगीत वियानवास ब्रह्मादि
अनतजुअनंतअनंतलोग मूलेअसेषसवसेषन रागभो
ग॥वार्ता॥तिससमेसभनोकेसुष अरघ्युतक्या भूषतै
वाय प्यास एहसमकूटतेमरो विद्याअरआनंदअर्थैविद्या
केआनंद अरगुननेगीतनके विपान अरवस्त्रोके एस
मविस्तातेआह्लेकर अरअनंतक्यासे सनागप्रयेते
संपूरणसहितविसेषताके जोहैरागतेभोगतिनोकोमू
लतेमरे॥७॥सुकनकोमादकेद॥गएतहांरामजहां
निजमात कहीयहिवातसुहेवनजात कछु जिनजी
दुषपावहुमय्य सुदेहअसीस मिलोफिरआय॥वार्ता॥
फेरजहांअपनीमाताश्रीकौसल्याजीहै तहांश्रीराम
जूजातेमरो अरवातकही किमैवनकोजातहौ कछू
भीहेमातातुममनमैमतदुषपावो सोआसीर्वाददै
वो जिसतेफेरआपकेमिलौ॥८॥कौसल्याउवाच॥
रहोचुपकेसुतकोवनजाहु नदेषसकेतिनकेउरदा
हु लगीअववायतुमारहवाय करैडलटीविधकौ
कहिजाय॥वार्ता॥हेपुत्रतुमचुपकरकेरहोतुमवन
मेक्योजानेहो जोतुमकोनहींदेषसकैतिनकोउरदा
गपहोवो अरतुमारेवापकोतोवायभईकीहै जोउ
केहक होजातहै लटीविधकरैहैतुमकोजापवौ॥९॥ब्रह्मरूपकछं
द॥अनदेइमीबदेयराषलेहप्रानजात राजवाप
मोललैकरैजुपाषदीहगात दासहोयपुत्रहोयसि
ष्यहोयकोयमाय सासनानमानई सुकोटजनम
नरकजाय॥वार्ता॥अरजोअनकोदेवअरसिक्षा
कोदेवेपढाहै अरकाहूसमेप्राणनकोजानेहूरा
षलैवे अैसोराजाहोय अथवापिताहोय॥अ
वाय पमोललैकरकेजोमरिरकौषनकरकेवडोकरे ति

वाय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

70A

नाको कोऊ दास होय कै पुत्र होय कै सिष्य होय को
ऊ होवै माता जो आग्या को नही मानता है सो करै रज हे
न मन रक को जाता है ॥१०॥ कौसल्या उवाच ॥ हरनी
छंद ॥ मो हू चलो वन संग लीऐ पुत्र तुम हे हम देषजीरे ॥
औध पुरी मे राजपरो कै अब राज भरथ करो ॥ वा
र्ता ॥ हे पुत्र मो को वन मे संग लीऐ चलो तुम को देष कर
हम जीवत है अयुध्या मे भावै राजवीजुरी को गोला
परो भावे भरथ राज करो हमे कहा प्रयोजन है ॥११॥
श्रीराम उवाच ॥ तुम क्यो चलो वन आज जिन सीस
राजन राज जीय जानियै पत देव कर सेवै या तिहि सेव र
वार्ता ॥ तब श्रीरामजू ने कह्यो हे माता तुम आज व
न मे क्यो चलने हो तुमारे सीस पै राजा राजत है जीय
मे पत ही देव ता नैरो तिनो की हो सरव प्रकार करके जा
सेवा करो ॥१२॥ पत देय जो अनहुष्य मन मान लीजे
सुष्य सम जगत जान अमित्र पति जान केवल मित्र ॥
वार्ता ॥ जो तु स्त्री के स्वामी अनंद दुष देवे ता के भी सु
ष मान लीजिरे सरव जगत को सत्रु जाने केवल एक
पति ही को मित्र जानिऐ ॥१३॥ अमृतछंद ॥ नित प्रति
पंथ हि चलीरे सुष दुष को दलु दलीऐ तन मन से वहु
पत को तब लहि हो सु भगत को ॥ वार्ता ॥ नित प्रति र
सी मारग मे चलीरे पति से वन के मै सुष अर दुष को सं
वूह या मे दलीऐ सुष दुष ना मानिऐ तन मन सो पति
को सेवन करे तब सुभगत को पावेगी ॥१४॥ स्वाग
ता छंद ॥ जोग जग्य व्रित आद जो कीजै न्हान पान
दिन दान जु दीजै धरम करम सम निफल सेवा होय
एक फल के पति सेवा ॥ वार्ता ॥ जोग अर जग्य ते व्रित
आद जो करी रे अर तीरथन को सनान ने पान अर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दिनदिनप्रतिजोहानदेइरा करपरमकरमइन्याहस
मसेवानिसफलहै एकपतिह्नीकीसेवाकीएनेहीइस्त्री
कोफलहोतहै सबफलकोमूलपतिसेवाहीहै॥४॥
तातमाततजनसोदरजानो देवरजेठसगोसुवषानोपु
त्रपुत्रसुतन्श्रीछविछाई हैवहीनभरतादुषदाई॥वा
र्ता॥फेरपितामाताप्रतअरसोदरभाई अरदेउरने
जेठऔरजेसंबंधीकहेहै अरकन्यानेपुत्रकोपुत्र
पोताश्रीक्यालछमीप्रयंतजोएहपदारथछव
सोछाएहुएहै क्यासुषदायकहै सोसभभरताते
विनाइस्त्रीकोदुषदाईहोतेहै॥कुंडलीआकेदाना
रीतजैनाआपनेसुपनेहीभरतार पिंगुगगवोरा
वधिरअथअनाथअपार अपअनाथपारअप
वावनअतिरोगी वालकुपंडकुरूपसदाकुवाक
जडजोगी कलहीकोहीकूरचोरज्वारीविभचारी
अपमअभागीकुटलकुपतपतनतजेननारी॥
॥वार्ता॥तानेसुपनेमात्रमेभीइस्त्रीअपनेभरता
कोनात्यागे पिंगुलेगुंगोवावरोअरवधिकाचो
लाअथाअनाथक्यादीनवडोअरवाऊनो अन्य
नरोगीतेवालकअरपांडुरोगवारोषोटेरूपवारो
कलह करन वारे ८ षोटेवचनकहनवारो जडताकेजोगवारौनिकुष्टी
अरषोटोअरचोरअरजुहारीअरव्यभचारीअर
पापीतेभागहीन अरदुष्ट ऐसोभीकुपतपतहो
ता वेपरताकोइस्त्रीनत्यागेपरमेस्वरकरसेवे॥५॥पे
कजवाटकाछंद॥नारनतजेमरेभरितारहि ता
संगसनेहचयनंजहिजारहि जोकेहूकरनारजियाव
न तेतिनकोयहिवातवतावन॥वार्ता॥मरेतेभी
इस्त्रीपतकोनातजे तिसकेसंगहीसनेहसोअपने

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

71A आपको यनं जैक्या आगनमें जारै जो किसी नरीं तांकोक
रनारजिवाव तोनाको एहजोगहैमें वनावनहैा॥१८॥निस
पालकाछे ॥गानविनमानविनहासविजीवही नयत
नहिदिषायजलसीतलनपीवही नेलमजुषेलतजेषा
टतजसोवही सीतलजलनायनित्यऊँसवनजोअहीं॥
वार्ता॥गाननेविनाअरमानवडिआईनेविनाहसनते
विनाजोजीवे तातीताजीवसतनाषाय अरसीतल
जैनापीवे मरदनकेतेलकोतजे षेलवेकोतजे षाट
कोतजके भूममेसेनकरै सीतलजैसोसनानकरे
सदा अरऊपरकोजोचंद्रमाताकोनहींदेषे॥१९॥
षायमपुरैनहींपायपनहीपरे कायमनवचसवपर
मकरवोकरै क्रिछ्रउपवाससविईद्रयनजीतहीं॥
पुत्रसिषलीनतनजौलोंअनीतहीं॥वार्ता॥मीठा
भोजेनहीषाय चरनोमेपनहीजोहीनहीपहिरै॥
सरीरअरमननेवचनकरकेयमरकोहीकस्याकरै॥
क्रिछ्रकयाचांद्रायनव्रितअरउपवासव्रितइनोकोक
रके संपूरणइंद्रियोकोजीत्याकरै जवताईपुत्रोकी
सीषमेलीनमेरहे जवताईसरीरवतीते॥२०॥दोहरा॥
पतिहितपितचरननज्योसतीसाषदेदेव लोकलोक
पूजनमईतुलसीपतिकेसेव॥वार्ता॥स्वामीजोहैसिव
जूतिनोकेवासतेपिताजोदछताकोघरअरआपनो
सरीरसतीजूनेत्यागदीयोहै यावातकीदेवतासाषी
देतहै अरलोकलोकमैतुलसीजोजलेपरकीरषी
सोपूजनमईहैपतिकीसेवाकरके॥२१॥दोहरा॥म
नसावाचाकरमनाहमसोछाडहुनेहु राजाकोवि
पतापरीतुमतिनकीसुधलेहु॥वार्ता॥मनवचनकर
मकरकेतुमहमसोसनेहकोछोडो राजादसरथके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
७२
72

70

हमारे वियोग करके यासमे विपता सो परी है तुम तीनो
की सुध लैबे ॥२२॥ पयटका छंद ॥ ऊठ राम चंद्र लछम
न समेत पुनरा राजनक तनया नकेत सुन राजपुत्र का
एक वात हम वन पठए हैं न्दिपत तात ॥ वार्ता ॥ ऐसे श्री
रामचंद्रजू समकाय करके फेरत ह्वा ते उठ करके लछ
मन के समेत सीताजू के घर को गए हे राजपुत्री तुम ए
क वार्ता सुनो हम वन को पिताने भेजे हैं ॥२३॥ तुम ज
नन सेवक हूं रहु हु वाम कै जाहु आजहि जनक धाम॥
सुन चंद्र वदन गजगमन ऐन मन रुचे सुकी जे जलज
नैन ॥ वार्ता ॥ तुम माता की सेवा को हे सुंदरी रहो रहो
यां आजही जनक के ग्रह को जावो हे चंद्रमुषी हे ग
जहस्ती सी गमन चालवारी निश्चै करके तुमारे चित्त
मे भावै सो हे कमलनैनी करो ॥२४॥ सीताजू वाच॥
नराच छंद ॥ नहौ रहौ न जावजू विदेह धाम को अवे
कही जु वात मात सो सु आजु मे सुनी सवै लगे छुपा
ह माभली विपत माहि नारियो पिआस त्रास नीर
वीर जुथ मे सभारियो ॥ वार्ता ॥ तव सीताजूने क
ह्यो ना मे रहौं रहौ अरना अव जैं क के घर को जात न
हौं जो आपने मात से इस्त्री उपदेस की वारता क
ही सो मे सभ सुनी है अर यहि मरयादा है जो सुष मे
माता भली लागत है याद आवत है अरु विपता मे ना
री याद आवन है कैसे जैसे पिआस के मे विषे जल प्या
रो लगत है अरु जैसे जुथ विषे भ्राता को संभारीयत है
॥२५॥ लछमनोवाच ॥ सुकीआ छंद ॥ वन मै विक
ट विवध दुष सुनीए गिर गहि वर वन आगम तगुनी
ए कहु हर अहकहे निझर रहही कहु दुवदहन दु
सहि दुष सहिही ॥ वार्ता ॥ तव लछमन जूने कह्यो ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

72A

हेमाताबनविषेनानाप्रकारकेभयानकदुषसुनीतेहे जहां
परवनवडेभारीहैं अरररसनापाईतानहीं अगमहैकहं
अहिकापरपहैं कहूंहरकासेरहैं कहूंराकसफिरत
हैं कहूंदुसहकाजोनासहोजायऐसीहैकोदेहिनका
अगनकोदुषसहीताहै॥२६॥सीताउवाच॥दंडकछंद॥
केसोदासनींदभूषप्यासऊपहासत्रासदुषकेनिवास
विषमुषहूंगह्योपरे वायकोवहनदिनदावाकोदहि
नवडीवाडवाअनलज्वालजालमैरह्योपरै जीरन
जनमजातजोरजुरघोरपरपूरनप्रगटपरतापक्यो
कह्योपरै सहिहैंतपनतापपरकोप्रताप
रघुवीरकोविरहवीरमोपैनसह्योपरै॥वार्ता॥नींद
औभूषअरप्यासअरउपहासकाहसीसंगजागन
मैअरभैएहजोदुषकेअस्थानहैंसमसोसहेजायअर
विषकोभीमुषसोग्रहननहोयसकैवहिभीषायोजाय॥
अथवाविषमुषकासरपकोहाथमैपकरयोजायप
वनकोचलकेवायुवरोलाअथवापवनचलनमैजो
वनविषेदोकीअगनअरवडीजोसमुद्रकीवडवाअ
गनताकीज्वालाकोसहेहतिसविषेभीरह्योजायफे
रजीरनजनमकाव्रियअवस्थातिसविषेजोजातक्या
उपज्योहैजोरकोघोरज्वरतिसज्वरतेजोभयोहैप
रपूरणपरतापक्यादुषप्रगटताकोविरहिसमानक्या
करकह्योजाय तातेमैसभतपनदुषनेकेतापकोस
होंगी अथवातपतकासूरजकोतापएहसमसहो
गी परएकतोसत्रुकोप्रतापभरतराजाहोयहिअरु
श्रीरघुवीरजूकोविरहिहैवीरलछमनयहिनहीं
मोतेसह्योजायगो॥२७॥श्रीरामउवाच॥विसेषक
छंद॥ यामरहैतुमलछमनराजकीसेवकरो मातन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सही
७३

73

71

केसुनतानसुरीरचदुष्यहरो आयभरथकहायोकौ
पहिलेषसुनो जोदुषदैतौलैउरगोपहिवानसुनो
वारता॥ ऐसेसीताजूकोन्यारभईजानकेफेरश्रीराम
जूनेकह्योहेलछमनतुमव्नररहोराजाकीसेवाकरो
हेमाईमातानकेहीरचदुषनकोदूरकरोतिहारेर
हेथीरजधरेगी ग्ररयहिसीषसुनो जोदेषितोग्रा
यकेभरथकहाकरेगो जोदुषदेवेतोयावानकोग्रा
यकेकहीतो ऐसेविचारो॥लछमनोवाच॥दोहा
रा॥सासनमेटीजायकोजीवनमेरेहाथ ऐसीवे
सेवूकीएसेवकग्ररवननाथ॥वार्ता॥तवलछमन
जूनेकह्योहेनाथतुमारीग्राग्यामातेकेसेमेटीजा
य ग्ररजीवमेरोमेरेहाथनहीं लाचारहै ऐसीवा
रताकेसेसमकियेसेवकतोघररहे ग्ररस्वामीवन
मेरहे॥२९॥दुतिविलंवताछंद॥विपनमारगरा
मविराजही सुषदसुंदरीसोदरभ्राजही विपुल
श्रीफलसिधुमनोफल्यो सकलसाधनसियहि
लेचल्यो॥३॥वार्ता॥फेरवनकेमारगकोचलतेहू
एश्रीरामचद्रजूकैसेविराजतहे सुषदायकजोहे
सुंदरीश्रीजानकीग्ररसोदरक्यामाईश्रीलछम
नजूसंगसोभतहे मानमोनतकेसोभावानफली
करफल्योहूयोजोहैएकसिधुक्याऋषीस्वरसो
मानोसंपूरनसाधनग्ररनवसिधीयनकोसंग
लैकरकेचल्योहै॥३॥दोहरा॥रामचलतसभ
पुरचल्या जिहितिहिसहितउछाह मनहूभगीरथ
पथलगे भागीरथीप्रवाहू॥वार्ता॥श्रीरघुनाथ
जूकेचलतेहूएसाथमेजहांतहांतेसभनगरउठक
रचल्या उतसाहसेहमश्रीरामजूकेहीसाथरहेगे॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

73A सोमानो भगीरथके रसते श्रीगंगाजू को प्रवाह चल्यो
जात है ॥३१॥ चंद्रकला छंद ॥ रामचंद्र धामते चले सुने
जवै नृपाल वात को कहे सुने सुह्वै गयो महा विहाल॥
व्रिह्लरंध्र फोर जी ऊयो मिले विलोक जाय गेह चूर
ज्यो चकोर चंद मे मिले ऊ डाय ॥ वार्ता ॥ जिस समे रा
जा दसरथने श्रीरामचंद्रजू घरते चले सुने तिस समे
क वारता कौ न कहे सुने महा विंल राजा होते भये तव
व्रिह्लरंध्र कपाट समे द्वार को फेर करके राजा ऐसे देष
के जायके मिल्यो है जैसे घर को चूरण करके चकोर
चंद्रमा सो जाय मिलै ॥३२॥ नावारका ऊच ॥ कुम
रलल्लन छंद ॥ रूप हि देषत मो है इस कहे नर को है ॥
संभ्रम चित्त स्वरूपे राम हियेस भवूपे ॥ वार्ता ॥ न
व रूपन को देष करमग के लोक मोहत होत है को ऊ
कहे है यहि इस्वर है को ऊ कहे है नर है अथ कोई स्वर है
कै नर है कौन है समलोक ऐसे संभ्रम मे र हित है॥
चित्त जिनके उरफ गए है तव श्रीरामजू को पूछत है॥
॥३३॥ चित्रपद छंद ॥ कौन हौ कितते चले कित जात हो
कि ह काम जू कौन की विटीआ वहू क हि कौन की य
हि वाम जू एक गाव रहो कि साजन मित्र वे युव षानी
रो देसके परदेस के कि पो पथके पहिचानीरो ॥ वार्ता ॥
तुम कौन हो ग अर कहां ते चले आए हो कहा को जाते
हो कौनसा काम है अर यहि संग मे कौन की वेटी है॥
अर किसकी वहू क्या न हहै अर किसकी इस्त्री है॥
सो तुम एक गाम के वसनवारे सजन हो के मित्र हो॥
कि परसपर भ्राता हो कै एक देसके हो क्या परदेसके
हो क्या रसते की पहिचानवारे हो रसते मे ही मिले हो
॥३४॥ जगमोहन दंडक छंद ॥ कि पो राजपुत्री स्वयंवर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
७४

74 स

वरीहै वियोऊपपवरहै एहसोभा श्रमरतहो किधो
रतरतनाथजैससाथकेसोहाजातनतपोवनसिववैर
सिमरतहो किधोमुनसापहत किधोव्रिसदोषरत
किधोसियजुतसियपरमविरतहो किधोकोऊठग
होठगोरीलीनेकिधोतुमहरहरसिवाश्रीहचाहतफि
रतहो॥वार्ता॥यहिसंगमैक्यातुमारेराजपुत्रीहैस्वयं
वरविबेवरीहै क्याऊपायमेकाहूकगडेमैपरेहो अ
सीसोभाकोप्रापतहोयरहेहो क्यारतनेकामहोज
सकेसंजुगतचलेजातेहो तपोवनकौ शिवजूके वैरको
सुमरणकरतेहो क्यातुमकिसीमुनीस्वरकेस्रापहतहू
एआएहोवनकौ क्याकोऊब्राह्मनकेदोषसोरतन
हूएहोताकेनिवारनकोआएहो क्यासियोकेसंजु
गतसियहेपरमविरकतमानहूएहो क्यातुमठगने
कीविद्याकोलीएहुए कोऊठगहो क्याविस्नुनेसिव
हो सोविस्नुपासतेयहिलछमीहे पारवतीकोढूंड
नेफिरतेहो॥३५॥मत्तमतंगलीलाकरछंद॥दंडक॥
मेचकमदाकनीचारसोभामनोरूपरूरेलसेदेहधारि
मनो भूरभागीरथीभारतीहंसजाअंसकेहेमनो
भागभारेमनो देवराजीलीएदेवरानीमनो पुत्रसें
जुकतभूलोकमैसोहिए पछदेसेयसंप्यासुधीहै॥
किधोलछमीएस्वछप्रतछहोमोहीये॥वार्ता॥तीनो
केसेसोभतहे मानोमेचअरगंगाजी अरसुंदरवी
जुरीरूनोनेदेहधारीहे तिनोकेसुंदररूपसोभतेहैं॥
अथवा वडीजोहेगंगाजी अरसरस्वतीजी तेज
मनाजीतिनोकेअंसकेमानोभारेभागहै अथवा
देवनकेराजाईंद्रसोईंद्राणीकोलीएपुत्रजोहैजयं
तताकेसहितप्रियवीलोकमैसोभतहै अथवादे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

74A

ऊ समयो की सेयके विषे हेतु पञ्चबानो यहि से
ध्या है जो प्रतछ निरमल देषी नेहूं ऐ मन को मोहत है
॥ अर्द्ध॥ अनेग मेषर दंडकछंद॥ तडाग नीरहीनके
सनीर होत के सो हास पुंडरीक कुंड भौर मंडलीन मे
डुही तमाल वल्लरी समेत सूष सूष के रहे ति वाग फू
ल के समूल सूल षंडही चितै चकोरनी चकोर मोर
मोरनी समेत हंस हंसनी सुकादि सारकास मे पढै॥ ज
हां जहीं विरामलेत रामजू तहीं तहीं अनेक भांनसो
अनेक भोग भाग सो वहै॥ वार्ता॥ तीनो सरूपन को
देषकर के जो नदी जल ते रहित ताल से सो सहित जल के
होते हैं अर कमलो के जो है कुंड से वहु तिनो पै भमरो कि
अो मंडली अो जमाता सो भायमान हु रही अो है फेर
जिस मेत माल व्रिछ वेलो के समेत सूक सूक के रहे सो
सो वाग जो फूल फूल करके समूल ते कया से पूरण सूल
दुष को दूर करते हैं फेर तिनमें तीनो को चकोर तो च
कोरनी आके समेत देषते हैं अर मोर मोरनि आके स
मेत देषने है अर हंस हंसनी आके समेत अर तो ते आद
सारका सो मिलकै से पूरण पढते हैं फेर जहां जहां श्री
रघुनाथ जू विस्राम करते हैं तहां तहां अनेक प्रकार
सो अनेक जीव भोगो सो अर भागन से वयते हैं॥ अ॥
॥ सेदरी छंद॥ ग्राम को राम समीप महां वल सीत हि ला
गत है अति सीतल ज्यो घनसे जुत दामन के तन हो
त है दूषन के कर भूषन॥ वार्ता॥ जाते हू ऐ ग्राम क्या
गरमी को वडो सीता जू श्री रामजू के समीप ते अत्य
न सीतल लागत है जैसे मेघन के संजुगत जो है वीजु
री ता के सरीर को दूषन क्या सूरज की किरणों के ही भू
षन है तपन नहीं होती॥ रूप॥ मारग के रजता पत है

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अन केसबसीनहि सीतल्लागन पिय पदपंकजऊप
रपायन ॥ देजु चलति हितेसुषदायन ॥ वार्ता ॥ रसने
करेतेअत्यंततपतहोरहेहैं परसीताजूकोअत्यंतसी
नललागनहे क्योपिआकेचरणोकेऊपरचरण दैक
रचलतेहैं तिसतेवहिरजसुषदायकहोतहोतहें जि
नके ध्यानपरेतीनताप दूरहोतहैं एतोप्रनकेदेषकै
तिनके चिंननपेपगदेकेचलतेहैं ॥ ३५ ॥ दोहरा ॥ प्रन
पुरअरप्रभुगावकीप्रननगरकीनार सीताजूकोदे
षमुषवरननहेसुषकार ॥ वार्ता ॥ फेरपुर पुरकीअ
रणामगामअरनगरनगरप्रतिकीजेइस्त्रीहैं सोसी

ताजूकेमुषकोदेषकरकैंकरणावारोवरननकरती
हैं ॥ ३६ ॥ जगमोहनदंडकछंद ॥ वासोम्रिगअंकक
हेतोसोम्रिगनैनीकेहेवासोसुधापरतहीसुधापरमा
नीए वहिद्विजराजतहीद्विजराजराजैवहिकलानि
धतुहीकलाकलिनवषानीये रतनाकरकेदोऊकेस
वप्रकासकरअंवरविलासकुवलयहितगानीए वा
केअतिसितकरतुहीसीतासीनकरचंद्रमासीचंद्रमुषी
सवजगजानीए ॥ वार्ता ॥ चंद्रमाकोम्रिगअंककह
तेहैंम्रिगकोचिंनहैं सोतुमकोम्रिगनैनीकहितेहैं वा
केअम्रितकेधारनतेसुधाकरकहतेहे अरतुमहौंधर
नमेंअम्रितधारणवारीहै अरवाकोनामद्विजराजहैवा
ह्मणोकोराजाहै अरतेरेभीद्विजक्या दंतनकीपंगत
सोभतहैं वहिकलाकीनिधिक्याअस्थानहै अरतुमक
लाचतुरा इयाकरसहितहो अरदोऊरतनाकरकेहो ॥
चंद्रमारतनाकरक्यासमुद्रतेउपज्योहै अरतुमेंतन
जोहैगुनतिनोकीषानहो ग्रहप्रकासकेकरणवारेहो
चंद्रमाकोअंवरक्याअकासमेंविलासहै अरयाकेअ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

75A वरवसनमेविलासहै अरवहिकुवलयकयाकुमदनीउ
केछिनकारनवारोहै यहिकूजेहेप्रिथवीमंडलनाकोकल्या पञ्जर
नकरणवारोहै अरउसकेसीतलकीरणहै अरतुमभीसी
तलकरणकारीहो मधुरवचनोसों यातेहेचंद्रमुषीतूचंद्र
मासीजगतमेजानीहै॥४१॥ अन्यच॥ कलितकलंकके
नकेत अरसतगान भोगजोगको अजोगरोगहिकोवल
सो पून्योहीकोपूरणपेप्रतिदिनदूनोदीनछिनछिन
छीनछविछीलरकेजलसो चंद्रसोजुवरनतरामचंद
कीदुहाईसोईमनमंदकविकेसवकुसलसो सुंदरसुवा
स अरकोमलअमलअतिसीताजूकोमुषसषीकेव
लकमलसो॥वार्ता॥चंद्रमाकलंककीजोयुजाताके
सहितहै अरकेतयहिजाकोशत्रुहैयहतहै अरसुपेद
सरीरहैरोगीसे अरभोगकेजोगकोजामेअजोगहै॥
अथवाभोगीआजोजोगहैप्यारोहै अरजोगीआको
जाकोअजोगहै दुषदाईहै अररोगकोतोघरसोहै॥
छईरोगहैजामे एकपूरणमासीकोहीपूरणहोतहै
अरदिनदिनप्रतिदूनोदीनहोतहै क्योंछिनछिन
मैजाकीछपरीतलावीकेजलसमछीनछैहोतजात व
है जोनसेकवि चंद्रमासमवरननकरतहै तेईमंदबुध
वारेहै श्रीरघुनाथजूकीदुहाईहै अरचतुरकविसो
ईहै जोसुंदरअरसुगंधवारो अरकोमलतेनिरमल
हैसषीसीताजूकेमुषकोकेवलकमलसोवरणने
है॥४२॥ एककहेअमलकमलमुषसीताजूकोए
ककहेचंदमयआनंदकोकंदरी होयजोकमलतो
रजनमेनसकुचैरीचंदजोतोवासरनहोयदुतमंदरी॥
वासरहीकमलरजनहीमैमुषचंदवासरहोरजनवि
राजैजगवंदरी देषेमुषभावतनिदेष्योईकमलचं

दतातेमुषमुषेसषीकमलैनैचंदरी॥वार्ता॥एककहि
तीहै निरमलकमलसोमुषहै श्रीजानकीजीको एकक
हितीहै आनंदकोमूलचंद्रमैहीहै अरएकपहिलीके
वचनकोउलटावतीहैजोकमलहोतौंक्यारातमेनास तो
कुचे दूसरीकहेहै जोजोचंदहोयतौदिनमेमंदछबि
वारोनहोय क्योदिनहीमेतोकमलहोतहै अरराजही
कोचंद्रमाहोतहै मुषतोदिनरातमेजगतकोवंदनीय
हैसोप्राजुगतहै अथवामुषदिनमैकमलसोहैरात
मेचंद्रमासोहै यातेसदाजगवंदहै देषेतमुषहीभाव
तहै फेरकमलचंदद्येछ्योनहीभावतयातेमुषसोमु
षहीहै नाकमलहैनाचंदहै॥४३॥दोहरा॥सीतान
यनचकोरसषिरववेसीरघुनाथ रामचंदसीयकम
लमुषभलोवन्योहैसाथ॥वार्ता॥हेसषीसीताजूके
४५ नेत्रतोचकोरहै अैररघुनाथजूचंद्रमाहै अररश्रीराम
जूसूरजेवसीतेसीताजूकमलनैनीहै याते भलोसा
थवन्योहै॥४४॥मंदराछंद॥वडुवागतडागनतेग
नतीरतमालकीछांहविलोकभली घटकाइकवै
ठतहैसुषपायविछायजहांकुसकासथली मगको
स्त्रमश्रीपतिदूरकरैसीयकेसुचिवाकलअंचलकै॥
स्त्रमतेइहरैतिनकोकहिकेसवचंचलचारदृगंचल
कै॥वार्ता॥वडुतेजोहैवागअरतालनेनदीआतिनो
केकिनारेतमालव्रिछकीछायाकोदेषकेएकघटी
तहांसुषपायके जहांकुसाअरकाहीकीथलीहैत
हांआसनविछायकेवैठतेहैं तवश्रीरघुनाथजूतो
रस्तेकेस्त्रमकोदूरकरतेहैं सीताजूकेपवित्रवकुल
केवस्त्रकरके अरसीताजूश्रीरामचंद्रजीकेस्त्रमको
दूरकरतेहै चंचलनेत्रनकीपलकोकरके॥४५॥सोरठा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

76A
श्रीरघुवरके इष्ट असु वलत सौं नयन साची करी
अदिष्ट कूठी उपमा मीनकी॥४८॥वार्ता॥तव श्री
रामजूको असुन सों का ऐ हू ऐ जो है सीताजूके नेत्र
सो इष्ट कयाप्यारे लागत है क्यों कवीस्वर जो अदिष्ट
कया विना देषे मीनकी उपमा देते से सो आज इनने
सजल ह्वैके साची करी है॥४९॥दोहरा॥मारग ये
रघुनाथजू दुषसुष सव ही देत चित्रकूट परवत ग
ऐ सो हरसी यस मेत॥वार्ता॥ ऐसे मारगमे श्रीरघु
नाथजू दुषसुष सम को देते हुऐ जिनते विछुरे ति
नको दुष जिनको मिले तिनको सुष फेर चित्रकूट
परवत पै गये श्रीसीता लछमनजूके समेत॥५०॥
इति श्रीमत सकललोक लोचनचकोर चिंतामन
न श्रीरामचंद्र चंद्रकायां वनवास वरनननो नाम
वमो प्रकासः॥१०॥दोहरा॥ यहि प्रकास दसमो क
ह्यो आवन भरथसु नाम राजमरन अर तौ को वस
वो नंदी ग्राम॥वार्ता॥इस दसमे प्रकासमे भरथजू
को आवनो राजाको मरन अर भरथको नंदीग्राम
मे वसवो होयगो॥१॥दोधक छंद॥आन भरथपु
री अवलोकी अस थावर जंगम जीव ससोकी भा
टन हो विरदावल साजे कुंजर गाजन दुंदभ वाजे॥
॥वार्ता॥फेर रूपर आयके भरथजूने अयुध्यापुरी
देषी थिर अर चर सम जीव हैं सहित सोकके जामे॥
अर भाट विरदावलीको नही करते है अर द्वार पै ह
सती भी नही सोभते है औंनगारे भी नही वाजते है
॥२॥राजसभा न विलोकि रोकेऊ सोक गहे तव सो द
र होऊ मे दरमात विलोक अकेली क्यो विन श्रिय्य
विराजनवेली ॥वार्ता॥अर सो राजसभा भी नही दे

कतीहै तबदोऊ भाईसोक मानमए फेरमंदरमै
आके लीमातानाहीदेषी जेसेब्रिक्षतेबिनाबेलबिरा
जमानहोवे॥३॥तोटकछंद॥तबदौंचदेषप्रनाम २
कीए उठकेउनकेंठलगायलीए नपीराजलसंभ्र
मभूलरहे तबमातसेवातभरथकहै॥वार्ता॥त
बभरथजूनेबडीजानकरकेप्रणामकीयो केक
ईनेउठायकरकेताकोकंठसोलगायलीयो परभ
रथजूसंभ्रममैभूलरहे यातेजलभीनहीपीयो
तबमातासेभरथजीकहिनलगे॥४॥मातकहां
त्रिपतातगएे सुरलोकहिकौसुतसोकलए सुत
कौनसुरामकहाहै अबैबनसीयसुलछमनसाथ
गए॥वार्ता॥हेमाताराजाकहाहै हेपुत्रदेवलोकको
गए तबभरथनेकह्योकाहेते केकईनेकह्योहेपुत्र
पुत्रकेसोकसोमिलेहूए सोपुत्रकौनसो केकईनेक
ह्योश्रीरामजू हेमातासोकहांहै अब केकईनेक
ह्योबनमैसीतालछमनजूकेसाथगएहै॥५॥बनका
जकहाकहिकेवलमोसुषतोकोकहासुषयामेभए
तुमकोप्रभुतापितुतोकोहहाअपराधकहासग
रेईरए॥वार्ता॥तबभरतजूनेकहाबनमैतिनकोक
हाकारय केकईकहामेरेसुषवास्ते भरथजूनेक
ह्योतोकोयामेकहासुषभए केकईकह्योतुमको
राजताकोहूवो भरथजूनेकह्योधिकराजहै हाहा
बडोबंदहै अपराधतेबिनाहीसमनासकीए॥६॥
दोहरा॥भरतासुतबिछूबतैसमहीकोदुषदाय वहि
कहिदेषभरथतवकौसल्याकेपाय॥वार्ता॥हेभर
ताअरपुत्रौसेबिछूषनकरणवारी हेसभनोकेदुष
देनवारी ऐसेकहिकरके भरतजीनेतवश्रीकोसल्या

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

77A

जूकेचरणदेषे॥७॥तोटकछंद॥तवपायनजाय
भरथपरेऊनमेटऊठायकेअंकपरेसिरसूंघवि
लोकवलायलईसुनतोविनयोविपरीतभई॥वा
र्ता॥जवश्रीकौसल्याजीकेचरणोमेजायकरकेभ
रतजीपरेउनोनेमिलकरकेफेरउठायकेगोदमेलीए
सिरसूंघकेअरदेषकरकेवलहारीगयेअरपुत्रसो
कह्योहेपुत्रवडीविपरीतभई॥८॥भरतोवाच॥
तोटकछंद॥सुनमातभईयहवातअनेसीजुकरी
सुतभरतविनासनजैसीयहिवानभईअवजानन
जोकेद्विजदोषपरेसगनेसिरतोके॥वार्ता॥सुनोहे
मातायहिवातवडीषोटीभईहैजोकरीहैकेकईने
भरताअरपुत्रकेनासकरणवारीयहिवारताहेमा
ताजिसकेजाननेहूंतभीहोईहोवे॥९॥जिनकेरघु
नाथविरोधवसेजूमठधारनकेतिनपायग्रसेजू॥
रसरामरसोमननाहिनजोकोजगमेनितहोयपरा
जयताको॥वार्ता॥जिनोकेश्रीरघुनाथजूकोवि
रोधवसताहैऔरजौनसेमठधारियोपापनसोग्र
सेहूएहैअरश्रीरामजूकेरसमेमिलाहुआजिनका
मननहीहैजगतमेसदातिनकोपराजैहोतहै तिनो
केपायनकोलागे॥१०॥तिनोके॥जननिसोहमको
तुमपुत्रसियानोअतिसापचरित्रतुमेहमजानोस
भकोसभकालसदासुषदाईजीयजानतहौतुम
ज्योरघुराई॥वार्ता॥तवकौसल्याजूनेकह्योहेपु
त्रतुमसियानेहोसोगदनकोमतकरोतुमारेअंत
तसायक्यास्वेछचरित्रहैहमजाननहैतुमसभनो
कोसरवकालविषेसुषकेदेनवारेहोमैतुमकोऐ
सेजाननहौजैसेश्रीरामचंद्रजूहै॥११॥चचरीकंछंद॥

हायहायजहांतहांसवह्वेरहीसगरीपुरी धामधामनसुं
दरीप्रगटीसवैजिहुतीदुरी लेगएन्निपनाथकोसमलो
कश्रीसरजूतटी राजपतननसमेतपुत्रनविप्रलापगट
रटी॥वार्ता॥तवसंपूरणप्रिथ्वीविषेजहांतहांहायहा
यहोयरही औरजहांतहांजोदुरीक्याछयीहुई औसुं
दरीथीसोघरघरतेसभवाहरआवतीभई रोवतीभई
राजादसरथकोतवसंपूरणलोकश्रीसरजूकेकिना
रेलैजातेभए तवराजपतनीजोरानिआंतिनोकेसमे
तपुत्रोनेविलापकीवानीरटनकरी॥१२॥सोमराजी
छंद॥ करीअगनअरचा मिलीप्रेमचरचा सवैराजधा
नी भईदीनवानी॥वार्ता॥फेरदसरथकैसंपूरणरा
जधानीजोअयुध्यातांकीदीनवानीहोतभई॥१३॥
कुमारललतकाछंद॥क्रिआभरथकीनी वियोगरस
भीनी सजमनतनवीनी मुकंदपदलीनी॥वार्ता॥
तववियोगकेंसमेमिलीहुईभरतजीनेक्रिआक
री तवीनवुधकोसजकरकेश्रीनारायनजूकेचर
नोमेलीनहूए॥१४॥नोटकछंद॥पहिरेवकुला
सुजटाधरकें निजपायनपंथचलेअरिकैं तरंग ग
योगुहसंगलयो चित्रकूटविलोककेछोडदयो॥
वार्ता॥फेरभरतजीनेवकलकेवस्त्रपहिरेजटाको
सीसपैधारणकरके औरअपनेचरणोकरकेमारग
चलतेभएहठकरके फेरगंगाजूकोतरकरगए गुह
कोसंगलीनोचित्रकूटताई चित्रकूटकोदेषकेफेर
ताकोछोडदीयो॥१५॥मनमोहनछंद॥
सवसारसहसभएषगषेचरवारदज्यौंवहुवारन
गाजे वनकेनरवानरकिंनरवालकलैम्रिगज्योंम्रि
गनायकमाजे तजसिधसमायनकेसवदीरचदे

प्रतीतसोंअगनअरचनाअरी॥तवबहुतमेमवैरागमिली
सर्वपतूको ॥१५॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रदरीनमैंआसनबैसाजै॥भूतलभूधरहालेअचानक
आनभरत्थकेदुंदभिवाजै॥१६॥वार्त्ता॥तिससमेसंपूर
नसारसविसेषपंषीतेआदिअरुहंसयहअकासगामी
होतेभये जवमेघनकेसमानवहुतेहाथीगरजतेभये
अरुवनकेजोहैमानुषअरुवानरअरुकिन्नरयहवाल
कनकोलेकरजैसेसिंहतेमृगभागजावेतैसेभागतेभये
अरुसिद्धजोहैसोसमाधनकोत्यागकरकेदौरकरव
डीजोहैपरवतोंकीकादरीयांतिनोविषेसासनेको
सजतेभये॥अरुप्रथवीपैपरवतअचानकहीह
लतेभये जवअचानकहीआनकेभरतजूकेनगा
रेवाजतेभये॥ दोहरा॥रामचंद्रलछमनसहित
सोभतसीतासंग॥केसवदासमहासउठचढेधर
निधरश्रृंग॥१७॥वार्त्ता॥तिससमेश्रीरामचंद्रजूलछ
मनअरुसीताजूकेसमेतजोसोभतेसे मोहसकेपर
वतकेश्रृंगपैउठकरचढतेभये॥लछमनउवाच॥
मोहनछंद॥देखोभरत्थचमूसजआये॥जानअव
लहमकोउठधाये॥दीसतहैवहुवारनगाजै॥जह
तहदीरघदुंदभिवाजै॥१८॥वार्त्ता॥तवलछमन
जूनेकह्योहेनाथभरतजूसैनासजकरआयेहैहम
कोनिर्वलतानकरकेउठकेदौरेहै इसीतेवहुतेहा
थीगरजतेदेखीतेहै अरुजहांतहांवडेनगारेवा
जतेहै पुनः॥गजराजनिऊपरपाषरसोहै॥अति
सुंदरसीसासिरीमनमोहै॥मनिघूंघरघंटनके
रवराजै॥तडताजुतमानहुवादरगाजै॥१९॥वार्ता
वडेहाथीनकेऊपरपाषरसोभताहै अरुसुंदरसि
रपैश्रीमणकाकलंगीजडाऊसोभतहै अरुम
णीयाकेजिनविषेघुंगरूहै॥जैसेघंटनकेसब्दतहां

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सोमतेहै सोमानोबीजुरीकेसंजुक्तमेघगर्जनाकरतेहै॥
सवैया॥जुद्धकोआजभरत्थचढेधुनदुंदभकीदसहू
दिसधाई॥प्रातचलीचतुरंगचमूवरनीनसकेसव
कैसेहुंजाई॥अंतरतेजनरंजनकोरजपूतनकीरज
ऊपरआई॥२०॥वार्त्ता॥सोआजजुद्धकरबेकोभर
तजूचडेहै॥नगारयांकीधुनदसोदिसानविषेधाईहै
प्राततेहीचारप्रकारकीसैनाचलीहै सोकिसीत
रांभीवरनीनहीजातहै॥कैसीसभनोकेसंजोयोमे
षवफलकीहै॥मानोअरुनकेउदैकीसीअरुनता
है॥अपवाअरुनउदैकीषवसंजोयोमेकैसीफलकी
है॥अंदरतेमानोप्रसन्नहोकेराजपूतोकीरजक्यार
जपूताईक्रांतिऊपरआयफलकीहै रणसमोदेषके॥तो
टकछंद॥उडकैधरधूरअकासचली॥वहुचंचलवा
जपुरीनदली॥भुवहालतजानअकासरियो॥जनु
थंभतठौरहिठौरकीयो॥२१॥वार्त्ता॥उडकरकेप्रथ
वीतेधूरअकासविषैचढीहै॥वहुतेचंचलजोहैघो
रातिनोकीषुरीनसोंदलीहूई॥सोमानोआकास
कोहलीयोप्रथवीनेहालतोजानकरके ताकोथंभ
बोमानोठौरठौरमैकीयो॥तारकछंद॥ननराजकु
मारअरूझेंगेजू॥अतिसामुहेधायनजूझैंगेजू॥
जनुठौरनठौरनिभमनबीने॥तिनकेचढबेकहु
मारगकीने॥२२॥वार्त्ता॥जुद्धविषेआजराजकु
मारजूझैंगे॥अत्यंतसनमुषधावोकरकेअरूझैं
गेक्याजुद्धमेमरेंगे॥तिनोकेचढबेकोमानोठौ
रठौरविषेप्रथवीनेनवीनमारगकीयेहै॥सीता
जूवाच॥दोहरा॥अपनेकुलकोकलहक्योंदे
षैंहरभगवंत॥यहैजानअंतरकीयोमानोमहीअ

षैसवकेननत्राननमै
फलकीअरनौदेकीअरुनाई॥४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

79A

नंत॥२३॥वार्त्ता॥आपनेकुलकेकलहकोसूरजभ
गवानकैसेदेषसकैं यहीवारताजानकरकेमानो
अनंतप्रथ्वीकोअंतराकीयो॥ तोटकछंद॥ वहु
तासहिदीहपताकलसै॥ जनुधूम्रमेअग्निकीज्वा
लवसै॥ रसनाकिधोकालकरालघनी किधो
मीचनचैचहुंओरवनी॥२४॥वार्त्ता॥वहुतजोति
ससैनाविषैवडीपताकासोभतहै सोमानोधूममै
अग्निकीज्वालाहै॥अथवाकालकीभयानकजि
भ्याहैवहुत॥अथवाचारोतरफवनीहुईमोतनाच
तहै॥ पुनः रहीपूरविमाननव्योमथली॥तिन
कोजनुटारनधूरचली॥परपूरअकासहिधूर
रही॥ सुगयेमिटसूरप्रकासमही॥ २५ वार्त्ता॥त
हाअकासथलीजोदेवलोकेविमाननसोंपूरनहैर
हीहै जासोंप्रथ्वीमैसूरजकोप्रकासमिटगयोहै
दोहरा॥देखभरतकीचलधुजाधूरनिमैसुखदेत
जुद्धजुरनकोमनहुप्रतिजोधनवोलेलेत॥२६वार्त्ता
देषतेहूयेभरतकीचंचलधुजाधूरवेनिकेविषमै
सेसुषकोदेतहै मानोजुद्धकेजुरबेकोप्रतभटजो
हैतासोंलरबेवालेसूरवीरतिनाकोमानोवुला
वतहै॥ लषमनउवाच॥दंडकछंद॥मारडारों
अनुजसमेतइहषेतआजमेटडारोंकेसववच
ननिजगुरको॥ सीतासापसीतानाथवे
देदेषद्यजतरइहसुषसोयेसोकसवहीकेउर
को॥ केसोदाससविलासवीसविसेवासहोहुके
कईकेअंगअंगसोकपुञ्जजुरको॥रघुराजजूको
साजसकलषडायलेहुभरथहूआजराजदेहुप्रे
तपुरको॥२७॥वार्त्ता॥फेरलषमननेकह्यो॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आजभाईजोहैसत्रुघनताकेसमेतइसजुधकेषेतनवि
षेभरथकूमारडारेगो अरगुरुजोवसिष्टमुनम
न नाकरैतौतिनकोंभीवचनहींमानेगो आजसी
तानाथजूकोसीताजूकेसंजुगतछत्रकेतरेविरा
जमानहूएदेषकरकेइससुषसेंसमनोकेहिदेके
सोककोसोषनकरेगो अरविलासकेसहितक्या
विनाषेंरहीवीसविस्वेकरकेकेकईकेअगअग
विषेपुत्रकेसोकरूपीज्वरकोंनिवासहोवेगो अर
श्रीरघुनाथजूकोराजसंपूरणछुडायलेवेगो
आजभरथकोप्रेतनकेपुरकोराजदेवेगो मर
करप्रथमप्रेतसंगणाहोतहैयातेमारेगो॥२८॥
दोहरा॥ एकराजमहिप्रगटजहद्वैप्रभुकेसवदास॥
तहांवसतहैरैनदिनमूरतवेतविनास॥वार्ता॥
जहांएकराजकेविषद्वैस्वामीप्रगटहोतेहैं तहां
दिनरातमानोमूरतवानविनासवसतहै॥२८॥
उत्तर कुसमवचित्राछंद॥तवसैनाउहथलराषी मुनग
नलीनेसंगअभिलाषी रघुपतिकेचरननसिरना
एउतहसकेलेकेठलगाए॥वार्ता॥तवइयरश्री
भरथजूनेसैनातोऊसीअस्थानमेंराषी अपनेसं
गमुनीस्वरोकेसमूहलीए जिनोंकोंश्रीरामचंद्र
जूविषेचाहनाथी जायकेश्रीरामचंद्रजूकेचर
णविषेभरतनेसीसनिवाए तवश्रीरघुनाथजू
नेहसकरभरथजूकेठसोलगाए॥२९॥मानसवेमि
लवेकहुआई ज्योंसुनकोसुरभीपलवाई लक्ष
मनसोंउठकेरघुराई फायनआनपरेसुषदाई॥वा
र्ता॥फेरभरथजूनेकह्योहेनाथसंपूरणमाता
मिलवेकोआईहै जैसेपुत्रकोसूईहूईगऊआवे॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

80A यहि सुनके लछमन जू के सहित रामचंद्र जू उठकर
के माता के चरणों मे आन करपरे ॥ २१ ॥ माता ने कंठ
उठाय लगाए प्रान मनो फिर देह न आए आन मि
लीन वसी यसु भागी देवर सासन के पग लागी ॥ वा
र्ता ॥ तब माता ने उठाय कर कंठ लगाए मानो फि
र के देह मे प्रान पाए है तब सुंदर भागन वारी जो है
सीता जू सो आय कर मिलते भए तब देवर क्यार प्रि
थवी के जो देवता हो वे सो देवर जैसे देव भू सो कौन तव
सिष्ट मुनि आदि तिनो के अरु सासन के चरणों विषे
लागी ॥ २२ ॥ तोमर छंद ॥ तब पूछियो रघुराई सुष
है पिता न न माई तब पुत्र को मुख जोय क्रम ते उठी सब जो
रोय ॥ वार्ता ॥ तब श्री रामचंद्र जू ने पूछो है माता पि
ता के सरीर विषे कुसल है तब पुत्र के मुख को देख कर
के सम रोय उठी ॥ २३ ॥ दोधक छंद ॥ आसुन सो सम
बर बन धोए जंगम को जड़ जीव न रोए सिय वधू स
ब सुनक्षि आई राज वधू सगरी सम झाई ॥ वार्ता ॥ ति
स समे रुदन कर के आंसून सौं भूमि पूरण पर बन धोय दी
ये कौन है सो जड अरु जंगम जीव जो नहीं रोयो है ॥
तब सुन कर के सिय न की सासु उठी आंसू आवति आ
मई आ तिनो ने सम रानी आ सम झाई आं ॥ २४ ॥ सु
षद पर चित न धीर गए रंग तीर सुचि है सरीर पितृ तरप
नीर ॥ वार्ता ॥ फर चित मे धीरज को पार कर के गंगा जू
के किनारे जाते भए तहां पवित्र सरीर होय कर के कहा
असनान कर के पिता को तरपन कीयो जल सो ॥ २५ ॥
भरतो वाच ॥ तारक छंद ॥ घर को चलीए अब श्री रघु
राई जन हो तुम राज सदा सुषदाई यहि कानन के ही ज
ल सो गल भीनो उठ सो दर पाय परे तब तीने ॥ वार्ता ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तव फेर भरथजूने कह्यो हे श्रीरामचंद्रजू उठकर चलौ
रो अव अरु मै तुमारो दास हौ तुम राजा हो मै सदा सु
षके दैनवारे यदिवार ता कहो तव जलसौ गरभरया
यो तव तीनो भाई उठकर के चरणोमे परे ॥२५॥ श्री
रामोवाच ॥ तारक छंद ॥ राजदीयो हमको वनरू
रो राजदयो तुमको अवपूरो सो हम हूं तुमहूं अ
वकीजै वापको वोलको कहूं न छीजै ॥ वार्ता ॥
फेर श्रीरामजूने कह्यो हमको पिताने वनको सुं
दर राजदियो है अरु तुमको पूरणराज दीयो है ॥
सो अव हम भी अरु तुम भी असे करीये जिससे वा
पको वोल वैका हू न दैना दूर होवे ॥२६॥ दोहरा ॥
राजाको अरु वापको वचनन मटे कोय जो मानी
ऐन भरत तो मारे को फल होय ॥ वार्ता ॥ राजाके
अरु पिताके वचननको कोऊ नही मेटत है। जो
ताके वचनको ना मानि एतो हे भरथ मारेसमा
न फल होत है ॥२७॥ भरतोवाच ॥ स्वागता छंद ॥
मधुपान रत इस्त्री रत होऊ सन्यपात जुत वातुल
जोऊ ॥ देषदेष तिनको सभ भागे तासु वात कहत
पाप न लागे ॥ वार्ता ॥ तव भरथने कह्यो जो पुरष
मदराके पानमे प्रीत वारो होय अरु नमत अरु जोर
स्त्रीमे रति होय ताको जीत्यो हू यो अरु सनपात
रोगके सहित होय अरु जाको वायमह की होय ॥
तिनो को देषदेषके सभ भागत है तिनोकी वात
के दूर करवेको पाप नही लागत है ॥२८॥ ईसईस
जगदीस वषानै वेद वाक्य वल ते सभ जनि ताहि
मेट हठके रहिहो जो गंगतीरननको तजहोते ॥
॥ वार्ता ॥ या वचनको ईसकया ब्रह्मा अरु सिवजी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

81A नेविस्नुजीतीनेऐसेकहितहै औरभीसमवेदकेव
७२ चैकेवलतेकहितहै जोतिमवचनकोमेटकरकेहठसे
तुमवनहीमेरहेभोतोमेगंगाजूकेकिनारेसरीरको
त्यागनकरोगा॥७९॥दोहरा॥मौनगहीयहिवात
कहिकाडोसमेविकलप मरथजायभागीरथीवे
ठकीयोसंकलप॥वार्ता॥यहिवारताकहिकेमरथ
जूनेमौनगही अरसंपूरणविकलपछोडेकेरगंगा
जूकेकिनारेजावकरकेवैठकेसंकलपकीयेजोराम
जूनामुहेगेतोमैतननतजौगा॥८०॥उपेंद्रवज्राछंद॥
भागीरथीरूपअनुरूपकारी चंद्राननीलोचनं
कंजधारी वानीवषानीसुषतत्वसोप्यो रामानु
जैअनप्र[illegible]वोपवोध्यो॥वार्ता॥तवभागीरथी
जोगंगाअनुरूपक्याजैसोरूचाहैतैसोरूपकरण
कारी तोनेइस्त्रीकोरूपकीयाकैसोचंद्रमासमानजो
कोमुष अरकमलसेजाकेनेत्रहै तोनैसुष्यजोत
त्वसारहैसोसोपिडोअरवानीकही मरथजूको
आनकरकेग्यानसमझाये॥८१॥अनंतब्रिह्मा
दनहिंअंतपायो अनेकधांवेदनगीतगायो॥
तिनेनरामानुजवंधमानो सुनोसुधीकेवलब्रि
ह्मजानो॥वार्ता॥अनंतक्यासेसनागजी अरब्रिह्मा
दिकोनेजाकोअंतनहीपायो अरअनेकप्रकार
सोवेदोनेजाकोगीतमैगायोहै तिनोकेहेमरथ
जूतुमअपनेभाईकरकेमतमानो हेबुधवानतुम
सुनो केवलपरब्रह्मकरकेजानो॥८२॥तिनेछि
याभूतलदेहधारी अधरसंचारकपरमचारी॥
चलेदसग्रीवहिमारवेको तपीब्रितीकेवलपार
वेको॥वार्ता॥अपनीइछासोजानेप्रिथवीमेदेह

धारनकरीहै अपरमकेनासकरनको अरधर
मकेविधारनको अरअवराव॒णकेमारवेमारवे
कोचलेहै अरतपकरनवारेअंब्रितकरसोकारके २
वलतिनोकेपालनेको॥४३॥उठोहठीहोहनकाज
कीजै कहेकछूरामसोमानलीजे अदोषतेरीसुत
मानसोहे सुकौनमायाइनकीविमोहे॥वार्ता॥तु
मऊठोहठीमतहोवोकारजकरीए॰जोरामजूकहे
सोईमानलीजे हेपुत्रतेरीवाताअदोषसोमतहै सो
कौनजगतमेजोइनोकीमायाकरकेनहीमोहतहो
तहै॥४४॥दोहरा॥यहिकहिके भारथीकेसब
भईअदिष्ट भरथकह्योऊठरामसोंदेहु पादिका
इष्ट॥वार्ता॥यहिगंगाजूकहिकरके अदिष्टहोती
भई फेरभरतजूनेउठकरकेकह्यो श्रीरामचंद्र
जूसे हमकोपऊरीदीजिएउहीइष्टहै॥४५॥ऊ
पेंद्रवज्राछंद॥चलेवलीपावनपादकालेके॥प्र
दछनारामसीताहिदैके गरोतनंदीपुरवासकी
नो समवेपुश्रीरामहिचितदीनो॥वार्ता॥तवव
लीभरथजी पवित्रपादकालेकरचलनेभए अ
रसीतारामजूकोप्रदछनादैकरके फेरनंदीग्राम
मेगए तहांहीरहवोकीयो॥४६॥दोहरा॥केस
वभरथ विश्रादहैदेसनगरकेलोग वनसमान
चरचरवसेसकलविगतसंभोग॥वार्ता॥भरत
जूतेआदलेकरके जितनेहेस अरनगरकेलोग
हैवनकेसमान चरचरविषेसपूरणसंभोगनतेरहि
तहोकरकेवसे॥४७॥इतिश्री मतसकललोकलो
चनचकोरचिंतामन श्रीरामचंद्रचंद्रकायांभरत
संवादवनोपादकाग्रहनोनामदसमोप्रकासः॥१०॥

रत

82A श्रीरामराम॥दोहरा॥एकादसोप्रकासमैपंचवटी
कोवास सूरपनषाकेरूपकोरघुवरकरहैनास॥
वार्ता॥गियारमेअध्यावमैपंचवटीकोवासवरननहो
यगो अरसूरपनषाकेरूपकोश्रीरामचंद्रजूनासक
रेंगे॥१॥ऊपताछंद॥चित्रकूटतवरामजूतज्यो जा
यजगयथलअत्रकोभज्यो रामलछमनसनारदेषि
यो आपनोसफलजनमलेषीयो॥वार्ता॥तवचि
त्रकूटकोश्रीरामचंद्रजूत्यागतेभए अरअत्रिरिषी
स्वरकोजोहैजग्यअस्थाननाकोग्रहिनकरतेभए॥
तहांश्रीरामचंद्रजूनेसहितसीताजूकेलछमनको
दिषायो अथवादेख्यानवआपनेजनमकोसुफल
मानतेभए॥२॥अत्रऊवाच॥चंद्रविम्लनछंद॥स
नानदानतपजापसुकरयो सोपसोयमनजोऊ
रधरयो जोगजागहमजोलगगाहियो रामचंद्रफ
लताकोलह्यो॥वार्ता॥सनानअरदानतेतपअर
जपजोऊयनेकीएसे अरसोयसोपकरकेजोमन
मेधारनकीआथा ध्यान जोगअरजग्यहमनेजि
सवास्तेग्रहिनकीएथे तिनोकाफलश्रीरामचंद्रजू
पायेहै॥३॥वंसस्थवृत्त॥अनेकधापूजनअत्रजु
करयो क्रिपालहूरघुनाथजूपरयो पतिव्रताम
हरषकीरहीजहां सुखियसीतासुषदाईगईतहां॥
वार्ता॥अनेकप्रकारसोअत्रजूनेतवपूजनकीओ
सोक्रिपालहोकरकेश्रीरामचंद्रजूनेधारणकीओ॥
जहांमहांरिषकीपतिव्रिताइस्त्रीरहतीसी अस्त्रीवु
यवारीसुषदायकजोसीताजूसोतहांजातीभई॥
॥४॥दोहरा॥पतिविरतनकीदेवताअनुयासुभगा
थ॥सीताजूअवलोकियोजरासषीकेसाथ॥वार्ता॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नवपतिव्रता इस्त्रीयो की जो देवता है अरसुमकथा
जाकी सोअनसूयजरारूपी सषी के साथसीताजू
नेदेषी ५॥चतुष्पदीछंद॥ सिरसेतविराजै कीरतसा
जैजनुकेसवनपवलकी तनुवलितपलतजनुसकल
वासनानिकसगईवलथलकी कांपतसुभग्रीवास
मअंगसीवादेषतचित्तभुलाही जनुअपनेमनमेउ
पदेसतयहियाजगमेकछुनाही॥वार्ता॥सिरजो
केस्वेतविराजतहै सोमानोतपकेवलकीकीरतसज
रहीहै अरसरीरजोकेवलितवलोवारोहे अरपल
तकयापोलाहे सोमानोअस्थानअस्थानकीसंपूरण
ना वासिंनिकसगईहै यातेपोलाहै अरसुभगरदनजि
नोकीकांपतहै जोसंपूरणअंगोकीहदहै जो के
देषतेहूए चित्तभूलजातहै सोमानोअपनेमनमेय
हिउपदेसकरतीहै याजगतमेकछुनहीहै रामना
मविना॥६॥प्रमिताक्षरा॥ हूरषायजायपगसीय
परी रिषनारसूधसिरअंकधरी वहुअंगरागअं
गअंगधरो अरभांतभांतउपदेसदए॥वार्ता॥प्र
सनहोकरकेनवसीताजूजायकेताकेचरणविषे
परी रिषीस्वरकीइस्त्रीनेसीससूधकरकेताकोगो
दीमैवैठायलीयो वहुतेजोअंगरागकपासुगंध
निसहितऊवटने है सोअंगअंगमैदए अरभांत
भांतकेउदेसदीयो॥७॥त्रिभंगी॥रामआगेच
लेमध्यसीताचली वंधुपीछेभए सोभसोभीम
ली देषदेहीसवैकोटयोकेभनो जीवजीवेसकेवी
चमायामनो॥वार्ता॥आगेश्रीरामजूचलतहै अ
रमध्यमैसीताचलतहै भाईजोलछमनजीसोपी
छेचलतहै तासमैमलीसोभासोभतहै मानोजी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

83A

वअरईस्वरनाकेवीचमायाहै ॥ ९॥ मालतीछंद ॥
विपनवलछवरायदेष्यो निशिचरनयाभयभूरलेष्यो
तवरघुनाथकसायकहयो जिनेनिरवानपंथपठ
यो ॥ वार्ता ॥ वनमेंश्री [illegible] रामजूनेफेरवलवानव
राधनामराक्षसदेष्योजवसीताजूनेवडोभयपायो
तवरघुनाथजूनेताकोवानसेंमाह्यो अपनोजोमु
कतमारगहैताकोभेज्यो ॥ १०॥ दोहरा ॥ रघुनायक
सायकधरेसकललोकसिरमोर गएक्रिपाकरभ
क्तवसरिषअगस्तकेठौर ॥ वार्ता ॥ फेरश्रीरघुनाथ
जूधनुषवानकोधारनकीऐहूऐसेंसंपूरणलोकोंको
सिरोमणिमुकट अरजोभगतजनोंकेअधीनहैसो
क्रिपाकरकेअगस्तरिषीस्वरकेअस्थानकोजातेभए ॥
॥ ११॥ विसनतिलकछंद ॥ श्रीरामलछमनअगस्त
सनारिदेषिऊ हिहांसमेतसुभपावकरूपलेषिऊ ॥
अष्टांगविप्रअभवंदनजायकीनो सानंदआसिष
अमेषरिषिसदीनो ॥ वार्ता ॥ श्रीक्यसीताअरश्रीरा
मजूनेलछमनजूइनोंनेसहितइस्त्रीकेअगस्तमु
नीकोजायकरदेष्यो स्वाहाक्याअगनकीसकतके
समेतसुभअगनकोसरूपमानोदेष्यो तवव्रासए
कोआठअंगनकरकेजोनमस्कारहैसोकीयो त
वरिषीनेसहितआनंदकेसंपूरणआसीर्वाददीये ॥
॥ १२॥ वैठारआसननसवैंअभलाषपूजे सीतासमेत
श्रीरामसवैंयपूजे जाकेनमित्तहमजग्यजप्योसुपा
यो विस्वांडमंडनसरूपजोवेदगायो ॥ वार्ता ॥ आस
नकेऊपरवैठाकरकेअपनेसभअभिलाषक्यावांछ
तमनोरथपूरणकीए सीताजूकेसहितअरलछम
नजूकेसहितश्रीरामचंद्रजूनेमुनीस्वरपूजे तवमुनीने
कह्यो जिसवेनमित्तहमनेजग्यअरजपकीआथा ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

82

रामचं
सती
८४
84

सोऽत्राजहमनेपायोहै जोवेदोनेब्रिह्मांडकोमंडन
क्यासोभादेनवारोरूपगायोहै॥१२॥पपटकाछंद॥
ब्रिह्मादददेवतनवविनयकीन नटसिंधुछीरकेपरमदी
न तुमकह्योदेवअवनउजाय सुनहोदसरथको
होतआय॥वार्ता॥जवब्रिह्मादिकदेवतिउनेछीर
सागरकेकिनारेपरमदीनहोकरकेवेनतीकरीथी॥
तवहेदेवतुमनेकह्याथाकेअवतारधारनकरेंगा॥
मृत्लोकमेजायकेराजादसरथकोपुत्रहोवोंगा॥१३॥
हमनवनमेमनआगमनजान चितवतमगआनंद
मान ह्यारहिरेकरिरोदेवकाज ममफूलफलेनपत्रि
अआज॥वार्ता॥हमनवनेमनविषेतुमारेआगमन
कोजानकरके रसतेकोआनंदमानकेदेषतेरहितेसेसो
अवआपदूहारहो अरदेवतिआंकेकारजकोकरो
मेरेफूलकरकेआजनपरसोब्रिछफलेहै॥१४॥श्री
रामऊवाच॥परसौंअगसतरिषिराजजूवचनएक
मेरोसुनो प्रससतिसमभोनभूतलसुदेसजीमेगु
नो सनीरतुरुषंडसिम्रियसोभाधरै जहांहमनिवा
सको विमलपत्रसालाकरै॥वार्ता॥तवरामजूनेक
ह्योहेअगस्तरिषराजएकवचनमेरोसुनो जोस
मप्रकारसोप्रिथवीमेप्रससनक्यासराहवेजोगहोय
अरसुंदरहोवेचित्तमेविचारो अरसहितजलकेजे
ब्रिछनकेहोवे सोऐसोजोषंडहैसम्रियकीसोभा
कोधारहूऐसेमडिनक्यासोभायमानसोकहोजहांह
मरहिवेकोनिरमलपत्रनकीसालाकरै॥१५॥मुनी
स्वरोवाच॥वरमावतीछंद॥जदपजगकरतापालन
हरतायरपूरनवेदनगायो अववनदयक्रिपाकरमा
आ यावपुधरषलपूरनमोहियो मुनसुरनरनायक
रदपसचाचकसवरछेहू मनजसलीजे सुभगोदाव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

84A रनतटाविसद पंचवटघरनकुटीप्रभुतहांकीजै ॥वार्ता॥
जगद्रूपजोजगतकोकरणअरपालनेहरणवारेपरपू
रणब्रह्मकरकेवहनेगायोहै परअवतोभक्तिपाकर
केमायाकेसरीरकोधारणकरके सोमेरेकोअस्थान
पूछवेकोआयोहै हेदेवताअरमानुषोकेस्वामी
हेराक्षसोकेनासकरणवारेसंपूरणमुनीस्वरोकीर
क्षाकरोअरजससीजिएसुमंगलरूपजोगोदा
वरीहैताकेकिनारेऊजलजोपंचवटीहै तहांहेप्र
भुपत्रनकीकुटीकरीए॥१८॥दोहरा॥केसवकहै
अगस्तकेपंचवटीकेतीर परनकुटीपावनकरी
रामचंद्ररणधीर॥वार्ता॥अगस्तजूकेकहेतेपंच
वटीकेकिनारेपवित्रपत्रनकीकुटीश्रीरामचंद्रजू
नेकरी॥१९॥त्रिभंगीछंद॥फलफूलनफूलेतरव
रऊरेकोकलकलरववोलै अतमत्तमयूरीपीयरस
पूरीवनवनप्रतिनाचतडोलै सारोसुकपंडितगुनग
नमंडभावनमैअरथवषानै देषरघुराईकवीयस
हायकमनहूमदनरतजांनै॥२०॥वार्ता॥कैसो
वनहैफलअरफूलनसोंसुंदरविछजहांफूलेहैं
तिनोपरकोकलासुंदरसवदकोवोलनहै अनंत
तउन्नममोरनिआंपीआकेरसमैपूरणहूइआं॥
सोवनवनप्रतिनाचतीडोलतहैं अरजहांसारका
तेनोतेजोहैगुणोकेसमूहोकरमंडतसोभायमान
सोपंडतसेहैं कोभावनमैअरथकोवरणनतेहैं ति
नवनकेजीवोनेश्रीरामचंद्रअरसीताजूकैसेदेषे
हैं सोमानोसहायताकेकरणवारेतिनोनेकामसेर
तीजानेहैं॥१०॥लछमनोवाच॥सवैया॥सम
जातफटीदुपटीदुषकीकपटीनरहेजहांएकघटी॥

नियटी रुचिमीचयटी कुचटी जगजीवजटीनकी
छूटचटी अघवोघकीवेरीकटीविकटी निग
टीप्रगटीगुरग्यानगटी चहूं डोरननाचतनटी मुक्ते
गनधूरजटीजटपंचवटी॥वार्ता॥सवजोतहां
दुषकीदुपटीहे होपटीअंजनमतेमरनकीसो
दूरहोतीहे अरकपटीपुरषनेजहांएकघटी
भीनहींरहितहे अरजहांरुचचाहनहींघटती
है औम्रितजोहेघटीघटीमेअटतहै अथवाम्रि
घटीक्यानिषुटगईहे रुचसोम्रित्युघटीघटीमेन
हो फेरजगतकेजोजीवहेजटीक्याजडेहुऐकरमा
मेतिनेकोजोहेअटीदेउसोजहांछूटजातहै॥
काहूपैकाहूकोदंडनहीहै भयानकजोहेपापोके
संवूहकीवेरीसोजहांदूररहोतहे अरसमीपहीप्र
गटतीहे गुरनकेग्यानकीगटी क्याविचारजहां॥
अथवागुरक्याभारीग्यानकी अरजहांचारोतर
फमुकलनटनीसीनाचतीरहतहै गुणहै धूरजटी
क्यासिवजीकीजटासमानजामेलतनाकोक्यो
वरोहिअंकोकीद्वाहीजटासीहै औसीपंचवटीसोभ
तहै पंचजामेवटकेव्रिछहोहिसोपंचवटी॥२०॥
दोलकाछंद॥सोभतदंडककीरुचिवनी भांतनभां
तनसुंदरघनी सेववडेन्रिपकीजनलसे श्रीफल
भूरभावजनुवसे वेरभयानकसीअतलगे अरक
संवूहजहांजगमगे नैननकोवहुरूपनग्रसे श्रीह
रकीजनुमूरतलसें॥२१॥वार्ता॥अरसोभतहैदंड
कवनीकीरुचक्याछविजामे भांतभांतकीअत्यंत
सुंदर सोवनीनहीमानोवडेरामकीसेवासोभतहै॥
जामेलछमीकेफलवडेभावासोंवसेहै अरवनीमें

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

85A श्रीफलक्यानरीयेलवडेप्रभावसोवसेहै सोराज
सेवावैरीयनको भयानकसीलगतहै अरवनीभी
वैरीजीवनको भयानकहै कोऊकाहूसो वैरनहो
करेहै राजसेवामे सूरजकेसंवूहनसमप्रकासज
गमगातहै वनीमे ग्राकनकेसंवूहहै फेरराजसे
वानेत्रनकोवहुतेपदारथनकेरूपनसोग्रसनहै
मोहलेनहैवनीवहुतरूपनकारकेलोकनकेनेत्र
नकोग्रहतहै सोमानोसिवजूकीमूरतसीसोभ
तहै सोकैसीहै श्रीक्यासो भावानजोहैफलचारो
पदारथसोजामे भूरक्यावहुतजोहै भक्तनकोभा
वक्याप्रेमतिसकरकेवसेहै अथवावडोहै भावजि
नमेश्रैसेकौनसिवसेवकतिनोकेचारोफलजहां
वसेहै फेरतिनभक्तनकेवैरीनको भयानकसीला
गतहै अरजापेचढेहूएग्राकनकेसंवूहसोभत
है अरजोकेनेत्रनकोजोहैवहुरूपतीननेत्रतासो
मोहतहै अथवाअपनेनेत्रनतेवहुतिनकेरूपको
मोहतहै॥२१॥पांडवकीप्रभनतासभलेषो॥अ
रजुनभीमभहांमतदेषोहैसुभगासमदोसत
पूरी सोपुरसोतिलकावलरूरीभावार्थ॥पांडवो
कीप्रभुताक्यामंपदासीदिषाईदेतहै जामैवडीवु
ढ्वारे अरजुनअरभीमजूहै अरवनीमेअर
जुनव्रिछहै भीमक्याभयाकनहै अरथकिमारे
है फेरवनीसुभगाक्यासुहागनइस्त्रीकेसमानहै॥
जाकेसिंधूरसोतिलककीसुंदरपांतहै अरवनी
मेसिंधुरक्याहाथीहै तेतिलककाहारसिंगार
केव्रिछनकीपांतहै॥श्रीरामउवाच॥दोधकछंद॥
राजतहैयहिज्योकुलकंन्या धायविराजतहैसंग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धंन्या केलथलीजनु श्रीगिरजाकीसोभ धरेसितकं
ठप्रभाकी॥वार्ता॥अरयहिवनीअैसीसोभतहै जैसेकु
लकेन्याहोय सोकैसीहैजाकेसंग धायक्या षिलावी
विराजतहै वनीमे याषिक्रहै फेरमानोपारवतीकीके
वलथलीहै जो तिसकं ठक्या सिवजूकी सोभाको धार
तहै अरयहिवनीसितक्यासुपेदप्रभागोदावरीकीसो
भाको धारतहै॥२२॥नाराच॥ अतनिकटसुवेसगो
दावरीपापसंघारनी तरलतुरंगतुंगावलीचारु
संचारनी अमलकमलसोगंधलीलामनोहार
नी वहुनैनसुरसकेअंगसोभामनोधारनी॥वार्ता॥
पापकेनासकरणवारी अत्यंत निकटजाकेसुंदरगो
तप दावरीहै चंचलैरंगोकी तुंगक्याऊंचीहै अवलीक्या
पंगतजामे अरसुंदरचलवोजाको अरनिरमल
कमलोकीजोहैसुगंधसोलीलाक्या सहजेही मन
केहरणवारीहै फेरवहुतजोहै परवतोकेनेत्रनसे
फरनेतिनोकरकेरुद्रकेअंगकी सोभाके धारणवा
रीहै अथवा कमलहीजोवहुतनेत्रहै तिनोकरके
॥२३॥मोटकछंद॥ रीतमनोअववेककी थापी॥
साधुनकीगतपावतपापी कंजजकीमतिसीव
डभागी श्रीहरमंदरसौअनुरागी॥वार्ता॥सोमा
नोकुवचारकी यहिरीतअसथापनकरीहै क्यौ
जोसाधनकीगतहैमुक्तताकोपापीजनपावत
है सोगोदावरीकमलकोपत्रजोहै ब्रह्माताकी
वडेभागनवारीवुधसीहै सोभावानजोहरमंद
रवैकुंठतासोसनेहवानहै व्रिह्माकीमतिभीअ
नुरागोवारीभी॥२४॥अम्रितगत॥ निपटपतित्रि
तपरनी जगजनकेदुषहरनी निगरसहागतसु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

86A निजै आगतमहागतगुनजै ॥ वार्ता ॥ सोनिपटक्या
अनसेकरकेपतिव्रिताकेधारणवारीहेजाकेविमु
ज४ हीपतिहे अरंगतकेजनोकेदुषकीहरणवारीहे अर
निगरकमानीचेकोचलवेकीगतजाकीसुनीयतहै अ
रजिनकीगतनहीहे असेजोआगतपापीतिनोकीजि
सनेमहागतविचारीनीहेमुक्तकरतहै ॥२५॥ दोहरा ॥ वि
षमयपहिगोदावरी अविनकोफलदेत केसवजी
वनहारकेदुषखसेषहरलेत ॥ वार्ता ॥ विषक्याजल
मैजोहेयहिगोदावरीसोअविनक्यानामरे जिसते
ल असोमुक्तफैताकोदेतहै अरजोयाकोजीवनक्याज
लकेहरणवारोताकेसपूनदुषनकोदूरकरदेतीहै ॥२६॥
त्रिभंगीछंद ॥ जवजवपरवीनाप्रगटप्रवीनावहुगुन
लीनासुषसीनापीयजीयहिरिझावैदुषनभजावैविव
धवजावैगुनगीता तजमनसंसारीविपनविहारीदु
षसुषकारीचिरिआवै तवतवजगभूषणरिपुदलदू
षणसभकोभूषणपहिरावै ॥ वार्ता ॥ जवजवप्रगट
हीप्रवीणक्या चतुरअरवहुतेगुणनसोमिलीहूई श्री
सीताजूसुषसेवीणकोधारतेहै पियकेमनकोप्र
सनकरतहै दुषनकोदूरकरतहै अरनानाप्रकार
सोभगवानकेगुणोकीकथाकोवजावतहै तवसंसार
कीमतकोत्यागकरकेवनमेविहारकरणवारेजोहै
जीव केसेदुषकोपरसपरसुषकरणवारे जिनाको
जेदुषदायकहै तिनोकेतेविरोधत्यागेजहांसुषदेत
है सोसभवनकेजीव चिरकरके आवतहै तवतवज
गतकेभूषनजोहै श्रीरामचंद्रजूशत्रुनकेनाशकरण
वारेसोसभनाकोभूषनपहिरावतहै ॥२७॥ तोटक
छंद ॥ कवरीकुसमावली सिषिनदई ॥ गजकुंभनहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रन सो भ भई मुकतन मुकसारकनाक रचै कटि
केहर किंकन सोभ मचै ॥२८॥ दुलरी कलको कलकं
ठवनी भ्रिगणंजन अंजन मानमनी न्रिप हंसन नू
पर सोभ भरी कलहंसन कंठन कंठसिरी ॥२९॥
मुषवासनवासनकी नतवै ब्रिमलमलनान रुसैल
सवै जलहू थलहू रुद्दरी तरमै वनजीवजहां ति
हसंग मुमै ॥ वार्ता ॥ सीताजू ने अपने अंगोके उप
मेय जानकरके वनके जीवनको भूषन पहराए अथ
वा रघुनाथजू ने सीताजू की सोभाके पटनर जानके प
हिराऐ फूलनकी अवली कयापगन सी रच करके जो बना
ई है चाऊर सो मोरनको दई ग्रहा पीनको भसनक
न पै हारनकी सोभा भई तिनो को हार दीऐ जो ता अ
रमैं नागनके नाक मे मोती पाऐ अरु सरकी क हमेनरा
गढी की सोभा रची कोकला के कंठमे दुलरी बनी है भ्रि
ग अरु ममोलिआं के अंजन की सोभा कही है राजहं
सोके नूपर की सोभा भरी नूपर पायो कलहंसन के
कंठन मे कंठसिरी पाई अथवा वन के जीवो ने अपने
मित्र जानके अंगन को भूषन पहिराए फूलन की अव
ली मोर निआने चावर को दई हमारे भी सिरपर कलगी
असी उठी है जैसी यहि है यह जानकर हाथिउं ने आप
ने मसनक जानकरके तिन मोतीआं के हार पहिराऐ अ
रसारका के सहित जो है मुकतों ने नाक मे मोती रखे अ ना
रसर ने आपनी कटि जानकरके किंकनी पहिराई कर
क सोभा मचो अरु कोकला ने बनी हुई दुलरी आप
नो कंठ जानकरके पहिराई भ्रिगोने अरु ममोलिउं
ने नेत्रन को अंजन दीयो राजहंसों ने चरणों को नूपर
दीयो अपने स्वर जानकरके कंठ को कलहंसों ने कंठ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

87A छिपि दई अथवा सीताजू के अंगही वन के जीवनं है
सो अंगन को छिपाने वन के जीवन की सोभा दई है फूल
न की अवली सहित जो है चावरन हो तो मोरन की सोभा
दई है और सीताजू के हार के बीच हाथीन के कुंभन की
सोभा दई है और मोतीन से जो है नाक ता मे सारका सो
जो है तो नाना की सोभा रची हुई है और किंकनी सो जो
जो है कटि तहा सेर की सोभा रची है और दुलरी सो जो है
कंठ ता मे कोकला की सोभा बनी है और अंजन के सहित
जो है नेत्र ता मे म्रिगो की और मोलिडो की सोभा कही है
और चरणों के विषे जो है नूपर चलनन से तिनो विषे राज
हंसो की सोभा भरी है और कंठसिरी के सहित जो कंठ है
भले स्वर वारे ता मे कलहंसन की सोभा दई है फेर सीता
जू के मुख की सुगंध ने तिस सम संपूरण त्रिण और गुल
मने लता अ व्रिछ और परवत सम सुगंधन करदीए है ॥
सीताजू जल विषे और थल विषे जो रमने है या रीत सो
न वरणह वन के जीव जहां तहां संग ही संग भ्रमने है को सी
ता अथवा रामचंद्रजू ने जो भूषन पहिराए है तो ने स
ग फिरे है अथवा इनो ने ही जो अंगन को भूषन पहराए
है सो सोभा देषवे को संग ही फिरे है अथवा वीन सुनवे
को जो राह आवन है सो संग ही भ्रमन है ॥२०॥ दोहरा ॥
सहिज सुवास सरीर की वन उपवन अवगाह दूनी
ज्यो आई लीए केसव सूरपनषाह ॥ वार्ता ॥ सीताजू
के सरीर की जो है सहिज सुभाव की सुगंध सो वन और
उपवनो को अवगाहन करती हुई सूरपनषा को दू
ती के समान लीए हुए आवती भई ॥२१॥ मरहट्टा छंद ॥
इक दिन रघुनायक सीय सहायक रतनायक अनुहा
री सुभ गोदावरी तट विसद पंचवट बैठे हुते मुरारी ॥

रामचं
सली
८८
88

86

नवदेषनहीं तन मदन मथ्यो मन सूरपनषा तिह काल
अन सुंदर वपु धरके कछु धीरज करके बोली वचन रसाल॥
वार्ता॥ फेर एक दिन श्री रामचंद्र जू जो हैं जानकी जू के
सहायक अरु कामदेव को अनुहार सो सुभ जो गोदाव
री के किनारे उजल पंचवटी है तहीं श्री रामचंद्र जू बैठे
हुए से देषते ई जिनों के सरीर को सूरपनषा के मन को का
मने मथन कीउ तब सो अल्पेत सुंदर सरीर को धारन
करके अरु कछूक धीरज को धारन करके रसभरे वचन
को बोलती भई॥ ३२॥ सूरप्पनषाउवाच॥ विजयछंद॥
किंनर हौ नर रूप विलछन जो कि स्वछ सरीरन सोहै
चित्र चकोर के चंद कि या अरिगलोचन चार विमानन रो
हौ अंग परे कि अनंग हो के सब अंग अनेकन को मन
मोहौ धीरज दानव रे धनुबान लीए वन तावन मै तुम
को हौ॥ वार्ता॥ तुम कोऊ किंनर हौ विसेषलछनो वारे
तुम मानुषरूप ही हौ अथवा स्वछ क्या निरमल सरी
रन के सहित तुम कोऊ जोछ हौ अथवा चित्ररूप च
कोर के चंद्रमा हो अथवा मृग से जो नेत्र हैं सुंदर तिनो
के विमानो मे चढे हुए हो अथवा सरीर को धारण कीए
हुए कामदेव हो अनेक सरीर धारीउ के मन को मो
हत हो सो धीरजवान अरु जटा को धारन कीए हूए अ
रु धनुषबान को धारे हुए इस्त्री को संग लीए हूए तुम कौ
न हौ॥ ३३॥ श्री रामउवाच॥ मनोरमा छंद॥ हम हैं दस
रथ नरपन के सुत राम सुलछमन नाम संजुत य
ह्नि सिष दै पठए इह कानन मुनपार हुमा रकु राक सग
न॥ वार्ता॥ तब श्री रामचंद्र जू ने कह्यो हम राजा दसरथ
के पुत्र हैं राम अरु लछमन दोऊ नामन के संजुगत य
ह्नि मित्र याहै करके हम वन को भेजे हैं मुनीसरो की रछा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

88A करो ओरा कसन के सबून को मारो ॥२४॥ सूरपनषा
उवाच ॥ मनोरमा छंद ॥ निपरावन की भगनी गन
सो कहु जिन की ठकुरायन तीनो नहु लोकहु सुनजै
दुषमोचन पंकज लोचन अब मोह करो पतनी मन रो
चन ॥ वार्ता ॥ तब सूरपनषा ने कह्यो मो को राजा रा
वण की भेण जानो जिन की ठकुरायन जो राजा प सो ती
नो ही लोकन मे है हे दुष के दूर करणवारे हे कमल नै
न तुम सुनो तुम सो मे रामन रुचिआ है सो मो को आ
पनी इस्त्री करो ॥२५॥ राम उवाच ॥ तोमर छंद ॥ तब यो
कह्यो हस राम अब मोह जान सबाम निवजाय लछ
मन देष गुन रूप जोवन लेष ॥ वार्ता ॥ तब ऐसे हस
कर के श्री रामचंद्र जू ने कह्यो अब मो को तो स हित
इस्त्री के जानो हे तीय तू लछमन को जाय कर के देष ॥
ता के गुन अर रूप ने जोवन को जाय के विचार ॥२६॥
सूरपनषा उवाच ॥ दोधक छंद ॥ राम सहोदर मो तन
देख्यो रावन की भगनी जीय लेख्यो राजकुमार रमो
संग मेरे होहि सवै सुष संपत तोरे ॥ वार्ता ॥ फेर सूरप
नषा ने जाय कर कह्यो हे रामजू के के भाई तुम मेरी तन
रफ देषो अर रावण की भेण मो को चित मे विचारो ॥
सो मेरे साथ हे राजकुमार तुम रवण करो तुमारे सुष
अर संपत संपूरण हो वेगे ॥२७॥ लछमन उवाच ॥ दो
धक छंद ॥ वे प्रभु है जन जान सदा ब दास भए ह
म कौन बडाय जो भजिए प्रभु तौ प्रभुताय दास भए
उपहास सदाई ॥ वार्ता ॥ तब लछमन जू ने कह्यो वे श्री
रामजू तो मेरे स्वामी हे अर मै तिनो को सेवक हो सदा
ही सो दासी हूं तेरी तीय बीमे कौन सी बडाई है क्यौ जो प्र
भु को ग्रहण करीए तौ प्रभुता है अर दासी हू होने सदा

ए

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उपहासहोनहै॥२५॥मत्तकाछंद॥हासकेविलासजान
कीनमानखंडमान मध्यचेको चितचाह सामहिगईसि
याह॥वार्ता॥तवसूपनषानेहासकेविलासकरणका
रहोऊजाने अरुवडेजोअपनोमानकाअहंकारता
कोषंडनवारेजाने तवचित्तमेचाहकरकेरामकोसा
मुने श्रीसीताजूकेजातीभई॥२६॥रामउवाच॥तोम
रछंद॥तवरामचंद्रप्रवीन हसअनुजसोंद्रिगदीन॥
गनदुष्टनासहिलीन सुतनासकाविनकीन॥वार्ता॥
तवचतुरजोश्रीरामचंद्रहै तिनोनेलछमनजूकीतर
फद्रिष्टदईहसकरके तवताकोदुष्टताकेसाथमिली
हूईजानकरके कानचलायकेनाकअरकानतेविना
करदई॥४०॥दोहरा॥स्रोणछछछूटनवदनभीम
भईतिहिकाल मानोक्रित्याकुटलजुतपावककज्वा
लकराल॥वार्ता॥तिससमेविषेरूपरकीश्रोंवूंदों
छूटतिश्रोहैजोकेमुषतेसोअैसीभयांकहोतीभ ‘न
ई मानोकुटलजोहैक्रित्याक्याजमकीरस्त्रीसोभ
यानकअगनकीज्वालाकेसंजुक्तहै॥४१॥इतिश्री
मतसकललोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीराम
चंद्रचंद्रकायांसुरपनषाविरूपवरननोनामए
कादसप्रकासः॥११॥दोहरा॥याद्वादसिहिप्रकास
मेषरदूषरत्रिसनास सीताहरनविलापपुनसुग्री
वअनुवास॥१॥वार्ता॥इसवारमेप्रकासमे विषेष
रदूषनत्रिसराइनकोनासहोयगो अरसीताजू
कोहरणफेरसुग्रीवकेघरमेवसवोहोयगो॥१॥तो
टकछंद॥गईसूरपनषाषरदूषनपै सजल्याईजिनै
जगभूषनपै सरऐकअनेकतेदूरकीऐ रवकेकरज्या
तमपुजपीऐ॥वार्ता॥फेरसूरपनषाषरमेदूषनइनो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

84A के पासजाती भई तिनोको चढाय के जगत भूषन
जो श्रीरामचंद्र जू तिनो पर त्याई जब श्रीरामजू ने
।।क वान सो तेत्रने कही राकस दूर कीए जैसे सूरज
को किरणन मके संवूह को पीय लेत है कहा नास क
रत है ।।२।। दोहरा ।। लछमन सो रघुनाथ जू कहियो
वचन बुझाय सीतहि लै राषौ गुहा मो मन जो सुचि
ताय ।। वार्ता ।। तब लछमन जू सो श्रीरामचंद्र जू ने समझा
य करके वचन कह्यो जो तुम सीता जू को लै के परवत की
कंदरा मे राषो तो मेरे मन सुचित होय ।।३।। दोहरा ।। लछ
मन सीता संग रहे गुफा द्वार बलवीर आपन तो तन
त्रान सज जु रेजु पर रघुवीर ।। वार्ता ।। तब लछमन जू जो ब
ल मे सूरवीर सो तो सीता जू के संग परवत की कंदरा के
द्वार पर रहे अर आप श्रीरामचंद्र जू संजोए को सज क
र के जुध मे जुरते भए ।।४।। मनोरमा छंद ।। त्रिषके षर
दूषन ज्यो षर दूषन तव दूर कीए रव के कुल भूषन ग
द सत्रु त्रिदोष ज्यो दूर करे वर त्रिसरा सिर त्यो रघुनंदन के
सर ।। वार्ता ।। जैसे त्रिषके नदैत के नाल षर दूषन थे सो
सूरज भगवान ने मारे थे तैसे ई एह जो है षर दूषन सो सू
रज वंस के भूषन जो श्रीरामजू तिनो ने मारे अरथवा त्रि
ष रासक के तीछन सूरय के समान प्रतापी श्री रघुनाथ जू
तिनो ने षर दूषन नास कीए फेर जैसे गद सत्रु कथा वैद
तीन दोष जो है वाय पित्त कफ के रन को वल कर के दूर
करत है तैसे श्रीरामचंद्र जू बानन ने त्रिसरा के तीन सिर दू के
कें र कीए ।।५।। दोहरा ।। दसै पत्र पयैन वगाई षर दूषन हि जु
झाय सूरपनषा लछमन सर्षा वेर्ष ना पो जाय ।। वार्ता ।। सु
षर दूषन को जुद्ध मे नास करवाय के फेर अंग पजो रावणता
पे सूरपनषा जाती भई ता ने लछमन जू को अपरमा के
सषा जो श्रीरामजू तिनो को वेष जाय कर सुनायो ।।६।।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥दंडक छंद॥ मयकी सुता पोके हे मोहनी हूं मोहे ऐसी
आज हूं न देषी सुनी नैनन निहारिऐ ॥ देहदुनद्रामनी
सी मोहे काम कामनी सी नाकलोक ऊपर पुलोमजा वि
चारिऐ माग पर कमला सुहाग पर विमला ह वानी पर
वानीके सो दास सुषकारिऐ सात लोक सात दीप सात
हू रिसातल की त्रियन की गीता सभ सीता पर वारिऐ॥
वार्ता॥ मैराकस की पुत्री जो है मंदोदरी सो जाके आगे
क्या है अर जाको देष मोहनी भी मोहत होत है ऐसी
आज ताई तो नाक हूं देषी है ना सुनी है हे रावण ताको
चल के नेत्रन सो देषो तो सही देह की सो भाजा की बीजु
री सी है अर काम की जो कामनी रति है ताकी भी सो भा
को मोहत है अर स्वर्ग लोक पे जो है पुलोमजा क्या इंद्रा
णी सो जाके आगे गरीब सी लागत है अर जाके भाग के
ऊपर लछमी को अर सुहाग के ऊपर पारवती को अर
वानी के ऊपर सरस्वती को वारिऐ अर सात लोक अर
सात दीप अर साती रिसातल इन की इस्त्री या की जो है
कथा सो सभ सीता जू पे वारिऐ॥ मनोरमा छंद॥ भज
सूरपनषा गई गवन पै तव त्रिसरा षर दूषन नास कही
सव तव सूरपनषा मुषवात सवै सुन उठ रावन गो ज
हां मारीच हो मुन॥ वार्ता॥ फेर तहां ते भज कर सूरपन
षा रावन पै गई त्रिसरा षर दूषन इनके नास की सभ वा
त कही तव सूरपनषा के मुष ते रावण सभ वात सुन क
र के जहां मारीच मुन था न हा गया॥ ८॥ रावण उवाच॥
दोधक छंद॥ रावण वात कही मगरीत्यो सूरपनषा
सु विरूप करी ज्यो राकस राम अनेक संघारे दूषन स्यो
त्रिसरा षर मारे॥ वार्ता॥ रावण ने तै सती सभ वार ता
कही जै से सूरपनषा विरूप करी थी फेर कह्यो श्री राम
चंद्र जू ने अनेक राकसन नास की ए दूषन के सहित त्रिस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राअरषरएहमी मारे॥९॥तेअबहोहुसहायकमेरे॥
होसमतेगुनमानहोतेरो होंहरिसीतहिल्यावनपैहै वे
व हेसोकनहीमरजैहै॥वार्ता॥हे मारीच अबतूमेरो स
हायक होंह मैसमनेतेतेरो हीगुनमानोंगा तव मैसी
ताजूको हरल्यावोगा सोजवनहीपावेगे तवबहुते
सोकनहीमैमरजावेगो॥१०॥मारीचोवाच॥सोयक
छंद॥रामहिमानसकेजिनमानहु पूरनचौदहलोक
वषानहु जाउजहाजीयलैसरदेषा होहरकोजल [illegible]
हयलले षो॥वार्ता॥रामजूकोमानुषकरके मतमानो
चौदालोकोमेपूरणकरकेकहो हेरावनजहांमैजीव
कोलैकरकेजातहों तहांहीमेश्रीरामचंद्रजूकोवानदे
षतहों सोएकवारमारयाथा तवतेमैश्रीरामजूकोजल
अरथलसारेदेषतहों॥११॥पंकजवाटकाछंद॥राव
नोवाच॥तूअबमोहसिषावतहेसठ मैवसजगतनकोउ
२४ हठहीहठ वेगैलोअवदेहनऊतर देवसकलजनएक
नहीहरि॥वार्ता॥हेमूरषतूअबमोकोसिषावतहै अर
मैनेसमजगतहठहीहठसोवसकीयोहै अवसीघ्रच
लउतरकोमतदेह मेरेसमदेवतादासहै एकसिवजू
नहीहै तिनकोमैसेवकहो॥१२॥दोहरा॥जानचल्यो
मारीचमनमरनदुहूविधिआस रावनकेकरनरकहै
हरिकरिहरिपुरवास॥वार्ता॥तवमारीचमनविषेदोऊ
नविधसेआसामरनकीजानकरकेचलताभया को
रावणाकेहाथसेमरनेतेनरकहोयगो अरश्रीरघुनाथ
जूकेहाथसेवैकुंठमेनिवासहोयगो॥१३॥रामऊवा
च॥मंदरीछंद॥राजसुताइकमंत्रसुनोअव चाहतहो
भुवभारहरयोसव पावकमैनिजदेहहराषहु छाया
सरीरम्रिगहिअभिलाषहु॥वार्ता॥फेरइथरएकस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
५१

91

89

मे श्रीरामजूने कह्यो हे राजपुत्री तुम एक मंत्र सुनो मे
सम प्रिथवी को भार दूर कीउं चाहत हों तुम अगन
विषे अपने सरीर को राषो अरतो कुं छाया को औ
र सरीर करके स्वरण के म्रिग की चाहना करो॥१४॥
नाराचछंद॥ आय यो कुरंग एक चारहेम ही रको॥
जानकी समेत चित्त मोहे रामवीर को राजपुत्र काम
मीप सायुवे धुराष के हाथ वान चाप लैगए गिरीस
ना षके॥वार्ता॥ तव ही एक सुंदर स्वरण अरहीरि
औ का हरण आवता भया जो सीताजू के समेत
श्रीराम अर लछमनजू के चित्त को मोहत है तव जा
नकीजू के समीप आपने स्त्रेष्ठ भाई लछमनजू को रा
ष करके रछा को आप श्रीरामचंद्रजू हाथ मे धनु
ष वान को लेकर के परवत को लंघ्य कर के जाते भए
॥१५॥दोहरा॥ रघुनायक जव ही हयो सायक सो
मारीच हा लछमन यह्हि कहि गिरयो श्रीपति के सु
रनी च॥वार्ता॥ फेर जव श्रीरामजूने वाण सो मा
रीच हरण रूप मारयो तव श्रीरामजू के सुर सो हा
य वडो षेद है औसे कहिकर के गिरता भया॥१६॥
निसपालकाछंद॥ राजतनया तवे वोल सुन्यो कह्यो
८ जाहु चल देवँन जाय हम पै रह्यो हे म म्रिग सो यन
र हरै न चर जानीए हीन सुँ राम कहि मांत मुष आ
नीए॥वार्ता॥ जव यहि वचन राजा की पुत्री श्रीसीता
जूने सुन्यो तव कह्यो हे देवर हम पै नही रह्यो जात है
तुम सीघ्र जावो स्वरण को म्रिग सो नही होयगो ताको
राछस जानिए नही तो दीन सुर श्रीरामजू किस प्रका
र करके मुष सो कहै॥१७॥लछमन उवाच॥ सोच
अतिपो चड रमे चडु षदा नीए मात अवदान यहि वा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

91A तमनमानिये रैनचरछदमवहु भांतग्रभलाषही॥
दीनसुररामकवहीनमुषभाषही॥वार्ता॥सोचग्र
त्यंतबुरीहोतहै ताकोहीएतेहैमातादूरकरदुषदा
यकहै यहिवारतापगटमनविषेल्याइऐ राकसतोव
हुतप्रकारकरकेछलोकोचाहनाकरतेहै सोकाहू
ग्रसुरकोछलुहोयगो ग्ररश्रीरामचंद्रजू ग्रपने
मुषतेदीनसुरकदीभीनहीकहेगे॥१८॥चंचला
छंद॥पछराजजछराजप्रेतराजजातधान देवता
ग्रदेवतान्निदेवताजितेजहान परवतारग्ररवषर
वसरवसरवथावषान कोटकोटकोटसूरचंदददा
सदासमान॥वार्ता॥नवलछमनजूनेकह्योहैमा
ताजितनेपंछीनकेराजाहै ग्ररयछनकेराजाहै
ग्ररप्रेतराजहैजेराकसहै ग्ररदेवताहै ग्रदेवता
है ग्ररजितनेजगतमेराजाहै ग्ररपरवतारजोहैई
द्र ग्ररवषरवकयाग्रनंत ग्ररसरवजोहैसिवजू
जोसभप्रकारसोवरणनकरतेहै ग्ररकरोरकरो
रकरोराहीजोहैसूरजतेचंद्रमा सोएहसवश्री
रामचंदजूकेदासनकेदासहै॥१९॥सीताजूवा
च॥चामरछंद॥ राजपुत्रकाकहेसुग्रोरकोकहै
सुने॥कानमूदवारवारसीसवीसधोधुने चाप
कोररेषषांचदेवसाषदैचलै नाषहैतिभसमहो
हिजीवजेवुरेभले॥वार्ता॥नवजोश्रीसीताजूते
वचनकहे तिनेकोकौनमुषनेकहे ग्ररसुनेल
छमनजूनेकानमुंदकरकेवारवारवीसकवा
रग्रपनेसीसधुनेफेरधनुषकीकोरसोरेषाषेंच
करकेग्ररदेवतिग्राकोसाषदैकरकेचलतेभ
मएे ग्ररकह्योजोइसकोलंघेगेसोसभजीववु

रेषलेमसमहोवेगो॥२०॥छिद्रताककुइराज
लेकनाथआययो।भिक्षजानजानकीसुभीष
कोवुलाययो सोचसोचकैसकोचपोचभीमभेष
को अंतरिक्षहीहरीज्योराहचंद्ररेषको॥वार्ता॥
तवछिद्रकोताककरकेत्रैलोक्यकोराजाजोहैरा
वण सोआवताभया ताकोभिक्षकजानकरकेसी
ताजूनेभीषकैदेनेकोवुलायो तवसोचसोचके
अरसंकोचकरकेअरअपनेभयानकभेषकोल
कोपकरके अंतरिक्षजोहैआकासताकेविषेही
सीताजूऐसेहरीजैसेराहुचंद्रमाकीरेषाकोहरै
॥कवित्त॥धूमपुरकेनिकेतमानोधूमकेतसिषा
धूमजोतमयरेषासुधाधरधामकी चित्रकीसी
पुत्रकाकीरूरेवचरूरेमोफसंवरछिडायलईका
मनकिकामकी पाषंडकीसिषाकिमठेसवृत
एकादसीभीनीकीसुषचिराजसाषासुषसा
मकी केसवअदिष्टसाथजीवजोतजैसीतैसी
हाथ५ लेकनाथपरीछार्यजर्यरामकी॥वार्ता॥मानो
धूमकेपुरक्यासंदूहकेघरविषेधूमकेतक्याअ
गनकीलाटहै अथवाधूमकीजोतविषेचंद्रमा
केधामक्यातेजकीरेषाहै अथवावचरूरेजोहै
वायवरोलातामेचित्रकीलिषीसीपूतरीहै अथ
वाकामकीरूस्तीरतसोकामतेसंवरदैतनेछुडा
यलईहै अथवावैरीजानके अथवापाषंडकेपा
सषिपाहै यामठकेस्वामीकेपासएकादसीहै॥
अथवाचंडालोकेराजानेसुषजोसामवेदकीसा
षाहैसोलईहै अथवाअदिष्टजोपूरवकरमहै॥
ताकेसाथजीवकीजोतहै क्योंजैसेजीवपरसात

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

92A मारूपनहीहै अरअदिष्टकेसेजोगगनजोवहूरह्योहै
तैसेहीरावणकेसाथश्रीरामजूकीजोजोकाजाया
रक्षीहैसीताजूताकीछायाहाथआईहै अरथकी
तोपैसोभाकोनहीपावतहै॥२२॥सीताजूवाच॥हर
लीलाछंद॥हारामहारघुनाथहाजगतनाथधीर
लंकापनाथवसजानहुमोहवीर हापुत्रलछम
नछुडावहुवेगमोह मारतंडवंसकीसवलाजतोहा॥
॥वार्त्ता॥हाक्यावडोषेदहैहेरामहेरघुनाथहेजगत
नाथलंकाकेस्वामीकेवसमोकोजानोहेसूरवीरहेपु
त्रश्रीलछमनतुममोकोछुडावो मारतंडक्यासूरजके
वंसकीअववसपूरणतुमकोलाजहै॥२३॥पछीजटा
ययहवानसुननपाय रोक्योतुरतवलरावनदुष्ट
जाय कीनोप्रचंडरथ[illegible]ध्वजाविहीनो छूट्योवि
पक्षजवभयो पक्षहीनो॥वार्त्ता॥तवदूरतेपछी
जोजटाकूहैतानेइसवातकोसुननेहीदौरकरकेतुर
तहीवलसोंरोक्यादुष्टजेरावणहैजायकै फेरप्रचं
डजोहैवहरावणसोरथअरछत्रतेयुजाद्रुनतेरहत
कारदीयो सोजवजुधकरतेहूए आपपंषनतेहीनभ
यो तवतिसनेसीताजूकोपत्यक्षलेसो॥२४॥संजुता
छंद॥दसकंठसीतहिलैचल्यो अनतजुध्यगीयहि
याद्दल्यो चितजातकीअयकोकीयो हरतीनहूअ
वलोकियो॥वार्त्ता॥फेररावणसीताजूकोलेकर
केचलताभया अन्पतजुधविषेजटाकूकोअैसेद
लकरके तवसीताजूनेअपनोचितअयकोक्या
व्याकुलकीया अथवातलेकोदेष्योतहातीनअर
द्वैपांचवानरदेषे॥२५॥पदपदमकीसुभगुंचरी॥
मननीलहाटकसोजरी गुनडतरीयविचाकेभुव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
५३
93

91

डारदीयगढारके॥वार्ता॥तब सुभजोचरणकमलो
कीछुवरीहैसरनकीनीलमणीश्रोसेजडीहूई उनरी
यजोहैवस्त्रताकेसंजुक्तविचारकरकेकयाइथरकोश्री
रामचंद्रजूश्रवैगेसोपृथिवीमैचरणोसेथकेलकरके
गेरदई॥२२॥दोहरा॥सीताकेपदपदमकीनूपरप
टनिजजान मनोकीयोसुग्रीवग्रहिराजश्रीप्रस्थान
वार्ता॥सीताजूकेचरणकमलोकेनूपरश्ररवस्त्रम
तिजानोसोमानोराजलक्ष्मीनेसुग्रीवकेघरविषेप्र
स्थानकीयोहै॥२४॥दोहरा॥सोदरसहितविलोकि
योरघुपतिसुनोसदम सुमनासोमसुगंधताज्योप
दमाविनुपदम॥२५॥वार्ता॥फेरइथरश्रीरामजूनेश्रा
यकरकेलछमनजीकेसहितसूनोघरदेख्यो जैसेसुम
नाश्ररसोभाश्ररसुगंधइनसमग्रीनकेसंजक्तभी
सोभानेविनाकमलहोवे श्रथवाइनकेसहितजोप
दमाक्यासोभातिसविनाकमलहोवे॥दोहरा॥जद
यश्रीरघुनाथजूसमरसवगसरवग्य नरकीसीली
लाकरनजिहमोहतसवश्रग्य॥२८॥वार्ता॥जद्यप
श्रीरामचंद्रजूसमहै श्ररसममैजिनकीरतिहै श्ररसम
केजाननेवारेहै परतोमीमानुषकीजेसीयासमेलीला
करनेमयेजोकरकेसंपूरणश्रग्यानीमोहतहोतहै॥
सीतहि॥ ॥श्रीरामोवाच॥विजयछंद॥देषोनहोसुमै
सीतहिकारनकौनकहौश्रवही श्रतिमोहितकै वन
माह गई सुरमारगमैमृगमारयोजिहि कहुवात
कछूतुमसेकहिश्राई कियोतिहत्रासडरायरही॥श्र
बहैवहूपरनकुटीयहिश्रोरकियोवहिलछमनहोय
नही॥२६॥वार्ता॥तवश्रीरामचंद्रजूकहतेभएसु
महैसीतक्याकथाजाकीश्रेसीसीताकोमनहीदे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

93A वनहो सोमैअवकौनकारनकहो मेरेअंतःकरनहिनक
रके सोवनमेचलीगईहै इससवदकेसुनकरके जिसरस्ते
विषेमैनेम्रिगकोमारयाथा तहांको अथवाहेलछम
ननुमकोजोकोहीवारना तिसतेकहीगईहै तिसभयते
सोडररहीहै अवयहिवहीपत्रनकीकुटीहै कियहिसो
रहैवहिनहीहै अथवाएहवहीलछमनहै किवही
लछमननहीहै ॥ वंपु ॥ धीरजसो अपनोमनरोक्यो ॥
जोपजटाऊपरेअवलोक्यो छत्रधुजारथदेषकैरू
क्यो गीधकहोरनकोनेतजू क्यो ॥२१॥ वार्ता ॥ फेरऐसे
वचनकहिकै श्रीरामजूने अपनोमन धीरजसोरोक्यो
गीधजोहेजटाऊसोपरयोहुयोदेष्यो छत्रअरधुजाते
रथइनकोदेषकरकेपूछ्यो हेगीधकहोतुमकिसतेर
णजूपेहे ॥ जटाऊवाच ॥ राघवरावनलैगयोसीत
हिहाररघुनाथरटैसुभगी तहि मैविनछधुजारथकी ते
नोह्वैगयोहोवलपछवहीनो ॥२२॥ वार्ता ॥ हेरामजू
रावणसीताजूकोहरकैलैगयोहै हायश्रीरघुनाथऐ
सेसमहैक याजांकी सोरटनी सी सोमैनेताकोछत्र
नेरथअरधुजाइनविनाकरदीयो फेरमैवलअरपंषो
नेविनाह्वैगयो ॥२३॥ होजगमेसमतेवडभागी देहद
सातुअकारजलागी जोवहुभाननवेदनगायो रू
पसोमैअवलोकनपायो ॥२४॥ वार्ता ॥ सोमैजगतमै
सभनोतेवडोभागनवारोभयो जिसनेसरीरकोअ
वस्थामेरीतुमारेकारजविषेलागी जोवहुतप्रकार
करकेवेदनिविषेगायोहै सोरूपमैनेदेषनैपायोहै
॥ श्रीरामोवाच ॥ साधुजटायु सदावडभागी तोम
नमोवपुसोअनुरागी छूटोसरीरमुनीयहिवानी ॥
रामहिमैनवजोनसमानी ॥२५॥ वार्ता ॥ हेसाधजटायु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचे
रती
६४ ह
94

तेसदावडेभागनकरोहै जोतेरेमनमेरेसरीरसौंस
नैंवानहै जवयहिवानीसुनीतवजदोऊकेंसरीरछू
टो तवतांकीजोत श्रीरामजूकेविषेहीसमायगई॥
मोटकछंद॥ दिसदछनकोंकरदाहचले सरनागि
रदेषत विछमले वनअंधकवंधविलोकतही दोऊ
सादरअैचलीएतवहीं॥२४॥वार्ता॥फेरताकोंदाहक
रकेदछनदिसाकोंजातेभए नदीअंपरवनसेंहृ वि
छइनकोंदेषतेहूएफेरएकवनमेसूरषजोहैकवंध
राकसतांनेदेषतेही दोऊ भाईतवहींषेचलीए॥ज
हिषेवे कोंसवबुधगुनी डुहुवानननैंडुहूवाहहनी
वहिछाडकेदेहचलेजवहीं यहिव्योममैवेनकहेतव
हीं॥२५॥वार्ता॥जवतिसनेषानेकोंबुधविचारी त
वदोऊभाईयोनेदोवाणलेकरकेदोऊभुजाकाटदे
इंथी सोवहिअसुरजवदेहकोंछोडकरकेचल्यो ताने
एहवचनआकासमेकहे॥पाछेयवामोहस्रापदई
गंधरवतेराकसदेहभई फिरकैमघवासेजुधभयो
उनक्रोधकेसीसमेवज्रहयो॥२६॥वार्ता॥पीछेमोकों
ईद्रनेस्रापदईथी सोगंधरवतेमेरीराकसदेहभईथी
फेरराकसहूएतेइंद्रकेसंगहीमेरोजुधभयो इंद्रनेक्रो
धकरकेमेरेसीसपैवज्रमारयो॥दोहरा॥गयोसीसग
डपेटमो पस्यो धरनपरआय तवकरुनाहीमैभईदी
नीबाहपठाय॥२७॥वार्ता॥सोमेरोसीसपेटमेगडगयो
मेप्रिथवीमेआनपस्यो तवईद्रकोंहीएमेदयाभई
तानेमेरीभुजाबढायदई॥दोहरा॥बाहुदईइंद्रेकोस
कीआवैतहिगहिषाव रामरूपसीताहरनउद्धरहुग
हिनउपाव॥२८॥वार्ता॥सोइंद्रकोसकीमेरीभुजाक
रदई जोतिनोमेआयजातहैताकोंषायलेतहों अर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

94A यहि ईद्रने कह्यो थो जब रामावतार होवेगो अर सीताजू
को हरण होयगो तब तूं ऊद्धरेगा इस वन विषे यहि उपा
य कह्यो ॥ दोहरा ॥ सुरसर ते आगे गए मिलहे निं सुग्री प
व दैहे सीता की षबर वाहे सुष अतिजीव ॥ ३९ ॥ वार्ता ॥
इस गंगा ते आगारी गए हू ऐ वानरों का राजा सुग्रीव मि
लेगा श्री सीताजू की षबर को देवेगो तब तुमारे मन मै
आनंद सुष बधेगो ॥ मोटक छंद ॥ सरनाइक के सिव सो
भ मई विलोकत ही चकवा चकई डर मै सीय पीन समा
य रही तिन सो रघुनायक वात कही ॥ ४० ॥ वार्ता ॥ ए
कनदी सो या मै मिली हुई जो है तापर चकवा अर चक
वी को देषकर के रघुनाथजू के हीए मै जो सीताजू की पी
न समाय रही है ताते तिना सों श्री रामजूने वारता कही
अवलोकन तहै जब हो जब ही दुष होन तुमै न वहीन वही
यहि वे गुनि चित्त कछू परीऐ सीय देऊ वनाय क्रिपा करी
ए ॥ ४१ ॥ वार्ता ॥ जब जब हनुमंतों को देषते से तब तब तुमको
दुष होता था को कुचन की सोभा देषत तुम दुषी होते से
कि हम ऐसे नही सो यहि वैर चित्त मै कुछु भी ना परीए
क्रिपा करके सीताजू को वनाय देवो ॥ कि न चित्त चकोर
कछू कपरो सीय देऊ बनाय सहाय करो ससि के अव
लोकन दूर कीऐ जिन के मुष की छब देषजिए ॥ ४२ ॥
वार्ता ॥ हे चकोर तुम ता की करणी को भी कछु चित्त मै धा
रण करो सीताजू को वनाय करके मोरी सहायता करो
जब चंद्रमा को देषवो तुम को ब्रह्मा ने आमावस्या मै दू
र किया था तब तुम जिस श्री सीताजू की मुष की छवि को
ही देषके जीये थे यहि करनी चित्त मै कछु वतो धारो ॥
॥ ४३ ॥ लछमन उवाच ॥ चंद्रकला छंद ॥ यहि के सब जा
चक कै अरं पकज सो गम्र सो गली ऐहर के सन सायतु

चं २

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मे हमपूछन आए रहे मन मोन कहा परकै लषके नक के
नक जाल गुलावत तीछन चितित जे डरकै सीपको कछु सो
पक हो करुना करना मे सो करुना करकै॥४४॥ वार्ता॥
चपकनो जाचक नको शत्रु है तो पै भौर नहीं बैठत है ता
पै कहा पूछे ताते हे अशोक तेतो समनके सोक हरली
ए है सषसी ए है अरतुम साधु हो तुमको हम पूछन आ
ए है तुम कहा मन मे मौन धारण कर रहे हो अर हे षके
केतकी के किन नेक संवूह अर गुलाव के भी जे सम
चित मे तीछन जान के हमने डरके त्याग दीए जो आ
गे हैं तीछन हे सो कहा वतावेगे ताते हे करुणामय
यहे करुणा वृक्ष तुम करुणा करके सीताकी षवर
कहो॥ श्रीरामउवाच॥ नाराचछंद॥ हिमांसु सूरसो
लगै सुवात वज्र सो वहै निसाल गै क्रिसानक्यो विले
पअंगको दहै विसेष कालरात्र सी कराल रात मानिए
वियोग सीय कौन काल लोक हारजानीए॥४५॥ वा
र्ता॥ निसस मे चंद्रमा तो सूरज के समान लागत
है तीन प्रकार की पवन सो वज्र सी लागत है रात सो
अगन सी लगत है चंदन आदक को जो लेपन है सो
अंग को दाहत है विसेषता करके अति की रात सी रा
त लागत है भय के करण वारी यह सीता जू को है
लछमन वियोग नही है काल है लोकन को हरण
वारो॥ पधट का छंद॥ ऊहि भांत विलोके सकल ठौ
र गए सवरी पे दोऊ देव मोर लीए पादोदक तिह प
द पषार पुनँ याद कको नेसु थार॥४६॥ वार्ता॥ इस
प्रकार देषने हुए संपूरण अस्थानो को दोऊ देव तिऊ
के मुकट सवरी के पास जाते भए तिसने पादोदक लैके
रकै चरण धोए फेर सुपार कैं अरआदकन सो पूजन की

95A ऐ॥ हरदेत मंत्रैनके विस्नात सुभकासीपेपुनमरनकाल॥
तेआएमेरेधामआज सफलकरननपजपसमाज॥४७॥
वार्ता॥ फेरसुभजोहेकासीतिसविषेमरनकेसमेजिनके
वडेतारकमंत्रकोसिवजूदेतेहै सोमेरेघरविषेचलकर
आजआएहे तपअरजपकेसमाजकोसफलकरणको
फलभोजनकोतिनपरेआन भरेजग्यपुरषअतप्री
तमान तिनरामचंद्रलछमनसरूप तवपरेचित्तज
गजोतनरूप॥४८॥ वारता॥ फलजोहेसोभोजनकोतिस
नेआयकरकेधरे सोजग्यपुरषनेअत्यंतप्रीतमानकर
केषाए तवतिसनेश्रीरामचंद्रअरलछमनजूकेजोसरू
पहैजोतनरूपजगतविषेसोचित्तमेधारनकीए॥दोहरा॥
सवरीपावकपथतवतरषगईहरिलोक वननविलोक
तहरगएपंपातीरअसोक॥४९॥ वार्ता॥ तवसवरीअ
गनकेरसतेप्रसंनहोकरकेवैकुंठकोजातीभई फेरवनो
कोदेषनेहुएसोकतेरहतजोहेपंपानदीकेतीरहेतहांश्री
रामजूजातेभए॥ तोटक छंद॥ अतसुंदरसीतलसोभत
से जिहरूपअनेकनसोभवसे वहुपंकजपंछ विराजत
है रघुनाथविलोकतलाजतहै॥५०॥ वार्ता॥ अत्यंतसुं त
दरहै अरसीतलजोकीसोभाहै जामेअनेकरूपनसो
सोभावसतहै वहुतेकमलअरपंछीजामेविराजतेहैसो
रघुनाथजूकोदेषकरलज्जामानहोतेहै॥ सगरीरितसो
हतसुभ्राजहीं लहिग्रीषमपैनप्रवेसतही तवनीरजनी
लतहारससे सीयकेसुभलोचनसेदरसे॥५१॥ वार्ता॥
सेसरणरितुजहांउजलसोभतहै परतहांग्रीषमरितुप्र
वेसकोनहींपावतहै नवीननीलकमलतहांसरसहै
सोमानोसीताजूकेसुभनेत्रनसेदिषाईदेतहै॥ सवैया॥
सुंदरसेतसरोजनमेकरहाटकहाटककीदुतकोहै ता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परश्रोर मलोमनरोचनलोकविलोकनकीरुचरोहै देष
दई उपमा जलदेवनदीरचदेवनकोमनमोहै केसव
केसवराय मनोकमलासन। के सिरऊपरसोहै ॥५२॥
॥वार्ता॥ सुंदर जोहै सुपेद कमल नाल विषै तिनो मे जो है
करहाटक क्या कमलके सरता के आगे स्वरण की सोभा
क्या है ताके ऊपर मले मन के प्रसंन करणवारो लोकन
के नेत्रनकी कांतरूप जोरोकत है क्या मोहत है ऐसे भ्रम
र भ्रमत हैं तिनोको देषके जो देवतिआ के भी मन को
मोहत है तव जलदेवीनने उपमा दई है क्या ब्रह्मा केसी
स के ऊपर मानो श्रीकृस्न सोभत है ब्रह्मा सो कमल के
सरभ्रमर सम श्रीकृस्न ॥लक्ष्मन उवाच ॥सवैया॥
मिलचकिन चंदन वात वहै अत मोहत न्यायन ही म
नको मिग मित्र विलोकत चित्त जरैं लीए चंदन साचर
पपतको प्रतिकूल सुकादिक होहि सवै जीय जाने नही
इनकी गत को दुषदेतेतहाग तु मैन वनै कमलाकर ह्वै
कमलापतिको ॥५३॥ वार्ता ॥ मिलकर के चक्री क्या
सरपन सौं जो चंदन की पवन चलत है सो जो मन को मो
हत है सो न्याई ही है सरपन सो मिली है याते फेर चंद्र
मा को देषते हूए जो मन जरत है सो चंद्रमा भी निसाचर
की पपतको लीए हूए है क्यो रातको विचरत है अरतो ते
आदिक जो सम विपरीत भए है सो इनो की गत को नही
जानते है कि एह कौन है हे तालन्तु मको दुषदेनो नहीं व
नत है कमलाकर ह्वै कर के क्या कमलो की षान ह्वै कर के
अपयवाल लक्ष्मी के उपजावन वारा ह्वै कर के लक्ष्मी के प
तिको क्यो व हितेरे जमाई है ॥दोहरा॥ रिष्यमूक परव
त गए के सव श्रीरघुनाथ देषे वानर पंच विभु मानो
दसरथ नहाथ ॥५४॥ वार्ता॥ रिषेमूक परवत को श्रीर

96A घुनाथजू जाने भए तहां पंचवानर देषे केसे विभु क्याप्र
तापवान मानो दाहनो हाथ है ॥ कुसमवचित्रा छंद ॥
तव कपराजा रघुपति देषे मन नर नारायण कर लेषे ॥ द्वि
जवपु धर तव हनुमत आए बहुविधि आसिष दे मन भा
ए ॥ ५५ ॥ वार्ता ॥ तव वानरों के राजा सुग्रीव ने श्रीरामचं
द्रजू देषे मन मे श्रीनारायण करके जाने तव ब्राह्मण
के सरीर को धारण करके हनूमानजी आवते भए ति
नौ बहुत प्रकार आसीरवाद दीए ॥ हनूमनोवाच ॥ ते
कुसमवचित्रा छंद ॥ सम विपि रूरे वन मे को हो तन मन
रूरे मनमथ मोहो सिरसजटा वेला वपुधारी हरहर के
मानो विपिन विहारी ॥ ५६ ॥ वार्ता ॥ फेर कह्यो तुम सम प्र
कार सो सुंदर कौन हो तन मन सो सूरमा हो अरकाम
को मोहत हो सीस पै जटा है पत्रन के वस्त्र सरीर पै धारे
हुए हो वन मे विचरनवारे मानो विसुते सिव हो ॥ परम
वियोगी समरस भीने तनमन एके जुग [illegible] तन कीने ॥
अब तुम को [illegible] का [illegible]न वन आरो किह कुल हो कौन पुत्र
जाए ॥ ५७ ॥ वार्ता ॥ अर परम वियोगी से देषीते है समरस
जो है सांतरस ता मे भीजे है तन अर मन कर के एक हो ॥
सरीर हो हू की कहे है तुम कौन हो किं प्रयोजन वन मे आ ५ वे
ए हो अर किस कुल मे भए हो किस के पुत्र हो ॥ रामउ
वाच ॥ चंचरीक छंद ॥ पुत्र श्री दसरथ के वन राज सासन
आयो सीय सुंदरी संग ही हुती विछुरी सु सोधन पाय
यो राम लछमन नाम से जुग सूरवेस वषानीयो रावरेव
न कौन हो किह काज क्यो पहिचानियो ॥ ५८ ॥ वार्ता ॥
हम पुत्र नो राजा दसरथ के है वन मे ताकी आग्या कर के
आए है हमारे संग सुंदर श्री सीता जू थी सो विछुर गई है
ताकी षवर नही पाई है हम राम ते लछमन नामो के सहित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

है अरसूरजहमारोवसहै अरतुमवनमेकौनहो कि
सकारयरहिनेहो अरहमकोकिसवास्तेपहिचानकर
तेहो॥हनुवंतोवाच॥दोहरा॥याशिरपरसुग्रीवनि
पतासंगमंत्रीचार वानरलई छिनायत्रियदीनोंवाल
निकार॥५८॥वार्ता॥हनूमानजूनेकह्योहेनाथई
सपरवतपैवानरोकाराजासुग्रीवहै ताकेसंगचारमं
त्रीहै वालीवानरनेताकीइस्त्रीछिनायलईहैसो
निकारदीयोहै॥देयककेंद॥वाकहिजोअपनोकर
जानहु मारहुवालविनययहिमानहु राजदेहुजोवा
कोतियाकहु तोहमदेहुबतायसीयाको॥५९॥वार्ता॥
तिसकोजोतुमअपनोकरकेजानोअरवालीकोमा
रहुयहिवेनतीजोतुममानोउससुग्रीवकोराजको
अरइस्त्रीकोजोतुमदेवोतोहमसीताजूकोवतायदे
वेंगे॥लछमनउवाच॥आरतकीप्रभुआरतहारहै
दीनअनाथनकोप्रतिपारहै अस्थावरजंगमजीव
जुकोई सनमुखहोतनिस्तारयहोई॥६०॥वार्ता॥पी
डावानकीसदाश्रीभगवानपीराकोदूरकरतेहेदीन
अरअनाथजनोकोसदाप्रतिपालाकरतेहैअरस्था
वरक्याथितरहिनवारेअरजंगमक्यातुरनवारेजोको
ईजीवहैसोसनमुखहोतेहीनिस्तारपद्केजातेहै॥वा
नरह्वैहनुवंतसिधास्यो सूरजकोसुतपायनपास्यो
रामकह्योउठवानरराई राजसिरीसषिसोत्रिय
आई॥६१॥वार्ता॥फेवानररूपह्वैकरकेहनूमान
जीगए श्रीरामजूकेचरणोमेसुग्रीवकोपायो रामजू
नेकह्योहेवानरोकेराजाउठो राजलछमीजोहैसपी
तिसकेसहितनेरीइस्त्रीआईहै॥दोहरा॥उठरजा
सुग्रीवतनवनमनअतसुषपाय सीतापतिकोपटस

97A

हितनूपरदीनोआय॥६३॥वार्ता॥नवननअरम
नमेअस्त्वनसुषपायकैराजासुग्रीवउठतामयावस्त्र
केसहितरामजूकोनूपरल्यायदीडो॥तोटकछंद॥
रघुनाथजवेपटनूपरदेषे कहिकेसवप्रानसमा
नसुलेषे अवलोकितलछमनकेकरदीने उनआ
दरसोसिरमानकेलीने॥६४॥वार्ता॥नवरघुनाथ
जूनेवस्त्रनेनूपरदेषेनवप्राणोकेसमानकरकेजा
ने फेरदेषकेलछमनकेहाथमैदीये उन्होनेआदर
सोसिरपरमानकेलीये॥उत्तरीअवलीडोकीश्रीराम
मनसि॥दंडकछंद॥पिंजरकीषंजरीटनैननकोकि
धोमीनमानसकोकेसोदासजलहैकिजारहै अंग
कोकीअंगरागगेंदूआकीगलसुई किधोकहिजे
वकहूंउरकोकिहारहै वेपनहमारोकामकेलवि
धातारवेकोताजनोकिचमकनचमूरूविचारहै मन
कीजमनकोकिकेजमुषमूंदवेकोसीताजूकोउत
रीएसवसुषसारहै॥६५॥वार्ता॥नवमनमैश्रीरामजू
कहिनेमरोमेरेनेत्रजोषंजरीटक्याममोल्लेहैतिन
कोयहिपिंजरहै अथवामीनरूपीजोहैमनताको
यहिजलहै अथवानोकेपकरवेकोयहिजालहै॥
अथवाअंगकोकीक्यालेपनोकीयहिअंगरागक्या
अरगजाहै यागेदिआक्यानकीआहै यागलसूईक्या
कानकीगदीहै याकटकोजेवदैनवारोहेअथवा
कहिजेवक्नामषीसाहै याउरकोहारहै अथवाहमा
रोवेपनहै किवाकामकेलकीविद्याकेताठनको
यहिताजनोक्याकोरडाहै योचौरचमकतहै अ
क४ थवाप्यारीकेंमलमुषकेमूंदवेकोयहिजनमका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क्या कनात है औ सो जो है सीताजू को उतरीय क्या
वस्त्र गांठ सो सब सुषन को सार है॥ स्वागता छंद॥
वानरे हत वयें हसवोल्यो भीत मेट सम को जीय
षेल्यो आगवारपरत छ करीजू रामचंद्र हरवाय
यरीजू॥८६॥ वार्ता॥ तव सुग्रीव औसे हंस करके वो
ल्यो औ तरजो मेट्या सम नो के चित्त मे सो षोल दी
आ क्या अगनवार करके प्रतछ करी तव रामचंद्रजू
ने वानर की वाह पकरी अगन साषी दै कर मित्रता
करी॥ सूरपुत्र तव जी विन जान्यो वाल जोर वहु मा
न वषान्यो नारि छीन जहि भोत लईजू सो असे ष
विनती विनईजू॥८७॥ वार्ता॥ तव सुग्रीव ने अपनो
जीवनो मम को औ वाली को वल वहुत प्रकार सो वर
नन कीयो जैसे तिसने इस्त्री छीन लई थी सो सव वेन
ती जाहर करी॥ तही वाल न्रिप ने मरे तात हम लहु
रे वे जेठ भ्रात को ऊक दिनि अतह्लितमे गएऊ॥ राष
स जुध वैरत मम एऊ हुं य भिहन्यो वाल वल वीर॥
ता सुत वैर का जल रोपीर॥८८॥ वार्ता॥ हमारे पिता
के मरे ते वाली ने राजता पाई हम छोटे थे अरव हि
हमारे वडे भाई थे कि तनेक दिन अंतर सनेह करके ग
१ एफेर कसस सो वैर करके तहां जुध होता भया॥ सो तु
ध वनाम [illegible] राकस सो वाली ने मार लीयो फेर ता
को पुत्र वैर के वा सो लस्यो॥ भाज्यो सो इक विवर हि
गएऊ द्वार राष निज भ्रात रगएऊ मस्यो जान मै
नं सिला दै द्वार वैठे राज करी संभार॥८९॥ वार्ता॥ सो
वाली के आगे भाज्यो एक विवर क्या परवत की कंद
रा मै गयो तव वाली भो को द्वार विषै राष के आप भीत
र गयो तहां वहुत चिररहि के पर वाली को मस्यो जान

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

98A कारकेताके द्वारपैसिला को दे के राजपरवैठो सं भा
रक कुनाकरि॥ छुठो मासमारव हि आयो हम हि दे
षमनवे रिबुधायो॥२०॥ वार्ता॥ छै मैमहीनेताको
मारके वाली आयो हमको देषके मनकरकेकोपवे
धायो॥ दोहरा॥ भाग्यो मै दसहू दिसा वच्यो नकाहू
जाय तव आयो रिहठौर रिषजानो स्राप उपाय॥२१॥
वार्ता॥ तव दसे दिसा को भाग्यो कहूं मै जाय करनाव
चो तव यु स्त्र स्थान विषे आयो रिषिके सायको ऊ
पाय जानकरके॥ सुग्रीवोवाच॥ तारकछंद॥ एक वे
रसर एक हने जो ताल सात वलवें नगने जो राम
चेद्र तव वान चलायो ताल भेद फिरके कर आयो॥
॥२२॥ वार्ता॥ एक वानसे जो तुम एक वार ही सात
तालनको दूर करो तो तुमको वलवान गनै तव राम
चंद्रजने वान चलायो से सातनको भेदकरके फेर रामजू ^ताल
के हाथ मै आय गयो॥ विजयछंद॥ वामनको पहलो
कनमायजो वामनके वपुमो फसियायो केसव सूर
सुताजल सियन सूरतसूर हि को पदपायो कामके
वान तुचा समछेदके कामपै आवनज्यो जगगायो॥
रामके सायक सातहूताल हि भेदत्यो रामहि केकर
आयो॥२३॥ वार्ता॥ जैवामनजी को चरण सयल्लो से
कौका भापके फेर वामनजी केही सरीरमै प्रवेस हुग
यो फेर जैजे मुनाजी के जल समुद्र मै पूरण होके फे "से
र सूरजको ही पदपायो सूरज मंडलको गयो अर
जैसे कामके वान संपूरणतुचाको छेदकरके कामहीपै
आवने है तैसे ही श्री रामजू को वाण सातो तालन
को भेदन करके श्री रामजू के ही हाथ मै आय गयो
॥ सुग्रीवोवाच॥ तारकछंद॥ यहि अदभुत कर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

97

रामचं
सकै
५५
99

मनश्रारपेहोई सुरसिद्धप्रसिद्धनमैनमकोई॥ति
कसीमनतेसिगरीदुचताई तुमसेप्रभुपायोसदा
सुषदाई॥२४॥वार्ता॥तवसुग्रीवनेकह्यो यहिश्रद
तुमप्रभुतकरमश्रौरयैनहीहोतहै याजैकोऊदेवतानमे
याप्रसिध्र प्रसिद्ध सिधनमेहो श्रवमेरेमननेसभ
दुचताईदूरभईहै कोतुमसारषेजोसुषदायक
स्वामीपाएहैयाते॥लछमनोवाच॥सोरठा॥जि
नकेनामविलासश्रषललोक मेदतपतन तिन
कोकेसवदाससयततालमेहनकहा॥२५॥वार्ता॥
जिनकेनामकेविलासकरकेसपूरएलोकनको
तेपापीमेहनजोहै श्रापतिनकोसाततालनकोभे
दवोकहाहै॥श्रीरामउवाच॥तारक श्रतिसंग
तवानरकीलघुताई श्रपराधविनावधकीनवडा
पई हतवालतिहेऊ तुमेन्हैसीछ्या श्रवहेकछूमोमन
श्रेसीयेईछा॥२६॥वार्ता॥तवरामजूनेकह्योवा
नरकीसंगतमेश्रल्पतही लघुताहै कोविनाश्रप
राधकेमारवैमेकोनसीवडाईहैपरतोभीश्रववा
लीकोमारकरकेमेतुमकोराज्ञाकरोगो मेरेमनमेश्रे
सीहीइछाहै॥२७॥इतिश्रीमतसकललोकलोच
नचकोरचितामन श्रीरामचंद्रचंद्रकायांसुग्रीवा
नुग्रहविवरननोनामद्वादशोप्रकासः॥१२॥दो
हरा॥याजेरहिप्रकासमैवालवधोकपराज॥वरषा
वरननसरदपुनउदधउलोघनकाज॥१॥वार्ता॥
इसतेरवेप्रकासविषेवालीकोमारवोश्ररसुग्री
वकोराजफेरवरषातेसरदहरितकोवरननतेसमुद्रको
लंघवो॥सोरठा॥लंकविलोकनसीयसैरावनवच
नविसेष मेदरीश्रोहनुवंतकोदरसनवंधनलेष॥

११८ ॥२॥ वार्त्ता॥ लंका को देषवो अरसी ताजू सो रावण
वचन फेरसी ताजी ने मंदुदरी अर हनुमान को देषवो
॥ सुग्रीव गए तहा राम लीये तब गरज करी पुर द्वारा
येजब वालचल्यो सुन कोप कै जीमहि वान कहीत्रि
य हेरके हीयमहि तारऊ आए लीए सुसहाय कपु
थहि कोन सहेरघुनाथके कुपहि वालऊ मैनकी
हो अपराध कछु सुन जानहिगे बल युद्ध कीयेपुन॥
वालक स्यो हठकै रन जू कन जुद्ध कीयो दोऊ सोद
र सूकन रामहि वाल न सूक परे मन भौंगयो सुग्रीव ज
सुभावन॥३॥ वार्त्ता॥ तब जहां वाली आ राम कीऐ
था तहा सुग्रीव गयो पुर द्वारे जायके गरजना करी॥
५ तब वाली कैसे चल्यो तब तारा इस्त्री ने ही ऐसे विचा
रकै वार ता कही सुग्रीव सहाय तालीऐ श्री रामजू की
जुद्ध को आया सु राम जू के कोप कौन सहैगो तब वा
ली कह्यो मैंने तो कछु अपराध नहीं कीयो सो जो मा
से जुद्ध करेगे तो मेरे वल को तेजानेगे तो वाली हठ सै
रण मै जू क्यो दोऊ ननेजुद्ध कीयो सो दोऊ भाई एक
से है तो ते समफो नागयो राम जू को कौन वाली है॥
तब सुग्रीव भाग गयो॥ दोहरा॥ राम जू फेर वुलाय
यो निकट न आवै त्रास तुम मो को मारयो हुतो जीय
महि मयो ऊदास॥४॥ वार्त्ता॥ श्रीरामजूने फेर वुला
या सो भै सो नेडे नही आवत तुम नेमो को ही मारयो था
ऐसे कहिके उदास भयो ॥ कैसे हू कर ल्ये गए जुरे गु
द्ध मै जाय वालहयो मुठ का हीयो तब हिल रघरे पाय
॥५॥ वार्त्ता॥ किसी तरां कर के फेर ल्येगए से जाय के ज
व जुद्ध मै जुरे तब वाली ने ही येमे मुष्टका प्रहार कीयो
तब ही द्विग से कूगए॥ सुग्रीव पटका कंद॥ रघुपत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वालसोहोनजुद्ध रघुनाथमऐमनमाहकुद्ध सरएक
हन्योऊरमित्रकाम नव भूमगिर्योकहिरामराम॥
॥२॥वार्ता॥ ऐसेसुग्रीवकेअरवालीकेजुद्धहोतेभए
श्रीरामचंद्रजूमनकोपमानहोतेभए नवमित्रसुग्री
वताकेकाजएकवानमार्योतववालीप्रिथवीमेश्रीराम
रामऐसेकहिकेगिरताभया॥३॥ कछुचेतभएतिह
वलनिधान रघुनाथविलोक्योहाथकान वनचौ
रजटासिरस्यामगात वनवालहीएअरविप्रलात॥
॥४॥वार्ता॥ सोजोहैवलकोघरवालीताकोकछुचे
ततताके हूऐतेनवनानेहाथमेवानलीएश्रीरामजू
देषे जिनकेपत्रनकेवस्त्रहैसीसपेजटाहैस्यामसरीर
है हीएमेवनमालाहै अरब्राह्मणकेचरणकोचिनहै
वालऊवाच॥पपटकाछंद॥ जगआदमयअवसान
एकजगमोहनहोपरवपुअनेक तुमसदासुद्धसमको
समान किहहेतहतोकरुनानिधान॥५॥वार्ता॥जगत
केआदिविषअरमध्यविषेनेअंतविषेएकतुमहीहो
अरअनेकसरीरनकोधारकरकेजगतकोमोहतहो
तुमसदापवित्रहो अरसमकोसमानहो सोहेदया
केघरमोकोकिसकारणकरकेमार्यो॥श्रीरामउवाच॥
सुनवालसुवसुनवलगुणनिधान मैसरणागतहितन
हनेप्राण यहिसाठोलैकिस्यावतार नहेहोनवसंसा
रपार॥६॥वार्ता॥ हेईंद्रकेपुत्रवलअरबुधकेघरतुम
सुनो मैसरणआयेजोहैसुग्रीवताकेवास्तेतेरप्राण
हरेहै यहबदलातुमकिस्यावतारविषेमेरेनेलईऊो न
वतुमसंसारतेपारहोवोगे॥ ॥रघुनाथरंकतिहराज
दीन जुवराजविरदअंगदहिदीन नवकिसकिंधाता
रसमेत सुग्रीवगएअपनेनिकेत॥१०॥वार्ता॥ नवके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९२

100A

गालजोसुग्रीवथासोश्रीरामजूनेराजाकीया अर
जुंराजकाववजीरकीपदवीअंगदकोदईमनकेकिस
किंधानगरिमेनाराकेसमेनसुग्रीव [illegible] घरजा
नेभए॥दोहरा॥किये निपनसुग्रीवहनवालवली
रनधीर गए प्रवरषनअइकोलछमनअोररघुवीर
॥११॥वार्ता॥वलीजोवा [illegible] ताकोमारकेसुग्रीरा-
जाकीडोफेरलछ [illegible] रश्रीरामजूप्रवरषननामा
परवतपैजातेभए॥त्रिभंगीछंद॥देष्योसुभगिरव
रसकलसोभधरिफूलवरनवहुफलनफरै जिहसं
गसुभरिछनकेसरकेगनमनोधरनसुग्रीवधरै॥
संगछिवाविराजैगजमुषगाजेपरभिनवोले चिन्नह
रै सिरसुभकचंद्रधरपरमदिगेवरमानोहरअहि
राजधरे॥१२॥वार्ता॥तहांसभसोभाकेपारनवारो
सुभपरवतदेष्यो वहुतेरंगनकेफूलनसोअरफलन
सोजोफलरह्योहै फेरसुभरिछोकेसंगहू अरजामे
सेरनकेसंवूहहैसोमानोसुग्रीवकीपरनक्याछवि
कोपारनहै सुग्रीवकैसोहै जाकेसंगसुभरिछहै॥
अरकेसरीनामावानरहै सैनाकेसहित फेरपरवतके
संगसिवाक्याहरडके व्रिछहै अथवाजापैसिवागिर
छीहै अरहाथीनमेमुख्यजोअैरावत सोगाजतेहै अ
रकोकलावोलतीहुई चिन्नकोधुरावतीहै सिरपरसुभ
जोहै चंद्रकक्याअमरकअथवाचंद्रमाजोश्रीरामचं
द्रजू अरजलफरन्योमेकोनाकोनाकोपारनहै अरव
डोहै दिसाहीजापैवस्त्रहै अरवडोसरपनकोपारनहै
सोमानोसिवहै जाकेसंगपारवतीजोहै अरगणेसा
जूवोलतहै अरजोपरक्यारात्रुहै सोजीवजहांचाक
रहूएहूएवोलतहैमनमोहतेहै सिरपरसुभजोचंद

रामचं
सटी
१०१
104

माअरकक्षागंगाजलताकोपारनहै अरवडेहै दिकही
जिनकोवसुहै अरअहिराजजेवासुकीताकोपारहै॥
॥तोमरछंद॥ ॥सिससोलसैसंगपाय वनमाल
ज्योंसुररूप. अहिराजकेउहकाल वहुसीससोभ
मनमाल॥१३॥वार्त्ता॥सेपरवतकालकसमहै ताके
संगपायषिलाकीहोतहै याकेसंगआपजानकेवि
येहै फेरविसुसमहै ताकेवनमालाहै याकेवनकया
जलअथवाविछुताकीमालाहै अथवारससमैसेस
नागसोहै ताकेवहुतसीसनकेसहितमणिउकीमाला
हैसोससीसमैमणिहै अरपरवतवहुतेश्रिगनकेसहि
तहै अरजापैमणिउकेसंवूहहै॥त्रागनाछंद॥चं
दमंददुतवासरदेष्यो भूमहीनभुवपालविसेष्यो
मित्रदेषयहिसोहतनहैयो राजसाजविनसोनदिहै
ज्यो॥१४॥वार्त्ता॥फेरदिनमैमंदछववारोश्रीरामजू
नेचंद्रमादेष्यो मानोपृथवीतेहीनभयोराजाहै॥
मित्रक्यासूरजकेदेषकेयहिऐसेसोहतनहैजैसेरा
जकेसाजतेविनासोनाहोवे॥दोहरा॥पतनीपतवि
नहीनअनपतपनीविनमंद चंदविनाज्योंजामनी
ज्योंविनजामनचंद॥१५॥वार्त्ता॥इस्त्रीतोपतनेवि
नाअनंतहीनहोतीहै अरपतइस्त्रीतेविनामंदहो
तहै जैसेचंद्रमातेविनारातनहोवै अररातितेविनाचंद्रमा
होवे॥१६॥त्रागनाछंद॥देषरामवरषारितआई॥
रोमरोमवहुधांदुषदाई आसपासतमकीछवछा
ई रातदिवसकछुजाननजाई॥१७॥वार्त्ता॥फेरश्री
रामजूनेवरषारितआईदेषी जोरोमरोममैवहुतप्र
कारसोदुषदायकहै तवआसपासचारोतरफअंध
यकारकीछववछायगई रातअरदिनकछुजान्यो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

101A नहीजातहै॥ ॥मंदमंद धुनसेघनगाजै नूरनारजनु
आवककाजै ठौरठौरचपलाचमकैज्यो ईद्रलोकत्रि
यनाचतहैज्यो॥१७॥वार्ता॥ नवमंदमंद धुनसोमेघगर
जतेहैसोमानोनारोकेवाजेत्रवाजतेहै अरआवककाज
तेहै अरठौरठौर विषेबीजुरीऐसीचमकतहैजैसेईद्रलो
कविषेइस्त्रीनाचतहोय॥मोटकछंद॥सोहैघनस्याम
लघोरघनैमोहेतिहकोवगपंगतमनै॥संषावलपी
वहूघाजलसो मानोतिनकोउगलोवलसो॥१८॥
वार्ता॥स्यामजोमेघहै सोघनोगरजनासोसोभतहै॥
तिनजोवगुलिडोकीपांतहै सोमनकोमोहतहै मेघव म॰
हुतप्रकारकेजलोसेसमुद्रोमैसंषोकीपंगतपीयग
एहै सोमानेतिनोकोवलसेउगलेहै॥ सोमाआन
सकेसरासनमै मानोहुतहीसतहैघनमै रतनावल
सीदिवद्वारगनो वरषागमकोपियदेवमनो॥१९॥
वार्ता॥नासमेरइकेघनुषमैअनेकतसोभाहै सोमेघ
नमैऐसीसोभादिषाईदेतहै मानोवरषाकेआगमन
मैदेवतिहुनेस्वरगकेद्वारपररतनोकीपंगतसीकरी
है॥तारकाछंद॥घनघोरघनेदसहूदिसधाऐ मघवा
जनुसूरजकोचढआऐ अपरापविनाभुवकेतनता
ऐ तिनपीडनपीढनकेउठधाऐ॥२०॥वार्ता॥वहुतमे
घगरजनाकोकरकेदसोदिसाकोदौरतेहै सोमानो
ईद्रसूरजपरचढकरकेआएहै कौविनाअपरापकेया
नेप्रथिवीकेतनतपाऐहै तिनोकीपीडाकरकेपीडत
कपादुषीहोकरकेउठकेदौरेहै॥२१॥अनगाजनकाज
नहुदंभमानहु निरघातसवैपयपानवषानहु घनुहै
पहिगोरमहायननाही सरजावलैहैजलधारत्रिया
ही॥२२॥वार्ता॥नवअनेकजोगरजतेहैसोईमानोन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गारेबाजतेहैं अरनिरखानक्या बीजुरी यरनकों जो वडो सब
दहोतहै सोई वचनको परवोहै अर यहि गौरमे दाघनका
वीजुरीको लोक सोनहीहै यनुवहै अर यहजलकी धार
नहीहै वाणोको सबुहचलतहै ॥ ॥भटचात्रक दादरमो
रनबोले चपला चमकैनफिरे घनघोले इनवेननको वि
पताअनकीनी परतीकहूचेदवचूपरहीनी ॥२३॥वा
र्ता॥ फेरचात्रकपपीहै दादरक्या डरू अरमोर एहनहीबो
लतहै सोसुरवीरहै बीजुरीनहीचमकत यहिनरवारन
कोनिकारेसुरमाफिरतहै इनिक्या प्रकासवारिणांको
यो नेभीअपनेनविपताकरी जैसेजु यमेकेतनिस्रोक
कोहोतहै क्योंऐसीसुंदरचंद्रवधूथी सोपृथिवीपैगेर
दई वेदवधूनामकीरवहूतीको॥ ॥तरुनी यहिअत्रि
म षीस्वरकीसी डरमैहृ चंद्रप्रभासमदीसी वरषानसुनोकि
लकै किलकालीं सपजानतहूं महिमाअहिमाली॥२४॥
वार्ता॥ यहबरषा अत्रि रिषीस्वरकी इस्त्रीसीहै क्यौंजाकेही
एमेहमनेचंद्रमाकी सोभासीदेषीहै चंद्रमाका इरेमे रहि
उत्त नअत्ररिषीकी इस्त्रीके चंद्रमाजनम्यो है फेर यहि वरषान
हीहै सुनोनिश्चैकरके कालीकिलकतीहै जोंकीमहिमा
कोसिवजूजानतहै ॥ चंद्रकलाछंद॥ भोहैसुरचापचार
प्रमुदितिपयो धरभूषनजरावजोनततरनरूलाई है दूरक
रीसुषसुषसुषमा ससीकी नैनअमलकमलदलदलन
निकाईहै केसोदास प्रवलकरैनकागमनहरसुकनसु
हंसकसबदसुषदाईहै अवरवलयतमनमोहैनीलकं
ठजूकेकालकाकिवरषाहरषहीयआईहै॥२५॥वार्ता॥
कालकाकिवरषाहरषहीएआईहै हममैकालकाजोग
नीकोभेदहे सोमेघमालाकेनाम औरनएमेघकेनाम
औपारवतीकोभीनामहै कालकापारवतीध्यानसम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

102A मयमे हृदयमे भक्तके हरषके प्रसन्न होयके आई है॥
किंवा वरषारितु सो मनमे राजी होयके आई है कालका के
सी है यो है जाकी मुरली जिए कामना को चाप धनुष समा
न चार सुंदर है आछी तरह चोली सो प्रमुदनकी एहै मूढ़े
है पयोधर कुच जाके आर भूषन जड़ाय जोतजरतलाई
है जराव के जे भूषन ताकी जो जोतता की जहनवीजुरी
न कीं रहित रलाई चंचलता है किंनडनेला यू है जहनपद वा
जु होनरलापद जु होई पद जु हो है पद जु हो चार पद हैं न
रलाई मे नहनको नकार मिल्यो है यहि है इस आरथमे
इपदको कहिन है नरलना महारबीचमे मन किंवा चो
की रहित है ताको नाम है नु कोन के लिये नरलको नर
ला की यो जराऊ के भूषन की जो जोत है आरई क्या यहि
जो नरल है हार मध्य को मन सो नड़नवीजुरी सो है कहू
नहनरलाई है एकै नकार पढ़ो है नहो आै सो आरयक
रीए जराऊ के भूषन की जोत मे नहन की जो नतरलाई
है क्या मिलाई है अथवा नरल जो है हारके मध्यको रत
नता मे मानो वीजुरी आई है असी चके है फेर कालका
के सी है सुषसो विना स्वम मुषको सिंगार विना सहिज
की सोभा सो सुषकर के दूर करी है ससिकं जो है मुषमा
क्या सोभा जाने फेर नैन कर अमल जो कमलता के क
दली जो निकाई सो दरजता ताको दलन की एहै केसो हा
स कहि न प्रवल जो जाने सुमवन सुभमारे है फेर नका
जो हथनी ताके जो आगमन ताको गमन जाने हरयो है॥
हस्तनी कीसी चाल चलन है मुक्ताजुत जे हंसक विछि
या हंसका पादकटक: अन्यमर: पावके भूषन को नाम
है ताको सबद सुषदायक है फेर कैसी है अंबर वस्त्र तासो
वलनजुत है औ नीलकंठ महादेव ताकी मन को मोहत है॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वरषाके सोहै सुरचापईद्रको धनुष सुंदरहैजामे फेर प्रभु
दिनराजीमणहै पयोधर मेघसोभूषनजुव्रिछजहांभू
प्रथिवीताकोषनकैभेदकेउपजेहै उद्‌भिजनामव्रिछ
कोहै भूमफोरकैनिकरतहै फेरर वसवदसहित और
जोनसहितजोनहितवीजुरीताकीजहांतरलाईचंचल
ताहै तहतरलाई यापाठमे रलवो मिलवे विषे और चल
वेविषेहै वरषानेतहनकोरलाईहैचलाईहै अथवा प्रभु
दतकयाअनेदतहैमेघजामे फेरभूकयाप्रिथवीअरुष
ठ कयाआकाससोजहांतवजरायकयानजरआवनेहै॥
जववीजुरीकीजोतरलातहे मिलेहै अथवा वीजुरीभी
मिलेहै परतोभीप्रिथवीअरआकासनजरायकयानही
जरेहै कोंग्रीषमवतीतभईहै याते ससिकेमुषकीसु
षमासुषहीसोदूरकरीहै चंद्रमाकोछपायोहै तैऐसो
नामनदीकोहै तामेनकहीतनहीहै अमलनिरमल
कमलनामजलजहांवरषामेनदीकोजलनहीरहेहैं॥
दलफेरजमाकीजोनिकाईसोभातकोदलनकियोहै
वरषामेफेजषरावहोतहै अथवानिरमलजलनही
हैकयाहैदलदलहै अरनिनुकाहै अथवाकमलोकेपत्रो
कीसोभादलनहैतोरमहै प्रचलकयपदजुदो औरेनुकाग
मनहरपदजुदोकनामजलको प्रवलजोकजलतासो
रेनुकापूरताकोजेगमनउडवोताकोहरैहै अथवा रे
एकाकयापूरकोजेगमनकयारसनताकोहरैहैमार
गनहीचलनहे मुकनमुहेसक याकेअरथमुकनकहि
एछोड्योहै हंसककहीएहंसोतेजाहिवरषाकोमेघदा
दुरआदकोसवदसुषदाईहै विवामुकनावहुनजोया
देसकेहंसकताकोसवदजहांसुषदाईहै फेरअवरआ
कासकोजानेवेछनकीयोहै मेचसोचेरलीयोहै नील

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

103A कंठमोरनाकोमनकोमोहेहै ॥ नारकछंद ॥ अभिसा
रनकोसमयकेपरनारी सतमारगमेदनकोअथकारी ॥
मनलोभमहामदमोहछईहै द्विजराजसुमित्रप्रदोष
मईहै ॥ २६ ॥ वार्ता ॥ परकीअभिसारकासीयहि
समझिपरतहै क्योंनाकीसिष्टमारगजेअपनेकुल
कोरीहतनाकेमेटनकोअथकारनाहै अरवरषाभी
मलेरसनतेकोदूरकरतहै अरदोऊनकीबुद्धलोभनेम
होमदमेछाईहुईहै क्योंवरषातोप्रदोषसेकातेद्विज
राजक्याचंद्रमामेहोतीहै मित्रजाननकेअरथकैचंद्र
माकोछिपायराषतहै अरपरकियासेकातेचंदैसेमि मा
त्रकोछिपायराषतहै ॥ दोहरा ॥ वरननकेसवसकलक
वविषमगाहनमद्विष्ट कुपुरषसेवाग्योभइंसंतनमि
थ्यासिष्ट ॥ २७ ॥ वार्ता ॥ सेपूरनकवीस्वरअत्यनगाढ
अथकारकीरचनाबरननहे जैसेषोटेपुरषकीकरीसे
वामिथ्याहै ॥ २ ॥ चंद्रकलाछंद ॥ कलहंसकलानिधि
षजनकेज[illegible]कछुदिनकेसिवदेषजीए गनआननलो
चनपोयनकेअनरूपकसेमनमानलीए इहकालक
रालतिसोयसवैहठकैवरषामिसदूरकीए अवयोंवि
नप्रानप्रयारहिहैकहिकौनहिनेअवलेवहीये ॥ २८ ॥
वार्ता ॥ सुंदरहंसनकीगतनकेअनुसारअरचंद्रमाको
मुषकेअरनेत्रनकोममोलिडोकेअरकमलोंकोच
रणोकेअनुसारमनमेमानकरकेकछुकदिनदेषकर
न॰ केजीएथेसोइसभयांककालनेनेभीसेथकरकेसपूर
णहठकरकेवरषाकेवहानेदूरकरदीएहै अवविना
प्यारीकेजोएहप्राणरहेगेसोकहोकौनसेमित्रकोअ
वलेवक्याआसराहैहीएमै ॥ दोहरा ॥ कीनेवरषाकाल
योंआईसरदसुजान गएअंप्यारीहोतनजिमचारचंद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
५४

104

102

नीरात॥२९॥दोहरा॥ऐसेवरषाकालकेवतीतभ
एतेसुंदरसरदरितुआवतीभई जैसेऐथआरीके
गएतेसुंदरचांदनीरातआवतहै॥मोटकछंद॥दं
तावलकुंद[illegible]समानगनो चंद्राननकुंतलचौरम
नो भोहैधनुषंजननैनगनो राजीवनज्योपदपा
नभनो हारावलनीरजहीपरमै हैलीनपयोधर
अंवरमैं पाटीरजुन्हाइह अंगधरै हंसीगतकेसवचि
तहरै॥३०॥वार्ता॥कुंदकीजोकलीहैसोईदंतनकी
पांतकेसमानहै चंद्रमासोईमुषहै चौरसोईकुंतल
केसहै धनुषसोईभ्रकुटीहै ममोलेसोईताकेनेत्र
है जैसेचरणअरहाथहोवे तैसेईकमलहै अरकम
लोकीजोअवलीपंगतहै सोईहीरामैहारसोभतहै॥
अरपांसरदमैपयोधरमेघजोअकालमैजोलीनहै॥
सोईयाकेपयोधरकुचवस्त्रमैढकेहै अरचांदनीसो
ईमयोचंदनताकोसरीरपैधारैहै फेरहंसनीसोई
ताकीचालहै सोचित्तकोचुरावतहै॥श्रीनारदकी
दरसैमतसी लोपैनमनाअपकीरतकी मानोपत
देवनकीरतको मनसारंगकीसमकेमनको॥३१॥
वार्ता॥सोनारदमुनीकीवुधसीदिषाईदेतहै क्योंअ
पकीरतकीअपकारताकोदूरकरतहै सोमानो
पतदेवताजोपतिव्रतास्त्रीहै तिनोकीप्रीतकेवा
स्तेसतमारगप्रगटकीयोहै जोवेअपनेमनकोस
मके॥श्रीराम॥दोहरा॥लछमनदासीव्रिधसीआ
ईसरदसुजात मनोजगावनकोहमैवीतेवरषारात
॥३२॥वार्ता॥हेलछमनसोऐसीएहव्रिधदासीजैसी
सरदरितुआईहै मनोहमारेहीजगावनकोवरषा
रूपीरातकेवतीतभएतें॥कुंडलीआछंद॥तोते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

104A

नृप सुग्रीव पै जै ये अनुचर नात कहिए वचन प्रका
सकै कुसल न चाहो गात कुसल न चाहे गात न जा
न हो बालहि देषा करहु न सीता सो पकाम वस राम
न लेषो रामन लेषो चित हिलही सुष संपत जाने मि
त्र कहे गहि बांहि कान की नन है तांने ॥२३॥ वार्ता ॥
तो तेर राजा सुग्रीव के पास तुम सों जावो अर प्रगट
करके वचन कहीयो जो तुम अपने सरीर में कुसल
नहीं चाहत हो बाली को जाने तुम ने देख्यो है सीता
जू की सोप षवर नहीं लेते हो काम के वस होके तुम
राम जू को भूल गए हो ना विचारते हो जिनने सुष अर
संपदा पाई है ताको हम ने मित्र कहके बांह पकरी है ॥
ताते कान करीती है ॥ दोहरा ॥ किसकिंधा लछमन ग
गए वचन कहे करक्रोध तारा तव समझाय ये कीने व
हुत प्रबोध ॥२४॥ वार्ता ॥ तव लछमनजू किसकिंधा
को गए अर क्रोध करके वचन कहे तव तारा ने समझा
ए वहुत प्रबोधन कीये ॥ सोरठा छंद ॥ बोल ली
ए हनुवंत न तवै जू ल्याव बहु वानर बोल अवै जू कार ल
गन कहू विरमाहि एकन को डर है उर माहि ॥२५॥ वा
र्ता ॥ तव सुग्रीव ने हनूमान जू को बुलायो तुम अवहीं
वानरों को बुलाय ल्यावो देर ना लगै ना काहू विरमै
अर राकस्मी को ऊ घर में ना रहे ॥ ॥सुग्रीव संगाती
डुत मुष राती के सव आयु पहूर नए आकास वि
ला सी सूर प्रकासी तव ही वानर आयगए दिस दिस
अव गहन सीतहि चाहत जूथप जूथ सवै पठए नल
नील रिछपत अंगद के संग दछन दिस को विदा भए
॥२६॥ वार्ता ॥ तव सुग्रीव के संगी जिनो के मुष की लाल
सो भा है सवो के जो मए सूर मा है अर आकास में वि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
तकी
१०५
105

चारनवारेहै सूरजसो जिनकोप्रकासहै ऐसेवानरलं
वहीआवतेभए दिसादिसाकेअवगाहनकाहू वेको
सीताजूकेदेषवेको सेनानीअरसैनासमथजे फर
नलअरनीलतेरिछपतक्याजामवंततेअंगदकेसे
छं जुगनगहहदंनदिसाकोविसगहेतेभये ॥दोहरा॥
त्रिपविक्रमव्यौंसौवजुनसापसमफरघुनाथ॥वल
अनेतहनुवंतके मुंदरीदीनीहाथ ॥२७॥वार्ता॥
त्रिपअरप्राक्रमअरउद्यमइनकेसहितअरसाथ
समफकरके श्रीरघुनाथजूनेवडेवलवारेहनूमान
जूकेहाथमैमुंदरीदई॥हीरछंद॥ चंडवरनछंड
चरनमंडगगनधावहीं दछनहैदछनदिसलछ
नहीपावहीं धीरचरणकीरवरनहिंपुनटस
मावहीं नामपरमधाम [illegible] परमरामकरमगा
वहीं॥२८॥वार्ता॥ तवप्रचंडचरणोसेप्रिथवीको
छोडकरके अरआकासकोसोभायमानकरके
पावतेभए दछनजोहै चतुरश्रीहनूमानजी
दछनदिसाकीतरफहोकरके परतापेकहूलछ
जोनिसानीसोनापावतेभए धीरजकोपारनवा
रेजोहैसूरमिआमैसेष्टवानरसोसमुद्रकेकिना
नेसुभावकेआवतेभए॥अंगदोवाच॥अनुकूले
छंद॥सीयनपाईअवपविनासो होहिसवैसागर
तटवासी जोचरजैयसकुचअनेनामोहनछाडै॥
जनकनहेना॥२९॥वार्ता॥सीताजूतोनापाईअर
मुडकेआवनकीजोअवपकरआएसेसोदूरहोन
नव लागीसभवोरसमुद्रकेकिनारेवासीहूए क्योंजो
चरकोमुहजावैतावहीसकुचहै अरमेरेपितावा
लीकेमारनवाराजोसुग्रीवसोमोकोतोनहीछोडे

महापरमधामकीतरफकौहै
श्रीरामनामतामकेकिधामकोमेहै

गो॥ हनूमानोवाच॥ अंगद हि आर रघुपति कीनी
105A सो पन सीता जल थल लीनी आलस कोकित ऊरआ
नो होहि कित चीनी जिन सिष मानो॥४०॥वार्ता॥त
व हनूमान जूने कह्यो हे अंगद तव श्रीरामचंद्रजूने
रक्षा करी थी अर हमने जल थल विषे तो सीता ढूंढ
भी नही लई है तो पामै कैसे यांते आलस को छोडो
तिनोकी करनी ही ऐसै ल्यावो कित चैनी मन होवो य
ह मो री सीष मानो॥ अंगदोवाच॥ जी रन जटा युगी
थ एक पन्य जहि रे को रावन विरथ कीनो सही नि
ज प्रान हान कुले हनु वेत वल वेत तिहि पाच जनदी
ने कुते भूषनक छूकु र ने रूप जान आरत पुकारत
हा राम हा राम चार लीनी न छुडाँत मेंसीता अन
भीत भान गापद्विजराज तिय काज न पुकारलागे भो
ग वे नरक चोर चोर को अभय दान॥४१॥वार्ता॥
हे षो एक ब्रिथ गीध था जटाऊ सो ईतुमते धन्य भयो
जिसने रावन को रोक्या अर रथते विना कीया अपने
प्राणों की हानि भी सही अर तुम हे हनूमान वल
वान भी थे अर पांच पुरष थे अर तुमको कछू कन
र रूप जान कर के सीताजीने भूषन भी दीया अर हाराम
हा राम ऐसे पिछावान हुई पुकारती थी वारंवार सो
तुमने अत्यंत भयवान हुई सीता छुडायना लई गऊ
अर ब्राह्मण स्त्री इनो के कारज जो पुकार ये नही
लागत है सो नरक को भोगत है चोर को अभय दान दे
नते॥ दोहरा॥ सुन सेवक सब छेह है रामचरित सुषदा
य सीता लंका मंकहै षगपत दई वताय॥४२॥वा
ष र्ता॥ नव सुंदायक जो श्रीरामचरित्र है ताको सुनक
रके संपाती सहि पंषन के होत भयो सीता जू लंका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१०६
106

104

का के विषै है ऐसे पंक्षि ऊतो के राजा ने वनायदीयो
डेड कछेद ॥ हर कैसे वाहन कि विधि कैसो है स
है मलीकसी लिषतन वपाहन के अंक को नेज
को नि धान राममुद्रा को विमान कि धो लछम
न को वान छुटेगो रावन निसंक को गीरगजग्रे
ह ते ऊड़ानो कि धो स्वरण अलसीतापदपंकज
सहा कलेक रेक को हूवाईणसी छुटी के सोदा
स आसमान मै कमान कैसो गोला हनूमान चल्यो
लंक को ॥ ४३ ॥ वार्ता ॥ नव हनूमान जू लंका को
वा कैसे चले है जैसे हर को हनज रूढ होय अरवि
ल्लोड को है सहोय आर आकास रूपी जो पाषान
है ताके अंक को सोने की लीकसी लिषता गया ॥ अथवा
नभ मै हनूमा जो गया है तिन को प्रतिविंव जल मै
ऐसे परयो है जैसे पर्थ्य मै सोने की लीक की लिषन
हीषै फेर तेज को चर श्रीरामजू की मुद्रका को मा
नो विमान है अथवा निसंक जो रावन तापै श्रील
छमन जू को वान छुटेगो है अथवा परवत रूप
जो है हाथी ताको गंडस्थल ताते स्वरण को भमर
उडकर के चल्यो है सीताजू के चरणकमलो को
सो सरुकलंक के ताईं रेककरणवारे है अथवा
हावाई ऐसी आसमान मै छुटी है अथवा कमान
के गोला जैसे हनूमान जी लंका को चले ॥ दोहरा ॥
मैनाक नाक पत शत्रु को उदत जान वलवेन ॥
ल ऐन रिछ हौ छपद अछ छिहनु वेन ॥ ४४ ॥ वा
र्ता ॥ इंद्र को शत्रु जो है मैनाक परवत समुद्र मै से
हनूमान जी ताको उदत हुयो जान करके आका
स के विषै हो ताको देषकर के स्वछ क्या निरमल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

106A

अपनेचरणकोसोहनूमाँजीनेसपरसकीयो॥
तारककंद॥कछुरातगएकरदसदिसासी पुरमा
रूचल्योवनरराजविलासी तवहीहनुवंनचलेत
जसंकाँमगरोकरहीत्रियहैनवलंक॥४५॥वार्ता॥
कछुकरातकेगएतेहनूमानजूदसवायामकछरसी
दसाकरकेलघुरूपवनकेपुरकेविषेचल्योवनकी
पंगतोमेजोविलासवारोजबहनूमानजूसंकाको
त्यागकरकेचलेतबइस्त्रीकोरूपधारनकरकेलंका
रसनेकोरोकरही॥लंकाऊवाच॥कहाँमोहउलं
घचलेतुमकोहे अनसूछमरूपपरेमनमोहे पठ
एकिहकाजकोनचलेहो सूरंकिनेयोकोऊसुरस
मलेहो॥४६॥वार्ता॥अरलंकाँकेह्योतुमजूमो
कोउलंघकरकेचलेहोसोकोनहो॥अनंपनसूछम
रूपकोधारनकीएहूएहो अरकिसनेतुमभेजे
होकोनकाजचलेहो तुमकोऊदेवताहोकेदेव
तिनकेस्वामीरइहेहो॥हनूमानऊवाच॥हमवान न
हे। रहेरंघुनाथपठाए तिनकीभरनीहविलोकेआए
॥लंकाउवाच॥हतमोहमहाम तभीतरजेये॥
॥हनूमानोवाच॥तरनीति हनेकवनेसुष
पैये॥४७॥वार्ता॥हमवान प रहेअरश्रीराम
जूनेभजेहै तिनोकीइस्त्रीजोहै सितांजूताके
हूंढवेकेआएहै हेवडीवुधवारेमोकोमारकेतुम
भीतरजानापावेगो फेरहनूमानजूनेकह्योइ नध
स्त्रीकेमारतेकिसनेसुषपाऐहै इस्त्रीअ है
लंकाऊवाच॥तुममारहियेपुरपैठनपैहो हठको
टकरोअरफिजेहो हनुवंतवलीवहियापरमा
री॥तजदेहभईतवहीवरनारी॥४८॥वार्ता॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

फेर लंकाने कह्यो तुम मारेते ही पुरमेश्वे सहोनाया
वेगे करोर हठ क्यो ना करो नहीं तो फेर केवर को
हो जावेगे तव वलवान हनूमानजी नेता को एक
थाप रक्यात मा चोमा रयो सो तिस सरीर को त्याग क
रके सुंदर इस्त्री होती भई ॥ लंकोवाच ॥ धनदपुरी
जवरावन लीनी वहुविधि पापन के रस भीनी चतु
रानन को चित चिंतन कीनो वरकरना करमो कहु
दीनो ॥४९॥ वार्ता ॥ फेर लंकाने कह्यो यहि कुवेर की
पुरी जवरावनने लई थी तव वहुत प्रकार सो यहि
पापो के रस मे भीजी तव लंकाने चित्त मे ब्रिह्मा को
सुमरण कीयो ब्रिह्माने मो को दया करके वर दीयो ॥
जव दसकंठ सी आहर लै है दश हनुवंत विकौ जै लो
है जव ही वहि तो हहनेनज संका तव ही प्रभु हो
य विभीषन लंका ॥५०॥ वार्ता ॥ जव रावण सीता
जू को हर ल्यावेगो तव हठ करके तो सो हनुमान लं
का को जमेगे सो जव हनूमानजी नो को संका त्या
ग के मारेगे तव ही ने लंका के स्वामी विभीषन होवे
गे ॥ ॥ चल [illegible] न लगो तव ही यहि कीजे मित्र
क सरीर हिंवा [illegible] कर कीजे यहि कहि जात भई वह
नारी समन [illegible] गरी हनुवंत निहारी ॥५१॥ वा
र्ता ॥ सो जव तु [illegible] म चलन लगोगे तव ही यहि करि
यो मित्र कजे मेरो सरीर है ताको त्यागन देई यो ॥ य
हि कहि के वहि इस्त्री जात भई फेर हनूमानजूने सम
नगरी देखी ॥ ॥ तिहि हरि रावन सो वन देख्यो म
न मे पालक की कविलेख्यो नहान रुनी वहु यो ति
नगावहि विच विच श्राम रुवीन वजावहि ॥५२॥
वार्ता ॥ तहां हरजो है वानर हनूमानजी तिनोने सो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

107A बनोहुयो रावनदेख्यो मणिहुँ जो पालककया पले
ख्यातकी छवको देख्यो नहोई स्त्री योवहुतप्रकार
सोंगावनहे वीचवीचअर मधुप्र रवीनालाकोव
जावनहे॥ ॥छिनक चितापरजैसेसोहे चहूदिस
प्रेनव युमनमोहै जिहि तिहजाय तिहि दुषदूनो॥
सोविनहे सगरे वरसूनो॥५३॥वार्ता॥सोताकीकैसी
सोभाहे जैसे चितापर छिनकसोहे ताके चारोतर
फ प्रेतनव डूहे मानोमनकेमोहतहे जहातहाहनूमा
नजूजातेहे नहीदूनो दुषहोतहै कोसीताजू नेवि
नाताकेसमूर णघरसूनेलागतहे॥भुजंगप्रयात
छंद॥कहू किंनरीकिंनरीलैवजावे सुरीआसुरी
वासुरीगाननगावे कहूजछनीपछनीलेपढावे न
गीकन्यकापन्नगीकोनचावे पीएकरालागुहे
एकमाला वनीएकवालानचे चित्रसाला कहू
कोकलाकोककीकारकाको पढावेपढैलैसुकी
सारकाको॥५४॥वार्ता॥कहूंकनेकिंनरीअरुजो
हेसोकिंनरीनामवाजेकोलेकरवजावनहे देवांग
नाअरअप्सरीआसोवांसुरीवजायगीतगावनहे
अरकहूंकिजछनिओपछनीकयातोतेअरमैना
कोपढावनहे अरपरवनोकीकन्यकासरपोकीकु
मारीनकोनचावनहे एकहालाक्यामदराकोपीव
नहे अरमालाकोपरोवतहे अरएकवनीहुईस्त्री
चित्रनकीसालामेनाचतहे अरकहूकोकलाको
ककीकारकोपढावतहे अपवाकोककलाक्या
चकवीआसेपढावनहे तोतेसारकाकोसंगलेकर
पढतीहै॥ ॥फिरदेषकेराजसालासभाकोरहे
रीककेवातकाकीप्रथाको फिरअोरचहूचितेसुद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सीता विलोकी भली सिंसुपा मूल सीता॥५५॥ वार्त्ता
ऐसे हनूमानजी राजभवन स्थान को अरस भाके देष
करके फिरे फेर वाटका की सोभा को देषकरके रीझगए
ताके चारो तरफ फिरते देषते हूए सुयह कथा जकी ऐसी
सीताजू को केर सिंसुपा व्रिछ के तले उन्ने श्री सीताजू देषे
यरे एक वेनी मिली मैल सारी ओ नाली मनो पंकसो का
पकारी सदा राम रामे रटै हीन कानी वहु ओर है रावकसी
दुषदानी॥५६॥ वार्त्ता॥ अर एक चामर को परे हूए है जो
मैल मे संपूरण मिली हूई है सो मानो सोकरू पीजो की
चता मे अधिकार अनुगत हूई भिहहे फेर सदा जो श्री राम
नाम को दीनवानी सो रटते है अर जाके चारो तरफ दुषकै
दैनवारि अराक सी आ है ग्रसी बुद्ध सी चित चिंतानमा मूल
नो कि ज्यो जीव दंतावली मे वषानो कि पो चोरके
नार राहु रैनलीनी कलाचंद्र की चारपीयूष भीने॥५७॥
वार्त्ता॥ सो मानो चित्त की चिंता मे ग्रसी हूई बुध के समान
है अथवा दंतो कि पंगन मे जैस जीव होवे तैसे है सुंदरी उ
केवस मे अथवा राहु कि अरनी ताने चुराय करके अ
म्रित से भीजी हूई सुंदर चंद्रमा की कलाई है राक्षसा
रीनही आसुरी॥ ॥कि धो जीव की जोन्ह मायानलीनी
अविद्यान के मध्य विद्या प्रवीनी मानो संवर इस्त्रीन मे
कामवामा हनुवंत ऐसे दिषी रामराम॥५८॥ वार्त्ता॥ अ
थवा मा आ मे मिली हूई जैसे जीव की जोन्ह मलन होय
है तैसे अथवा अविद्या के वस विद्या है अथवा संवर दैतकी
इस्त्रीयो के बीच रनहे इसतरे हनूमानजू ने सीताजू देषे॥
तहां देवदृष्टि इस्यों वआयो सुनो देव सीता महादुष
पायो सवै अंग लै अंग ही मे दुरायो अपो द्रिष्ट कै अ
सु धारा नहायो॥५९॥ वार्त्ता॥ तव तहां देवतियो का

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

है दे
108A देषौ रावण आवता भया तानेक छो है वो सीता तुम
ने महां दुष पायो नव सीता जू असे सकुचे मानो संपूर
ण अंगो मे अंग दुराय लीए अरु नलेको दृष्टि करके सो अ
सपात नेत्र के जल की धार सोन भाय दीये॥ ॥सुनो
देव मो त्यो कछू दृष्टि दीजे इतनो सोच नो राम काजैन की
जै वसे हे दंडकारन्य देषन कोऊ जु देष महां बावरो होय
सो ऊ॥६०॥वार्ता॥सुनो हे देवी मेरी तरफ कछु दृष्टि
दीजिए इतनो सोच श्रीरामचंद्रजू के कारज मन करिए
सो कैसे हे दंडक वन मे वसत हे जिन को कोई भी नही देष
ने है अरु जो देषत है सो महा बावरो हो जात है व्यंग सो
अरथ जिनके दरसन दुरलभ है जो करे है सो प्रेम मे मे म
गन होत है॥ ॥क्रितघनी कुरनता कुकन्याय चाहे॥
द्विजन गन मुंडीन हू को सदा है अनाथे सुना मे अनाथा
नुसारी सेवे चित्त दंडी जटी मुंड धारी॥६१॥वार्ता॥फेर क
करीके ना माने बेवारो है दूजो स्तुत को अरथ क्रितजो है वाक्रति
करम तिन को दूर कर मुकत करत है अथ जो संसार ता
को लै करत है अरु षोटे दाता हू क्यो जा को देत है ता को
संसार छूटत है अरु षोटी कन्या को चाहत है दूजो अरथ
कू कन्या प्रिथ वी को दा है प्रिथवी की कन्या सीता जू ता
को चाहत है फिर नगन अर जटा धारि उं का मित्र है व्यंग
दंडी अरु ब्रह्मचारी जा को प्यारे है अरु अनाथो की नरं
मे मन्या है अनाथो की आग्या मे है व्यंग अनाथ क्या
जा को नाथ कोऊ नही है सब को आप स्वामी है अरु उ
नम जा के नाम है पर तौ भी जो अनाथ दीने हे तिनो के जन
अनुसार ह्वै जात है असे दयाल है अथवा अक्या विसु
अरु अनाथ क्या सिव से जाके अनुसार चलत है आग्या
पायके अरु दंडी जटा वारे इन्यादिक फकीर है जाके चि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१०५

109

107

त्तमे वसत है क्योंकि जो दंडी है सब पै जाको दंड है तीन लोक को
पनसो विस्नु अरु जगती क्या जनकारो ब्रह्मा अरु मुंडन के
धारनवारे सिव इन तीनो के चित्त मे वसत है ऐसो परब्रह्म
के भगत है॥ ॥तुमे देहि दुषी हि न नाहि माने उदासी
न तो सो सवै नाहि जाने महा निरगुनी नाम ताको न ली
जै सदा दास मो सो क्रिपा को न कीजै॥२३॥ वार्ता॥ जो
तुम को दुष देत है ताको तुम मित्र मानत हो अरु तुम सो
बढ़ि उदासीन है सो सब जानत है [illegible]
परताके आधीनन ही अरु तुम से बढ़ि उदासीन है सो सब जानत है क्योंकि लछ
मी पति है पर ताके आधीन नही अरु बड़ो गुन हीन है॥
ताके नाम को ना लेवो क्योंकि सत्त्व रज तम तीनो गुणो ते
रहित है अरु ताको तिसके नाम को कोन है जो नही लेत है
अथवा ताके नाम ते कोन सो फल है जो ना पाईए सब
फलदातार है मै तुमारो दास हौ मो पै क्रिपा क्यो नही कर
त हो क्योंकि सदा जो आकाल सिव जू है सो जाके दास है
मै कोन हो॥ ॥अदेवीन देवीन की हो सुरानी करै सेव
वानी मघोनी म्रिढानी त्तीऐ किनरी किनरी गीत गा
वै सुकेसी नचै उरवसी मान पावै॥२४॥ वार्ता॥ हे सीते अ
देवी क्या राकसनी तु देवी तु कौ देवी तु राणी हो सु
सार स्वती ई द्राणी पारवती सो तेरी सेवा करेगी किं
नरी वाजिंत्रा को लीए हूए किनरिआ गीत गावेगी अ
सुंदर केसन वारी उरवसी नचैके मान पावेगी॥ सीत
जूवाच॥ मालनी छंद॥ त्रिनवीच दै वोली सीय गंभी
रवानी दसमुष ऐसठ को तू कौन की राजधानी॥ द
सरथ सुत देषी रुद्र ब्रिसान भासे निसचर वपुरा ते
कौन सो मूल नासे॥२५॥ वार्ता॥ त्रिन को वीच दै
करवै सीता जू गंभीर वानी कहती भई रे मूरष रावण

109A तूकौनहै अरु किसकी राजधानी है श्रीरामचन्द्र के द्वेषी तो
सिव अरु ब्रिह्मा भी नहीं है तूं कंगाल राक्षस कौन है सहित सम
लके नास होयगो॥ ॥अनतन पनु रेषा नेकु नाषी न जा
की षल षंग सर धारा कोस है तिनु तोकी विदुकायन
न चूरे महत के बाज जीवै सिव सिर ससी को दुष कै
से सुष्षी वै॥६६॥वार्ता॥ अन्यंत सूक्षम जिसकी तेने ए
क धनुष की लीक रती कु भी नालंघी गई है दुष्टता की
तरवार की तीछन धारा अरु तीर तूके से सहेगो मेघ
न के गरजनने जो सावन में वरसत नहै विढक क्या वीरव नहीजवतो
हूटे ज्ञाता को षाय करके बाज क्या जीवता है तेरी वि
भो वीरवहूटी सी तुछ है अरु सिवजू के सिर के चंद्रमा
की सोभा को दुष कै सषुद लैवे नहीं कुवत॥ ॥उठ
उठ सठ ह्यांते भागतो लौ अभागे ममवचनु विस
रपी सरपज्यौं लौंनलागे विकुल सकुल देषो आसुही ना
स तेरो तिपट क्तितकनो को रोष मारेन मेरो॥६७॥वा
र्ता॥ रे मूरष इहां ते उठ उठ रे भाग हीन तवताई भाग जा
ह जबतांई मेरे वचन जो विसरपी क्या सैन्य चलन वा
रो सरप सो नहीं लागत है विकल क्या विना काल के
ही सहित कुल के सीघ्र ही तेरे नास को मै देष तहौ तू आ
गे ही अन्यंत मरयो हुयो है या तें तो को मेरो कोप नहीं मारत
है॥ दोहरा॥ अव बदई द्वै मास की कह्यो राक्षसन बोल॥
ज्यौ समये सम काय यो जुगत छुरी सो छोल॥६८॥वार्ता॥
फेर रावनने राक्षसीन को बुलायके कह्यो याको मै द्वै मास
की अब बदई है जुगत रूपी छुरी सौं छोल करके जैसे स
मये तैसे समकाइयो॥ चामर छंद॥ देष देष के असोक रा
ज पुत्र के कह्यो दहमो हह भाग तू गुमाग वेतहे रह्यो छोर
पाय कै न मून डार मुद्रका दई आस पास देष कै उठाय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हाथकैलई ॥१९॥वार्ता॥फेरराजपुत्रीजोसीताजूतीनें
असोकवृक्षकोदेषदेषकेंकह्यौ तूंजोआगवारौहैर
ह्यौहैसोमोकोंभीआगदेह तवसमैकोपायकेहनूमा
नजूनेमुद्रकाडारदई तवसीताजूनेआसपासकोदे
षकेकिअवकोऊनहीहैतौहाथसोउठायलई॥तो
मरछंद॥जवलगीहीयरीहाथ यहिआगकैसीनाथ
यहिकह्यौतवलषतीदृ मनजटतमुदरीआहि॥२०॥
वार्ता॥तवहाथकोंसीतललगीतवयहिकह्योहेनाथ
यहिआगकैसीहै फेरताकोदेष्योजोमणिजडीकरके
जटतयहिमुदरीहै॥ ॥तववाचदेषीनाऊं मनप
र्योसंभ्रमभाऊं आवालतेरघुनाथ यहिपरीअपने
हाथ॥२१॥वार्ता॥तवताप्रैनामवाचकैदेष्यो तवम
नसंभ्रमकेभावमैपर्यो यहितोवालकअवस्थातेश्री
रामजूनेहाथमैंधारणकरीथी॥ ॥विछुरीसौंकौ
नउपाऊं किहआनयोइहिठाऊं सुपलहीकौनउपा
ऊं अवकाहवूझनजाऊं वहूदिसचितैसहित्रासआ
वलोकिउआकास नरसावबैठेनीठ तवपर्योवा
नरदीठ॥२२॥वार्ता॥सोयहिकौनउपायसोविछुरी
है इसअस्थानमैकिसनेल्याईहै किसउपायसे
मैषवरपावौ अरअवकिसकोपूछनेजाऊं तवचारौ
तरफमैकेसहितहूईदेषतीभई फेरआकासकोदे
ष्योताहाविछकीसाषापरमुसवलैसै एकवानरदृ
ष्टपर्यो॥सीताजूवाच॥तवकह्योकोतुमआहसुरअ
सुरमोतनचाह किजछपछविरूपदैसकैंवानररू
प॥२३॥वार्ता॥तवसीताजूनेकह्योतुमकौनहौ देवता कि
हैकिएकसहै सोतुममेरीतरफदेषकैकोईजछहै किसे
षरूपकोईपछीहै कैवानरकोरूपकरकेतूरावणआ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

110A

ये है॥ ॥कहि आपने भेद अन चित्त उपजत षेद
कहि वेग वानर आप नतु [illegible] तो हि दै हो स्राप॥१४॥ वार्ता॥
तूं अपने भेद को कहि मेरे चित्त मै अत्यंत खेद उपजत है हे वा
नर तूं अपने आप को वेग कहु नहीं तो मै तो को स्राप देवो
गी॥ हनूमानो वाच॥ पपटका छंद॥ कर जोर कह्यो हौ वा
युपूत जी यजन निजान रघुनाथ दूत रघुनाथ कौन दस
रथ नंद दसरथ्थ कौन अजतनय चंद॥१५॥ वार्ता॥ तव ह श्री
नूमान जू ने हाथ जोर के कह्यो हे माता मै रघुनाथ जू को
दूत हो चित्त मै तुम जानो सीता जू अनजान से है के कह्यो
रघुनाथ कौन है तव हनूमान कह्यो सो राजा दसरथ के पु
त्र है सीता जू कह्यो दसरथ कौन है तिन कह्यो अज के पु
त्र है॥ ॥किह कारन पठए इह तिकेत निज लैन दैन सं
देस हेत गुन रूप सील सोभा सुभाव कछु रघुपति को
लछ्यै वतौव॥१६॥ वार्ता॥ तिनो ने इस अवस्था मै तुम किस का (अपने तुमारे लेन को)
रन भेजे हो तव ताने कह्यो अपुने संदेसे के देन को तव सी
ता जू ने कह्यो तिनो के गुण (अरु रूप) अरु सील [illegible] ते सोभा अ
रु सुभाव इनो मै ते कछुक श्री रामचंद्र जी के लछ वतावो व
वानरो वाच॥ अति जदप सुमित्रा नंद भगत अनसै के अ
नहीं सूर सकत अरजदप अनुगे तीनो समान पैत
दप भरत भावत निदान॥१७॥ वार्ता॥ तव हनूमानजू ने
कह्यो लछमन जू जद्यपि अत्यंत भगत है अरु अत्यंत से
वक है अरु अत्यंत ही सूरमा है अरु वलवान है अरु ज
द्यपि भाई भी तीनो एक से है पर तो भी भरथ जू ही भाव
ति है॥ ॥ज्यो नारायन उर श्रीवसंत त्यों रघुपति उर क
छु दुत लसंत जग जितने है सम भ्रम स्वरूप सुर असुरन
पूजै राम रूप॥१८॥ वार्ता॥ फेर जैसे श्री नारायन जू के
उर मै लछमी वसत है तैसे श्री राम जूं उर मै भी कछुक सो

के

रामचं
सटी
११२
|||

मालसमी है जिनने जगत मेरा जा है सो देवता असुर
अदेवता के ऊ भी रामजू के रूप को नहीं पावत है॥
॥सीताजूवाच॥ नसपाल को छंद॥ मोहि रहि मोतप
रतीन आवै नहीं प्रीत कैं यौं जु नरवानरहि क्यों सही
बात सम भवरन परतीत हरन्यो दई अस्वअनक्ष्मा
य उरल्लाय मुंदरी लई॥७९॥ वार्ता॥ मोको इस प्रकार
तो परतीत नहीं आवत है प्रीत कैसे नर अरु वानर
की होवे निसचै करकै नव हनूमान जू ने सुग्रीव मि व
लन की सम्भवातवरनन करके परतीत कराई नव
सीताजू ने आसुन सो नमाय करके मुंदरी हीए सो
लगाय लई॥ दोहरा॥ असु वरषहीय रोहरष सी
ता सुषद सुभाव निरष निरष प्रीयमुद्रकहि वर
नन है बहु भाव॥८०॥ आसून सो वर षा करके अ
रही एम प्रसन होय करके सीताजू सुभाव कही
सुषदायक जो है॥ मुंदरी [illegible] ताको देष देष करके बहुत
भावन सो वरणन है॥८१॥ पधट का छंद॥ सीता
जूवाच॥ यहि सूर निरषत मदुष हार ससकला कि
यो उरसीत कार कलकी रतसी यहि सहित नाम॥
के राज सिरी यहि तजो राम॥८२॥ वार्ता॥ दुषरूपी
अपकार के हरवे को यहि सूरज है अथवा यहि ही
ए के सीतल करनवारी चंद्रमा की कला सी है अ
थवा यहि सुंदरी कीरत सी है सो नाम बडाई के स
हित होत है यहि मी नाम सो जुगत है के यहि राजलक्ष्मी
है जाने श्री रामजू तजे हैं॥ कि धौं नारायण उरसम
लसत सुभग अंक न ऊपर श्रीवसन्॥८३॥ वार्ता॥ के
नारायण जू के उर के समान सोभत है सुभ जो नामै
अंक है सो ई ताके ऊपर लक्ष्मी वसत है कै आने इवे
वरविद्यासी श्राने द
दान॥ तिश्रा होवे
दमनश्रीवामानि ३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

111A देनको सिष्टविद्यासीहै अथवा अष्टापदका सुवरण
केसहितमानोपारवतीहै॥ जनुमायाअल्पसहितदे
ष कैपत्री निश्चिदानलेख प्रियप्रतिहारनसीनिहार
श्रीरामोजेऊचारकार॥८४॥वार्ता॥ मानोअल्परोके
सहितमायाहै कैनिसचेकेदेनवारी यहिपत्रकाहै॥
कैप्यारेकीप्रतहारनकासेववंतीसीहै याश्रीरामजू
कोजेहेऊचारनवारो॥ ॥प्रियपठईमानोसषिसुजा
न जगभूषनकोभूषननिधान निजआईहमको
सीषदेन यहिकि योहमारेमरमलेन॥८५॥वार्ता॥अ
थवाप्रियाने यहिचतुसषीभेजीहै याजगतकेभूषन
जोहैश्रीरामजू तिनोकाभूषनहै सोयहिआपहमा
रेकोसिष्यादेनकोआईहै अथवाहमारेमरमकोले
नआईहै॥दोहरा॥सुषदासिषदाअरथदारसदा
जसदातार रामचंद्रकीमुद्रका कियोपरमगुनना
र॥८६॥वार्ता॥ यहिमुद्रकासुषकेदेनवारीहै अर
सीषदेनवारीहै पदारथोकेदेनवारीहै रसप्रेमकेदे
नवारीहै जसकेदेनवारीहै सो यहिश्रीरामचंद्रजूकी
मुद्रकाहै कियोपरमगुनवारीनारहै सोभीसुषादि
कदेनहै॥दोहरा॥वहुवरणसहितजैप्रियानमगुन
हारप्रमान जगमारगदरसावनीसूरजकिरणसमा
न॥८७॥वार्ता॥वहुनहेरंगजाकेंहजहीनेप्यारीहै अ स
रनमोगुणकेहरणवारीहै जगतकोमारगकेदिषा
वनवारीहै प्रकासकेहै सोसूरजकीकिरणकीसी
है योनेसोभीवेसीहीहै॥पपरकाकेद॥कहिकु
सलमुद्रकारामगात सुनलछमनसहितसमोता न
न यहिउतरदेतनवुधवंत किहकारनकहिहनू
मानसंत॥८८॥वार्ता॥हेमुद्रकाकहुतेश्रीराम
५८

जूकेसरीरमेकुसलहै श्रीलछमनजूकेसहितदो
ऊजोएकसेभाईहै तिनोमेहेहनूमानसंनवुद्धवान
पहिउनरनहीदेनहै सकोनकारनहैकहो॥हनू
मानोवाचदोहरा॥तुमपूछनकहिमुद्रकेमोनहो
नइहिनाम कंकनकीपदवीभईयाकोतुमविनरा
म॥८९॥वार्ता॥तवहनूमानजूनेकह्योहेमातिन
मयाकोमुद्रकाकहिकेपूछनेहोसोइसिनामने
यहिमोनहोनहै तुमारे विनाश्रीरामजूकेयाको
कंकनकीपदवीभईहै विरहिमेऐसेछीनभएहै
जोमुद्रीकहाभईहै सोयानेवडीपदवीपायअव
छोटीपदवीकेनामसोपहिकेसेवोलै॥दंडकछंद॥
हीरचंदरीनवसेकेसोहासकेसरीज्योकेसरीकोदे
षवनकरीज्योकंपतहै वासरकीसंपतउलूकज्यो
नचितवतचंदचितैचकवाज्योचोगनोचपतहै के
कासुनव्यालज्योविलातजातघनसामघननकेघो
रेजीजवासेज्योतपतहै भौरज्योभ्रिवतवनजोगीज्यो
जगतरैनचातकज्योरामनामतेरोईजपतहै॥९०॥
केसरी वार्ता॥हेसीतेतुमारेविरहिसोश्रीरामचंद्रकेसरीरैक्या
सिंघकीन्याईहीरचंदरीनमैवसतहै औकेसर
कोवनदेषकेकरीहसतीकीन्याईकांपतहै इहांहू
केसरमेसलेष सिंघकुंकम औरवासरदिनकी
संपदाकोऊउलूकीन्याईनही चितवनकहादेष
त औचंद्रमाको चितैकहितादेषकेचकवाकीन्याई
चोगुनेचपतहै कहादुषीहोतहै औरकेकाजोमो
रकीवानीमाकोसुनकेव्यालसरपकीन्याईघनस्या
मविलानजानहै कहाछपजातहै औरघननकीगर
जनतेजिनकोजीवजवासेज्योजरतहै औरवनवन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

112A मे भौरज्यो भ्रमतहे औरैन विषेजोगीज्यो जागतहै
औसाकत जोहे सकतिउपासक ताकीनाई स्याम
श्रीकृिस्नतेराई नामरटतहै औसी विवस्याहै॥ प्र
श्न॥ चंद कैलषे चौगुनो चपवो कहा॥ उत्तर॥ एकतो
विरहिकोदुषहैहै दूजो चंदउदीपनतीजे चंदसोमुष
समरन चौथेचादनीतेविलासअस्थलदीसै यो चौग
नोचपतहै॥ पुनः प्रश्न॥ चकवेमै चौगुनो कहा॥ उत्तर॥
एकतो विछुरे दूजे रातदिनसी भासे अनराईगहै तो
जे चकई द्रिष्ट आवै चौथे चादनी उदीपन जरावै विर
हीको॥ हनूमानोवाच॥ सुंदरी छंद॥ राजपुत्र एकवा
तसुनो पुन रामचंद्रमनमोकक्ह्योगुन रातदीहजम
राजजनीजनु जातनातजानतहै तनमन॥ वार्ता॥
हे राजपुत्री अब एकवार तासुनो जो श्रीरामचंद्रजूने
मनमै विचार करके कह्योहे रातअरदिनहमको जम
राजकी उपजाईसी वडीहे सोतिसपीडाको तनअर
मनहीजानतहै॥ दोहरा॥ दुषदेषसुषहोयगोसुषन
दुषवहीन जैसेतपसीतपतपैहोयपरमपदलीन॥ ९२॥
वार्ता॥ दुषकेदेषेते फेरहमकोसुषहोवेगो कोदुषवि
नासुषनहीहो [illegible]तहे जैसे प्रथमतापसी तपको तप
लेतहैतो फेरिमुक्तमैलीन [illegible] होतहै॥ दोहरा॥ वर
षामे भवदेषके देषी सरदसकाम जैसे रनमैहिकाल
भटभेट भेटजनवाम॥ वार्ता॥ वरषाको विभौदेष
केफेर श्रीरामजूने सहितकामके प्रयोजनसिंथकार
नवारी सरदरितुदेषी जैसे जुधमैसूरमा कालको
भेटके मिलके फिर अपछरा को भेटतहै॥ दोहरा॥
दुत्यदेषके देषहोतु वसुष आनेदकेर तपन ताप
तपद्योसनिसि जैसे ससीनलचेर॥ ९४॥ वार्ता॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
११३ जैसे
सूरजकी तेज
पूकर के
दिनमे फेर
रात्रिमे सीतल
चंद्रमाके
भीयत है॥

[illegible]

दुषनको देषकरके फेर देषोगे तुमारे मुषजो आनंदको मूल है ताकों॥ दोहरा॥ अपनी दसा कहा कहो दीपदसा सी देह जरत जात वासर निसा के सबै हित सनेह॥ ५५॥ वार्ता॥ फेर मे आपनी अवस्था कहा कहो यहि देह दीवकी सिषासी है सो जैसे सनेह क्या तेल सहित होत है तैसे एह प्रेम सहित है सनेह मे सलेष है सो दिन रात जरती जात है॥ दोहरा॥ सुगात सुकेसी सुनैन सुन सुमुष सुदंत सुस्रोन दरसा वेगो वेग ही तुम कहि सरसिज जोन॥ ॥५६॥ वार्ता॥ हे सुंदर गात वारी हे सुंदर केसन वारी हे सुंदर नेत्रन वारी हे सुंदर मुषवारी हे सुंदर दंत वारी हे सुंदर कानन वारी तुम सुनो तुमको वेग ही करतार दिषावेगो॥ हरिगीता छंद॥ कछु जननी देह प्रतीत जैसे राम चंद्र हि आवई सुमसीसकी मनदई यहि कहि सुजस तु जग गावई समकाल है तु अमरु अत पुन सम रजै पद पावहो सुत आजते रघुनाथके तुम परम भक्त कहायहो॥ ५७॥ वार्ता॥ हे माता तुमभी कछु देवो जैसे श्री रामजू को प्रतीत आवे तब सीताजीने आपने सीसकी मणि दई एवचन कहिके ते रो जस जगत गावेमै है अरु सम कालमे अमर होवोगे॥ फेर जुग मै जैपदवीको पावोगे॥ ॥ करजोर पगपर नोरउ पवनकोर किंकर मारिउ पुन जंबुमाली मित्रसुन सो पंच मंत्रसि जारिउ रनमार अछकुमार बहु विधि ई द्रजितसो जुथके अतब्रिह्म सस्त्र प्रमान मान सुबेसय भो मन सुथके॥ ५८॥ वार्ता॥ जिस समे हाथ जोरके जो श्रीजानकीजूके चरणोमे हनूमानजी परे है तिसके प्रनाय करके राने कारज कीए कौन से तोर करके उ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

व

113A पवनाको रावनके करोरन सैं कमारे फेर जंबुमाली
अरताको मित्र सुतयेच मे त्रिडो के सहित सिंघारे॥
फेर जुध मे अछकुमार को मार करके अरअनेक
प्रकारसो मेघनाथ सो जुध करके ब्रह्मअस्त्रके सुधमति करके
प्रमानको मान करकैं ताके वस होते भए क्यो एक
तो त्रिहू अम्यथा मानती ही जोग है दूजे सुध मनसो
क्या स्वामीके कारज मे दुष सहिवो जोग है॥ ॥त
व बैठयो तहां जंबुमाली दूत जाय पुकारियो अनि
जोरसो हनुवंत देष अनंतवानन मारियो उठ्या
य डो मनको थक र अति सो थक पियो जानियो॥
यहि आय पोउहठो र तव ही सकन हि उर मानियो
॥९९॥वार्ता॥ सो एते कारज कैसे कीरो॥ यथा॥ज
व जहां जंबुमाली बैठ्या था तहां एक दूत जायकरके
पुकार्यो हमने अनेक बानसो भी मार्यो पर अत्य
त बलके सहित हनूमान है सो उठ करके मनमें को
प करके हैं रह्यो पवर पायकरके बानरके समान है॥
ताको जान्यो सो यहि तिसी अस्थान मे तवही आव
ता भयाहारो मैं संका नहीं मानी॥ ॥मनमानी डोत
हिक्षो भकर तव सकल सैन सिंघारी यो मठ पैठ के अम
लाष सो पुर मे तैं दीनी डारि डो परयो ते रावन की समा
तन देषके पहिचानि डो तहूं पंच सुतमे तीनके उठ
सीस सामत मानी डो तन त्रानक सिस जिवान यनु
तिहूकाल लैलै गेन हो रन दूत पूतस मेत सो दर जेबु
मालय स्यो जहां ॥१००॥वार्ता॥ तव हनूमानजी मन से
मे अल्पतक्षोभ करके मानते भए तब संपूरण सेना
को सिंघार करते भए फेर एक मठ पर चढ करके चाहना
सो लंकापुर मे जंबुमाली डार दीडो सो रावण की सभा मे

112

रामचं
सटी
११८ ताहि जायपस्यो ताकोसरीरदेषकेसमनोनैपाहिचा
114 न्यो फेरपचजोमत्रीनकेपुत्रहै तिनोनैसीसपरआ
ग्यामानी तेसजोयोकोकसकरकेसजकैधनुषोको
तानकरके तिससमेलैलैकेजातेभए जहांजुधमेदू
तअरपूतकेसमेतभाईजेवुमालीपस्योप्या॥ ॥वर
घन षनेवानसमानैननभेदयो हनुवंतको वपायेकेकर
नादहरकेकेकहीमद्मंतको पटनाललैसगरेहन
नेडरसालरावनकोभयो तिहिकालअक्षकुंवरवो मा
लप्रससनकोआयुसदयो॥१०१॥वार्ता॥ तिनोनैम
येनकेसमानवानवरषेहनुमानजूकोसरीरभेद
नकीउ नवतिसमदमतकोरोकैरकेअरहरकपासे
रकोसोसवदकरकेताकोवधकीउा फेरनालविछो
कोधूटकरकेसमहनूमानजूनेमारे रावणकोसल
भयो तिससमेरावणनेअक्षकुमारअरप्रससतेद
नकोवुलायकरकेआग्यादई॥नराचछंद॥जुरेप्र
रू प्रसतहसतलैहथ्यारदिव्यआपने कुमारअक्षतिछवा
नछोडियोघनेघने भयाकपीसतुपजुयअक्षडारयो
संघार मुष्टमारयोप्रससतसीसमैनवैविचार॥वार्ता १०२
नवप्रससतदिव्यहथिआरनकोहाथमैलैकरकेजुधमै
जुरे अरअक्षजोहैकुमारतानैछनवानघनेतघनेछो
डे तवहनूमानजीजुधमैकोपवानभए अक्षकोमार
डास्योअरप्रससनकेसीसमैमुष्टकाकोप्रहारकियो
दोहरा॥मारे अक्ष सुनेजहीरावनअतपकुलाय॥
इद्रजीतसेतवकहीवानरजीपननजाय॥१०३॥वा
र्ता॥जवहीअक्षमारेसुनेरावणनेवहौतअंतंन के
पछितापभयो फेरमेघनादसोकहीवानरजीव
तानजानापावे॥तोटकछंद॥सजकेइद्रजीतग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

114A

ए नवही हनुवंतसो जुध भयो तवही वलवंत गनो
तव हे रहीयो मनमे गुन एक उपाय कीयो ॥ १४ ॥ वा
र्ता ॥ सजक रके इंद्रजीत तवही जाने भए हे तव ताको
हनूमान जूसो जुध भयो तव ताको ही एसे देष करके
वलवंत जान्यो मनमे विचार करके एह उपाय कीयो
तोमर छंद ॥ तव इंद्रजीत विलोक विधि फांस दीनी मो
क कपि ब्रिह्म तेज हि जानि वहि सीस लीनी मानि ॥ १०५ ॥
तव ईंद्रजीतने देष करके ब्रिह्मा की फांस चलायदई वा
नरने वहि ब्रिह्म को तेज जान करके सीस पै मान लई ॥
इति श्रीमत सकल लोक लोचन चकोर चिंतामन श्री
रामचंद्र चंद्रकायां हनूमत वंधनो नाम त्रियोदसो
प्रकासः ॥ १३ ॥ दोहरा ॥ या चौदहि प्रकास मे है है
लंका दाह ॥ सागर तीर मिलान पुन करि है रघुकुल
नाह ॥ १ ॥ वारता ॥ इस चौदस प्रकास मैं लंका को दा
ह होयगो फेर समुद्र के किनारे श्री रामजू जामेगे ॥ रा
वनोवाच ॥ कमल छंद ॥ रेकप कौन तू अछ को घात
कदूत वली रघुनंदन जू को को रघुनंदन रे त्रिसरा षर
दूषन दूषन भूषन भू को सागर कैसे तरो जैसे गोपद
काज कहा सीय चोरहि देषो कैसे वंधायो जु सुंदर ते
री छुई द्रिग सो अत पातक लेषो ॥ २ ॥ वार्ता ॥ रे वानर
तू कौन है हनूमान जू कह्यो अछ के नास कर एवा
रे हो अर श्री रामचंद्र जू को वली दूत हो रावणने कह्यो
सो रामचंद्र जू कौन है हनूमान जूने कहा जो त्रिसरा
अर षरने दूषन इन के दूषन क्या नास कर एकारे है अर
प्रिथवी के भूषन है फेर रावणने कह्यो तू समुद्र कैसे त
र्यो है हनूमान जू कह्यो जैसे गऊ के चरण के नरजा जलको
य ॥ रावणने कह्यो तेरो कहा काज है हनूमान कह्यो

रामचं
तनी
११५

115

ता
जूके चोरको देषो पहिकाजहा फेरराव एक सोत ने
वे पापमानवै से भयो हनूमानजूकसोनेको सोव
नेको देष्योथा नहाते रीसुंदरी इस्त्रीने अनसी छुई
क्या मे देषी तो तेमेअत्यंत पातक जान्यो याते व था
यो॥रावनोवाच॥चामरछंद॥कोर कोर कोर तान फो
र फोर मीरियो काट काट फाट मोस वांट वांट डारि
यो षाल षेचषेच हाड भूंज भूंज षाहुरे पोर तांग
रुंड मुंड लै उडाहु जाहु रे॥३॥वार्ता॥तव रावनने क
ह्यो करोर करोर वानरोको कोहेआंको फोड फोडक
रके मारो इनके मासको फाड करके अरकाट काट क
रके लैवो षालको षैचषैच करके हाडनने भून भू
नके षाको अरद रवाजे डोपर मुंड को टांक करके
रुंडजो है धड लै करके उडजावो॥वभीषनोवाच॥
॥चामरछंद॥दूत मारीए न राजराज छोड दीजिये॥
मंत्र मित्र पूछकै सुआर दंड कीजीए एक रेक मार
को वडोकलेकलीजीये दूंदसूक कैकहा महा सम
दछीजयो॥४॥वार्ता॥हेराजनके राजा दूतको नामा
रीए याको छोडदेइये वजीर अरमित्र इनको पूछके
कोई आरदंडकरीये एक के गालको मार करके वडे
कलेकको क्योलेईये एक वूंदके सूकेते क्या वडो सम
दसूक जात है॥रावनोवाच॥चामरछंद॥तेल तूल बो
रवोर जोरजोर वासमी लै अपार रार रूनहूनसूनसो
कसी पुंछपेन पूतकी सवार वार दीजही॥५॥वा
र्ता॥तव राएके कहे ते तेलमे रुई डुवोय डुवोय करके
अरवस्त्रनको जोर जोर करके अरवहुती रालको लैक
रके अरुरूनए समदूने सूनसो कसी हनूमानजूकी
पूछमो अगनको सवार करके वार दई तव हनूमानजू

अंगको घटायकै छुडायजात मोतही॥५॥

अगको छोटो करके छुडाके जाते भए ॥ चंचरीक
छंद ॥ धाम धाम न अगन की वकुज्वाल माल विरा
जही पौन के झकझोरते फेर फेर पैन छाजही ॥
बाजवार न सार का सु कमोर जोर न भाजही छुड
ज्यों विपदा ह आवत छोड जात न लाजही ॥६॥
॥ वार्ता ॥ धाम धाम विषे वह्नी अगन की लोटे की
माला सी विराजमान सी पवन के झकझोरन ते जाली
अर फरी षिडकी मे सज रही है पेखत व बाज अर वारए
कया हाथी अर सार का अरतो ते अर मोर ए ह जोर कर
के भाजते है जैसे नीच जीव राजा पै विपदा के आवते
हू रोना को छोड जाते है लज्यामान नही होते है ॥
भुजंगप्रयात छंद ॥ जती अगन ज्वाला अटा अवन
है पे सरन काल के मेघसे ध्या समेयो लगी ज्वाल
ली या मा वै नील राजै मनो अवरन की कि केनी नभासा
जै ॥७॥ वार्ता ॥ सुपेद जो अटारी है सो अगन की ला
ट सो जही हुई ऐसी सोभत है जैसे सध्या के समे विषे
सरदकाल को मेघ होय खेत अटा सरद के मेघ सी
लाल लाट से ध्या सी नीले घरन की जो पंगत तिनो मे
लगी हुई अगन ऐसी सोभत है मानो अवरए की नरा
गडि अंग को सर प सज रहे है ॥ ॥ लसे पीत छत्री म
ही ज्वाल जानो ठके डोहनी ले कवध्यो जमानो जरै
जहं नारी चढी चित्रसारी मनो चेतकामो सती सत्य
धारी ॥८॥ वार्ता ॥ अगन सोठ की अरू हर अंगा पीरी अटा
परो के ऊपर की अंगा छतरीयां ऐसी सोभत है
मानो लाल डोहनी मैठ के हूऐ लेकर के वध्यो ज क्या
कुच है पेर चित्रो के मकानो मे चढी हुई नारी अन के
सबूह ऐसे जरते है मानो चिता के ऊपर सतन को धारे

115A

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हूएसतीश्रांहै॥ ॥कहूरैनचारीगहेजेगगाहै मनो
इसरोषागगनमेकामदाहै कहूकामनीज्वालमाला
नभेरै नगेलालसारीअलंकारतोरे॥९॥वार्त्ता॥
कहूकराकसअगनकीगाढीजोतकेपकरेहूरोऐसे
है मानोसिवजूनेकोपकीअगनसेकामदगधकीए
है कहूंकइस्त्रीअंअगनकेमुलावेलालसाढीकोत्या
गनहै अरभूषनोकोतोरतहै॥ ॥कहूंभोनरातेर
चेधूमछाहीं ससीसूरमानेलसेमेघमाहीं जरेव
स्त्रसालामिलीगेधमाला लसेअद्भुमानेलगीदव
ज्वाला॥१०॥वार्त्ता॥कहूंकालातरंगकेभवनधूम
कीछाहींमेरचेहूरेऐसेहै मानोमेघनमेचंद्रमानेसू
रजहै कहूकवस्त्रनकीसालाजरैहै तामेगधनकीप
गतमिलीहै सोमानोपरवतपैदोकीअगनलगीहूई
सोभतहै॥ ॥चलीभागचहूदिसाराजधानी मिली
ज्वालमालाफिरेदुष्यदानी मनोईसवानावलीला
ललोले सबैदैतजायन्नकेसंगडोलै॥११॥वार्त्ता॥
ऐसेचारोतरफराजधानीभागकैचलीहै तहांइस्त्रिया
दुषदायकअगनकीमैलासेमिलीहूईऐसीफिरत
है आगेनारीपाछेअगनसोमानोलालरूपचेच
लसिवजूकेवाणीकीपगतहैसोदैतनकीइस्त्रीनकेसे
गडोलतहै॥विजयछंद॥लंकलगायदईहनुवेत
विवानवचेअनउचरुपोहै कंचनकोपघल्योपुरपू
रपयोनिधमेपसस्योतेसुषीहैपंचफिरैउचटैववधा
मनतानीररैपानपानीदुषीहूंगगहिजारमुषीगनि
केसोगिनामिलमानोअपारमुषीहै॥१२॥वार्त्ता॥
जबहनुमानजनेलंकाकोआगलगाईदईतबविवा
नभीअनोऊचेहेकरकेवचैफेरकंचनकोनगरपलेय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

116A कनाकोपूरक्याप्रवाहसमुद्रमैपस्योहैसुषसोवहुनप्र
कारसेउचटेहूएमनसेपंचफिरतेहैं अररानिर्म्मलपानी
पानीरहतहै दुषीहोकरके जैसेप्रियमहजारमुषसौं
गंगासमुद्रमेंमिलीथीतैसेही यहिकंचनजलनहीमा
नोअनेकमुषनसोसारस्वतीमिलीहैसमुद्रमें ॥दोहरा॥
मं॰ हनुवंतलगाईलंककौंवच्यौविभीषनधाम ज्यौंअरनो
देवरमोपकजपूरवजाम॥१३॥वार्त्ता॥हनूमानजूने
लंकामेंअगनलगायदई तहांएववविभीषनकोघरव
च्यो जैसेसूरजकेउदेमेपूरवजामक्यापहिलाचहतही
मैपहरदिनउसतमेकमलफूलतहै तैसेसूरजकेरघु
नाथजूकोप्रियमचहतहीमैयहिवच्योसोमनहै अथ
वासूरजतेवेरमोक्यादेरमेउदेहोतहै अरकमलतो
पहिलेहीषिलआवतेहैं तैसेहीविभीषनतोपाछैमि
लेगो रामजूनेताकोघरप्रियमवचायो॥संजुताछंद॥
हनुवंतलंकलगायके पुनपूंछसिंधुवुझायकै सुमदे
षसीतदिपायरे मनपायआनंदजीभरे॥१४॥वार्त्ता॥
हनूमानजूअैसेलंकाकोअगनलगायकरकेफेरपूंछ
कोसमुद्रमेंवुझायकरके कल्यानरूपसीताजूकोदेष
कैताकेचरणोंमेंपरे तिनोंतेमणीआकोपायकरकेचि
त्तआनंदितभए॥ ॥संदेसपहिसीताकह्यौ पुरहून
सुतनाक्षिनहयो इकअंषविनताकोकस्यो तवजाय
केआसनपस्यो॥१५॥वार्त्ता॥तवसीताजूनेयहिसंदेसा
कह्योइंद्रकोपुत्रजिसक्षिनमेतुमनेमास्याथा वाणसे
फेररक्षाकरीएकआंषसेविनाताकोकीयो॥दोहरा॥
लैसंदेससुषपायमनजवहिचलेहनुवंत पुहपविष्टदे
वनकरीसागरतरतअनंत॥१६॥वार्त्ता॥संदेसालेकरके
सुषपायकेमनमेजवहनूमानचलेतवदेवतिओंनेफूलन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सही
११७

117

कीवरषाकरी समुद्रकेतरनेहूंरो॥अंगदउवाच॥
सीतानल्यारोवीर मनमाहंकूपजीधीर अवकरी
यसुकौनउपाय पलपलसुक्षीजैकाय॥१९॥वा
र्ता॥तवअंगदजूनेकह्योहेवीरतुमसीताजूकोना
ल्यारोअवसोकौनउपायकरीए पलपलमेसरीर
छीनहोतहै॥हनूमानोवाच॥जवरामधरहैचोष॥
रनरावनैसेताप वरषैसुचनसरधार लेकाहूहनत
नवार चलेअंगदादिकवीर जवआयथोवलधीर॥
सुमवागहेषसुग्रीव फलदेषकेसुषजीव समधा
ययोफलफूल रहीरासुकेवलमूल तवदेषदधमु
षआय वहुमारियोकपिधाय अनरोसवालकुमा
र धरमारिऊवकुवार भजगयोलैनिजजीव जहां
वैठयोसुग्रीव॥दूतोवाच॥नोटकछेद॥वेवानस
वैन्दिपसोधिनई वहुभांतसुअंगदकीढीठई सुन
कैहसरामकह्योतवहीं सीयसोधवुलायसुनोअव
हीं॥२४॥वार्ता॥फेरहनूमानजूनेकह्योजवश्रीराम
जू धनुषको धारनकरैंगे रावणकोजुधमेंदुषहोय
गो मैयनकेसमानवाणनकी धारा रामजू वरषेंगे॥
तवलेकाकेदूटनेहूरोदेरनालगेली ऐसेसुनकैअं
गदादिकवीरवलतेभरे तवहनूमानजूकेवचनो
तेवलअरधीरजआवतोभयो फेरसुमसुग्रीवको
वागदेख्यो तहांफलदेषकेचितमेसुषभयो तहांके
समफलषाए केवलछिलनकेमूलरहिगए तववा
गकोरछेसदधमुषवानरदेषकरकेआये सोवान
रोनेवीरकेमास्यो हनूमानजूनेअत्यंतरोससों व
हूतवारमास्यो पकरकेसोजीवलेहूयेजीवकोले
करकेभाज्यो जहांसुग्रीववैठाथा सोवहिवारतासे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

117A

पूरण सुग्रीव सो हनूमान ने कही अरु अंगद की ढीठता व
हु प्रकार सो कही तब रामजू ने सुनकर के हस कर क
ह्यो सीताजू की षबर अबही बुलाय कर सुनो अब
अत्यारो हो वेग ॥ दोहरा ॥ लै आरो सीता षबर या
ते अतमन फूल ऊनको वेग बुलायये न हियारो ए
मन मूल ॥ २० ॥ वार्ता ॥ कह्यो सीताजू की षबर लै कर आ
ए है उसी ते मन मे प्रसन्नता भई उनको सीघ्र बुलाईए
तिनो की महत मन मे मत धरो ॥ ॥ रघुनाथ पै जब ही
गए ऊठ अके कला वनको भरो अब मै कहा करनी क
री सिर पाय की चरनो परी ॥ २१ ॥ वार्ता ॥ सो जब ही श्री
रघुनाथजू पै गए सो ऊठके अंक मै लगावने को भ
ए तब हनूमानजू ने कह्यो हे नाथ मै ऐसी कहा क
रनी करी है ऐसे कहि श्री रामजू के चरणो की जो है पि
यवी सो सीस पै लगाई पग लै की धूर सीस पै लगाई ॥ त
कहूं पन हो पाठ से सी मय पारी ॥ दोहरा ॥ चिंताम
नसी मन दई रघुपति कर हनुवंत सीताजू को मन र
ग्यो जनु अनराग अनेन ॥ २२ ॥ वार्ता ॥ तब हनूमान
जू ने श्री रामजू के हाथ चिंतामणि के समान मणि दई ॥
मानो वडे अनुराग सौं रंग्यो हु यो सीताजू को मन है ॥
श्री रघुनाथ जिहि मन देषी जी मे भाग
दोधक छंद ॥
न
दसा समते षी फूल ऊ ठ्यो मन ज्यो निय आई मै
हू अंव प सुद्दी ठमु हाई ॥ २३ ॥ वार्ता ॥ जब रामजू ने मणि
देषी चित्त मै भाग की अवस्था सी विचारी मन ऐसे प्र
सन्न भयो है मानो निय आई है मानो अंग ये की मुंदर
द्दि दृहू गई है ॥ रामचंद्रो वाच ॥ तामरस छंद ॥ मन होय
नही मन होय प्रिया को ऊर मै प्रगट होत न प्रेम हिया क
हु सम भाग गये ऊ तो तम छायो अब मै अपने

मनको मति पायो॥२४॥वार्ता॥ यहि मलीन नहीं है मा
नो प्यारी को मन होयगो जिसने तनु क्या विसतार सो
ऊर मे प्रेमरूपी दीपक को प्रगटायो है जो अपकार
क्या याहू याथा सो सम भागगया अब मैने अपने म
न को मतो पायो॥ ॥दूरसे हमको वरहू दरसो ते॥
ऊर लागत आय वनाय लगाये कछु उतर देत न
ही चुपसाधी जो यजानत है हमको अपराधी॥
॥२५॥वार्ता॥ मणि प्रति रामजू कहैं मणे यहि आप ते
ते मन करके हमको नहीं देखत है जो रावरी हमारे दि
खाए तें देखत है ऐसे ही होणे सो वनाय के लगाय तें
आय के लागती है अरु हमको कछु ऊतर नहीं देत
है याते चुप साधी है सो हमको जो यमे अपराधी जा
नत है याही तेने हन हीं करत है॥हनुवंतउवाच॥
कछु सीय दसा कहमो हन आवे नर को जठवान
सुने दुख पावे सरसो प्रति वासर वासर लागे तन ज्या
वन हीं मन प्रान न पागे॥२६॥वार्ता॥तव हनूमान
जू ने कह्यो सीताजू की दसा तो मोते कछू कहिन
मैं नहीं आवत है मानुष तो क्या जठ भी सुनके दुख
पावत है अरु जा को वासर जो है दिन सो प्रति वासर
क्या दिन दिन प्रति तीर समल भात है तिस पीरा को स
रीर पेचाव नहीं होत है मन अरु प्राण ही ता मे पगे है
सो ई जानत है॥ ॥प्रति अंगन के संग हीं दिन ता से
निस सो मिलवाढत दीह उसासे तिसने कुही नींद
न आवत जाने रवकी छवि ज्यो अपरात वखाने॥
॥२७॥वार्ता॥ अरु दिनजा को अंग अंग के संग ही ना
स होते है अरु रात सो मिलकर के वडे उसास चथ
ते है अरु रात को रती कभी नींद नहीं आवत है॥आ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

118A पीरनकोसूरजेकी छबनकेसमकवाडुपहरीकेसम
कहितहे॥ दंडक छंद॥ भोरनीज्यौभ्रमतरहितवन
वीथकनहेसनीज्यौम्रिडुलम्रिनालकावहितुहै॥
हरनीज्यौहेरततनकेसरीकेकाननहिकेकामुनव्या
लीज्यौविलानहूचहितहे पीउपीउ रहतरहतचित
वातुकीज्यौचंदचितेचकईज्यौचुपहेरहतहै सुन
होन्रिपतरामविरहितुमारेंअैसेंसूरतनसीताजूकी
सूरतगातिहै॥२८॥ वार्ता॥ हेश्री राजारामचंद्रजूतुम
सुनो भोरनीज्यौवनकीवीथकानमेंकेहागरीनमें
भ्रमतरहितहे ओ म्रिडुलकहितकोमलम्रिनाल
कमलडंडीताकोंहेसनीज्यौवहितहैतोरडारतहै॥
ओ चितविषचकीपपीहेकोइस्त्रीज्यौपीयपीय
रटतरहितहे ओ चंद्रमाकोचितेकहतोंदेषकेचक को
वीज्यौमौनहुरहितहे ओ केसरकेकाननवनको
हरनीम्रिगनीकीभांतनहीहेरत देषत केसरप
दमेसलेष सिंघ ओ तुकम म्रिगनीसिंघकेवनको
भागेहे तैसेंयहिकेसरडहीपनतेभागेहे ओ के
काजोहेमोरनकीवानीताकोसुनकेव्यालीसर
पनीज्यौविलानकोकहाबाडनकोचाहतहैअर
षकिकपवेकोचाहततहैतुमारेविरहिकरकेअैसी
अंगसूरतोकोसीताजूकीसूरतपैरतहै तैसेंसूरत क
ज्यौभोपाठहे जैसेंसीताजूकीसूरतपकरतहै॥
तैसेंसूरतनहींपकरतैंहानहीसोहतहै ज्यौगचित्रमें क
भीछवहेपरसीतजूमैनहीं॥ दोहरा॥ सीताजूसंदे
सभग्यान॥ श्रीन्रिसिंघप्रहिलादकीवेदजुगावत
गाथ गएमासदिनआसहीफूठोहेहैनाथ॥२९॥
वार्ता॥ यहिसंदेससीताजूनेकह्योहै श्रीन्रिसिंघ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सती
११९
119

देवअरप्रह्लादकीनोकषावेदगावनेहै किचार
यहींमीमनकोदुषनासहास्योगयोसोमहीनेकेमो
कोदिनवतीतेसीघ्रहीकूठोहैजायगो॥दोहरा॥आ
गमकनककुरंगकोकहीवानसुषपाय कोपानलवु
फजाय जनुसोकेसमुद्रवुडाय॥२॥वार्ता॥फेरय
हिकह्योहै कंचनम्रिगकेआवनकेसमेतुमनेजोसु
षपायकैवातकहीथी किसोककेसमुद्रमेवूडकर
केभीकोपरूपीअगनमनवुफावे॥श्रीरामउवाच॥
॥दंडकछंद॥साचोएकनामहरिलीनेसमदुष्यह
रिऔरनामपरहरनरहरनाएहो साषाम्रिगनाहीवु
यवेलनकेसाषाम्रिगकियोवेदसाषाम्रिगकेस
वकोभाएहो सापहनुवंतवलवंतजवंततुमगएएक
काजकोअनेककरआएहो॥२१॥वार्ता॥हेहनूमा
नतुमारोएकहरनामसाचहैऔरनोमनकोत्याग
करकेजिसनेतुमनेमेरेसमदुषहरलीनेहे नरहरजो
मैहौनानेठहरायोहै अरतुमवानरनहींहो मेरेवान
केपसरक्यातेजहो अरतुमारोनाम जोवलीमुषहै
सोतुमदेवतिडोमेमुख्यवलीहो अथवादेवतिओने
वलीडोमैंलगाएहै अरतुमसाषाम्रिगनहींहो वुध
रूपीजोहैवेलनाकीसाषाचतुराईनाकेम्रिगहो अ
थवावेदकीसाषाकेम्रिगहो तांमेमुख्यानहोहेसोप्र
वलवानहनूमानजसवानतुमगएएककारय
कोअनेककारजकरआएहो॥हनुवंतोवाच॥तो
मरछंद॥गएसमुद्रकालेपार मनमोहल्याईवार के
हाक[illegible]मेवलरंक निजम्रितकजारीलंक॥२२॥
वार्ता॥हनूमानजूनेकह्योहेनाथमोकोसमुद्रकापा
रलैगईथीपेरसीताजूकीमातउरारलैआईहे॥

[illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

119A मैंकग्गालनेकहावलकत्योहै जोआयहीनेमरीहूईथी
सोलेकाजायदईहै॥ ॥अनहन्योवालकअछलै
गयोवांयविपछ्छ जठविछनेरेदीन मैकहाविक्रमकी
न॥३३॥वार्ता॥एकअन्यंतवालकअछमान्योहै फेर
प विछेक्योंविहसे फंसमैकांपकेमोकोलेगयोजरीवज
हविछकेनरहीएहै सोमैकोनहोपराक्रमकीयो॥थित
विजयदसमीपाय उठचलेश्रीरघुराय हरिजूथजू
थपसंग विनपदपकेनपतंग॥३४॥वार्ता॥विजय
दसमीजो तिथहैताकोपायकरकेश्रीरामजूउठकर
केचलतेभए वानरोकेसमूहहैसेनानीओकेसंगसोतो
न वैंपषोकेपतंगक्यापढ्तीहै अथवापतंगक्यासूरजको
धुजाजानहै॥ ॥समकेनसूरप्रकास आकासल
सनविलास पुनरिछलछ्पनसंग जनुजलथगंगत
रंग॥३५॥वार्ता॥जिनेकेचलतेहुएसूरजकोप्रकास
नहींजान्योजानहै आकासमैजिनकोविलासछा
यरह्योहै फेरलाषनहीरीछोकेसंगहै मानोसोसमु
द्रमैगंगाकेतरंगहै॥सुग्रीवउवाच॥दंडक छंद॥
केसोदासराजचंद्रसुनोराजारामचंद्ररावरीजवहिसे
नाऊचिकचलहै पूरनहैधूरधूररोदसिहिआसपा
सदिसादिस सवरवाज्योवलहिवलितहै पनग
पतंगनरूगिरगिरराजगजगजराजविगविगरा
जनदलतहै जहांतहांऊपरनालपयआयजात
पुररनकीसीपांनपुहमीहलनहै॥३६॥वार्ता॥हे
राजडोमैचंद्रमासोरामचंद्रजूतुमारीसैंनवदोरकर मा
केचलतीहै नवरोदसीक्याप्रिथवीआकासकेमध्य
मेआसपासमूरक्या वहुती धूरपूरतहेजानहै सोतु
मारेवलकरकेअथवाचलहिक्यावहजोपवनना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोपायकरकेवरषाकीन्याईछायजातहै फेरसरदअरप
नेगकाबंदीविद्यपरवतपरवतोकेराजाहाथीअरहा
थीनकेराजाअग्निगअरसेरइनेदलडारतहै अदपनालके
जलजहोतहोऊपरपिथवीकेआयजातहै कमलनीकी
नरुंपिथवीकंपायमानहोतहै॥लछमनउवाचं॥दंडकछे
द॥भारकेउतारवेकोअवतरेरामचंद्रकिधोकैसोदात
मूरभारघप्रवलदल टूटतहैतरवरगिरेगणगिरवरसू
केसमसरवरसरतासकलजल ऊचिकचलतहूरिदिचक
नदचक मचअेस नकतमतनलकेथलथल दचक
लचकजातसेसकेअसेषफनभागगईभोगवतीअतल
वितलतलला॥२०॥वार्ता॥हेश्रीरामचंद्रजूतुमनेभारके
उतारवेकोअवतारलीउहैअयवावडोजाहेजुपतोमे
वडेवलवानदलोकेउतारवेकोलीयोहै याहीतेसेनाआ
पकीअेसीभइहैजाकेचलतेहूऐव्रिछटूटजानेहेअर
परवतोकोसवूहगिरजानेहैतालअरनदिआकेसंपू
रणजलसूकजानेहेजवहरक्याभिवजीताकीधमकसो
धमकजानेहै मचक्याभिंघासनकेसमानप्रिथ्वीके
थलथलमचकतेजानेहै अरसेसनागकेसंपूरणफण
दचककरकेलचकजानेहै भोगवतीसरपोकीआइछि
यापतालनेभागकेअतलेवितलमेचलीआगईआहै॥
गीताछेद॥रघुनाथजूहनुवंतऊपरसोभितनिहका
लजू ऊदयाद्रिसेमनस्त्रिंगमानहुसूरसुभ्रविलासजू
सुभअंगअंगदसंगलछमनलछीपेवहुभानजू॥उद
याद्रिसोमनस्त्रिंगमानोचंद्रराजतरातजू॥२१॥वार्ता॥
श्रीरामचंद्रजूहनूमानजूकेऊपरतिससमेचठेहूऐसो
भतहै सोमानोउदयाचलकेसोभामानस्त्रिंगपैसूरज
हैवडेवलवार फेरसुभहैअंगजांकेअैसोजोअंगदता

120A पैवठे है पै लछमन जू देषितै हैं सो मानो सो भाय मान
मंदराचल के ऊपर राजकों चंद्रमा राजत है ॥ दोहरा ॥ ब
लसागर लछमन सहित कपिसागर रणधीर ॥ जससा
गर रघुनाथ जू मिले सागर तीर ॥ ३९ ॥ वार्ता ॥ बल के
समुद्र जो हैं लछमन जू ताके सहित वानरो के समुद्र जो हैं
सुग्रीव रणधीर जवान सो और जस के समुद्र श्री रामजू सो द्र
समुद्र के किनारे हनूमान जू ने जाय उतारे ॥ सैन्यको वाच ॥
विजय ॥ भूतविभूषन पी पूष ही विषईस सरीर कि
पापविमोहै हैं कि पोके सब कस्यप को घर देव अदेवन को
मन मोहै है संत हियो कि बसै हर संतन सो मअनैनन कौ है
कव को है चंदन चित्र तरंगन रंगत सागर को ऊ कि सा
गर सो है ॥ ४० ॥ वार्ता ॥ समुद्र चार भी वरत है याते चार
हेतु करि वरनै है समुद्र है कि पोरस महादेव को सरीर
है भूतसंपतसो भूतसमता सो विभूषन समुद्र मो सि
व जी मो पियूष अम्रित समुद्र में है सो महादेव मे भी है
सुधा सो चंद्रमा देह में है याते विष समुद्र में आ सिव मे
पापको दोऊ दूर करते है समुद्र में देवता रहत है अदे
व दैत्य दानव रहत है ऐसे कस्यप के घर में जानिय समुद्र है
अर संतन के हृदे में भगवान बसत हैं कोऊ नागर प्रवी
न है कि यो सागर है चंदन को नीर लाए है तरंग जे मन
की उमर मनोरथ सो जाको है मनोरथन सों जुक्त है कि
वा चंदन नीर क्या नीर जुक्त जो चंदन तस्यो चंदन तो की
जोत रंग लहि रिना की आकि न धोर करे है चंदन लग
य आंगुरी सों चीरे है सो तरंग की आक्रिति होत है चंदन
नीर न तरंग सो तरंगन जुक्त है समुद्र पछ न र मे चंदन है
कि वा हर चंदन जामे है व्याकरण मे पूरव पद उत्तर पद
को लोप भी होत है हरि को लोप भये चंदन रह्यो और

गसोतरं ना

नीरतरंगतजुक्त है किवाचंदनसोउचलौंकोनीरहै॥
गीतकाछंद॥जलजालकालकरालमालतमंगलादि
कसेंवसे उरलोहक्षोहविमोहकोहसकामज्यों
बलकोलसै बहुसंपदाजु नजानिएअनपानकी समलेषिये कोऊ मागनेअरपाहुनोनहिनीरपीवनदेषिडो
॥४१॥वार्ता॥जलजालजोहैसमुद्रसोमानोभयानक
कालकीमालाहै क्यौजासमुद्रमैतोमंगलादिकम
छवसतेहै अरकालमालामैमंगलादिकनामकेका
लदूतहै अरजांकेउरमैलोभअरक्षोभनेमोहअर
क्रोधअरकामहै यांनेदुष्टसमसोभनहै सोवहुती
संपदाकेभीसहितहै परअन्यंतपापीसमदेषीयत
है क्यौजामेकौमांगनेवारोअरपाहुनेजलको
पीवनेनहीदेषीयतहै॥इतिश्रीमनसकललोकलो
चनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रकायांसमुद्र
दरसनोनामचतुरदसोप्रकासः॥१४॥दोहरा॥या
पंद्रमेप्रकासमो रावनकरेविचार मिलेविभीषन
सिंधुनरजैहैरघुवरपार॥१॥वार्ता॥इसपंद्रमेप्रकास
विषेरावनमंत्रकोविचारकरेगो विभीषनमिलेगो
फेरपुलबंधकर श्रीरामजूपारजावेगे॥रावनोवा
च॥गीताछंद॥सुरपालभूतलपालहैसभमूल
मंत्रजुजानिए वहुवेदमंत्रपुराणऊतममध्यमाअ
धमानीए करजैजिकारजआदऊतममध्यमाध
मजानीये उत्तमध्यमानअनुत्यमेनिगणेनेकाज
वषानीए॥२॥वार्ता॥रावननेसभालगाकरकह्यो
जेदेवतिऊकेराजाहैसमनेकेमंत्रहीकारणजानी
तोहै सवहुनेमंत्रनमैसेवेदअरपुराननेतीनमंत्र
कहेहै ऊतम मध्यम अधम जोकारजकेआदि

जापृथिवीकेराजाहैं१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

121A हे मेत्रगीनीयसोउनम अरजोकारजके मध्यक्या
वीचमेहीपमेल्याई ए मोमम ध्यम जोकारजवतीनेकहो
ए सो अ धम ॥ स्वागताछंद ॥ अजुमोहकरनोसु कहो
हो ॥ आपमायकजन रोसगहोहो राजधरमकहोएछ
वक्काए रामचंद्रनहि जो लगआए ॥२॥ कती ॥ यातेजो
आजमेकोकरनेजोगहेसकहो आपसमेकछुरोस
मतकरीउ जोराजधरमहेसोकहोए मिलकेनवता
ई रामचंद्रजूनहीआरोहे ॥ प्रसमन ॥ वामदेवतुमकोव
रदीनो लोकलोकसमहीवसकीनो इंद्रजीतसुनको
जगमेहे रमदेवनवानरकोहे ॥४॥ कती ॥ लवप्रसन
नेकहोतुमकोतो सिवजूनेवरदीउ तातेलोकक्या
जगत अरदेवनिडाकेलोकसोसबतुमनेसवकीए
हे इंद्रकेजीतनेवारोजाकोपुत्रहे ताकोकोनहेजोज
गतमेअररक्षाकरसकै अथवाइंद्रजीतकोहीहे रज
नश्रीरामजू अरमानुषनेवानरएहक्याहे ॥ महोद
रोवाच ॥ त्वितपकासभूजजोरतिनोर कलिदंडतुमसो
करजोरे कुंभकरणलघुसेदरजोके औरकोनमन
आवततोके ॥५॥ कती ॥ तुमने भुजानकेवलसोमो
नकीफांसीतोरडारीहे अरदेडधारे अथवादंडवारे
जोकालसोतुमारेआगेहाथजोरतहे अथवादंडक्या
दंडवतहेके फेरकुंभकरनजैसेहे छोटेभाईजोके तीके
मनमेऔरकोनजोधाआवतहे ॥ कुंभकरनोवाच ॥
चतुषपदीछंद ॥ आपुनसमजानेकहोनमानज
कीजोजोकछुभावे सीतातुमआनीमीचुनजानी
अवकोमंत्रवतावे जिहवरजगजीत्योसरवथली
त्योतासेकहाबसाई आतिभूलगयोतवसोचकर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१२२
122

120

तम्रवजवसिरऊपरआई॥६॥वार्ता॥फेरकुंभकरन
कह्यो तुमआपहीसमझाननहौ कहूकौकहीतौमा
ननेहीनहीहो तांतेजोमनभावतहैसोकरौ ऐ तुमने
सीताजूल्याईहै सोतवहीतुमनेमोतनकाजानीअ
वकौनमंत्रकोवर्तवै जाकेवलकरकेतंजगतसेजी
त्योहै सोमनेसोअतीतक्यापरेहै परब्रह्महै तासौ
कहावसहै तुमतोतवहीअत्यंतभूलगएसे अव
सोचकरतेहो जवसीसपरआनवनीहै॥मंदोदरी
ऊवाच॥रामकीवामजुआनीचुरायसुलंकमैमी
चकीवेलवईजू किउंरनजीवतक्तिगेतिनसोजि
नकीधनुरेषननाघीगईजू वीसविसेवलवंनहुने
जकुतौदिगकेसवरूपरईजू तेरससरासनसंकरको
पीयसीयस्वयंवरकोनलईजू॥७॥वार्ता॥यहि
श्रीरामचंद्रजूकीजोतुमइस्त्रीकोचुरायकरकेल्याये
हो सोलंकामैम्रित्युकीवेलवीजीहै तिसनरकोतु
मकैसेजीतोगेजाके धनुषकीरेषाभीतुमतेनाघीना
गई फेरतुमत्रियमवीसविसेवलवानभीते अर
तुमारेनेत्रोंकोसपूरणरूपकरकेरईक्यामिलीहू
ईभीथीप्यासिलगतीथी सोतवसीताजूकोधनु
षकोतोरकरकेदेषीपस्वयंवरहीमैसीताजूक्योन
लेलई॥अपरंचकमला॥कालवलीनवच्योपरके
रसुकेवचहोतुमआपनीवोरहि केसवक्षीर
समुद्रमथ्योकहिकेसेनवांधहिसागरथोरहि॥
श्रीरघुनाथगनोअसमरथदेषविनारथहाथी
यथोरहि तोरयोसरासनसंकरको जिहिसोवक
हातुमलेकेनतोरहि॥८॥वार्ता॥अरवालीजैसे
वलीपरजोसुग्रीवताकेदोसकीएतेनावच्योसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

122A तुमआपनेदेषतेवैसेवचोगेफेरजिसनेकौरसाग
रमथलीआप्यासोइसपारेसेसमुद्रकोक्योनाम
घोगेश्रीरामजूकोतुमअसमरथकरकेनागनेहाथी
अररथनेघोरेइनोनेविनादेषकरकेजिसनेसिवजू
कोधनुषतोरडीयोहैसोक्यातुमारीलंकाकोनही
तोरेगेतोरहीगे॥इंद्रजीतोवाच॥दोहरा॥मोको
आयुसदेहुजोत्रिभुवनपालप्रवीन रामसहित
सभजगकरोनरवानरकरहीन॥९॥वार्ता॥नव
मेघनादकह्योहैतीनभवनकेपालनमैचतुरराव
न आपकाअसेजोहैश्रीरामजूतिनोकेसहितसे
रणजगतकोमैनरअरवानरोकरकेरहितकरदे
वोगोजोतुममोकोआग्यादेवोगे॥विभीषणो
वाच॥सोरठाछंद॥कौनअनकायजुदेषसके॥
कोकुंभनकुंभअविद्याजुवषैकोहैइंद्रजीतजुभी
रसहै कोकुंभकरनहयआरगहै॥१०॥वार्ता॥
नवविभीषणजूनेकह्यो कौनहैअनकायदेतजो
श्रीरामजूकीतरफदेषभीसकेकौनहैकुंभनिकुं
भरासभअविद्याहोवक्तहैकौनहैइंद्रजीतजोकुनैभीरको
क्याभ्रमकोसहारेगोअरकौनहैकुंभकरनजोइनपय
रनकोपकरे॥ ॥देषेरघुनाथनथोभरगहै जेसेनरु
पल्लववानवहै जोलोहरसिंधनरैउनरेतालोसीयलैवि
नपांयपरे॥११॥वार्ता॥एसभश्रीरामजूदेषकेधीरज को
कोनहीधकरेहैजैसेपवनकेचलेतेवृक्षोकेपत्रकंपा
कयमानहोवेगवतोईवानरसमुद्रतोनरेनहींउत
रतेहैतबतोईसीनाजूकोलेकैकोनहीचरैमैपरते

१गो

है। जौलौं नल नील न [illegible] सेन करै जौलौं हनुवंत न दृष्टि
परै जौलौं नहिं अंगद लंक दहै तौलौं प्रभु मान कु
वान कहौ ॥१२॥ वार्ता॥ जब तांई नल अर नील पुल
को नहीं करते हैं अर जब तांई हनूमान जी नहीं आव
ताई ते हैं अर जबै अंगद ने आपके लंका नहीं दाई है तब
तांई हे नाथ मेरो कह्यौ मानो॥ ॥जौलौं नहिं लछ
मन कान धरै जौलौं सुग्रीव न क्रोध करै जौलौं न ह
राघव सीस हरै तौलौं प्रभु मान हु पाय परै ॥१३॥ वा
र्ता॥ जब तांई लछमन जू बाण को नहीं धारते हैं अर ज
ब तांई सुग्रीव क्रोध नहीं करत है जब तांई तेरे सीस श्री
रामजू नहीं काटते है तब तांई मेरो कह्यो मानो मेरे चर
णों मे परत है॥ रावण उवाच॥ कलहंस छंद॥ अरका
जल्लाज तज के उठ धायो धिक तोहि मोहि डरवावन आ
यो तज राम नाम यहि कोल उचार्‍यो सिर माह लात पग
२४ लागत मार्‍यो॥ वार्ता॥ तब रावण बोल्यो रे तू शत्रु के कार
ज लज्या त्याग करके है स्यो है याते तो को धिकार है मो
को तू डरावन को आयो है राम नाम को तज के बोल उच
र्‍यो कर ताके चरणों मे लागते हुए सीस मे लात मारी॥
तब हाय हाय उठ देह सम्भार्‍यो लीए संग अंग सम मं
२५ त्री चार्‍यो तब अंग यौं प्रभु दरस सीस उठान्यो उर रामचं
द्र जगतीपत आन्यो॥१५॥ वार्ता॥ तब हाय हाय करतो
ने उठ करके सरीर को संभार्‍यो अपने अंग के समान चार
मंत्री संग लीये अंपो जो भाई रावण है ताको तज करके
उठ चल्यो हीए मे प्रिथवी के स्वामी श्री रामचंद्र जू ल्या
द॥ दोहरा॥ मंत्रन सहित विभीषनै सोभा वही अकास॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

123A

जनु अलि आवत भावते रघुपति पद्मन पास ॥१६॥ वा
र्ता॥ मंत्रिउं के सहित तब विभीषन की आकास मैं ऐसी
शोभा बनी मानो श्रीरामचंद्रजू के चरण कमलों के पा
स भाव करके भ्रमर आवतो भयो है ॥ नाराच छंद॥
निकट विभीषन आवत जाने कपिपति सों तब ही गु
दराने रघुपति सों तिन जाय सुनायो दसमुख सोदर
वि तब हि आयो ॥१७॥ वार्ता॥ से जब बैंभीषणने हे आव
ते जाने तब सुग्रीव सों बानरों ने जाय के खबर करी सुग्री
व ने रामचंद्रजू सों जाय कर के सुनायो रावण को भाई
सेवा के वाले आये हे ॥ श्रीराम उवाच॥ वल बुध वेत
सभै तुम नीके मत सुन लीजे मंत्र नहीं के तब जो विचा
र पर सो कीजे सहि सामुन आवन दीजे ॥१८॥ वार्ता॥
तब रामजू ने कह्यो तुम बल और बुध वारे सभ सेष
हो पर मंत्रिउं के मत सुन लीजे रा तब फेर जो विचार मैं
आवै सो करीए सत्रावी सत्रु आवने न दे दूरे ॥ अंगद
उवाच॥ रावन को यहि सा चक्र सोदर आप बली बल
वंत लीए अरु राकस वंस हमै हनने सभ काज कहा ति
न सो हम सों अब ॥१९॥ वार्ता॥ प्रिथम अंगद ने कह्यो
रावन को साचह भाई है आप भी बली है अरु और भी
संग बलवानों को लीए हुए है एक सो के वंस संपूरण
ही हमने मारने है हमारो तिन सों कहा काम है ॥ जाम
वंत उवाच॥ वेपु विरोध यहि मै तिन सों अत कैसो मिल
है हम सें तिन सो मन सी यह रीज वही ऊह निरखन॥
रावन को न तज्यो तब ही इन ॥२०॥ वार्ता॥ इनके भाई
रावन सों तो हमारो अत्यंत विरोध पड रह्यो है तिन सों
हमारो केसे मन मिलैगो जब रावणने सीताहरी थी ति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रेनरबनमेंनवहीइसनेरावणकोक्योनात्यागदीदुो
नलैंहूनपठैइनकोमतलीजै ऐसेहिकैसेविदाक
रदीजे राषियेजोअनजानिरेडनमनाहतोमारि
एअरुडसभेभ्रम॥२१॥वार्त्ता॥दूतभेजकरकेप्रथम
याकोमनलीजीए ऐसेहीकैसेतरेविदाकरदीजी
ये जोअत्यंतडनमजाकोजानीयेतोतेराषीऐनही
तोसमभ्रमछोडकरकेमारडारीए॥नीलउवाच॥
सोचहुजोयहिहैसरनागत राषीयराजीवलोचन
मोपमत भीतनराषीएतोअतपातक होयतौमात
पिताकुलघातक॥२२॥वार्त्ता॥जेसाचहीयहिसर
नआयोहै तौहेकमलनैनमरतोयहिमतहै जोयाको
राषीयेकोजोभेवानहूरोकौनाराषीये तोअत्यंतपाप
होनहै जैसेमातापिताअरअपनेकुलइनकेमारेते
होतहै॥हनुवंतउ॥हरलीलाछंद॥जानोनभिवी
षनाहिराषसरामसाज॥प्रहिलादनारदहिविसार
दबुधसाज सुग्रीवनीलनलअंगदजामवंत राजाधि
राजवलराजसमानसंत॥२३॥वार्त्ता॥जबहनूमान
मानजूनेकह्योहेश्रीराजारामचंद्रजूइसभवीषन
कोराक्षसमतजानो याकीप्रहिलादअरनारदमुनि
जीकेसमानउजलबुधसोमनहै अरसुग्रीवनीलन
लअंगद जामवंतराजावलइनकेसमानहेराजान
केराजा यहिसंतजनहै॥दोहरा॥कहिनतपायोवा
नसमहनूमानवलवान कह्यो विभीषनवीचही
सवहिसुनायप्रनाम॥२४॥वार्त्ता॥वलवानहनूमा
नजीयाकीसंपूरणवारताकहिवेनापाए विभीषन
नेवीचहीनमसकारकरकेसुनायकेकह्यो॥=॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

124A वभीषनोवाच॥विजय॥दीनदयालकहावतकेस
वहोअतदीनदसागहिगाहो रावणकेअघतेडूबेमे
राअववूडतहोवरहोगहिकाढो ज्योंजगकोप्रहिल
दकीकीरतत्योंहीभबीषनकोजसवाढो आरतवंथ
पुकारसुनोकिनआरतहोजुपुकारतठाहे॥२५॥वा
र्ता॥हेनाथआपदीनदयालकहावतेहो अरमे
अत्यंतहीदीनदसानेगाहीतरहिसोपकरयोहो॥
रावणकेपापोकेसमूहमैंहेश्रीरामजू मैडूवतोहोव
रहीजोरावरिजोरसोमोकोकाढो जैसेहाथीकोअ
रप्रहिलादकीकीरतवधीहैवेंतारेहै तैसेहीवभी
षनकोजसवाढो अथवाजैसेप्रहिलादकीवारीकी
रतवधीहै तैसेहीवभीषनकोतारकेअपनोजस
वधावो हेपीरावानोकेवुपुमैपीरावानहुयोजो
बढोपुकारतोहोताकीपुकारक्योनहीसुनतेहो
अपरंच॥केसवआपसदासहे दुखपैदासनदेख
सकैनदुखारे ताकोभयेतिहमातततहोतुमजाहतजे
हीजहीमांतसभारे मेरहीवेरविचारकहाकवहू
नहिकाहूकेदोषविचारे वूडतहोमहिमोहिसमुद्र
मेराषतकाहनराषनहारे॥वार्ता॥तुमनेआपनोसदा
दुषसह्योहै परदासकोदुषीनहीदेषसकेहो अरजि
समगतनेजहांतुमजिसजिसप्रकारसोसिमरेहो त
होंतिसकोतुमतिसीतिसीतरांभगेहो सोअवमेरीही
वारकहाविचारपरीहै कवीभीतुमनेकिसीकेभी
दोषनहीविचारेहैं मैंवडोजोमोहकोसमुद्रहैतामे
डूवतहो हेरक्षाकेकरणवारेतुमक्योनहीरक्षाकर
तेहो॥हरिलीलाछंद॥श्रीरामअनआरतवंतजान॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लीनेबुलायसरनागतसुषदान लंकेसआपुचिरजी
वहिलंकधाम राजाकहाऊजवलगरामनाम॥२४॥
वार्ता॥ तवरामजूनेताकोआर्तपरावानजानकरके
सरणआपकोसुषदेनवारेजोहैश्रीरामजूतिनोने
बुलायलीउ॥ हेलंकाकेस्वामीलंकाधाममे
तुमचिरउमरवारेहोकरकेजीवो जवतांईजगत
मेरामनामहैतवतांईराजाकहावो॥ दंडकछंद॥
भए दिनतीननीरनिधिकेतिकहआजआयेनमि
लनहमेनिवलतजानकै सगरतेऊपज्योसंकोच
हमकीजोयतसोतोमहाजडगुननाहलेतमानकै॥
हरयेकेभरउहेहरनजानकीकेरनउतेपरकेसो
रायलीजैकहाकानकै मेरेजानयांकेहैगरवया
तेसोचरकोलछमनजूउठोतोधनुषदेहुआनकै॥
॥वार्ता॥ श्रीरामजूकोसमुद्रकेकिनारेतीनदिन
भये सोआजतांईमिलननहीआयो कोहमको
निवलजानकरकेहमतोराजासगरतेउपज्योजा
नकरकेसंकोचकरतेहै सोतोमहामूरषहै कोगु
नकोनहीमानतहै हरियेकेकाहीलैकरकेइसने
सीताजूकेहरणकोधारणकीउहै॥ कोरावण
केरीमैलैगयोहै पांतेइसनेउपरांतमीआदयाकीक
हाकानकरीसो मेरेजानेइसकोइसराकसकभार
वहै सोहेलछमनजूतुमउठोतो धनुषकोमोकोल्या
यदेवो॥ दंडकछंद॥ सीमैआनहाथकैधनुषज
वलछमनजूलेतरघुनाथकेसकलवसुधाहली
हरगयेपवनससससूरजकोकोरलागयोसूक
नसमुद्रग्रेसतेतैसेफूलकीकली॥ ज्वालाचऊउ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

125A हस्र तिजो रवाही के सो राय सव का हू छोडी आस
को पो हो महा वली॥ द्रुम लागे जरन विहंगम मरन ला
गे सुर लागे डरन नरन की कहा चलची॥२९॥ वार्ता॥ तव
लछमन जू न पनुष स्याय कर दीयो श्री राम जू के लेने
ही संपूरण प्रिथवी हालने लगी र पवन थकत ह्वै गयो
चंद्रमा सूरज को कोर क्या ग्रहन अथवा पुंपलग्यो॥
अर समुद्र अ्रैसे सूकने भए जैसे फूल की कली सूके अ
रु प्रगन चारे तरफ ने अ्रत्पंतन जे पसेव पती भई सव का
हू ने आसा छोडी जानो को ऊ महा वली कोप्यो है॥
व्रिछ जरने लागे पक्षी मरने लागे देवता भी डरने लागे
तौ मानुषा की कहा चली है॥ तोटक छंद॥ जव ही रघु
नायक वान लीउ सव सेष विसेष न सिंधु ही ऊ॥
हो॰ तवें द्विज रूप सु आय गयो नल सेत रचे पहिमे वदयो
॥३०॥ वार्ता॥ जव ही राम जू ने वान पकरो तव ही सहि
त विसेषता के समुद्र को लेही यो सोकत होता भया॥
तव समुद्र व्राह्मण को रूप पर आवता भया तिसने
यहि मे व्रही या कि नल समुद्र पै पुल को वांधे॥ दोहरा॥
जिह जिह वानर सिंधु मै गिरगन डारन आन सवद
रह्यो परपूरम हि रावन को दुषदान॥३१॥ वार्ता॥ फे
रजहां तहां वानर समुद्र मे परवतो के समूहों को डारते
है प्रिथवी मे सवद भरपूर ह्वै रह्यो है सो रावण को दु
षदायक है॥ तोटक छंद॥ उछले जो उचे अकास चढै॥
जल जोर दिसा विदिसा न वढै जनु सिंधु अकासन
दी अरवै वहु भांत मना वत यो परवै॥३२॥ वार्ता॥ न
हां जल जो उछलता है ऊंचे को सो आकास मै चढता
है जल के जोर दिसा अर विदिसा न मे वढता है सो मा
नो समुद्र हठ कर के आकास नदी जो है स्वरग गंगा ता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

 124

के चरणोंमे परकरके मनावत है ।। ।।बहुधो मवि
126 मान तिभी जगायो जलजोर भयो अंगरागमयो ।।
सुरसागर मानहु जु थजयो सगरे पट भूषन लूटल
मी ६४ यो ।।वार्ता।। आकासमे सभ विमानै जगाए नहां तैंलं जा
के जो जोर है सो अंगरागकया सुगंधोंमे मिलगऐ गा
तोजल भयो सो मानो देवता समुद्र ने जुधमे जीत ली
ए है सो तिनोके ऊचे हैं कर भूषण अरु वस्त्र लूट ली
ए है ।। तोटक छंद ।। अति उछल छछ त्रिकूट छयो ।।
पुर रावन के जल जोर भयो तब लंक हनू बल गाय द
ई ।।नल मानहु आय बुझाय लई ।। ३४ ।।वार्ता।। अं
त उछल तिआ जो है छिटा तिनो ने त्रिकूट परवत छा
य लयो तो ने रावणके पुरमे भी जलको जोर भयो तब
जो हनूमानजू ने लंकामे आग नलायदई सो सो मानो
नलने अब आप करके बुझाय लई है ।। ।।लगसेत
जहां तिहसो भगा है सरतान के पेर प्रवाह बहै प्रतिदे
वन दीरत देष भली पितुके घर मानहु रूठ चली ।। ३५ ।।
वार्ता।। नहां लाग्यो जो है पुल सो जहां तहां ते ऐसे सो भा
के ण हिन है अथवा सोभाको गहे हूए जो पुल लग्या है
उलटे सो जहां तहां दे वनदी उरके प्रवाह बहते भये सो मा
नो देवनदी जो है आकासगंगा ता सो [illegible] पत समुद्र की
प्रीत देषकरके पिताके घरको रूठ करके तो को आइ छी
यां चली आई है नई सोतनके दुषते ।। ।।सभ सागर ना
गर सेत रची बरने बहु धा जुन सक्र सची तिलका बल
सी सुभ सी लल से मन मानल कि धे उरमें बिलसै ।।
।।३६।।वार्ता।। तब फूरण जो है समुद्र ता पेच तुरन लन नी
लने पुल रची है ताको बहुत प्रकार सो कब बरणत हैं
मानो ईडा लिके सहित ईद है पुल ईडा ली समुद्र ईद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

126A अथवासीसपैसुभतिलककीयगतहैकैऊरमैमा
लाहै॥तामरस॥ऊरतेसिवमूरतश्रीपतलीनी॥सु
भसेतकेमूलअधिष्ठितकीनी इनकोदरसैपरसैप
गसोई जगसागरकेपगपारसुहोई॥वार्ता॥फेरता
केऊरतेअथवाअपनेऊरतेजाकोध्यानकरतेहैतेस
सोसिवजूकीमूरतश्रीरामजूनेनिकाललई सोभा
ईमानपुलताकेमूलयैअवअस्थापनकरी अरक
हितेजोइनकोदरसनकरेगो अरइनकेचरणकोसप
रसकरेगो सोतरकरकेजगतरूपीसमुद्रकोपारहोवे
गो॥दोहरा॥सेतमूलसिवसोभिएपूरनपरमप्रका
स सागरजगतजहाजकेक्रियेकेसबदास॥२७॥
वार्ता॥जबबडेप्रकाससौपुलकेमूलविषेसिवजूसो
भतेभए जगतरूपीजोसमुद्रहैतामैजहाजकेमल्ला
हहैपकरवेके॥तारकछंद॥सुकसारनरावनदूतप
ठायो कपिराजसुजायसंदेससुनायो अपनेघरजै
यहुहोसमभाई जमहूँपहँजोलरईजुनजाई॥२८॥
वार्ता॥फेरसुकसारनरावननेदूतभेजे तांनेसुग्रीव
कोसंदेसोसुनायो तुमअपनेघरकोमुहजावो यहि
लंकातोजमतेभीनाहीलईजावेगी॥सुग्रीवऊवा
च॥सुंदरीछंद॥अबजेयेकहोनकहूपलदेषो॥
जलहूथलहूरघुनायकलेषो तुमवालसमानसहो
दरमेरे हनतहोकुलसोतनप्रानननेरे॥२९॥वार्ता॥
तबसुग्रीवनेकह्यो हमअबकहाजामेकहूभीअस्था
ननहीदेषीताहै क्योजलअरथलसमअस्थानमै
श्रीरामजूहीदेषीतेहै तुमबालीकेसमानमेरेभाईहो
कुलकेसहितहुमारेसरीरअरप्राणोकोहरेगो॥अ

यवाननक्याविसतारसें॥ ॥सबरामचमूनरसिं
घहिआई छवरिछनकीयरअंवरछाई वहुधौंक "सु
रावनकोजुवनाई फिरलंकमनोवरयारितआई॥
वार्ता" ॥४०॥फेरसंपूरण श्रीरामजूकीसेनासमुद्रनरकेआ
वती भई रिछोकीसेमा पृथ्वीअरआकासमेछा
यगई वहुतप्रकारसें सुकसारनैको वताईहै फिर रावन"
करके लंकाविषमानो अरघारितआईहै॥कवित्त॥
दंडकछंद॥कुंनलललतनीलभ्रिगुही यनुषनैनकु
मद्रकटाष्याकानसवदसदाईहै सुग्रीवसहिततार
अंगदादभूषननेम पदेसकेसरीसुराजगतमाईहै॥
विग्रहानुकूलसवलछलछरिछवलरिछराजमुषी
मुषकेसोहासगाईहै रामचंद्रचमूकिधोराजश्रीवभी
षनकीरावनकीमीचुदरकूचलीआईहै॥४१॥वार्ता॥
नीलजोवानरसोईकेसवहै फेर यनुषसोइताकीभ्रि
गुटीहै कुमदजोवानरहैसदावलकेसहितजोकानहैता
मेसोईकटाछहै सुग्रीवकेसहितहैसेनावानरोकेरजि
उाके राजश्रीसुंदरग्रीवाके तारवानरसोईनेत्रोकीता
रकाहै अंगदादिकसोई अंगदक्याबहूटेआदभूषन
हैं केसरीवानरसोईकेसरीक्यासिंधसीकमरहै सुग
जवानरसोईताकीगजसीगातहै विग्रहिक्याजुधकेअ
नुसारजोभएहैलाषलाषहीवलवानरिछसोईता
केविग्रहक्याममरीरकेअनुसारहीरिछराजक्याचंद्रमु
षीकोमुषहै सोअसीयहिश्रीरामजूकीसेनाहै किवि
भीषनकीराजलछमीहै अथवारावणकीमिचुकू
चदरकूचचलकरकेआईहै॥तोरकछंद॥रावनसुम
स्यामलननमंदरपरसोभिए मानहुदससिंगजुतं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

127A कलिंदगिरिविमोहिरो राघवसरलाघवगनछत्रमु
कत्यो हयो हंससवलंग्रससहितमानोउडकैगयो॥
॥४३॥वार्ता॥तिससमेसुभस्यामहैसरीरजाकोसो
रावनमंहरमेसोभायमानहोतभयो सोमानोंस्त्रिगोदश
केसहितकलिंदपरवतहै तवश्रीरामचंद्रजूनेसीघ्र
गनसोबानचलायकेरावनकेछत्रपरमुकटग्रेसदू
रकीए मानोबलवानजोहैहंससूरजग्रथवाहंस
पछी सोअंससकिरणोकेपछी ग्रपनेपुत्रोकेसहित
उडकेचलेगये॥ ॥लजतघलतजसुपलभज
भोनमेगयो लछनप्रभुनछनगिरदछनपरसोभि
यो लंकनिरषग्रकहरष परमसकलजीलह्यो॥
जाहुसुमनरावनपैग्रंगदसौयोकह्यो॥४४॥वार्ता॥
तवलजावानहोकरकेसोदुष्ट तिसग्रस्थानकोतज
करकेभजकेघरमेचल्योगयो लछमनजीकेस्वामी
श्रीरामजू तिसीछिनविषेदाहनेउरजोपरवतहै॥
तापैसोभायमानहैतेमऐ ग्रथवादछनक्याचतु
रजोहैसो तवलंकाकेग्रंककयाचिंनदेषकरकेप्र
संनहोयकरकेसंपूरणमरमचित्तमेपायो तबबुध
वानजोग्रंगदताकोकह्यो तुमरावणपैजावो॥ब्र
ह्मरूपकछेद॥रामचंद्रजूचकतस्वरनलंकदेषदे
ष रिछवानरलियेरडोरचारहूविसेष मंजकंजगे
पछवयभोरभीरसीविसाल केसोदासग्रासपास
सोभजेमनोमराल॥४५॥वार्ता॥सोनेकीलंकादेष
देषके श्रीरामजूचकृतहोयरहेहै रिछग्रबानरे
कीजोहेक्यानोभयानकसोचारोतरफहै विसेषतासे

सोमंजुक्याउजलजोहैकमलताकीगंधकेलोभकरके
भमरोकीविसालभीरसीहै अथवाआसपासमानो
हंससोभतहै॥ ॥ताम्रकोटलोहकोटस्वरणको
टआसपास देवकोपुरीछिरीकिपरवतारकेविला
स वीचवीचहैकपीसवीचवीचरिव्यजाल लंकके



न्यकागरेकिपीतनीलकंटमाल॥४६॥वार्ता॥तिसलं
काकेताम्रकेकोटअरलोहेकेकोटअरस्वरणकेकोट
जोहैआसपाससोमानोइंद्रकीपुरीहैजामेइंद्रकेवि
लासहैवीचवीचतोवानरोकेराजाहै अरवीचवीचरि
छनकेसंवूहहै सोमानोलंकारूपजोहैकन्याताके



गरविषपीतअरनीलरंगकीगलमेमालाहै॥४७॥ इ
तिश्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीराम
चंद्रचंद्रकायांलंकादरसनोनामपंचदसोप्रकासः॥१५॥
॥दोहरा॥याषोडसप्रकासमेकेसवदासप्रकास रावन
अंगदसोविवधसोभनवचनविलास॥१॥वार्ता॥इससो
लसप्रकासमेरावणसेंअंगदकेवचनहै॥दोहरा॥
अंगदकूदगएतहांआसनगनलंकेस मनोमधुपक
रिहाटपरसोभतस्यामलभेस॥२॥वार्ता॥जहांआसन
ओ पैवैठाहूआरावनथा तहांअंगदकूदकरकेजाताभया
सोमानोकमलकेकरिहाटककेसरहै तापेस्यामरंगको
भमरसोभतहै॥प्रतिहारसनाराच॥पढोविरंचमौनवेद
जीवसोडरे कुवेरवेरकैकहीनजछमीरमंडरे दिनेस
जायदूरवैठनारदादिसंगहीं नबोलचंदमंदवुधइंद्रकी
समानहीं॥३॥वार्ता॥दूतकहितहै हेब्रिसातूवेदकोमो
नहोकरकेपढो हेब्रहसपतनूसोरकोछोडदै हेकुवेरतो

128A कोकैवारकहीहै जिछनकीभीरकोनामडनकरहेसूरज
तेभीदूरजाकरबैठनारदादिकोकेसंगमे हेमदचुपवारेवे
दूमातेनाबोलइहांईदुकीसमानहीहै॥तोमरछंद॥अं
गदयोसुनवानी चितमहारिसमानी ठेलकेलोकअनै
से जायसभामेबैसे॥४॥वार्ता॥ऐसेंअंगदजूदूतनकी
वानीसुनकरकेचित्तमैबडेकोपकोमानतेभए अनेसेक्या
ऐसेवैसेलोकथेतिनोकोपकेलकरकेसभामेजायबैठ
तेभए॥प्रसस्त॥चंचरीकछंद॥कौनहोपठाएसुकौनह
ह्यातुमैकहकामहै॥अंगदोवाच॥जानवानरलंकना
यकदूतअंगदनामहै॥प्रसस्तहोवाच॥कौनहोवलिबा
पकैहमदेहपूछसबैदहौ॥अंगदोवाच॥लंकजारसि
धारअछगयोसुवातविथाकहौ॥५॥वार्ता॥तबप्रसस
तनेकह्योतुमकौनहोअरकिसनेभेजेहो इहांतुमारोक
हाकामहै तवअंगदजूनेकह्योमेरेजानतेवानरहै॥
लंकाकेस्वामीकोमेदूतहो फेरप्रससतनकह्योवहकौन
थाजाकोबापकरहमनेदेहअरपूछदाहीथी तब
अंगदजूकह्योलंकाकोजारकेअरअछकोमारकर
केजोवहिगयोसोतानेबातपूछहीकहीहै॥ ॥कौन
भांतरहोतहांतुमराजप्रेषकजानीयो लंकलायगयो
जुवानरकौनतनामवषानीयो मेघनादजुकोपकैवहमा
रिडोवहुधांनबै॥अंगदोवाच॥लोकलाजतूकोरहे
अनजानियेनकहाअबै॥६॥वार्ता॥फेरमहोदरबो
ल्योनहांतुमकिसप्रकाररहितेहो राजाकेभेजेहूए
तुमआएहोजोवानरलंकाकोअगनलगायगया
था तोकोनहैसुकहो तवसोमेघनादनेकोपकरके
कै नाम

वहतमारुयो था तवअंगदनेकह्यो सोलोकलाजकै॥
छिपकरहितहै अनंतजानीतानहीहैकहाहै॥राव
नोवाच॥कौनकेसुत॥अंगदोवाच॥वालके॥रावनो
वाच॥कहिकौनवालनजानीये॥अंगदोवाच॥कांषचा
पतुमैजुसागरसातन्हातवषानीये॥रावनोवाच॥हैक
हावहिवीरअंगद॥अंगदोवाच॥देवलोकवसाइऊो॥
रावनोवाच॥क्योगयो॥अंगदोवाच॥रघुनाथवानवि
मानवैठसिधाइऊो॥२॥वार्ता॥फेररावनकह्यो तुमकौन
केपुत्रहो अंगदकह्यौवालीके फेररावणकह्यो सोवाली
कौनहैहमनहीजानतेहै अंगदकह्यो सोवालीहैजोतुम
कोकांषमेदवायकेजो सातसमुद्रोमेसनानकरताहोता
सा फेररावनकह्यो हेवीरअंगद सो अवकहाहै अंगद
नेदेवलोकमेवतायो रावननेकह्यो सो क्योगयो है अंग
दनेकहारघुनाथजूकोजो वानरूपी विमानहै तापर
वैठकरके सिधायोहै॥रावनोवाच॥लंकनायककौ
अंगदोवाच॥भवीषनदेवदूषनकोदहै॥रावनोवाच॥
मोहजीवनहोयक्यो॥अंगदोवाच॥जगतोहिजीव
नकोकहे॥रावनोवाच॥मोहिकोजगमारहै॥अंगदो
वाच॥दुरखुयतेरीजाईये॥८॥वार्ता॥फेररावनवो
ल्योकितेजोकह्यो मेलंकनायककोदूतहो सो लंकनाय
ककौनहै तवअंगदजूनेकह्यो सो विभीषनजीहै॥जो
देवताउंकेदुषकोदूरकरनहै अथवादेवदूषनजोरा
कसतिनकोनासकरनहे फेररावनकह्यो सो मेरेजी
वनेकैसेरजाहोयगो॥अंगदकह्यो तोकोजगतमेजी
वतोकौनकहतहै रावनकह्यो मोकेजगतमेकौनमारेगो॥
अंगदकह्यो तेरोदुरखुयहीतोकोमारेगो॥तवरावणक॥

२ रावनोवाच॥कौनवालिकहावंतकौवीरवेअंगदवताईसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

129A हयोहैवीरनेकोकौनवानकहायकरभेज्योहैसोवेग
वताको॥अंगदोवाच॥श्रीरघुनाथकोवानरकेस
वआयोहैअकनकाहूहयोजू सागरकेमदफारचि
कारत्रिकूटकेदेहविहारकयोजू सीयनिहारसिंघा
रकेरछससोकअसोकवनोहदयोजू अछकुमार
हिमारकेलंकजरायकेसोकपिजातभयोजू॥५॥
वार्ता॥नवअंगदकहयो श्रीरामजूकोइहायकवान
रआयाथा सोरतीकभीकिसीनेनामारिआसमुद्र
कोमदभीफारकरकेचिंघारमारकेत्रिकूटयैअपनी
२ देहीकोविहारकायो कहापेलकीयोफेंसीजूको ता
देषकरकेअररछसनकोमारकरकेअसोकवन
कोसोकदायो कहाफलषायतोसो अछकुमार
कोमारकरकेअरलंकाकोजरायकरकेसोवानर
जातामया॥अंगदोवाच॥रामराजानकोराजआ
योइहांथामतेरमहाभागजागेअवै देवमदोदरी
कुभकरनादहेमत्रमत्रीजितपूछदेषोसवै रावोउ
जानकोभानकोवंसकोसोथिसलोकमेलोकपरलो
ककोस्रानकेपायपरोदेसलैंआसुहोईसिसीताहिले कौसले
उकको॥१०॥वार्ता॥राज्याकेराजाजोहैंश्रीरामचं
द्रजूसोइहांआएहैं तेरेयरविषेसोअवमहांभागजा
गेहैसोदेवीजोहैमदोदरीअरकुंभकरणादिकरिदेवे
मित्रअरवजीरजितनेहैं तिनेकोपूछकरकेदेषले
वो जोजातकाहोयअरअपनेसोभाकोहोयअपने राजा
वंसकोहोयसोराषोए सोतेइसीलोकमैअपनेलोक
अरपरलोककोसोयले आयकरकेइसवक्तश्रीराम
जूकेचरणोमेपरदेसकोलैकरकेअउकका अस्या

नकै लैकरकै अरसो यह है सो ताम्रकै लैकरकै ॥रावन॥
लोकपालनके सरसो सोच ब्रिह्मा रचै अपनी अपनी सीवसे
रहै चारवहै ये विस्नु रख्या करै वात सांची अहै वेदवा
नी कहै तादिन भूअंगदहि देवदेवेस सो विस्नु ब्रिह्मादिदे
रुद्रन्ह संचरे ताहि है छाडकै पायका कै परो आजसं
सार तेपांय मेरे परै ॥११॥वार्ता॥ लोकेसकय ब्रिह्मासो
लोकनको विचार करर चतहै सोसो लोक अपनी अप
नी हदपर रहते है तिनेको चार भुजनके धारकारके
फेर विस्नुजु रछ्या करते है सो यहि वात साची है क्यो या
को वेदवानी कहित है तिससे सारको ब्रिगुटि ब्रोके
चहावने हीकरके देवता अरदेस कया ईद्र अर विस्
ने ब्रिह्माने आदि दैकरके सभको सिवजु सिंघार करने
है तिस सिवजुको मै छोडकरके किसके चरणो मै परो आ
ज संसार तो सब रणमेरे चरणोमै परत है ॥रावन मेदरा॥
रामके काम कहा रिपुजीतन कौन कहा रिपु जीत्यो पाम
हा वालवली छलसो त्रिगुनदर्गर वसु है दुजहीन
रहा दीनसु को छिनछ ब्रह्मल्यो विनप्रान न है वैहेरा
जकी डाहे है यह कौनव है विसख्यो जिन लेषत है तुम
को पलीयो है ॥१२॥वार्ता॥ रावणने कह्यो रामके
क्या काम है अंगद कह्यो शत्रुनको जीतने है फेररा
वण कह्यो कहा कौनसो वडो शत्रु जीत्यो है एक वाली
वली था सो छलसो मार्यो है अर परसरामको गरव
हर्यो सो ब्राह्मण दीन ही था तव अंगद कह्यो सो दीन
कैसे प्रिथवीमै जाने छत्री मारे अर सहस्रार्जुन वि
नापाणोके कर दीयो फेर रावण कह्यो सो कौन थे सह
स्रारजुन अंगद कह्यो वह भी तोको भूलगयो जाने
बलते हीने तोको वांध लीआया ॥अंगदोवाच॥=॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

130A

विजया॥ सिंधु तस्यौ उनकौ वेद रानुमपै पनु रेषैन इ तरी पनुम
वानर वा पन सो न वं ध्यो उन वार पवां धकै चाटक री॥ श्री
रघुनाथ प्रताप की वातनु मे दस कं पन सकु परी नेलनतू
लैं पूछ जरी न जरी जरले क जराउ जरी॥ १३॥ वार्ता॥ फेरअं
गद कह्यो रावण श्री रामजू को एक वानर तो समुद्र को
नरगयो अरनैं रते लछमनजू की षैची एक धुनष की ली
क भी ना तरी गई अरहनुमवानर को बांधवे लागे सो भी ना
ते हो सको ऊनें समुद्र बांधके रस ना कर दिंग्रा अवतोर्ई
भी श्री रामजू के प्रताप की वारता हे रावण तो को ना सम
कपरी ने लंका रके अरहू ईयो करके जो नुमने वांनैं की
पूछ जरु ही थी सो तो ना जरी तुमारि जहां अंकी जरी हुई
लंका जरगई॥ मेघनादोवाच॥ विजया॥ छाड दयो हम
ने वेदरावहि पूछ के फारन लंकजरी भीरमै अप्रछमस्यो
चय वालक वार हि जाहि प्रसंसन करी नालवे पे अर
ति पर वे ध्यो वहि चेटक विक्रम कौन करी वानर कौन
र को विनकारन मे सुरनायक जीत्यो अरी॥ १४॥ वार्ता॥
तव मेघनाद कह्यो सो तो वानर हम ने ही छोड दीयो था
ता की पूछ को अगन सो लंका जरी थी अर अछै तो वा
लक था सो भीरमे दबकर के मरगयो ता ने विषा ही अप
नी जाय कर के ऊसतन करी अरहनुमान स्वामी ने जो सात
द्र ताल मेदे अरसमुद्र बांध्यो सो वहि चेटक है कहां मासो ते ते
य मे पराक्रम ता को न सी करी है वानर क्या है मानुष
क्या है वलके कारण मे ईद्र जे हैं श तु जीत लयो॥
अंगद विजय छंद॥ चेटक सो पनु मेगकी यो प्रभु रावरे
को अनजीरन ह्यो वानस मेनर रह्यो पचकै तुमजा सहि
पैनन जो घ्ल हो॥ रावणोवाच॥ वानस कौन वली व
लकौ सुत वै वल वानन वांधल पे वेद्रस तो जिनकौ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सतौ
१३१

131

129

दिरवेरनना चननायके छाडदये ॥१५॥ वार्ता ॥ अंगद
कह्यौ हां वहै चेटक है सो विना वल के तुमारे स्वामी सिवकौ
धनुष जिनेनै तोर दीयो है सो वहि सालको अनेन पुराने
पर नाणके समे न तुम हे रावन जिस पर पत्र रहे थे तिस
ने थलन ही तज्यो था रावण कह्यो सो बालको न है बली
वलका पुत्र था रावण बोल्यो वही वल जो वाउ नेने
बांधलीया था वही था जिसके दासे ने चिरकाल नो
कौ ना चन चाय के छाड दियाथा ॥ रावनोवाच ॥ विजय ॥
नीलसुषेनहनूंऊनकेनल औरसवै कपिपुंज तिहारे ॥ आ
ठहू आठ दिसा वल दै अपनो पद लै पिन जाल गमारे तो
सो सहन हि नाय केवाले अपून नकौ पदवी जो पथरे अंग
द संग लै मेरे सबै दल आजु हि क्यो न हने वयवारे ॥ १६ ॥
वार्ता ॥ नील अरु सुषेन अरु हनूमान अरु नल ए हजाम
वंत [illegible] सुग्रीव के हे राम लछमन जू के संग और सब वा
नरे के सबू हतु मारे है सो इन आठन को आठही दिसा को
वल दै कर के अपने अस्थान को पावो जिस वास ने तेरे पि
तार नो नै मारे है तेरे जैसे पुत्र को ऊपजाय कर के वाली
अपुत्र की पदवी को धारत है हे अंगद मेरे सपूरण द
ल संग लैकर के हे बालक ऊमर वारे आजही तिनको
क्यों न ही मारत है ॥ दोहरा ॥ जो सुत अपने वापको वैर न
लेय प्रगाप्र तासो जीवन ही मर्यो लोक कहै तुत्राम ॥
॥१७॥ वार्ता ॥ जो पुत्र प्रगट होय कर के अपने पिता को वै
र नहीं लेत है ताको लोक जीवन ही को मर्यो कहत है
यां ते तू भय तज ॥ अंगद ॥ दोहरा ॥ इनको विलगु न मा
नी रे कहि के सब पल आय पावक पानी पवन प्रभु
जो अस आपत्यो साथ ॥१८॥ वार्ता ॥ अंगद कहा तूने का
बुरा ना मानीये आपी पल भी आगन जल पवन स्वामि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

131A

जो वस्त्र सा य भी होय तो भी विष है ॥ रावनोवाच ॥ दुत
विलं वता ॥ ३ रस अंगद लज कछू गहो जनकयान
कवान त्रिया कहौ सहित लछमन राम हि संग्रहो सक
लवानर राज तुम के करो ॥ १९ ॥ वार्ता ॥ हे अंगद तुम ऊ
रमें कछु लज्या धारन करो पिता के मारवे की वात को
कुछ कहत नहीं सो च ही कहो हौ वैर लैवो जोग ही है ॥
लछमन के सहित राम को मारो तब मैं तुमको समवान
रो को राजा करोंगो ॥ अंगदोवाच ॥ निसपाल कौ छंद ॥
शत्रु समान मित्र हम चित्त पहिचान हौ दूत विथ भूत कछ
हून करस्यान हौ आप मुष देष अभिलाष मुष भा
षहू राष भुज सीस तव और कछु राषहूं ॥ २० ॥ वार्ता ॥
अंगद कह्यो चित्त मैं शत्रु के समान तो को मैं पहिचान्यो
है परहून भून विधि क्या ॥ हौ विधि कौं कहे जो वन स
कै को प्रिथम अपने सीस अर भुजन को राष फेर औ
र को भी राषी ॥ रावनोवाच ॥ मेरी वड़ी भूल सो काह कहो
रे तेरो कह्यो हू न सभे सहारे वे तो सवे तोह चाहे ग्रुमा
स्यो जारो कह्यो तो हू जो देव जास्यो ॥ २१ ॥ वार्ता ॥ फेर र
वण वोल्यो य हि मेरी ही वडी भूल है सो किस को कहे
रे अंगद जो तेरो कह्यो दून जानके सम भस हिन हो व हि
तो सपूरण तो को मास्यो चाहत है क्यो देष और को नही
भेज्यो है तू ही तो ही को भेज्यो सो या ते मैं तो को कहा
जारे तू तो देव ने ही जा र सो है क्यो वाली को पूत है ष
हू नवन्यो है ॥ अंगदोवाच ॥ रूपेद्रवज्रा छंद ॥ नाराच
जो वे श्री रामचंद्र ऐगो अब सेष माथे कट भू परैंगे सिषा
सिवा स्वान गहे विहारी फिरे च हु और निरे विहारी
॥ २२ ॥ वार्ता ॥ अंगद कह्यो जब श्री रामजू पनुष पेवान को
धारन करैगे तब तेरे सभ माथे कट कर प्रिथवी मै परैगे ॥

कबी भी हृदै मैं न दीलयावतै है ॥ अपनी
सुमदेवकसैवा हिनाउ सभी ॥ ३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तोरीचोटीको गिरहीअरकुनेयकरेगो चारोनरफ
फेरेगोहेनरकमेचरणपारणवारे॥रावनोवाच॥भुजं
गप्रियानछंद॥महांमीचदासीसदापायधोवे प्रति
हारहूके कृपासूरजोवे छपानाथलीनेरहेछत्रजा
को कहावापरोशत्रुसुग्रीवताको॥२३॥वार्ता॥म
होमोततोदासीहेमेरीसोसदाचरणधोवतहै अरि
प्रतिहारक्याछरीदारहेकरके सूरजकृपाकोदेषतहे
अरचंद्रमाछत्रकोलीयेहूयेरहितहे ताकेआगेकंगा
लसुग्रीवशत्रुकोनहे॥ ॥सकामेघमालासिषी
पाककारी करेकोतवालीमहांदंडधारी पढेवे
दब्रिह्मासदाद्वारजाके कहावापरोशत्रुसुग्रीवता
के॥२४॥वार्ता॥मेघमालातोहमारेसकाहे जलभर
नवारो सिषीक्याअगनरसोईकेकरनवारेहे अरव
डेदंडकेधारनवारोजोधरमराजसोकोतवालीहे॥ करत
सदाद्वारकेविषेजिसकेब्रिह्मावेदनकोपठनहे ता
केसुग्रीवकंगालशत्रुक्याहे॥अंगदोवाच॥विजय॥
पेटचढेगोपलनापलकाचढेगोपालकहूंचढेगोमोहि
मढेरे चोकचढेगा चित्रसारीचढेगोगजबाजचढेगो
गुरगरवबढेगोरे व्योमविमानचढेईरहे जिहकेसब
सोचकहोनपढेगोरे चेततनाहिरह्योचढचित्तसु
वाहनमूढचितहूचढेगोरे॥२५॥वार्ता॥प्रथमतू
पेटचढेगोक्यापेटमेआयो अथवापेषल्योफेरपा
लनेपेफेरपलंगपे फेरसिंघासनपेचढेगो तवमोह
मेकोयागया फेरचोकीपेचढेगा फेरचित्रसारीनमे
वेठेगा फेरहाथीघोडेनपेचढेगा तवमारीगरवबढ्या
फेरआकासमेविमानोपरचढेगोईरहितोभयो पर
मूरष अपनीजिहक्याजिहकासोकेसबक्याश्रीभ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

132A गवानकोनामकवीनापढगा रेमूरखअवनोईनहंचे
ननाक्या विचारतानहीहै चितमैचढहीरह्योहै वपता
हीजाताहै याअवनेरोचितभीचढरह्योहै असस्थिर
नहीयोनेचितापरचढ्योचाहतहै ॥रावनउवाच॥भु
जंगप्रयात॥छंद॥निकारेसुमेयालीयोराजजाको॥
दीयोकाढकैजुकहाज्ञासतांको लीपवानरालीक
होवाततोसो सुकैसजुरेरामसंग्राममोसो॥२५॥वार्ता॥
जोभाईनेनिकारदीयोहै राजजांकोलेलीयोहै काढ
दीयेहेतांकोमोकोकहाभावहै एकवानरोकोप
गतजोलेकरकेआयोहैजुयकोसोहैअंगदमैक्या
तोसोवातकहोसोरामसोजुधमैकैसजुरेगो॥अं
गदोवाच॥सवैया॥हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगां
ऊऔठांऊकोनामविलैहै तातनमातनपुत्रकलि
त्रनचितनअंगनसंगनरैहै केसवकामकोरामवि
सारतऔरनकामनकामहंऔहै चेतरेचेतअजोचि
तअंतरअंतकलोकअकेलोईजैहै ॥२६॥वार्ता॥न्हू
कहितहैमेरेहाथीघोडेहैसोरेमूढअजोअवभीचि
तकेअंतरवीचचेतकरि अंतकजमताकेलोकको
अकेलोईजायगो हाथीतेरेसाथीनहीहोहिगे॥
औघोरेसाथीनहीहोहिगे औचेरेसाथीनहीहो
हिगे औगांवनेरेसाथीनहीहोहिगे औयेठामको
तोनामविलायजायगो फलानोठौरवैठनकीहवे
लीथी यहिनामनहीरहेगो औरहीकोनामहोयगो
औसेहीपितामातापुत्रमित्रयनुअरएतेरेअंगहैसो
भीसंगनारहेगे औरसभनिकामनिकेमाहै कां
मनहीआवेगो श्रीरामचंद्रजीसंतयहै औरझूठहै॥
॥रावनोवाच॥ भुंजंगप्रयातछंद॥डरैगायविषेअना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

येतभजै परद्रव्यछांडे परस्त्रीहलाजै परद्रोहजा
येनहोएरतीको सुकैसलखेषकीनेजनीको॥२७॥
वार्ता॥जोगकूआस्त्रासोतेडरतहै आरआनाथके
आगेनेभाजनहै तापैशास्त्रनहोकरतहै परायद्रव्य
कोत्यागनहै आरपराईस्त्रीतेलाजकरतहै पराये
द्रोहजासेएकरतीकभीनहीहोतहै साजनीकोमे
षकीपहूणकैसेलरेगोमोरेसंग॥रावणोवाच॥दोहरा॥
गदकीयोमेषेलहीहरिगिरकेसवदास सीसचढाये
आपमेकमलसमानसहास॥२८॥वार्ता॥सिवजू
केपरवतकोहेअंगदषेलहीमेहेअंगदगेदसमकर
दीयोहै आरकमलकेसमानमैनेआनेसीससहि
तहासकेसिवजूकोचढायेहे॥अंगदोवाच॥दंडक
छंद॥जैसेतुमकहितउठायोएकगिरचरऐसेकोटि
कपनकेवालकउठावही काटेजूकहितसीस
काटनघनेरयाद्युमगारकेषेलेकहामटपदपाव प
हीजीन्होनेसुरेसरनसापरिषनारहूंकीसमफहूं
द्विजनानेसमफावही गर्हेरामपांयसुषपायक
रैतपीतपसीताजूकोदेहहेवदूंदभीवजावही॥
॥२९॥वार्ता॥हेरावणजैसेतूकहितहेमेएकपर
वतउठायोहै ऐसेकरोरंहीपरवतोकोवानरोके
वालकउठायलेतहै आरजोतूकहतहैमेसीस
काटेहै ऐसेवहुतेहीद्यांद्यकयाकाजीगरअरम
गरकयावहैरूपीऐषेलतहैकाटकाटकै साकया
सूरमेकीपदवीकोपायलेतहै फेरतूकहितहैमे
ईद्रजीत्योहैरणमे ताकोतोरिषीस्वरकीस्त्रीको
स्रापथीसोआगेहीमरयोहुयोथो हेरावणतुमस
मफोहमब्राह्मणकेनातेकरकेसमफावतहै नेआ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

133A सरणहै श्री रामजू के चरणकमलो को पकरो जिनके
वाले सुखपायकरनपीनपकरनेहै अरसीताजू को दे
वो जो देवतानगारो को बजावे॥ रावनोवाच॥ चंद्रव
सन॥ नथीजथी विप्रनकि प्रसंचरो अदेवदेवोसवदे
वहो करो सो पानदेहो यहि नेमजो यरो अमानुषी
भूमअवानरीकरो॥ २०॥ वार्ता॥ फेररावणकह्यो मैतथी
जथी ब्राह्मणइनोको सीघ्रसंघार करोगो संपूरणजो दे
वी है तिनेको राकसनकी देवी करोगो परमै सीताजू को
नहीं देवोगो यहि नेम चित्तमे धारतहो प्रिथवी को विना
मानुषो के अर विना वानरो के करोगो॥ अंगदोवाच॥
विजय॥ पाहननते पतनी कर पावन टूटक स्रोयनु द्वेहर
कोरे छत्रविहीन करो छिनमे छितगरवहर्यो तिनकेब
लकोरे परवतपुंजपरनके पातसमानन रे अजहूं थ म
रकोरे ह्ये यनरायनहूं पेन जो गुनको नरहों रवानर
को रे॥ २१॥ वार्ता॥ फेर अंगदकह्यो रे जिसने पाषानप
विन्नर स्त्री कर दई है अर जिनोनै नेरे गुरसिवजू को जो ध
नुषताको टूटुक ढेकर दीए है अर जिसने प्रिथवी छत्री
योते विना कर दई हैं एक छिनमे तिनको गरबको बलजि
नोनै दूर करदीआ है फेर परवतोके संमूहकमलनीतु
के पानके समान तरे है जा के जिनो के अवतांई तेरे यठका
पर रह्यो है जो गुन श्री नारायणजू पेते भी नाहीं वेसो जि
नमे है सो हे मूरष इनोमे मानुष अर वानर कौन है॥ राव
नोवाच॥ चंचरीक छंद॥ देहु अंगद राजतो कहु मार वान
रराजको वंपदेहु भवीषनै अर फेर सेतसमाजको पुं
छजार हि अष्ट्यरि पुको पांयलागे रुद्रके सीयको नव दे
हरम हिजाय पार समुद्रके॥ २२॥ वार्ता॥ जो हे अंगद तो
को तो राज दे देवें सुग्रीव को मार देवे अर भवीषनको

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१३४
134

140

बांधके मोको देवे अरु कुल के समाज को तोर देमे अ
छ को जो शत्रु हनूमान ताकी पूछ जार देवे अरु सिव
जू के चरणो मे परो अरु समुद्र के पार चले जा मैं तो मे सी
ताजू को देवोंगो ॥ अंगदोवाच ॥ लंक लाय गयो बली
हनुवंत संतन गाय यो सिंधु बांधन सो पके नल छीर छी
ट वहाइयो ताहि तो हि समेत अंब थु षार हो उ लंक लीक
रो आज राज कहा भवीषन वैठहे तिन ने हरो ॥ ३३ ॥
वार्ता ॥ रे रावण प्रथम हनूमान आय करके लंका मे अ
गन लगाय गयो सो वल वात संतन मे गाय गये फेर समु
द्र को वनाय कर के बांधते हूये नल ने जल की आं छी टे
सो लंका पुर वहाय दीयो अव मे रीषा रहे सो रेअंध मै
तिस लंका को तेरे समेत उषेठ कर डारे पर आज वभीष
न कहा वैठके राज करेगे तिनो ते डरत हो ॥ दोहरा ॥ य
हि कहि के अंगद तवे उठ के रोप्यो पाय ऊठे परन छर
जाय है सैन सहित रघुराय ॥ ३४ ॥ वार्ता ॥ ऐसे कहि के
हठ कर के तब अंगद ने चरण पसारयो कह्यो जो य
हि भूमते उठावे तो मेरे प्रण है सेना के सहित रघुनाथ
जू घर को मुह जामेगे ॥ दंडक छंद ॥ सहि गिर हालो ह
द मेरु गिर हालो अरु रुद्र गिर हालो अचला अचल
हालई सपतपाताल हालो जलथाल माल हालो
थल थल हालो जल ऊचके उछालई केसो दास
लंक को सकल दल वल हालो दस सीस हालो जिह
ईस प्रतिपालई भुवलोक हाल अरु भुवलोक हा
ल सव काल वल वंड के को पग येन हालई ॥ ३५ ॥ वा
र्ता ॥ तब परवतहू हनने हालन लगे अरु सुमेर भी अप
नी हद मे हाल्यो कैलास भी हालतो भयो अरु ताव
न लौं वार जो पृथवी सो भी हालती भई सातो पाताल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

134A हालेजलयलको जोकुवेरको मसतक सो भी हल्यो ॥ न
वअस्थान अस्थान हाल्यो वरूणजलको ऊचेकेऊ
छालतो भयो अरलंकाके समदल वलहूालतो
भयो अरजाको सिवजू प्रतिपाल है सो रावणभीहा
लतो भयो सो अहे प्रिथवी लोकमै हालमई अरधु
वके लोकमे भी हालमई घरवाली वलवानकेको
जो है चरण सो नाहालतो भयो ॥ दोहरा ॥ तवरावण
सिरको मुकटलेक उड्यो सुजान मनो चल्यो जमलो
कको रावनको प्रस्थान ॥ २६ ॥ वार्ता ॥ तव अंगदरा
वणके सीसके मुकटलेकरके उडतो भयो सो मानो
जमलोकको रावणको प्रस्थान चल्यो है ॥ इति श्री
मतसवललोकलोचनचकोर चिंतामन श्रीरामचंद्रचं
द्रकायां दूनअंगदरवरननो नाम षोडसो प्रकासः ॥
॥ १६ ॥ दोहरा ॥ यासत्रहे प्रकासमै लंक निरोधनजा
न नागफांससे रामको वंधन कह्यो वषान ॥ १ ॥
वार्ता ॥ इसमतारवें अध्यावमै लेकाको रोकवो ह्वैय
गो अरनागफांससो श्रीरामजूको वंधन ॥ ॥ राव
नमेघप्रसंसनव पजूथपवरननलेष लछमनमो
हिहनूगमन आनो परवत देष ॥ २ ॥ वार्ता ॥ रावनको
मेघनादको अरप्रसंसतको वय अरजूथपाको वर
ननपुर लछमनजूको मूर्छा है वो हनूमानजूको प
रवतल्यायवो ॥ दोहरा ॥ अंगदलैवाको मुकटपरेराम
केपाय रामविभीषनके सिरसभूषनकीपसुभाय ॥
॥ ३ ॥ वार्ता ॥ अंगदजू रावणके मुकटलेकरके श्री
रामजूके चरणमें पस्यो तवश्रीरामजूने वभीषनके
सीसपरसो सोभायमान कीये ॥ पषटकाछंद ॥ दि
सदछन अंगदपूरवनील पुनहनूमंतपश्चिमसुसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ल दिसऊतर लछमन सहित राम सुग्रीव महुकी
ने विराम ॥६॥ वार्ता ॥ जु यकरवेको दछन दिसाकी
तरफ अंगद भये अरपूरव दिसामै नील हूये हनूमा
नजू पश्चिम दिसाको भये अर उतर दिसाको श्रील
छमनजू के सहित श्रीरामजू भये है सुग्रीवजू ने
महुमे विसाम कीयो है ॥ ॥ संग गजू पपजू पनवल
विलास पुर फिरत वभीषन आसपास निसवा
सर सभके लेत सोथ इ हिं भांत लंका [illegible] निरोध ॥ भयो
॥५॥ वार्ता ॥ संग है जू पप वका सेना तो अर सेना जो के
सो वल के विलास ता वभीषन लंका के आसपास
फिरत है रात दिन सभकी षवर लेत है इस प्रकार लं
का को रोक ने हित भयो ॥ जव रावन सुन लंका निरो
पर मय द्ध तव ऊपज्यो तन मन नै क्रोध रखे प्रसस नन हठ पूरव पो
र दछन महोदर गए द्वोर ॥६॥ वार्ता ॥ जव रावण
ने लंका को रोकवो सुन्यो तव तन अर मन मै परमक्रो
य ऊपजतो भयो तव रावणने प्रसस तो पूरव दिसा
के दरवाजे पर राषे दछन दिसा की ओर महोदर द्वोरक
रके गये ॥ गए इंद्रजीत पश्चिम द्वार रहे उतर रावण
वल उद्दार कीए विरूपाक्ष थित मय वेस करेना
रंतक वहु थं प्रदेस ॥७॥ वार्ता ॥ मेघनाद पश्चिम
के द्वार पर जाता भया उत्तर के द्वार पर वलवान रा
वण रहता भया अर मध्य विषे विरूपाक्ष षडे भ
ये अर नारातक चारो ओर प्रवेस करण पैर ह्यो षवर
देनेको ॥ प्रमताक्षरा ॥ अति द्वार द्वार प्रति जुद्ध भ
ये वहु रिछ के गूरन लाग गये तव सुर ने लंक मह
हो म भई जनु अगन माल मे धूम मई ॥८॥ वार्ता ॥
अत्यंत ऐसे द्वार द्वार के प्रति जुद्ध होता भया लंका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

135A
केकंगूरिअं सोवहुतेरिछलागगाये तवस्वरणकीलं
कामैसोभाहोतीभई मानोअगनकीमालामेधूमछा
यगयोहै॥दोहरा॥मरकतमनकेसोभीपेसवेकिगूरे
चारु आयगपजनुयातकोपातककोपरवार॥९॥
वार्ता॥तहांनीलमणिडोकेसुंदरकिंगूरेसोभतहै मा
नोंताकेनासकरनकोपातकव्याजमकोकारेरंगकोपर
वारसोभतहै॥दोहरा॥जिमकुंदनमैमनमिलेदुहिनि
लसोभाहोय गुंजासुरंगसुहावनीकेवनजेहतनसोय॥
॥१०॥वार्ता॥जैसेकुंदनमैरतनमिलेदोनोकेमिलनेजैसे
सोभाहोतहै अरजैसेरतकलालरंगकीपरमसुहावनी
होतहै सोजैसेस्वरणकरकेजटीहूईहोवे तैसेलंकाकि
छेअरवानरोकरसोभतभई॥कुसमवचित्राछंद॥त
वनिकसेरावनसुतसूरे जिहरणजीत्योहरवलपूरे॥
तपवलमायातमउपजायो कपदलकोमनमेभ्रमछा
यो॥११॥वार्ता॥तवसूरवीरजोरावणकोपुत्रसोनिकस
तोभयो जिसनेजुधमेहरजोहैईद्रवलसोपूरणसो
जीत्योहै ताननेतपकेवलसोमायाकरकेअंधकारउपजा
यो तववानरोंकीदलक्यासेनाकोसंभ्रमछायजातोभ
यो॥दोधकछंद॥काहूनहिदेषपरेवहिजोथा जदप
हैसगरेवुधवोथा सायकसोअहिनायकसंगे सोद
रसोरघुनायकवांधे॥१२॥जदपसमवुधवानअरवो
थाक्याग्यानवानहै परतोभोकिसीकोवहिजोथानही
देष्याजाता वाणमेसरपोकोसंधानहै नागफांससो
लछमनजूकेसहितश्रीरामजूकोवांधीये॥ ॥राम
हिवांधगयोजवलंका रावणकीसवईहनसंका देषवं
धोतवसोदरदोऊ जूथपजूथवसेसवकोऊ॥१३॥
वार्ता॥मेघनादश्रीरामकोवांधकरकेजवलंकामेगयो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तवरावणकीतानेसमसंकादूरकरी दोऊनभाईम्र
नकोतववंधेहूयेदेषकरकेसरदारञ्चरसेनासम मै
मानहोतेभये॥स्वागताछंद॥ईद्रजीतजिहलेऊरला
यो ञ्चाजकाजसमभोमनभायो के विमानञ्चारूढत
थायो जानकिहिरघुनाथदिषायो॥१४॥वार्ता॥ति
सरावणनेमेघनादकोलेकरकेउरसोलगायो ञ्चाज
मेपूरणमेरेमनभायोकारजभयोहै तवविमानमेञ्चा
रूढनकावठायकरकेसीताजूकोरावणनेश्रीराम
जूकोदिषाद्यो॥सीताजूवाच॥दोधकछंद॥राजपुत्र
जुगनागनदेषे भूमजुक्तहरिचंदनलेषे पंनगारपभुपे
नगसाई कालचालकछुजाननजाई॥१५॥वार्ता॥रा
जकुमारजोदोऊहै श्रीरामलछमनजूसोनागनसेवंधे
हूयेसीताजूनेदेषे सोप्रिथवीमेहरक्यासरपोकेसहित
चंदनहै ञ्चथवाप्रिथवीमेजुगलदोऊहरचंदनदेचव्रि
छजाने सीताजूकहितहैदेषोजोसरपोकेवैरीजोगरुड
ताकेतोस्वामीहै ञ्चरपंनगाक्यासेषजूकेस्वामीहै ञ्चथ
वासरपस्वामीसेषनागरूपलछमनहै सोभीनागफांस
सोंवंधेहै सोकालकीचालकछुजानीनहीजाती॥१६॥
वार्ता॥कालरूपीसरपकेग्रासतेजिनकोनामछुडाय
लेतहै सोब्रिह्माकेवचनकेवलतेमायाकेसरपोनेश्री
रामजूवांधलीये॥दोधकछंद॥पंनगारनवहीतहांञ्चाऐ
व्यालजालसभमारभगाये लंकामांफनहीगईसी
ता सुभ्रदेहञ्चवलोकसुगीता॥१७॥वार्ता॥फेरतवहीत
हांगरुडजूञ्चाये सरपोकेसंवूहमारकरकेतिनोनेभगा
यदीए तवसीताजूलंकामेजातेभये श्रीरामजूकीसु
षकाऊजलदेहकोदेषकरकेसषिहैकपाजंकी॥गरु
ड॥इद्रोवाच॥श्रीरामनारायणलोककरता ब्रसावरु

कालसरपकेकवलतैछोरतजिनकोनाम।
वांधेताममनवचनतेमायासरपनिराम॥

136A द्वादके दुष हरता सीतासि मल्यो हो प्रभु देहु सीछ्या नानैव
डो यूसजू हो य रई ज्या ॥१८॥ वार्त्ता ॥ तव गरूडजूने कह्यो हे श्री
रामजू आपनारायण हो अरु जगतके करता हो ब्रिह्मा
दिक अरु सिवादिक इनके दुषके हरण वारे हो मो कों सी
ताजूने याद की आग्या अव जो आपकी ओ ही वडी इछ्या
होय सो मो कों सीछ्या दीजिये ॥ श्रीराम ॥ कीवे जु हो य काज
सवे सुकीनो आप यहां मो कहि सुष्य दीनो पाछे गवे कु
ठ प्रभा विहारी स्वरलोक गोत ध्यन विस्नु पारी ॥१९॥ वार्त्ता ॥
जो करवे जोग कारज था सो हे गरूड तुमने सभ कीयो तुमर
हां आप ये अरु मो कों सुष दीयो सो गरूड तव चारण मे लगक
रके वैकुंठ की सोभा मे विहार करण वारे सो तिछ्यो तिसी छि
न विषे श्री विस्नुजू को धारण करके स्वरगलोक कों जाता
भया ॥ ॥ धूम्राक्ष आयो जनु दंड धारी ताकों हनूमान भ
य पहारी जिते अकंपादव लि सू मारे संग्राम मे अंगदवी
र मारे ॥२०॥ वार्त्ता ॥ फेर धूम्राक्ष दैत्य आयो सो मानो दंड धा
री काल है ताके मारण वारे हनूमानजो होत भये अरु जिन
ने अकंपन आदि भारी वलवान असुर थे सो जुधमे अंगद
वीरने मारे ॥ उपेंद्रवज्रा छंद ॥ अकंपधूम्राक्ष हतु यज्ञ के ॥
महोदरे रावन मंत्र वूफे सदा हमारे तुम मंत्रवादी रहे कहो
कहु अतही विषादी ॥२१॥ वार्त्ता ॥ जव अकंप अरु धूम्राक्ष जु
धमें जूफ गये तव महोदर को रावण मंत्र पूछने लगयो ॥
ह तुम सदा मारे मंत्र के कहिन वारे हो अव कहा अत्यंत विषा
दी का दुषी है रहे हो जो न ही कहिते हो ॥ महोदर ॥ कहे सु के
ऊ हितवंत वानी कहो सु ताके अमद दुषदानी सुनेन दा
वे वहु धा कुदावे ताते सु धी सापनमोन भावे ॥२२॥ वार्त्ता ॥ जो
तुम को हितकारी वानी कहित है ताकों तुम अत्यंत दुषदायक क
हित हो अव नेदा कको अरु वहु नमकार के कुदाव को तुम क

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सही
१३७
137

143

षु विचारतेनहीहै तोनेवुधवानोकेसाधनकहितते मौनहीं
भावतहै॥कह्यौसुराचारयसुहौकहोजू सदानुमारेहितसं
गरहोजू नृपालभूमेविधचारजानो सुनोमहाराजसवेव
षानो॥२३॥वार्त्ता॥जो ब्रहसपतनेमोकोकह्योथा सोमैंतु
मसोकहितहौ हमसदानुमारेहितकरणकारेहे तुमचार
प्रकारकेप्रिथवीमेराजजानो सोसुनोमैसमकहितहौ॥
भुजंगप्रयातछंद॥ इहैलोकएकैसदासाधजानै वलीवेन
ज्योंआपहीइसमानै करैसाधनापेकपरलोकहीको॥
हरिचंदजैसेगयेहैमहीको॥२४॥वार्त्ता॥एकतोइसीलोकके
सदासाधनकरणजानतहै जैसेवलवानराजावेणभयोहै
तैसेआपनेआपहीकोइस्वरमाननेहै अरएकपरलोकके
हीसाधनकरतहै जैसेराजाहरीचंद समप्रिथवीकोदेके
गयोहै॥ ॥दुहूलोककेपेकसाधेसयाने विदेहीनज्यो
वेदवानीवषाने नठैलोकदोऊहठीएकऐसे त्रिसंकेहसे
ज्योंभलेऊअनैसे॥२५॥वार्त्ता॥एकचतुरराजादोऊलो
कनकेसाधनहै जैसेराजजनक जोकोवेदवानीवरण
तहै एकऐसेहठीहोतहै जोदोऊलोकनकोनासकरत
है जैसेराजात्रिसंककोसभभलेवुरेहसतहै॥दोहरा॥
चहूभांतकेमैकहीतुमसोराजचरित्र रुचैसुकीजेचित्तमै
३९ चितहुमित्रअमित्र॥वार्त्ता॥चारप्रकारकेमैतुमसोराजा
नकेचरित्रकहेहै जोतुमकोचित्तमेभावेसोकरीये मित्र
अरशत्रुकोविचारो॥दोहरा॥चारभांतमंत्रीकहोचारभां
तकेमंत्र मोहिसुनायोसुक्रजो सोपसोपअवतंत्र॥२६॥
वार्त्ता॥अवचारप्रकारकेवजीरअरचारप्रकारकेहीतिनो
केमंत्र जैसेसुक्रनेशास्त्रनकेसोधसोधकेमोकोसुनाए
हैसोकहितहो॥छपय॥एकराजकेकाजआपनोकाजवि
गारत जैसेलोचनहानसहीकववलहिलिवारत एक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

137A. रजकौ काज हहते निज कारज काजे जैसे सुरथनिका
रसवै मंत्री सुषसाजै एक प्रभु समेत अपनो मलौक
रत दास रथजू तज्यो यहि आपन कूं प्रभु कौ बुरो क
रत ए वरे पूतज्यो ॥ वार्ता ॥ एक तौ राजा के कारज अ
पनो कारज विगार लेत है जैसे सुकनेनेत्रेहानसहीहै
राजा वल कौ हटावते हूए एक अपने कारज के वास्ते
राजा के कारज कौ नास कर देत है जैसे राजा सुरथ को
निकार कर के संपूरण मंत्रियो ने अपरराज कीयो प
क अपने स्वामी के समेत अपने मलै को करत है जैसे राम
जू कौ दूत हनूमान जू ने कीयो एक अपनो अरअप
ने स्वामी के भुरे करते है जैसे तुमारे मे बना दहै ॥ दोहरा ॥
मंत्र जु चार प्रकार के मंत्री के जु प्रमान विषसे दोह
म वीज से गुर से नीव प्रमान ॥२८॥ वार्ता ॥ कर मंत्री न
उनके प्रमान करके ऐसे ही चार प्रकार के मंत्र है प
कतो विष से है जिनमे स्वाद अर गुन दोऊ खोटे है वेया ए/
कौ होहे अर सरीर कौ नास करत है रोग उपजावे है
एक स्वाद मधुर अर गुण सुषदायक बारे गुड से है
एक जिनमे स्वाद कटु ते गुण दुषनासक बारे नीव
से है अथवा एक विष से जो ऊपर कटु अंतर ते सो पेहू
ए स्वादक है एक अनार वीज से ऊपर ते मधुर अंतर
ते कठोर एक गुड से ऊपर अंतर ते मधुर एक नीव से
ऊपर अंतर ते कटु ॥ चेद विस्मन ॥ राजनीत मत तत्व स
मकीये देसकाल गुन जु पअर किये मंत्र मंत्र के गुन
गहीए अरु वर विचारन तत्व सवल हीये ॥२९॥ वार्ता ॥
सो राजनीत के मत कौ सार समकीय देस काल कौ वि
चार के जु यमेड रकीए मंत्री अर मंत्रन सौ शत्रु के गुण ग्र
हन करिए अरु भी विचार के तत्व को सार समहे बिए ॥

रामचं
सटी
१३८
138

ना४ 144

चारभांतिनिपतानुमकहियो चारमंत्रमतमैमनुग्रहियो॥
राममारसरणकनवचहो ईंद्रलोकवरवासहरवहो॥२०॥
वार्ता॥ रावननेतवकह्यो चारप्रकारनिपतानुमनेकही अ
रचारप्रकारकेमंत्रीकहेवु यमै चारमतकयामंत्रसोसममै
ग्रहिनकीए एकवानसो रामजूकोमारवे किसीकोभीनही
बचावेगो पर तिसकरईंद्रलोकमैवासकरोगो॥ प्रमताछंद
रा॥ उठप्रसमसतसजसेनचलैं बहुभांतजायकपिपुंजद
ले तवदौरनीलउरमुष्टहनै असुहीनगिरेभुवमंडस
नै॥२१॥ वार्ता॥ तवप्रसमसतसैनाकोसजकेउठकरचलते
भए तिसनेवहुतप्रकारसोवानरोकेसमूहदले तवनीलुना
मावानरनेदौरकरकेउरमेताकेमुष्टकामारी सोप्रसमसतप्रा
णरहतहोकरप्रिथवीमेगिरेमुडजोकेरूपरमेमिलेहूपेहैं॥
वसंततिलक॥ महावलीजूकनहीप्रसमसतको चलेतहां रा
वन भीडहिसतको अनेकभेरवहूडेदमदीहवाजे गयं
दकोपायजहांतहांगाजे॥२२॥ वार्ता॥ महावलीजोहेता
कोजुपमेजूकनेही तवहाथनकेमलतेहूए तहारावण
चलतेभए जाकेसंग अनेकभेरीअरवडेनगारेवाजतेहैं॥
अरकोपमेभ्रपहूएजहांतहांहाथीगाजतेहैं॥ मनोरजी
मूतसंकासमोमही विलोकजांकोसुरसिंधुछ्योमही॥
प्रचंडनैरित्यसमेनदेषीए सप्रेतमानोमहिकाललेषिए॥
॥२३॥ वार्ता॥ सोहाथीनहीमानोमहिनजलकेजीमूतका
मयनकोसमूहसोभतहै जांकोदेषकरकेदेवताजोहैं सिंधु
सो [illegible] मायमानहोतेहैं यहिअदिभुत रामवलपायकेदेव
ता सिंधसेकहैकहूं सिंधपाठहै सोहाथीप्रचंडजोहैंनैरि
तराकसताकेसमेनकेसेदेषीतेहैं सहितप्रेतकेमानोजम
है जमसेअसुर॥ विभीषनोवाच॥ वसंततिलक॥ कोदंड
मंडनमहारथवंतजेहैं सिंधुध्वजासमरषंडनबिंदसोहैं॥

छु४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

138A महाबलीप्रबल जुध करालनेता सो मेघनाद सुरनायक
जुधजेता ॥२४॥ वार्ता ॥ विभीषन जू श्रीरामजू को जनाव
त है यहि जो धनुष सो सोभायमान अ वडे रथवारो अर
जाकी ध्वजा मे सरको चिंन्ह है जुध की विद्या मे जे पंडत हैं ति
न के समूहन को जो मूरछा करदेत है वडो बली है प्रबल
है भयानक जुध के प्राप्तकरणवारो सो मेघनाद है ई
द्र को जुध मे जीतनेवारो ॥ जो व्याघ्र वेषर [stain] व्याघ्रनि के तुभा
रि सरकत लोचन कुवेर विपत्तकारी लीने त्रिसूल सूरसू
ल समान मानो श्रीराघवेंद्र ताको अनकाय जानो ॥२५॥
॥वार्ता॥ जाको व्याघ्र सो वेष है अर भुजा मे वाघ्र के धारणवा
रो है लाल जाके नेत्र है कुवेर को विपता करणवारो है अर
त्रिसूल को लीये हुये है देवतिडो के सूल के समान है हे रामजू
ताको अनकाय जानो ॥ जो कंचनी यरथ स्त्रिंगम रालमाली
जाकी उदार उरबन मुष सकति साली सुरधाम धाम हरि की
रत के न जानी सो ईमहोदर त्रिकोरवं भुमानी ॥२६॥ वार्ता ॥
जाको स्वरण को रथ है ताके स्त्रिंग पे हंसन की पंगती है भुजाथे ॥
जिसकी उदार जो है ऊरछाती ताने स्वामकारतक की वर
छी सहारी है देवतिडो के लोक मे अर सिवजू के लोक मे जा
की कीरत किसने नही जानी है सो यहि महोदर त्रिकोदर को
सरप४ भाई है ॥ ॥ जाके रथांग पर भुजंग विराजै श्रीसूरजमंडल ४सरप
विंमंडल जोत साजै अषंडली सस त्रुतन त्रान धारी देवां
तके सुसुर लोक विहारकारी ॥२७॥ वार्ता ॥ जाके रथ पे स
रप की धुजा विराजत है अर सूरजमंडल ने आकास मंडल
मे जाकी सोभा सोभत है अर जाके अषंली धकया जो ताष ड४
ड न हो यस के अेसे सस्त्र है संजोधके धारणवारो है देवन के
अंतकाजम सो है स्वछ देवतिडो के लोक ता मे विहारकर
णवारो है ॥ ॥ जो हंस के न भुज दंड डंड धरि संग्राम सिं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पवहु भो अवगाहकारी लीनी क्रिडा य जिह देव अदेव
वामा सो ईषरात्तमजवल्ली मकराछ्य नामा ॥ ३८ ॥ वार्ता ॥
जाकी ध्वजामे हंस है अरु विषंडक्या भयानक भुजदंड
नके धारणकारो है जु यरूपी समुद्र को अवगाहनकरण
वारो है जाने देवता अरु असुरनकी स्त्री सम की इस्त्री क्रिडा य लई
है सो षरको पुत्र मकिराछ्य नाम है ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ ल
गे स्पंदनेवाजराजी विराजे जिने वेषके पौन को वेगलाजे ॥
भलेस्वरनकी किंकनी जोन साजे मिले दामनी सो मनो मेघ
गाजै ॥ ३९ ॥ वार्ता ॥ लगे हूपे है जाके रथको घोडिडो की पंगत
जिनको देषके पवनको वेग भी लाजत है स्वरणकी किंकनी
की भले प्रकार सो जोत सजरही है मानो वीजुरी सो मिले हू
ए मेघगरजना करते है ॥ ॥ पताका वन्यो सुभ्र सारदूल सो
है सुरेंद्रादि रुद्रादिके चित्त छोभे लसे छत्रमाला हसै सोम भा
को रमानाथ जानो दसग्रीव ताको ॥ ४० ॥ वार्ता ॥ धुजामे
वन्यो हूयो भलो सेरको चिंन सोभत है जो इंद्र आदिक अर
सिव आदिक इनके चित्तन को छोभायमान करत है अर
जाके सीसनपे छत्रनकी पांत ऐसी सोभत है जो चंद्रमाकी सो
भाको भी हसत है हे श्रीरामचंद्र ताको रावण जानो ॥ ॥
पुरद्वार छांडे सबै आप आपे मनो द्वादसादित्यको राहु
धाये गिरिग्राम ले ले हरिग्राम मारे मनो पमनी पत्र दंती
विदारे ॥ ४१ ॥ वार्ता ॥ लंकाके दरवाजे छोडकरके सभ आ
प आप से आए है मानो वारा सूरजाको राहु दोरे है हरक्या वान
रोके जो है संघ हे सो परवतो के संघ हो को ले ले कर मारते है ॥
सो मानो कमलनी के पत्र सो हाथीन को विदारत है ॥ विजय ॥
देष विभीषनको करराव न सक नगाहि कररोषर ई है छोड
तही हनुमंत सुवीच ही पूछ लपेट के डार दई है दूसर ब्रम्ह
की सक्ति अमोघ चलावन ही हाय हाय भई है राषे भले सर

139A

नागनलछमनफूलकेफूलसिग्रोडलईहै॥४२॥वार्ता॥
तवरावणनेवभीषनकोदेषकरकेहाथविषेवरछीय
करी सोकोपकरकेतामेमिलाईहै ताकोछोडदेहीहनू
मानजूनेसोवरछीवीचहीमेपकडसोलपेटकरकेडारद
ई फेरदूसरीजवब्रह्माकीअमोघसकतचलाईताकेचला
वतेहीहायहायभई तवसरणआयेजोवभीषनहैसोलछ
मनजूनेभलेराषे कौंआपअमोहोकेफूलकपाप्रसंनता
सोफूलसमसोऊटलईकहासहारलई॥आवन॥जोरही
लछमनैलेनलाग्योजहीमुष्टकातीहनूमानमार्योनहीं
आसुहीप्रानकोनाससोहूहैगयो दंडदूतीनमैचेततांकोभ
यो॥४३॥वार्ता॥जवरावणजोरसौलछमनजूसौऊठावने
लाग्यो तवहनूमानजूनेछातीमेमुष्टकामारी सोसीघ्रही
ताकेप्राणकोनासजेसोहूहैगयो हैतीनघरीमेफेरताकोचे
तसोभये॥मरहठाछंद॥आयेऊरप्राननलैधनुवाननक
पिदलदीयोभगाय चढहनुवंतपररामचंद्रतवरावन
रोकोजाय धरएकवाननतवसूतछेदसभकाटेमुकटव
नाई लागेदूजोसरछूटगयोसरलेकगयोअकुलाई॥४४॥
वार्ता॥फेरजवताकेउरमेप्राणआयेतवधनुषवानकोलेक
रकेरावणनेवानरोकोदलभगायदीयो तवहनूमानजूके
ऊपरचढकरकेश्रीरामजूनेरावणकोजायरोक्यो तव
धनुषपेएकवानधारणकरकेताकोरथवानअरछत्र
नेमुकटसभवनायकेकाटदीए फेरदूसरोवानजोलग्यो
तासोरावणकेसभवलछूटगए लंकामेव्याकुलहेकरग
यो॥दोयकछंद॥जदपिहैंअन निरगुनताई मानुषदेह
परेरघुराई लछमनरामजहीअवलोके नैननतेनरहे
जलरोके॥४५॥वार्ता॥जदपअमंतश्रीरामजूमेनिरगु
णताहै सतरजतमतीनोतेरहितहै परमानुषीजोदेहकोधा

रणको एहू एहैं श्रीरघुनाथजू तो तेजव श्रीरामजूने लछम
नजू देषे तवनेत्रो तेजल रोकेहू ऐनार हिसको रोवनलागे
वारके लछमन मोह विलोको मोको प्रान चलेतजरोको
हो सुमरो गुनके तकतेरो सोदर मित्रसहायक मेरो ॥४६॥
वार्ता ॥ एकवार भी हे लछमन तुम मोको देषो अव मेरे प्रान
जात है तुम मोको रोको मैं तुमारे कितने कु गुण सुमरणक
रो भाई और मित्र और सहायक मेरे तुम ही हो ॥ ॥ लोच
न बाहु तुही धनु मेरो तूं बल विक्रम वारक हेरो तो विन हे प
ल प्रानन राषो सीयतजो मुषकूठ भाषो ॥४७॥ वार्ता ॥ ने
त्र मेरे तुमही हो और भुजा भी तुमही हो धनु भी तुमही हो
मेरो वल और पराक्रम भी तुमही हो रती कु वार मेरी तरफ
तो देषो मैं तो तेरे विना पल भी प्राणोको नही राषोगो सीता
भावै त्याग देवो मै मुषते कूठ नही कह्यो हो ॥ ॥ मोह रही
रतनी जियसंक दैनन पाई विभीषन लंका वोलऊठो
प्रभु को पन पारो नाहि तो होत है मो मुष कारो ॥४८॥ वा
र्ता ॥ पर मोको इतनी चित्त मै संका रहिगई है जो वभीषन
को लंका देनी नही पाई सो वोलकै तुम उठो अथवा मेरे
वोल उठगयो लंका देनको सो अपने प्रभु को प्रणिपालन
करो नही तो मेरो मुष कारो होत है सभ कहेगे इस्त्रीहेत
भाई गवायो ॥ विभीषनोवाच ॥ सुंदरी छंद ॥ हो विनऊ
रघुनायक रेअव देवतजो परवेदन को सव औषध लै
निसमो फिरआवै के सव सो सव साथ जिआवै ॥४९॥ वा
र्ता ॥ मैं वेनती करत हो सो हे रामजू तुम करो हे देव पीराको ना
जानो जो रातको औषध लैकर कै आवै तो सो सभ साथ
जिआ यलैवेगा ॥ ॥ सोदर सूरको देषत ही मुष रावन
को पुरिवै सिगरे सुष वानसुन्यो हनुवंतक सो पन कूद
गयो जिह औषधी को वन ॥५०॥ वार्ता ॥ जो यहि भाई सूरज

कोमुषदेषेगोतौरावणकेसमसमुषपूरणहोयगोफेरजीव
तोइनकेदुसकरहै अथवारामजूनेकह्यो भाईजोसूर
वीरहै तिनकोमुषदेषनेहैं क्योंअबरावनकेसमसमुषपूरे
होयगे जवयहिवानहनूमानजूनेसुनीतवप्रणकीडे॥
तवहीकूदकैजहांश्रीषषीकेवनघानहांगये॥श्रीराम
जूवाच॥षटपदछंद॥करआदित्यअदिष्टनष्टजमक
रोअष्टवसरुद्रनवोरसमुद्रकरोगंधरवसरवयसु व
लतअवेरकुवेरवलहिगहिदेऊइंद्रअव विद्याधरन
अविद्यकरोविनसिथसिधसव लैकरोदासदितिकी
अदितिअनिलअनलमिलजायजेल सुनसूरजसू
रजउगनहिंकरोअसुरसंसारवल॥५१॥वार्ता॥सूर
यकोअवतारसुग्रीवहै तिनसोश्रीरामचंद्रजीकेवचन
हेसूरयसुग्रीवतूसुन सूरजकेउगनकैसंसारकोवलसो
जोरावरीसो असुरकरो असुरकोअरथनाहीहैसुरदे
वताजाहिविषैअैसोकरो असतयहिभीपाठहै जोनाही
करतव्यसोकरोसंसारमै सूरजकोअदिष्टकालोपकरो
गो जमकोअरुआठवसहैतांकोनष्टकरो सिवजूकोस
मुद्रमैवोरकरगंधरवनकोपसुवकरोमारवेकेलीए व
लितअवेर अवेकहीपसंभारवलितकहिएजुगतसंभा
रसंजुक्तजतननसोयहिअरथकुवेरकोअरवलकोपकरके
इंद्रकोदेव अथवाअवेरक्याविनासमेहीवलितक्यासहि
तकुवेरकेइंद्रकोअसुरराजवलकोदेदेवोगो अवेरकोईव
रनकोकहितहैं विद्याधरोकेअविद्यमानकरोमारोयहि
अरथ सिधनकोसिधहीनकरो दितीकोअदितीकोदास
करोगा अनितपौन अनलअगनपजमैमिलजाहिअैसे
करो॥भुजंगप्रयातछंद॥हनैविद्युकातिवलीवीरवामै
चल्योसीघ्रगामीगयोएकजामै चल्योलेसवैपरवनैकेप्रनामै॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नजानेवे शल्योषधीकोनतामे॥५२॥ वार्ता॥ काम
क्यात्सिवजूके रूपजोहेवीरनमैवलीहनूमानतिनो
नेजोरसतेमैविज्जुकारीभयेतेसभमारे सताचीगमन
वारेहोकरकेचल्यो सोएकयहिरमैजायपहुचेतहां
छलभयोतातेवेशल्यनामस्रोषधीकोनहैतामैय
हिनाजान्योगयोसभएकसीभई तवसभपरवतको
प्रणामकरकेलैचल्यो॥ ॥लसैस्रोषधीचारभौव्यो
मचारी कहेदेवयोदेवदेवाधिकारी पुरभौमकीसी
लीपसीसराजै महांमंगलार्थीहनूमानगाजे॥५३॥
वार्ता॥स्राकाशविषेचलतेजोहैहनूमानजू तिनके
पाससुंदरस्रोषधीस्रेसेसोभतहै सोदेवतास्रेसेकहि
नहैहेदेवदेवतिऊकेस्वामी मंगलकीपुरीसीतुमसी
सपैलीएसोभतहो तवमहांमंगलकेहैस्ररथप्रयो
जनजांको सोहनूमानजूगरजनाकरतेभए॥ ॥ल
गैसकतरामानुजैरामसाथी जहैहेगयोज्योगिरेहे
महाथी तिनैज्यायवेकोमनोप्रेमपाली चल्योज्वाल
मालीहलेकीरतमाली॥५४॥वार्ता॥ श्रीरामजूके
भाईजोहै श्रीरामजूकेसंगरहिनवारे तिनकोवरछी
लगीहे सोजहसेसीतलहोयगएहै जैसेमहाथीक्या
हिमाचलपरवतगिरेस्रेसेगिरेहै तिनोकेजिवावनेको
मानोप्रेमकोपालकरके यहिस्रापस्रगनकोसंवूहचल्यो
हैजसकेसंवूहचल्योहैजसकेसंवूहकोलीएहूए॥ ॥
कियोप्रातहीकालजीमेविचार्यो चल्योस्रंसलेस्रंस
मालीसिंधार्यो किपोजानज्वालामुखीजोरलीने महा
भित्तुजामेभिटेहेमकीने॥५५ वार्ता॥स्रथवाप्रातेका
लहीचित्तमैविचार्योहै सोनिजकुलकोजानके स्रंसु
क्याकिरनोकोलीएहूए स्रंसुमालीसूरजचल्योहै॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

141A मारतको अथवा ज्वालामुषी जानहे जोनको लीपहूये
जामेहोमकी पहूपे महामोनमिटजानहे ॥ ॥विनाप
त्रहे जत्र पालासफूले रमेकोकलालीछिमे भोरभले॥
सदानंद रामे महानंदकोदै हनूमंतआयेवसंतमैमनोलै
॥५६॥वार्ता॥ विनापत्रोकेजहा पलासफूल रहेहे जहांको
कलाकीपंगत रमतहे सुगंधकीआसमेभूलके भ्रमरभ्र
चंद्र४ मतेहे सदाआनंदरूपजोश्रीरामजूहे तिनकोमहांआ
नंदकोदेकरहनूमानजू मानोवसंतकोलेकरआयहे॥
मोटक॥ठाहेभएलछमनमूरछिये दूनीसुभसोभभरी
रलीये कोदंडलीपयहिवानररै लंकेसनजीवनजायघ
रै॥५७॥वार्ता॥तिसमूरछाबूहीकोछियेक्यासूंचनेही
श्रीलछमनजू षडेहोतेभए सरीरकीदूनीसोभाकोलीए
हूये तवहाथमे धनुषकोलेकर यहिवारताकहितेभए॥
रावणजीवतोघरकोनाजानापावे॥ ॥श्रीरामतहीउरला
यलीय चूम्योमुषआसिषकोददीए कोलाहलजूथपजूथ
कीयो लंकाहहलीदसकंठहींयो॥५८॥वार्ता॥श्रीराम
जूनेतवहीहीएसोलगायलीए मुषचूमलीयो अरुकरोडा
हीआसीरवाददीए तववानरोकीसेनाअरुसेनानिउनेको
लाहलकीयो तासोलंकाअरुरावणकोहीयोहालनेभ
ये॥५८॥इतिश्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंता
मनश्रीरामचंद्रचंद्रकायांलछमनमोहनोनामसप्तद
सोप्रकासः॥१७॥दोहरा॥ अष्टादसेप्रकासमेकेसवजु
यकराल कुंभकरनकोजूझवोईद्रजीतकोकाल॥१॥
वार्ता॥अठारमेंप्रभावविषेभयानकजुधसोकुंभकरण
कोजूझवोहोयगो अरुमेघनादकोकालहोयगो॥ ॥
रावनलछमनकोसुननीके छूटगयोसभसाधनजीके॥र
सुनमेडविलंवनलावो कुंभकरनहजायजगावो॥२॥वार्ता॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सती
१४२
142

श्रीलछमनजूकोरजीहूएरावणसुनकरकेताकेचिंत
केसमसाधनछूहगये रेपुत्रम्रसंत्रीयोतुमदेरमतलगा
वो म्रवकुंभकरनकोजायकरकेजगावो॥ ॥रछसल
छनसाधनकीने दूंद भईहूवजायनवीने मतम्रमतव
डेम्ररवारे कुंजरपूजजगावतहारे॥३॥वार्ता॥तवराछ
सोनेलाखंहूसाधनकरेनवीनवडेनगारेवजाऐ मतम्र
रनामतवडेतेछोटेजोहैहाथीयोकेसंवूहसेजगावतेहूये
समहारगऐ॥ ॥म्राईजहासुरनारसुभागी गावनवी
नवजावनलागी जागऊठोतवहीसुरदेषी छुद्कुधा
वहुभछनकोपी॥४॥वार्ता॥फेरसुंदरभागनवारीम्रपस
राम्रावतीभई सोगावनम्ररवीनाकेवजावनमेलागी
तवहीदेवतिउंकोदेषीजागऊठो भूषम्ररुत्रिषावहु
तप्रकारसोपोषनकरी॥ ॥नाराच॥म्रमतमतदंतपंकति
एककोरकोकरै भुजापसारम्रासपासमेचडोचसंचरै॥
विमानम्रासपासकेजहांतहां भगाइयो म्रमानमानसे
दिवानकुंभकरनम्राइयो॥५॥वार्ता॥म्रमतम्ररम
तजेहाथिउंकीपंगतहै रावकरोहताकोभुजापसारकरके
म्रासपासतेमेचनके संवूहसमसिंचारकरतहै म्ररम्राका
समेम्रासपासतेजहांतहांतेविमानभगायदीयेफेरम्रप्रमा
कुंभक
रन
नगारवजेसेदिवानक्यासभामैम्रावतेभये॥रावनोवाच॥
समुद्रसेतवांधकेमनुष्यदोयम्राइयो लीयेकुचालवा
नरालंकम्रगलाययो मिल्योविभीषनैनमोहतोहनेकु
हूडरै प्रसंसनखादहैम्रनेकमंत्रमित्रसंचरै॥६॥वार्ता॥रा
वणकह्योसमुद्रपेपुलवांधकरकेदोयमानुषम्राऐहै षो
टीचालकीवानरोकीपंगतकोलीएहूये म्ररूएकवानरनेलं
कामेम्रागनलगायदइ तिनसोविभीषनजायमिल्योनामो
रतेनातुमतेरतीकुभीनाइस्यो तिनोनेप्रसंसतेम्रादरदैके

ग्रा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

142A अनेक वजीर अर मित्र सिंगार करे है॥ ॥करो सु काज
आसु आज चित्त मै जु आवही अस मुख्य होय जो वजीव सु जस
सपावही समेत राम चंद्र वं युवान राज मख्ययो सको समं
त्र मित्र पुत्र धाम ग्राम रख्ययो ॥७॥ वार्ता॥ आज सों ग्रहि
सों कारज तुम करो जो तुमारे चित्त मै आवे जिस ते दुष नेत्र
हू सपत को होवे अरु सब कु चित्त मै सुष को पावे श्रीराम अर
लछमन जू के समेत वानरो की पंगत को षावो अर षजानि
यो के समेत मंत्री मित्र पुत्र चाकर इन के सबहुन की रछ्या करो॥कु
मकरनोवाच॥ मनोरमा छंद॥ सुन ऐ कुल भूषन देव विदू
षन वहु राज विराजन के तुम भूषन अर भूपत चार पदार
थ साधत तिनको कबहू न हि वाक विकापत॥८॥ वार्ता॥ हे
कुल के भूषन हे देव तिउ के दुष देनवारो वहुते जो विराज
मान राजा है तिन के सरीरो के भूषन क्या पालनवारे अथवा
तिन मै सूरज समतुम सुनो संसार मै राजा चार पदारथ को सा
धते है तिनो को कदी भी वापक पापन ही फिरा देते है॥ पंकज
वाटका छंद॥ परम करत अर अरथ वहावत संतत हित
रत काम लगावत संतत ऊपजत ही निस वासर साधनत
न मन मुकत महा चर॥९॥ वार्ता॥ परम को जो करते है अ
रथन को वहावने है पर संतान के वाले काम मै प्रीत लगावते
न है पर संतत के ऊपजने ही रात दिन तन अर मन कर के जे वडे
ऊत्तम है सो मुकत को साधते है॥ दोहरा॥ राजा अर जुवराज
जग प्रोहित मंत्री मित्र और कि पन ना सो भिए कुटल कि न
बुध्य मित्र॥१०॥ वार्ता॥ राजा अर जुवराज क्या राजकुमार
अर प्रोहत ने मंत्री अर मित्र इतने कामी अर सूमते कुटल
अर कितघनी ने शत्रु हूए सो भाको नही पावते है॥ कवित्त॥
कामी वामी मूढ को ही क्रोधी कुलद्वेषी षल कातर कितघ
नी मित्र द्रोही द्विज द्रोही ए कुपरष कि पुरष का हलो कल

हीकूरकुटलकलंकीकुलहीनकैसेटोंहीये पापीलोभी
फूठेम्प्रपवावरोव पुरगुंगवोनाम्रविकीहठीछलीनिर
मोहीये सूमसरवमछीदेववादीजोकुवादीजठम्र
पजसीम्रैसोमूम मूषननसोहीये॥११॥वार्ता॥का
मवारोम्ररवामीक्याइस्त्रीजितमूरषकुष्टीक्रोधीकुल
कोदोषपरनवारो दुष्टकायर कीपेकोनामानवेवारो
मित्रसोद्रोहरापनवारो ब्राह्मणसोद्रोहवारो म्ररषो
टोपुरषकिंपुरषक्यानपुंसकसोग्रनावारो कलिहवारो
षोटोटेहो षोटोजांकोमंत्रीहोयम्ररकुलतेहीन पेरपा
पीलोभी फूठोम्र पोवावरोवोलेगुंगोवाउनो विद्याजे
रहितहठम्राछलीया निरमोहीसूमम्ररसरवमछी
सो देवतानवादवारो म्ररुषोटोवादवालो जठम्ररम्रपज
सोम्रैसरजाप्रिथवीमेसोभानहीपावतेहै॥निसपालका
छंद॥वानरनजानसुरजानसुभगाथहै मानुषनजान
रघुनाथजगनाथहै जानकिहदेहकरतेहकुलदेहसो
म्राजरनगाजपुनसाजहंसमेहसो॥१२॥वार्ता॥तव
कुंभकरनकह्यो इनेम्कौतुंवानरमतजान इनकोसुमक
थावारेदेवताजान म्ररमनुषमतजान एहश्रीरामजू
जगतकेस्वामीहै सोतुमसीताजूकोदेवो नामैकुलम्रर
सरिरसोनेहकरो इनकोराषोयांम्राजयुध्यमेगाजमेठ
ज समहसकैंसकरके म्रथवासीतादेकेपेरभामेजुधकरो
॥रावन॥दोहरा॥कुंभकरनकरजुधकैसोईरहोय
रजाय वेगविभीषनज्योमिल्योगहोशत्रुकेपाय॥१३॥
वार्ता॥हेकुंभकरण यांतेजुधकरो यांघरमेजायकैसोय
रहोम्रथवाविभीषनसमवेगजायकेमिलोशत्रुकेचरण
गहो॥मंदोदरी॥दोहरा॥ईद्रजीतम्रनकायसुननारन
कसुषदाय मेंयनसोन्रिपषिकततुमक्योनकहोसमुफा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

143A य॥१४॥वार्ता॥फेरमंदोदरीकहेहैं हेईंद्रजीतअत्यंतवडो
हैसरीरजाकोहेनरांतकजोअसुरतिनेकोसुषदायक॥
अथवाइनतामोकेराकसनकोकहितहैतुमारोप्रभुभैया
सोषिकतहैतुमसमफायकेक्योंनहींकहितहो॥मंदोदरीवा
चवंचलाछंद॥कुंभकरनकेसमानजानिऐनवीरआन॥
ब्रिह्मविस्नुचंद्ररुद्रईंद्रकोहत्योगुमान राजकाजकोकहैतु
मानिएसुप्रेमपाल कैचलीनकोचलैनकालकीकुचालचा
ल॥१५॥वार्ता॥तवमंदोदरीनेकह्योकुंभकरनकेसमान
हेरावणऔरवीरनहींजानीयतहैं जानेब्रिह्माविस्नुचंद्रमा
सिवजीईंद्रइनकोअभिमानदूरकीयोहे परयहिराजाकेका
रजकोकहितहैसोयाकीवातकोतुममानीयो प्रेमसोपालो
कोंकिसनेनहीचलीहैअरकौननहींचलतहै कालकीषो
टीचालकोकोआवीसमर्थवलवाननहे॥ ॥विस्नुआजमा
जजातछाड्देवताअसेष जामदगनदेषद्रिष्टकेनकीडो
नारवेष ईसरामनेवचोंवचोनवानरेसवाल कैचलीनको
चलैनकालकीकुचालचाल॥विजय॥रामहिचोरनदीनी
सीयाजिनकेदुषसोतपलीललयोहे रामहिमारनदीनो
सहोदररामहिआवनजानदीयोहै देहयस्योतुमहीलै
आजलोरामहिकेपियजायजियोहैदूरकरीद्विजताद्वि
जेदेवहरेहूंहरेअतभायकीयोहै॥१६॥वार्ता॥श्रीरामजू
नेहीतोकोसीताचुराय नेदईहैजाकेदुषनेनपभोनिगललि
यो कहातपनेभारीदुषसहतहे अरश्रीरामजूनेहीतोकोभा
ईलछमनमारवेदीयोहै श्रीरामजूनेहीतोकोआवनजा
नदीयोहे अरआजतांईतुमरेहीवास्ते श्रीरामजूनेसरी
रधारनकीयोहे अरश्रीरामजूकेहीजिवायहैंपीयातुमजी
यहोअपनेवलसोतुमसोंकोऊकामनहीभयोहे कौंतु
मब्राह्मणऐसोतुमारीब्रिसनतातिनोनेहरदईहै हौले

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ईहाले आननाईक्या पापीकरद्दीयोहै॥दोहरा॥संधि
करेविग्रहिकरोसीताजूकोदेहु गनहुनजीयदेहीनमे
पतपरताकोदेह॥१३॥वार्ता॥मिलापकरोआवैलराईकि
करोपरतुमसीताजूकोदैदैवोचितमैनाकोदेहूपकुरिनमै
मतगिनोयहिपतिव्रताकोमरीरहै श्रीजानकीजू॥रावनो
वाचसवैया॥हौमतछाडमिलोम्रिगलोचनकोंछमि
हैअपराधनपे नारिहरीसुतवांधतिहारेमैंकालहि
सोहरसांगहपे वावनमांगत्रिएडपरादषनावलचौ
दहिलोकदये रंचकवैरहुतोहरिवंचकवांधपतालत
ऊपठए॥१४॥वार्ता॥तव्रावणकह्योहे म्रिगनैनीमै
तैसनछोडकरकेमिलभीयरो परमेरेनवीनअपराध
नकोवहिक्योंछमाकरैगे कौनसेअपराधमैतिनोकोई
स्त्रीहरी फेरतेरेपुत्रनेवांधलीपे अरुमैनेकालहीतिन
केभाईकोवरछीसेमारयाथा ऊननैतोवावनहोकरके
तीनपैरप्रिथवीमांगीथी तामैराजावलनैचौदांलोकद
छेतामैदैदीए तहांतोरतीकजातकोईडकरकेवैरथाप
रजौभीहरअैसेछलतएहै जोवांधकारकेवलकोपाताल
मैभेजदिया॥दोहरा॥देवाकुंभकरनसोहरअरसोसुन
पाय रावनसोप्रभुकौनके मंदोदरीडराय॥१५॥वार्ता॥
जांकोदेवरतोकुंभकरनजैसोहै अरईद्रकोशत्रुमेघनाद
सोपुत्रहै अररावणजैसोस्वामीहै सोमंदोदरीकिसकरके
डरै॥चामरछंद॥कुंभकरनरावनैभरछेनामुदैचलै ता
यहांयहांयरहीअकासआसहीहलै मथाकुडच
टकाकरीटखिगसोभनो लैछैपैछसैकलिदईद्र
कोचलोमनो॥२०॥वार्ता॥तवरावणकोभरछेनादैक
रकेकुंभकरणचलनेभए तवहांयहांयहोरहतीभई
ताकीआसुक्यासोव्रहीसोआकासकंपायमानहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

144A ताभयासोससोजाकीमध्यक्याकमरमैतरागही सोभत
है अरकरीटमुकटपरवनकै खिगसमान सोभतहैं मानोला
पपेषनसौ उडकेईद्रपैकलिंदपरवतचल्योहै ॥नाराच छंद॥
उडे दिसादिसाकपीसकोरकोरसासही चपेचपेचपेटवांहु
जेघजानसोनही लीपहै अरअरेचअरेचवीरवाहुवातही॥
भषेतअंतरिछरिछलेछलेछजातही॥२१॥वार्ता॥जांके
सासनके लेनकरके दिसादिसामैवानरोकेराजाऊडतेहैं क
रेरकरेर अरकेईवानरचपेचपेक्यादवदवके मारेहैं भुजा
जंघागोडेतिनोसोकईचपेटक्यातमाचानसोमारे औरसू
रवीरने भुजनकीवातक्यापवनसोकईषैचषैचलीपहै पा
पजेलाषलाषरिछसोअंतरिछक्याआकासहीमैछूट
कर२५ केचलेजातहैं कुंभकरनोवाच॥भुजंगप्रियातछंद॥नहोताड
काहैसुवाहूनमानो नहोंसंभुकोदंडसाचेवषानो नहो
तालवालीषनेजाहुमारो नहोदूषनेसिंधसूयोनिहारो
॥२२॥वार्ता॥हेरामतातोमैतारकाहो ना मोकोसुवाहुमानो
नामैसिवजूकोधनुषहौ सांचकहितहौ अरनामैतालव्रिछ
नेवालीहौजोकुषेडकेमारडारोगे नामैदूषनहौ नासूधो
समुद्रहौजापेआपकोजोरचलै॥ ॥सुरीआसुरीसुंद
रीभोगकरने महांकालकोकालहौ कुंभकरने सुनो
रामसंग्रामकोतोहिबोलो चहोगरवलंकाहिआपेसु
षोलो॥२३॥वार्ता॥देवनकीइस्त्री अरअसुरोकीइस्त्री
तिनोकेभोगकरणकोमैकहाकालकोभीकालकुंभकर
णहो सुनोहेराममैजुधकरवेकोतुमकोबुलावतहौत
मकोजेगरवधरयोहैजिसतेलंकामेआपहो ताकोअव
षोलो॥ ॥कुठेपेसरीकेसरीजोरक्यायो वलीवालको
पूतलैनीलधायो हनुमंतसुग्रीवसोभेसुभागे दुसेडा
सज्योअंगअंगलागे॥२४॥वार्ता॥तवपेसरीक्याआपोते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वलमेछायोहुयोकेसरीवानरउठेग अरवलीवालीको
पुत्रअंगदसोनीलकोलेकरकेदैसो हनूमानजू
सुग्रीवसोजोसेमनेसेसोचले तेसमअंगक्यासरीर
मेअंगअंगप्रतिअैसेलगेहैजैसेडांसक्यामाछरडहे॥
॥दसग्रीवकोवंधुसुग्रीवपायो चलेलंकमेलैभलेअं
कलायो हनूमंतलातेहन्यो देहभूल्यो छुटेगाकरन
नासाहलैईद्रफूल्यो॥२५॥वार्ता॥तवजुधमेकुंभक
रणनेसुग्रीवपायो सोभलेगेंदमैलगायकेलंकामेलै
चल्यो तवहनूमानतेलातमेकुंभकरणमास्यो तासुग्री
वछूटेगताकेनाककानकोलैकरकेईद्ररूपसुग्रीवसो
फूलतोभयो॥ ॥संभासोघरीएकदूमेमरूंगे॥फि
स्योरामहीसामुहेभोगदालै हनूमंतजूपूछसोलाय
ली नी नजान्योकवैसिंधुमेडारदीनी॥२६॥वार्ता॥सो
एकद्वैघरीमेमरूंक्यामूरछाषायकरकेसंभारतोभ
यो फेरफिस्योश्रीरामजूकेसामुनेगदालैकरकेहोत
भयासोगदाआवतीहनूमानजूनेपूंछसोलगायल
कव ईकाहूनेनाजान्योकिसमुद्रमेगेरदई॥ ॥जहांका
लकेकेतसीनाललीनो कीयेरामहीहसनपापही दा
नो चल्योलोटलैकायवंकेकुचाली उठेगावानलै
मुंडज्योमुंडमाली॥२७॥वार्ता॥तवकालकीयुजासो
नालविछहाथमैलीयो तवश्रीरामचंद्रजूनेताकोहा
थअरचरणकरकेहीनकरदीयोकहाकाटडारे तव
षोटीचालवारेविंगोहूकेलोटकैचल्यो तवहीताकेसी
सकोवाणअैसेलैकरउड्यो जैसेसीघ्रतासेसिवजू
मूंडलैजावे॥ ॥तहीस्वरगकीदुंधवीदीहवाजे क
रीपुषपकीव्रिष्टलोकेसगाजे दसग्रीवसोकग्रसो
लेकहारी भयोलंकहीमधआतंकभारी॥२८॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

145A तवही स्वरग के वडे नगारे वाजते भए फूलन की वरषा क
री अर विद्याधर जू गरजते भए रावण सोक मे ग्रस्यो लंका हा
री अर लंका मे भारी भै होतो भयो ॥ दोहरा ॥ लषरा व
ण आय सदन मे त्री मित्र वुलाय इंद्रजीत को आग्या दै
जुध्य करो सम भजाय ॥ २९ ॥ वार्त्ता ॥ तव रावण ने देष कर
के भयभीत ह्वै मंत्री अर मित्रन को वुलाय करके इंद्रजी
त को आग्या दै करके सम्मुजाय के जुध करो ॥ दोहरा ॥ लं
क चमू तवही कढी द्वार द्वार प्रति धाय इंद्रजु दुहू दल म
ध्यौ कपि दैतन पाय ॥ ३० ॥ वार्त्ता ॥ लंका की सैना तवही नि
कसती भई दरवाजे दरवाजे प्रति दौर दौर करके दोऊ और के
दलन को तव इंद्रजुध होतो भयो कोऊ भी पाछे को पग ना
देता भया ॥ चंचरीक छंद ॥ रन राम सो मन मान यरतव जु
रे पंच महारथी कोपके छिनएक मै जमलोक के तक भए
पथी लछमन हने रन के गने जू फैये नेदु हू सैन के रविअ
स्त काल प्रमाण ही आप मुक ट दिसेर के जिह जोत तेन मना
सगो सभ को प्रगट सम देषई तव थापके कपि जू घना घहि
स महने को लेष ही पुनरि इंद्रजीत अजिन रण निकस्यो प्रग
ट रथ साज के तिह देष आव तवीर अंगद सामुहे गयो गा
ष जके तव मेघनाद अस्रैं वरनन वीच अंगद मारियो करको
प सो गिर एक एक लैर घद्रूत सूत सिंघारिडो धायो प
या देवान लै अंगद तवै चट कन हयो उरम ध्यको हम भयो
तही तव भाज लंका ह्मै गयो ॥ ३१ ॥ वार्त्ता ॥ तव जुध मे श्री
रामजू सो मन मै अभिमान को धारण करके पंच महारथी
जुढते भए सो कोप करके एक छिन ही मै जमलोक के मा
रग मै होते भए मरे तव लछमन जू ने जो मारे है तिनो को
कौन गिन सके तहा दोऊ तर फन के वहुते ही जूझते भए
तिन मुकटो की जोत ते अंधकार दूर भयो सभन को प्रग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१४८
146

152

टहीसमदेषनेलागे तववानरोकेसंवूहनकेस्वामीयोनेस
मभारडारे तिनोकोकौनविचारै फेरिरणमैंअजीतजोमे
घनादहैसोरथकोसजकेप्रगटहोनिकसो तांकोआवतो
देषकैसामुनेगरजनाकोकरकेअंगदवीरजातेभये तवमे
घनादनेसंपूरणवालोकरकेवीचहीमैंअंगदकोमारयो॥
फेरअंगदनेकोपकरकेएकपरवतलैकरकेरथअरसूतने
रथवानताकोसिंघारदीयो तववाहनलैकरकेसोपयादेहो
करकेदौरिडो अंगदनेचटकनक्यातमाचेसेताकोमा
रयो तवताकेडरमैछोहभयो तवलंकामैभाजगयो॥दोह
रा॥कीनेजगयनिकुंभलाहोमसोरूपरअपार कुंडमध्यते
रथकढोसहितसूतहथिआर॥३२॥वार्ता॥तानेनिकुंभ
लादेवीकेजायकरजग्यकीनो अपाररूपरकोहोमकीयो
अरुविहांडकेवीचतेरथकोनिकारयोसहितरथवानहथि
आरोंके॥दोहरा॥तवहीगयोनिकुंभलाहोमहेतइंद्रजी
त कहेतिहिरघुनाथसोंमतोवभीषनमीत॥३३॥वार्ता॥ज
वहीनिकुंभलाकोहोमकेवास्तेमेघनादगयो तवहीश्री
रामजीसौंवभीषनमतोकहितेभए॥वभीषनोवाच॥चं
चरीकछंद॥जोरअंजुलीकोविभीषनरामसोंविनतीक
री इंद्रजीतनिकुंभलागोहोमकोरिसिजीभरी सिध
होमनहोयजौलौंइसतौलौंमारिये सिधहोनप्रसिध्यहैव
हसरवथाहमहारिये॥३४॥वार्ता॥हाथजोरकेतववभी
षननेयहिविनतीकरीमेघनादनिकुंभलामैहोमकोगयो
हैकोपकोधरके हेनाथजवताईहोमसिधनाहोवेतवता
ईताकोमारिये होमसिधहूएतेयहिप्रसिधहोयगोहमा
रेसभनतेंन्हारहोयगो॥दोहरा॥सोईवाहिहनेकिरन
वानररिछककोय वारहवरषछुधाविषाइंद्राजीतसेंहो
होय॥३५॥वार्ता॥अरवांकोसोईमारेगोजुधमैवानर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

146A

अथवा रिछकों ऊंहो य जानैवो रावरस भूषअर विषाते
नींद एहू जीती हो यरी ॥ चंचरीक छंद ॥ रामचंद्र विदा
करे तव वेग लछमन वीरको सो विभीषन जामवंत हिसं
ग अंगद धीरको नील लै नल केसरी हनुवंत अंतक ज्यौ
चले वेग जाय निकुंभला पल जग्य के सगरे दले ॥ ३६ ॥
वार्ता ॥ श्रीरामजू तव सीघ्र ही वीर लछमनजू को विदा क
रते भये सहित विभीषन के अरजामवंत के अर अंगद
को संग दै कर नील अर नल अर केसरी इनको लेकर के
ताये जम कीन्याई हनूमानजू चलते भये सीघ्र ही नि
कुंभला के अस्थान मै जाय कर के जग्य के सभ पदारथ
नास कीये ॥ जामवंत हि मार द्वै सर तीन अंगद छेदयो
चार मार विभीषनै हनूवंत पंचसभेदियो एक एक
अनेक वानर जाय लछमन सो अस्यो अपंग्र यक जुध
ज्यौ भवहो भयो भवही हस्यो ॥ ३७ ॥ वार्ता ॥ तव मेघ
नाद ने द्वै वाण जामवंत को मार कै तीन्न सौ अंगद कों ॥
छेद्यो चार वाण विभीषन को मार कै पंच वाणो सै हनूमान
जू को भेदन कीयो एक एक वाण सो अनेक वानर भेदे
फेर लछमनजू सो जाय कर के अरतो भयो जैसे अंध
जो अंधरा कसतो के जुध मै सिवजू सो मायमा
न भये से फेर सिवजूने तो को मार्यो था जैसे ही लछमनजू
सो भमे भये ॥ ॥ रन ईद्र जीत अतीन लछमन अस्त्र सस्त्र
न संघरे सर एक एक अनेक मारन वुंद वृंद रज्यौ यरे तव
कोप राघव भ्रातु को सिरवान तछिन ऊथ स्यो दसकं ध
सथ्य हकरत हो सिर जाय अंजुल मे परयो ॥ ३८ ॥ वार्ता ॥
जो जुध मै तव अप्रमीत हैमेघनाद द सो प्रा सस्त्र अर अस्त्र न सौ
सिंघार करत हैं एक एक वाणो सो अनेकन को मारत हैं
वूंदन के समान वंदर गिरते भये तव लछमनजू ने कोप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करके एक वाणसो शत्रू के सीसको उतार दीयो तब रा
वणसु एक कोकरता थ्या संप्यासमैं तब सीस अंग्रजुली मे
जाय गिस्यो॥ ॥मार लछमन ईद्रजीत हि सब्छ संष
वजायायो कहि साधु साधु समेत इंद्र हि देवता सम आ
ईयो कछु मंगीय वरवीर सत्वर भगत श्रीरघुनाथ
की पहिराय माल विसाल अरु वहि कै गए सम साथकी
॥३९॥वार्ता॥तब लछमन जू ईद्रजीत को मार के नि
रमल संष को वजावते भए तब धन धन कहि करके ई
द्र के समेत सब देवता आवते भए तिनो ने कह्या हे सेष्ट
वीर लछमन सीघ्र कछु वर मंगीए तिनो ने कह्यो श्री
रामजू की भगत देवो तब सो वर दैके अरु वडी माला
ऊर मै पायकर के॥कलहंस छंद॥हन ईद्रजीत कहु ल
छमन आए हस रामचंद्र वहु धा ऊर लाए सुन मित्र पुत्र
सुभ सोदर मेरे कहि कौन कौन गुन सिमरो तोरे॥४०॥वा
र्ता॥तब मेघनाद को मार करके श्री लछमन जू आए तब
श्री रामजू ने हस करके वहुत प्रकार सो हीय से लगाए अर
के हा सुनो तुमको मित्र अर पुत्र अर भाई कौन सो कौन सो
कहि करके गुण सुमरण करो॥दोहरा॥छुधा पिपासा नी
द तुम जो न जीत ते वीर सीत हि कौ हम पावते सुन लछम
न रणधीर॥४१॥वार्ता॥भूष अर विषाद न को जो तुम वी
र ना सा धने तो हम हे लछमन जू सीता जू को कैसे पाव
ते॥इति श्रीमत सकल लोक लोचन चकोर चिंतामन
श्री रामचंद्र चंद्रका यां कुंभकर्ण ईद्रजीत वधः नाम जी
वरननो नाम अष्टादश प्रकासः॥१८॥दोहरा॥=॥
८४ उनीस प्रकास मै रावण अतदुष पाय षर सुत जू कोन
राम पहि रावन दूत पठाय॥१॥वार्ता॥उनीस मै अध्या
व विषै रावण अत्यंत दुष पाय कर के षर के पुत्र के जू के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

147A नेश्रीरामजूपैदूतभेजेगो ॥दोहरा॥ होमविघ्नकरवा
लसुतरनरावनअररास दससिरछेदनरामजेकरैदे
वकेकाम ॥२॥ वार्ता॥ फेरअंगदजूताकेहोमकोविध्वं
सकरैगो रावणअरुश्रीरामजूकोजुधहोयगो रावण
कोमारकरश्रीरामजूदेवतनकोकारजकरेगे॥ सो
टनकछंद॥ देखेमुषअंजुलमैजवहीं हाहाकारम
मपरयोतवहीं आपसुतसोदरमित्रसवै मंदोदरीसो
त्रियआईतवै ॥३॥ वार्ता॥ जवरावणनेअंजुलीमैमेघ
नादकोमुषदेष्यो तवहींहायहायकरकेप्रिथवीमै
गिरपरयो फेरपुत्रभाईमित्रसमंतहेंआवतेभये मंदो
दरीकेसहितसभईस्त्रिआआईं ॥ ॥कोलाहलमं
दरमांभमए मानोप्रभुकेउठप्रानगए रोवेंदसकंठ
विलापकरै कोऊजुनहींतनधीरधरै ॥४॥ वार्ता॥ मं
दरमैतवकोलाहलसवदहोताभया मानोरावणकेहीं
प्राणनिकसगएहैं रावणरोवतहै अरविलापकरतहै
तवकोऊभीधीरजकोनहींधारतहै॥ रावणदंडकछंद॥
आजु आदित्यजलपवनपावकप्रवलचंदआनंदमैतापज
गकोहरै गानकिंनरकरहैनितगंधरवकुलजछगन
लछेवियपछकरमनधरै ब्रह्मरुद्रादिदैदेवत्रैलोक्य
केराजकोआजअभिषेकईद्रहिकरै आजुसीयरम
दैलेककुलदूषलहिजग्यकोजायसरवगयविप्रनवरै॥
॥५॥ वार्ता॥ तवरावणकहितोभयोआजआदित्यका
सूरजअरजलअरपवनतेअगनपहसमप्रवलहैंजा
वोअरचंद्रमाभीआनंदमैहोकरकेसभनोकेदुषकोदू
रकरे किंनरगानकोकरे गंधरवेकेकुलनित्यकोक
रे अरज[illegible]लाषनवियसेआपनेपछकेजोकरमहै
तिनोकेकरे ब्रह्मासिवतेआदलैकरकेसंपूरणदेवता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तीनलोकके राजकोतिलक आजु ईद्रकोकरदैवो अ
रु आजसीतारामजू कुलकोदूषनजोहै विभीषनताको
लंकादैकरकेजयकोजायकरकेसभब्राह्मणकोवरो
॥महोदर अनुकूल॥ प्रभुसोकतजोजीयधीरधरोजू
सकुशत्रुवधोसुविचारकरोजू कुलमेअवजीवतजोर
हिहैजू ससकसोकसमुद्रहिसोवहिहैजू ॥६॥ वार्ता
हेरावणसोककोत्यागो चित्तमैधीरजकोधारणकरो
सकुक्यासीघ्रजासोशत्रुनकोमारो सोविचारकरो अ
वजोकुलमेजीवतोरहैगोसोसोकसमुद्रमैवहैगो॥
मंदोदरी॥अनुकूल॥सोदरजूक्योसुतहितकारी कोग
हिहैलंकहि अपकारी सीतहिदैकेरिपहिसिंघारो मोह
तहैविक्रमअतभारी॥७॥वार्ता॥मंदोदरीकह्योहेपीयतु
मारोभाईजूकगयो अरसनेहकरणवारोपुत्रजूकगयो
लंकाकोअपकारकोअवकौनग्रहिणकरेगोक्याराजक
रेगो जोतुमजैचाहतहोसोसीताजूकोदेकरकेशत्रुनको
मारो क्योसीताजूकेसनतेतुमारोअत्यंतभीपराक्रमहै
परसोमोहतहोतजातहै॥रावणवाच॥तारकछंद॥तुम
अवसीतहिदेहुनदेहु विनसुतवंधुपरोनहदेहु यहित
तजोतजलाजहिरहिहै वनवसजायसवैदुषसहिहै॥८॥
वार्ता॥तवरावणकह्योतुमअवतोसीताजूकोदेवोभा
वैनादेवो क्योमेतोपुत्रअरभाईनेविनासरीरकोनहीधा
रणकरूंगो जोयहिसरीरलज्याकोत्यागकरकेरहिवीजा
यगो तोजायकेवनमेवसकेसभदुषनकेसहारोगो॥
भुजंगप्रियातछंद॥कहाकुंभकरणकहाईंद्रजीतेक
रेसोयवोवेकरेकूटरीतेसुजोलौजियोहौसदादासतेरो॥
सिपेदेसकेकोसुनोमंत्रमेरो॥९॥वार्ता॥तवमकराछने
कह्यो क्याप्याकुंभकरण अरक्याप्यामेघनादवहितोसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

148A वनेहीकोकरताथा अरवहिकपटकेजुथसोजीतताथा
सोजवताईमेसदातुमाररदासजीवताहां तवतांईसीता
जूकोकौनदेसकेगो तुममेरोमंत्रसुनो॥ ॥महांरा
जलंकासदाराजकीजे करोजुपमेरीविदाकौनकीजे
हनेरामस्तोवंधुसुग्रीवमारो अजुथ्याहिलैराजधानी
सुधारो॥१०॥वार्ता॥हेमहाराजतुमलंकामैसदाराजक
रोपेमैजाकेजुपकरतहौ मेरीसीघ्रविदादीजीये मारेगो
रामजूकोसहितभाईके अरुसुग्रीवकोमारेगो अरअ
जुध्याकोलेकरके अपनीराजधानीकरेगो॥वभीषनोवा
च॥वसंततिलकछंद॥कोदंडहाथरघुनाथसंभारलीजे भा
गेसवेसमरजूथपद्रिष्टदीजे वेटावलिष्टषरकोमकराक्ष
आयो सिंगारकालजनुकालकरालधायो॥११॥वार्ता॥
तवआवतेदेषके विभीषननेकह्यो हेश्रीरघुनाथजूहा
थमेधनुषकोसंभारलीजीये कौसंपूरणजोजुथतेवानरो
केराजाभगेहेसोद्रिष्टदेईये षरकोपुत्रवलवानयहिमक
राछआयोहे सोमानोसिंगारकेकरणकारेभयानकजमधा
योहै॥ ॥सुग्रीवअंगदवलीहनुवंतरोक्यो रोक्योरह्यो
नरघुवीरजहांविलोक्यो मारयोविभीषनगदाउरजोरठेलो
कालीसमानभुजलछमनकंठमेली॥१२॥वार्ता॥वलवान
जोहेसुग्रीवअंगदअरहनूमानइनोनेताकोरोक्यो सोरोक्यो
हुयोरुक्योरह्योनहीहे श्रीरामजूजहांजोदेषिआहै तिसने को
फेरविभीषनकेउरमैजोरसोपेलकरकेगदामारीहै अरश्री
लछमनजूकेकंठमैसरपकेसमानताने भुजाआयकरपा
ईहै॥ ॥ताहेताहेप्रवलअंगनअंगभारे काटेकटेनव
हुभांतनकाटहारे विसादियेवर असुनसस्त्र लागे ले
हींचल्योसमरसिंहनजोरभागे॥१३॥वार्ता॥तववानरअपने
अंगोकरकेताने श्रीलछमनजूकेजोमारे अंगाघेसोगाही

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

155

नंगसोंपकरेहैं लछमनजू वहुतप्रकारसौं काटतेहूयेहार
गयेहैं ताकेअंगकाटेतेकटतेनहीं हैं क्योंताकोव्रह्मानेव
रदीन्हाथा यांतेशस्त्रअस्त्रनहींलागतहैं सोजोरसेजु
धमेंतेलछमनजूकोलैचल्योहै सिंघकेसमानभागते
व हूये॥ ॥गाहं धिकारू दिमूतललीललीनो ग्रहूसरा
ह हजुतमानुंचंदकीनो हाहादिसैदसवलोकनहीपुका व
रे वाहेअसेषअंगारकसके विदारे श्रीरामचंद्रपगलभा
तचितहूरषे देवाधिदेवनसिथपुसपवरषे॥१४॥वार्ता॥
तोनेजोकीयोहैगाहोअपकप तिसनेप्रिथवीआकास
ग नीललीयेहैं अंधकारदीयेहैं अथवालीलेरंगमैंलीनक
रदीएहैं राहुकेसहितग्रसोहूयोअसतचंद्रमासोमानोल
छमनजूतानेकरदीयेहैं हाहाआदसवदनकेजवहीलो
कपुकारदेथे संपूरणअंगजोराकसकेवपेथसोलछम
नजूनेतवहींकाटेसोमारयो फेरजवश्रीरामजूकेचर
णमेंआयकरकेलागेतवरामजूप्रसंनभये अरदेवतिउ
नेफूलनकीवरषाकरी॥दोहरा॥जूकनहीमकराछके
रावणअनदुषपाय सुनर श्रीरघुनाथपैदीयेवसिठपठा
य॥१५॥वार्ता॥फेरमकराछकेजूफतेहीरावणनेअत्यंत
दुषपायकरकेसोश्रीरघुनाथजूपैदूतभेज्यो॥श्रीराम
सुंदरीछंद॥दूतहिदेषतहींरघुनायक ताकोवूफेउठेजग
नायक रावणकेकुसलीसुतसोदर कारजकौनकरेअपनो
घर॥१६॥वार्ता॥दूतकोश्रीरामजूदेषदेईतांकेप्रतिसुषके
देनवारेकहितेभये रावणकेपुत्रभाईउमेकेहुकुसलहैं
अरअपनेघरमेंअवकिसकारजकोकरतहैं॥दूत॥विजय
छंद॥पूजउठेजवहीसिवकोतवहीविधिसुक्रव्रहसपतआ
ये केविनतीमिसिकस्यपके तितदेवअदेवसवेवगसाये हो
मकरैतनईसिषईकवमंत्रदीयेसुतिलागसिषाये होइत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

149A कोपठयोउनकोउनलैप्रभुमंदरमांफसिपाये ॥१७॥
वार्ता॥जवशिवजूकोपूजकरकेउठेयेतवहीरावणके
पासविहस्ताअररुकेनेव्रहसपततीनोआवतेभये कस
पके मिसकरकेतिनोनेवेनती करीथी तुमराकसअर
देवतासभयेसमहीकस्पपहीकेपुत्रहे तातेएकहीहो
विरोपनाचाहिये यहिसुनाकेदेवताअसुरसभतिनो
नेप्रफूलनकीएहे फेरव्रहसपततेकछुकहोमकीनई
सीरीनसीषीहे तातेकोनमेलागकेमेत्रदीयोहैअरसि
षाएहे तवमेइपरकोभेज्योहो ऊपरउनोकोरावणले
करकेमंदरमेगएहे सवेस सूरपनषाजुविरूपकरी
तुमतातेदयोतुमकोदुषभारो वारपवंपनकीनेहुतो
तुमसोसुनवंपनकीनोतुमारो होयजुहोनोसुहोयर
हेनमिटेहीएकोदविचारविचारो देषिगनेदनकोपर
सारघुनेदनिरांनदिलेपगुपारो॥१८॥वार्ता॥तुम
नेजोसूरपनषाहमारीविरूपकरदई तातेहमसीताजू
कोभारेदुषदीउंहे फेरतुमनेसमुद्रकेवंपनकोआ
षा तिसितेमेरेपुत्रनेतुमारेवंपनकीयेजोहोनीहोती
तो॥ हैसोंहोयरहतीहै चित्तमेकरोरविचारनकोविचारो
सोनहीमिटती परसरामकाकुहाहादेकरकेतुतहे
श्रीरामजूअजुध्याकोजावो॥दोहरा॥प्रतिउत्तरदूत
हिदीउोयहिकहिश्रीरघुनाथ कहीएरावणहोयज
वमंदोदरीकेसाथ॥१९॥वार्ता॥तवश्रीरामचंद्रजू
नेदूतकोयहिवारताकहिकरकेप्रतिउत्तरदीआ ज
वरावणमंदोदरीकेसंजुताहोयतवतुमकहीउ॥स्व
णसंजुताछंद॥केथोविलवकहाभयो रघुनाथयेजव
तूगयो किहिमेषतरअवलोकियो वहुतोहिउत्तरकया
दयो॥२०॥वार्ता॥जवदूतगएसुनके तवरावणनेप्रछो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राम चं
टी
१५०
150

रे दूतक हे नोको विलंव कहां भयो जवतू श्री रघुनाथ
जू पे गयो सो तैंने किस प्रकार सो देषे अरु तेरे को तिनो
ने क्या उत्तर दीआ सो कहु ॥ दूत उवाच ॥ दंडक छंद ॥
भूतलके ईंद्र भूमपै ठाढे हुते रामचंद्र मानक कनक म्रि
ग छाल हि विछाये जू कुंभ हरण कुंभकरण नासाहर
गोद सीस चरण अंकेपन अछ अरु धुर लाये जू देवांनक
नरांतक अंतक से मुसिकात विभीषण वैन तत्तकानरु
षलाये जू मेघनाद मकराक्ष्य महोदर प्राणहरबाण
स्यो विलोकत परम सुष पाये जू ॥ २१ ॥ वार्ता ॥ नव ग्रिघ
हो के ईंदु प्रिथवी विषे श्री रामचंद्र जू पोठे हूए थे मानक
अरु रतनो के सहित जो स्वरण के म्रिग की छाला तां को
विछाए हूए है हाथि उके कुंभ कर्णा मस्तको के हरण वा
रे जो कुंभकरण तां की नासका के हरणवारे जो सुग्री
व तां की गोद मे सीस है अंकेपके शत्रु जो अंगद अछ के रा
कस के शत्रु जो हनूमान सो दोऊ उरसो चरणो को ल
गाय रहे थे चापन करने हूए फेर देवांतक अरु नरांतक
के अंतक क्या जमरूप जो है जामवंत तां की तरफ मुसका
वते है विभीषन की तरफ कानको रूष दीए हूए कछु व
चन कहिते है मेघनाद अरु मकराछ ते महोदर इनो के प्रा
ण हरण वारो है वाण जो को अंबे सेल छमन जू तिनो की
तरफ सुष पाए हूए देषते है इस प्रकार तो मैने हे रावण
वहि देषे है ॥ उत्तर ॥ मंदरा छंद ॥ भूमदई भुव देवन को
भ्रिगु नंदन भूपन पै वर लेके वामन स्वरग दयो मघवे सु
वली वलिवांपय पताल पठैके संपकी वात निको प्रति
उत्तर आपुन हीं कहि जे हितु के के दीनी है लंक विभीष
न को हम देह कहा तुम को अव देके ॥ २२ ॥ वार्ता ॥ परस
राम अवतार हो करके राजि डो ते लेकर के जो इसो प्रिथवी

150A

तो मैने ब्राह्मणां को दई है फेर वावन अवतार होकर के इंद्र
को स्वरग दे दीयो है अरु वलवांन वल को वांध के पताल मे भे
ज के पताल दे दीयो है सो मिलाप की वात के प्रतिऊतर आ
पही कहो हित कर के एक लंका रहि गई थी सो विभीषन
को दे दई है अव तो सम को दे चुके है तुम को कहा दै वे जो
मिलाप करे ऐसे संदेस कह्यो है ॥ मंदोदरी उवाच ॥ मालती
छंद ॥ तव समझ कहि हारे राम के दूत आए अव समझ परी
है पुत्र मेघ अजु काए दस मुष सुष जो जै राम सो हो लरे
यो हरि हरु हीय हारे दे विदुर गाल रोज्यो ॥ २३ ॥ वार्ता ॥
मंदोदरी ने कह्यो है नाथ तव तो तुम को समझ कहि के हा
रगये थे जव श्री रामजू के दूत अंगद आए थे अव सम
झ परी है जव पुत्र अछर मारे जु काय दीयो अरहे रावण
तुम सुष सो जो वो श्री रामजू सो मेल रोगी जैसे विसु अर
सिव हिय मे हार गये से तव दुरगा देवी नहीं सो ॥ रावण उ
वाच ॥ छल कर पठयो हो पाऊ जो तो कुठारो रघुपति वपु
रा को पावतो सिं पुहारो हति सुरपति भजै विस्नु माया
विलासो सुनसुमुष तोको ल्यावतो लछदासो ॥ २४ ॥
वार्ता ॥ तव रावण कह्यो मैं तो दूत छल करके मे जि आ या
जो मै कुहाहा पावता तो रामकहा वापुरे थे मै समुद्र के पा
र दौरतो देवतेउ के स्वामि जो थे पालन वारे विस्नु तिन
को मार के तो के विलास करणवारि अंजो थी आ माया
सुनहे सुमुषी तोको लांघा हि दासी आ ल्यावतो अथवा
वैकुंठ वासी जो विस्नु ताको मार के लछ्यपाल लछमी को
दासी कर के ल्यावतो ॥ चामरछंद ॥ प्रोढ रूढ के समूढ
गूढ गेह मै गये ऊरु मे वसाप सापहो मको जहां भये
वाल पूत वाय पूत जामवंत या यडो लंक मै निसंक अं
कलंक ताय पायडो ॥ २५ ॥ वार्ता ॥ पालने मे आरूढ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तहां करके अनंत मूरष गूढ क्यो गुपत ठौरमे जातो भया
प्रजक के दीप हूपे मंत्र को सोध सोध करके होम करण के ज
व भये तव अंगद अरु हनूमान ते जामवंत पहं दौरत भ
ये लंका मै निसंक जाके रावण को पायो मनदंत राजवा
ज राजछोरके दई भात भात पकवान राज भाज भाजके गई॥
आसनै विछावनै वितान तानतानी शिये जंत्र तंत्र चोरचीर चार
चूर डारीये॥२६॥वार्ता॥तव तिनो नै उन मतहाथीन की पंग
छोडदई त अरु छोडि डो की पंगत तै भाग भाग के जाती भई आसन अ
र विछावने वितान कया चंदोये जो तानेसे सो नास कीये अरु
जहां तहां ते सुंदर जो चोर है अरु छत्र है से चूरण कर डारे॥
भुजंगप्रयात छंद॥ भगी देष के संक लंके सवाला दुरी दौर
मंदोदरी चित्रसाला तहां दौर गो वालकों पूत फूल्यो सभै चि
त्र की पुत्र का देष भूल्यो॥२७॥वार्ता॥तव देषकरके संका
से रावण की अंतःपुर स्त्रिआं भाग तिआं भईआं जहां मंदोद
री सी तहां चित्रम की साला मे जायकरके छिप गईआं तहां प्र
सन्न होकर के अंगद दौरकर के गया सुभ पकसी चित्र की
पुतरीओ को देषकरके भूल गयो॥ ॥गहे दौर जाको तजे ता
के ताको तजे जा दिसा को भजे वाम ताको भली के ति
हारी सवै चित्रसारी लहे सुंदरी को दरी को विहारी तजे दि
ष के चित्र की स्त्रिष्ट यन्या हसी पकता को तेही देवकंन्या॥
॥२८॥वार्ता॥जिसतरफ को अंगद दौर करके ग्रहण करता है
तिस तरफ को [illegible] न्या गजाते है जिसको अंगद त्यागता है॥
ताको वहि ग्रहन करती है भली करके ऐसे अंगद जूने सं
पूरण चित्रसारी देषी कोउ कंदरान के रहिन वारी सुंदरीन
को कैसे पावै तव चित्रों की स्रिष्ट क्या रचना कौ त्याग तो दे
ष के तव ही यन्या नाम जोग कदेवकंन्या थी सो हसी॥ ॥
तही हास ही देवकंन्या दिषाई तिही संक के लंक रानी वि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

151A ताई सुग्वानी गहे केसलेके सराने नभ श्री मनो सूरसो
भानिसानी ॥२९॥ वार्ता ॥ जहां हा सही सो तिनोने देवके
स्वाने दिवाई दई सकासो ताने मदे दरीवनाय दई रावण
का रावण तिनोने केस से पकर करके लै आई सो कैसी
है मनो तमकी रखी है अथवा सूरजकी सोभाको निसा
नी है ॥ ॥गहेवाह खेचे चहूं ओर तें को मनो हंसलीने भ्र
नाली लताको छुटी कंठमाला के हार टूटे विसे फूल फू
लेलसे केस छूटे ॥३०॥ वार्ता ॥ ताको भुजा सो पकर के चा
रो तरफ खैचते है सो मानो भिसकी लताको हंसली पहूंच
खैचते है तब ताको कंठकी माला भी छूट गई अरही एमें के
हार भी टूट गये अर सीस फूलतेक रण फूल सो भी षिस
गए केस भी छूटगये ॥ ॥फटी कंचुकी कि कनी चारु छूटी ॥
पुरी कामकी सो मनो फडलूटी विना केचुकी स्वच्छ वछोज
राजै कि पो सं चह श्री फलै सो भसजै ॥३१॥ वार्ता ॥ चोली
फटगई तरगही सुंदर सो गिरयसी मानो कामकी नगरी जै
सो सिवजू ने लूटलई है चोलीने विना निरमल कुच ऐसे
सो भने है मानो मा चेही श्री फलका विल सो भासो सजरहे
है ॥ ॥कि पो स्वरणके कुंभलावेन करे वसीकरणके चूर
णसं पूरणपूरे मनो इष्ट देवै सदा इष्ट हीके कि पो गुंछ है
काम संजीवनीके ॥३२॥ वार्ता ॥ अथवा स्वरणके कुंभ है सुंद
र वसीकरणके संपूरण चूरण सो पूरण हूये याही ते कठन है ॥
अथवा इष्टका प्यारके इष्ट देव है अथवा कामके उपजावन
वारी जो है संजीवनी बूटी ताको फूलनके गुच्छे है ॥ ॥मनो
चित्त चौगानके मूल सो है हीपहेमको हाल गोलान मो है सु
नीलेक रातीन की हीन वानी नहीं छोड ही नी महां मोन मा
नी ॥३३॥ वार्ता ॥ मानो चित्त रूपी चौगानके मूल है दृढ क
रनको अथवा ही पेमे स्वरणके हदको गोला है जवरावण

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेमंदोदरीकीदीनवानीसुनी नवहीमहांमोनजोकररह्याथा
सोत्यागदई॥ ॥उठ्योलैगदाकोजदालंकवासी गयेमा
जकैसरवमायाविलासि॥३४॥वार्त्ता॥गदाकोलैकरकेरा
वणउठ्योतवसभवानरभाजगये॥मंदोदरीऊवाचा॥दोह
रा॥सीतहिदीनोदुष्यविद्यासांचोदेषोआज करैजुतैसीत्यो
लहैकहांरंककहाराज॥३५॥वार्त्ता॥विनाहीप्रयोजनहीतु
मनेसीताजूकोदुषदीआथा सोआजसाचोहीदेख्योजोजै
सीकरताहैसोतैसेहीपावताहै क्यांकंगालक्याराजा॥राव
न॥दंडकछंद॥कौवपुरजमिल्योहैवभीषनहैकुलदूषनजी
वैगोकौलौ कुंभकरणमर्यो मघवारिपुतेरेकहांनडरेजम
सोलो श्रीरघुनाथकेगातनसुंदरजानेनतूकुसलातहैतेलौ
सातसभेदिग्पालनकेकररावनकेकरवारहैजौलौ॥३६॥वा
र्त्ता॥कौनहैकंगालविभीषनजोजाकरकेमिल्यहैकुलको
दूषनहोकरकेकवताईजीवैगो कुंभकरणअरमेघनादजोम
रगएहै तोकहाभयो मेतोसैजमतेभीनहींडरतहो श्रीराम
[illegible] जूकेसरीरविषेहदेसुंदरीतवताईतूजानकुसलनहीहै सं
पूरणदिग्पालनकोहेसलजाकोऐसेनवताईरावणकेहाथ
हु॰ मैषैंगहै॥चामरछंद॥रावणीचलेचलेतिपामपामनेसवे॥
साजसाजसाजसूरगाजगाजकेतवे दीहदुंदभीअपारभां
तभांतवाजही जुयभूमयअकुंपमत्तदंतगाजही॥३७॥वा
र्त्ता॥रावणकेचलतेतवघरघरतेसभचलते [illegible] भये सजसज
करकेसंपूरणसूरमागरजगरजकरकेचलतेभये अनेकभांत क
भांतकेवडेनगारेवजातेभये जुधकीप्रिथवीकेविषेकेपवा
नहूयेउनमत्तहाथीगरजतेहैं॥चंचरीकछंद॥ईद्रश्रीरघुना
थकोरथहीनभूतलदेषके वेगसारथसेकह्योरथजायकूलै
सुविसेषकै तूनअक्षेवानसयकअभेदलैतनत्रानकोआ
यपौरणभूमभैकअप्रमेयप्रमानको॥३८॥वार्त्ता॥तिस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

152A
समसेई इस्श्री रघुनाथजू को रथ ने हीन देषकर के प्रिथवी विषे वेग
ही स्वारथ सो कह्यौ विसेषत सो तूं रथ के लैकर के जाहु जा मैं
सो वाण छेदन हो सकै औसो तरकस अरु निरमल जो भेदन हो
य सकै औसो संजोयो ता को लैकर के सो जुध को प्रिथवी मै आव
तो भयो जा को प्रमा कथा वुध कर के प्रमाण न वरणे जाय औ
से रथ को लैके॥ ॥कोट भांत तन पोन ते मन ते महा लघुता लसै
वैठके ध्वज अग्र श्री हनुमंत अंतक ज्यो हसै राम चंद्र प्रदछना
कर दछ हूं जव ही चढे पुहप वरषत जाय दुंद भव देवता वहु धा
५४ वढे॥३८॥वार्ता॥जा कौं वन ते अरु मन ते कहे प्रकार सो सीघ्र
ता सो मत है वैठकर के धुजा के अग्र भाग मै श्री हनूमानजू हसत है॥
रामचंद्रजू ता की प्रदछना दै कर के दाहने पासे सो होकर के ज
व ही चढते भये फूलन की वरषा करके नगारे आ को वजाय
कर के देवता वहुत प्रकार सो ध्यावते भये॥ ॥राम को रथ मध्य
देषत के प रावण के वहो वीस वाहन कौ सर वल ब्योम भू
तल सो महौ सैल के सिकता गये सम द्रिढ कै वलसंचरे॥
अरु छ वानर के छेदन छ्याण लछ यों कुदनाक रै॥४०॥वार्ता॥
श्री रामजू को रथ के मध्य विषे देष कर के रावण को कोप च
ढता भया तव वीसह भुजन सो वाण कि वर्षात करके ता
ने आकास प्रिथवी के सहित मढ दीये तिन सो परवत रेता
से ह्वे गये द्रिढ के वल कर के सम सिंचार कीये अक्का जा
को छेदना हो सकै औसा जो हनूमान वानर ता को ति सी छि
न मै छेदन कर के लाष प्रकारन के छेदन करता भया॥
मुद्री छंद॥वानन साथ भिदे सम वानर जाय परे मल
आचल की पर सूरज मंडल मै इक रे अन ऐक अका
सन दे मुष पे अन॥४१॥वार्ता॥तव वानन के साथ वे धे
हूये सम जो वानर है तिन मै से कई क तो मलयाचल की
प्रिथवी मै जाय परे है एक सूरज मंडल मै उड गए सो न

हारेवनेहै एक आकासनदी जो गंगा तामे परे सुष पावते है
एक गए जमलोक सहे दुष एक कहे भुव भूतल लोसुष ए
कन सागर मांपु परेमर एक गयेवडवानल मैजरि ॥४२॥
वार्ता ॥ एक जमलोक मै गए है सो तहां दुष सहित है एक सं
सार के जीवन सो सुष दुष कहत है एक समुद्र मै मर के परे है ॥
एक तो की वडवाअगन मै जर गए है ॥ मोटनक छंद ॥ श्री
लछमन कौ एक रह्यो जवही मेल्यो सुरपावक को तवही जा
ह्यो सरपंजर छार कह्यो नैरित्यन को अति चित डह्यो ॥४३॥
वार्ता ॥ फेर जव श्री लछमन जू ने को एक रह्यो सो तवही अगन
को वान चलायदीयो तांनै समवाणोकी पिंजर राजा र कर के
छार कर दीआ तव नैरित्य का राकसन को चित्त अत्यन्त डर
ताभआ ॥ ॥ दोहरे ॥ हनुवंत वली वल सो लैअंगद संग सवै
दल सो मानो गिरराजन जे डरको घेरे चहू ओर पुरंदर को ॥
॥४४॥ वार्ता ॥ हनूमान जू जो वली है तन वल सो होरत भए
अंगद जू को संग लै कर के संपूरण दल के सहित सो मानो
परवतो के [illegible] राजा संपूरण दल को त्याग कर के वारे तर
फ ते इंद्र को घेरते है ॥ हीर छंद ॥ अंगद रन अंगनु सव अंगन
र मैं फायकै रिछपति हि अछरि पहिल छगन रिफायकै वा
नरगन वानन सवके सव जवही मुरह्यो रावन दुष दावन ज
गपावन सम है जुरह्यो ॥४५॥ वार्ता ॥ रण के अंगन मै अंगद को
संपूरण अंग घोकर के मूरछाकर के पर क व भर फाये अंगद
रिछपत जो जामवंत अरअक्षकुरिपु क्या हनूमान इनो को
लाषप्रकार नकी जु धकी गतन सो प्रसन्न कर के फेवान
रो के संवूह वाणो करके सव जवही मुडता भया जव दुष
के दैनवारे जो रावण सो जगत के पवित्र करणवारे जो
रामजू तिनो सन मुष जुरता भया ॥ ब्रस रूपक छंद ॥ ईद्रजी
तजीत आन रोकि ऊ सवानन ताम छोड दीने वीर वान कान

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

153A केप्रमानम्रान स्यौप्रतापकाटचांपचरमकरमवरमछेद जा
नयौरिसातलैम्रसेकेठमालभेद॥४६॥वार्ता॥तवईद्रकेजी
तनेवारेजोश्रीलछमनजूसोआयकेवानकोतानकररोक
तेभये सोकानकेप्रमानधनुषकोल्पायकरकेवाणकोछो
डुतेभये सोवाणप्रतापकेसहितक्रमसेधनुषकोकाटकेअ
रुचरमक्याढालकोकाटकेअरुवरमक्यासंजोपकोछेदन
करकेअररावणकेकंठोकीमालापंगतोकोभेदकरकेरसा
तलजाताभया॥दंडकछंद॥मूरजमुसलनीलपटसप
रघन लजामवंतअसहननोमरप्रहारेहै परसासुषेनकुं
भकेसरीगवईसूलविभीषणगदागजभिंढपालनारेहै मो
गरादुविदतारकटारकुमदनेजाअंगदसिलागवाछविट
पविदारेहै अंकुसप्ररमचंद्रूपनमुषसेषसकनवाननीनरा
वनेश्रीरामचंद्रमारेहै॥४७॥वार्ता॥नवरावणनेअैसेपरा
क्रमकीयो जोसुग्रीवकेमुसलक्यामुहला नीलकेपटिस॥
नलकेपरघक्यावज्र जामवंतकेनरवारहनूमानकेजोपह
रास्त्रतो इनोकेमारे फरसुषेनकोकुहाढा केसरीकेनेजा
गवकेत्रिसूल विभीषनकेगदा गजकेभिंडपालक्यागो
पिअ्रा मारेहै मोगराक्यामुदगरदुविधिकेतारकेकटारकु
मदकेनेजाअंगदकेसिला गवाछकेविछमारकरकेवि
दारनकीयो अरुसरभकेअंकुस दधमुषकेचक्र लछमन
केवरछी तीनवानरावचंद्रजकेरावणनेमारेहै॥दोहरा॥
दुभुजाश्रीरघुनाथसोविरचेजुधविलास वाहअठारहि
जूथपनमारेकेसवदास॥४८॥वार्ता॥द्वैभुजाकरकेरा
वणश्रीरघुनाथजूसोजुधकेविलासरचतहैं अरअठारं
भुजांसोवानरोकेराजानकोमारतहैं॥तोटकछंद॥जु
धजोईजहांकुपजैसेकरैताहितेहीदिसारोकरषैतहीं
आपनेअस्त्रलैसस्त्रकाटैसबैनाहिकेहूंकहीघावलागेनहीं॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हेरसे मित्र लैवानको दंडजा षंडषंडी ध्वजा धीरछेनावली
सैल स्त्रिंगावली छेद माने उडी एक है बेर है है सब सावली
॥५९॥ वार्ता॥ जु धमेजहां जो वानर जै सो को पकरत है ति
सको जिसी दिसा विषे तहां ही रोक राषत है अपने अस्त्र को
लेकरके सस्त्रन को काटत है सभा॥ अरउसके एसस्त्रानाल
किसी नरों भी कहू घावन ही लागत हैं तब लछमनजूने दो
रकरके धनुषबान कोलेकरके जायके षंडषंड पुजाकरी
अर धीरजवानने छेत्रो को पगतषंडी सो मानो परवतके सि
गनकी गतको छोडकरके एकवार ही हंसके केंवसकी पं
गत उडगई है॥ त्रिभंगी छंद॥ लछमण सुभलछण भुज
विचछेरन रावणसे रिसछाडदई बहुवानन छेडे जो सिर
षंडे सो फिर मंडे सो मनई जद्यापरन मंडतरिपुवल षंडत
गुनगनमंडत भूलरह्यो तजमनवच काइक सूरसहायक
रघुनायक सो बचन कह्यो॥६०॥ वार्ता॥ तब सुभलछनोवा
रेजो है श्री लछमनजू अरबुधमे चतुर तिनने रावणसो को
पछोड दीओ। कौ बहुतेवानन को छोडते है सो जिस जिस
सिरको षंडन करते है सो नवीन से भासो फेर सो भायमान हो
ते है जद्यापरण मे अस्थेन सो भायमान है अर सत्रुनके वल
को षंडनकरणवारे है अरगुणोके संधू होकरके सो भायमा
न है परतो भी भूलरहे मनवच कर्मसे जु धको तजके सूर
मेउंकी सहायता करणवारे जो श्री लछमनजू सो श्रीराम
जूसो वचन कहते भये॥ ॥ गाहे रनगाजन को हूंन भंजन
तनमन रंजन सभलायक सुन श्री रघुनंदन मुनजनवंदन
दुष्टनिकंदन सुषदायक दरेन ता स्यो मरेन मास्यो हो हठ
न हास्योधरसायक रावनहि मारन देवपुकारत है अतआर
तजगनायक॥६१॥ वार्ता॥ यहि रावणरणमे ठाढोहो भयो
गरजत है किसी तरे भी नही भाजत है तब अरमन करके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

154A राजनहैं अरसभजुपमैलायकहैं सोहे श्रीरामचंद्रजू तुम
सुनो तुम मुनी सुरजनोकरकै वंदनाकरवेजोगहौ अरदु
ष्टोकेनासकरणवारेहौ सबदैनवारेहौ यद्दिरावणहटा
पहूपेहटतानहोहैमारेहूपेमरतानहीहै मैधनुषवान
कोधारकेहठकरकेहमगयेतुमरावणकोमारतेनही
हो देवताअत्यंतपीरावानहोकरकेपुकाररहेहैहेजगत
केस्वामी॥श्रीराम॥रूपे॥छंद॥जिहसरमधुमदमरदम
होसुरमरदनकिनेऊ मारेऊकरकसनरककंषहतसंष
जुलीनेऊ निकंटकसुरकटककरयोकैटभवपुषंडेयो
षरदूषरत्रिसराकबंधजिहिषंडविहंडयो कुंभकरण
जिसचेरयोपलनप्रतरयातेटरेऊ तिहवानप्रानदसकंठ
केसुकंठषस्योकंठतकरेऊ॥टर॥वार्ता॥जिसवाणसोम
धुकोमदमरदनकीयोहै प्रश्न सोजलोमैमारयो उत्तर
सरनामजलकोहैजलोमैजा भगवाननेमधुकोमदम
रयोहै अरवडोसुरमारयोहै कठोरनरकासुरमारयोहै
जानेसषासुरमारकेसंषलीयोहै देवतियोकेकंटक
कोनिसकंटककीयोहै कैटभकोसरीरषंडनकीयोके
षरदूषनत्रिसराकबंधपदहमारेहै विछन्नकोषंडनक
रकेमारयोहैकोनवाली अरजाने कुंभकरणमारयोहै
अरपलमात्र भीजोप्रतरयातेनहीहटयोहै तिसश्रीरा
मजूनेवाणसोरावणकेदसोकंठनतेप्राननषंडनकी
योहै॥दोहरा॥रघुपतिपठयेआसुहैअसुहरबुध
२४ निधान दससिरदसहूदिसकौवलदैआयेवान॥२२॥
वार्ता॥श्रीरामजूने सीघ्रही जोप्राणोकेहरणवारोवाण
मैज्याथ्या सोवुधकोघरजोवाणहै दससिरदसोदिसा
कौवलदैकरकेआवताभया॥मदनमोहन॥दंडक॥
भुवभारहसंजुनराकसकोगनजायरिसानलह्योअनरायो॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सती
१५५
155

161

जगमेंजैसवदसमेतिहिकैसिवराजविभीषनकेसिरजाग्यो
मयदानवनंदनकेसुषसोंमिलकेसीयकेउरकोदुषभाग्यो
सुरदुंदभिसीमगजासररामकोरावणकेसिरसापहिला
गयो ॥६४॥ वार्ता ॥ तिससमेप्रियरीकेमारकेसहितराक
सनकोसंवूहजायकेरसातलमेंसनेहकरणवारोभयो
होऊपतालकोगये अररजगतमेंजैकेसवदकेसमेतविभी
षनकेसीसपैराजराजतभयो अरमैदानवकीजोहैपुत्रीमं
दोदरीताकेमुषकेसहितमिलकरकेसीताजूकेउरकोदुष
भागतोभयो रावणकेसीसनकोश्रीरामजूकोवाणअर
देवतिउकेनगारयोंकेसीसपैगजाकपाडकापहसापही
लागतोभयो ॥ मादोहरी ॥ विजयछंद ॥ जीतलईदिगपा
लसचीकेउसासनदेवनदोसमसूकी वासरहूनिसदेवन
कीनरदेवनकीरहेंपतहूकी तीनहुलोकनकीतरुनीनकी
वारीवधीहुतीदंडदुहूकी सेवतस्वानस्वंगालसुरावन
सोवनमेंजुपरीमलमूकी ॥६५॥ वार्ता ॥ देषोजिसरावण
नेदिगपालजीतलियेथे अरमैसेंईद्राणीकेउसासन
सेंस्वरगकीगंगाभीसूकतीभई अरदिनरातविषेदेवति
योकीसंपदाजोकेहूकीहूईरहतीसि तेरावणकोस्वा
नअरगीदढसेवतेहे प्रिथवीकीमलीमेंजापररपसोहु
योसोवतहै ॥ सोरठा ॥ अवजाहुविभीषनरावनलैके
सकलत्रिसवंयुक्तिपासमकेके जनसेवकसंपतिकोस
संभारो मयनंदनकेसगरेदुषटारो ॥६६॥ वार्ता ॥ तवश्री
रामजूनेकह्यो अवहेविभीषनरावणकोलेकरकेजावो
सहितिइस्त्रीअरसंवंधीयोंके क्रियाकोकरके सेवकजो
जनअरसंपदानेषजानेइनोकेजायकरकेसंभारो मं
दोदरीकेसंपूरणदुषदूरकरो ॥ इतिश्रीमतसकललोक
लोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रकायेरावणवध

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

155A वरननोनामएकानविंसतप्रकासः॥२९॥ दोहरा॥ याविं
सयेप्रकासमेसीतामिलनविसेष ब्रिह्लादिकअस्तुतिग
गवनअव पपुरीकोलेष॥१॥वार्ता॥इसवींसमेप्रकासवि
षेसीताजूकोविसेषमिलनहोयगो अरब्रिह्मादिककीअ
स्तुतकरेगो अरअजुध्याकोगवनहोयगो॥दोहरा॥प्रया
गवरनन अरवाटकाभारद्वाजकीजान रिषरघुनाथमि
लायकहि पूजनकसुषमान॥२॥वार्ता॥प्रियागअरभा
रद्वाजकीवाटकाकोवरननहोयगो रिषसेरघुनाजूको
मिलापहोयगो॥श्रीराम॥तारककेदा॥जमजायकहो
हनुवंतहमारे सुषदैवहुदीरघदुष्षविदारे ममसूषन
भषनकेसुभगीता हमकोतुमवेगदिषावहुसीता॥३॥
वार्ता॥तवरामजूनेकह्योहेहनूमानहमारोजैजायक
रकेकहो सुषदैकरकेवहुतेदुषनकोदूरकरे संपूरणअ
लंकारोसेसोभायमानकरकेसुभहैकथाजो कीसोसीता
तुमहमकोसीघ्रदिषावो॥ ॥हनुवंतगयेतवहीजिहसी
ता जायकहीजयकीसुभगीता पगलागकह्योजन
नीपगधारो मगचाहततेरघुनाथनिहारो॥४॥वार्ता॥
फेरतवहीहनूमानजूतहंजातेभयेजहांसीताजूथेतहां
जायकेजयकीकथाकही चरणोमेलागकरकेकह्यो
हेमाताअवचलोश्रीरामजूतुमारेरस्तोकोदेषतेहै॥ ॥
सिंगारेतनभूषनभूषनकीने परकेकुसमावलअंगन
वीने द्विजदेवनचेदियहोसुभगीता पुनयावकअंकच
लीचढसीता॥५॥वार्ता॥तवसंपूरणभूषणोसेसीताजू
नेसरीरसोभायमानकीयेअंगाविषेनवीनफूलनकीपंग
तकोधारणकरकेतवब्राह्मणअरदेवतिओनेगुणनका
दगायेसुभकथासे फेरचलकेतहांआयकेप्रभुकीआग्या
सेंअगनकेअंककापिचलमे श्रीसीताजूचढतेभये॥हनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वेत॥ भुजंगप्रियातछंद॥ सबसत्रा सबै अंगश्रीरागसोहै
बिलोकै रमा देवदेवी बिमोहै पिता अंक ज्यों कंन्यका सुभ्र
गीता लसै अंगनके अंकस्यो सुभ्य सीता॥६॥ वार्ता॥ सह
तबस्त्रन के जाके अंग मे समस्त्रिगार सोभत है जाको देषक
र के लक्ष्मी अर देव तिउकी देवी मोहत होत है पिता की गो
दी विषै जैसे कंन्या काहो वे तैसे अगन की गोद मे ऊजल
सीताजू सो भत है॥ ॥महादेवके नैनकी पुत्रका सी कि
संग्राम की भूम मे चंडका सी मनो रतन सिंहासन स्थां स
ची है कियो रागनी राग पूरे रची है॥७॥ वार्ता॥ सो मानो म
हादेव के नेत्र की पूतरी सी है अथवा जुध्य की प्रिथवी मे चंड
का जैसी है अथवा मानो रतनो के सिंहासन पर स्थित ई द्रा
णी है अथवा सनेह के प्रवाह मे मिली हूई रागनी है॥ ॥
गिरीपूर मे है पयो देवता सी कि धो कंज की मंजु सोभा प्र
कासी कि पदमनी मे सिफा के हुसो है कि यो पदम के को
स पद्मा बिमोहै॥८॥ वार्ता॥ अथवा सारस्वती जो के प्रवा
ह मे गंगा है अथवा कमल की ऊजल सोभा प्रकाश मान भ
ई है अथवा कमल के बीच को सिफा क्या पी रो के सर है
अथवा कमल के कोस मे लक्ष्मी है॥ ॥कि सिंदूर से
लाग्रमै सिंधु कंन्या कि यो पदमनी सूर संयुक्त धन्या सरो
जासना है मनो चार वानी जपा पुसप के बीच बैठी भवा
नी॥९॥ वार्ता॥ अथवा सिंपूर के परवत के आगा ही सिंधु
कंन्या है अथ सूरज के संयुक्त कमलनी है कै कमल के आ
सन पर सुंदर सरस्वती है अथवा जैसे पुसप के सिंहासन
पर पारवती जू है केहू जप पुसप भी पाठ है॥ ॥मनो अ
षधी ब्रिंद मै रो हनी सी कि दिग दाह मे देषजे जे पनी सी
पराप्रत्र ज्यो स्वरन माला प्रकासै मनो जेभसी तक्षका
भोगभासै॥१०॥ वार्ता॥ मनो औषधीऊ के संवूहे मे राह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

156A

नीहै अथवा दिगदाहू जो है प्रातआरसं ध्यासमे प्रकास
कीला लीताके विषे जोगनी सी है अथवा मंगलकी स्वर
णकी माला है सो प्रकासत है किंवा तछक सरपकी जो त
वारीमणी भासती है यं स्वेतमणिको तछक भूषण है येत
है सो है ॥ सुरेद्रवज्रछंद ॥ आसावरी मानक कुंभ सो भे
अ सोक लगना वनदेवता सी पलास माला कुसमाल
मध्येवसे नलछमी सु भलछणा सी आरक्त पद्मे सुम
चित्रपुत्र मानो विराजै अतचार वेष संपूरणा सिंदूर प्रभा
सके पोगने समाल सथल चंद्रलेष ॥ ११ ॥ वार्ता ॥ अथवा
रतनोके कुंभोमे आसावरी रागनी है के असोक वृक्षको
लपटी हुई वनदेवी है के पलासके फूलनको पगनमे माक्या
लछमी है अथवा वनी सलछनेके महित सुभ लछना
क्या भली रषी है अथवा लाल पत्रोके ऊपर चित्रकी पू
तरी है सो सुंदर वेषसे सोभत है अथवा संपूरणा संपूर मे
जो गणेस जू को ससनक है ताकी सोभा मे गणेस जू के म
सनकके अस्थानमे चंद्रमाकी रेषा है ॥ विजयछंद ॥
है मणि दरपणमे प्रतिबिंब कि प्रीत हीप अनुरक्त न अ
भीना पुंज प्रतापमे कीरत सी तप तेजनमै जनु सिध्यव
नीता ज्यो रघुनाथ विहारी ये भगन लसे उरके सकके
सुभगीता ज्यो अवलोक जे आंतरके दहुता सन मध्य
सवासन सीता ॥ १२ ॥ वार्ता ॥ के मनके दरपनमे प्रतिबिंब
है कै अनुरक्त न क्या अनुरागके हीपमे निरमे प्रीत है ॥
अथवा प्रतापके समूहमे कीरत सी है तपके तेज विषे मा
नो सिध है जैसे है श्री रघुनाथ जू तुमारी भगतके सेवक
वके उर विषे सोभत है तैसे ही है अनेक के मल अगनके म
ध्य सहित वस्त्रोके सीता जू सोभत है ॥ दोहरा ॥ इंद्र वरण
मन सिध्य जम परमस हित पवन पाल ब्रह्म रुद्र लै क्रमर थै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आयगए निहकाल ॥१३॥ वार्ता ॥ ईद्रवरुण मुनीसुर
सिपइनोकेसहित अरु परमनेपनपालकयाकुवेर इनके
सहित ब्रह्मा अरु सिवजू दसरथको लैकरके तिसीसमे
विषे आवतेभए ॥ अथ गगनवसंततिलकछंद ॥ श्रीराम
चंद्र यहिसननसुषसीना ब्रह्मादिदेवगावनसमसुष
गीना हैजेकिपालगहिजेजनकानमजाया योगीमई
सनुमहो यहियोगमाया ॥१४॥ वार्ता ॥ तवअगननेक
ह्योहे श्रीरामजू यहि निरंतरसीताजूसुषहे ब्रह्मातेआ
ददेकरकेजांकी सुषगीताहे सोकिपालहैकरकेसीता
जूकोग्रहनकरीये तुमजोगीस्वरकेइस्वरहो अरुए
हसुजेगमायाहै ॥ ॥ श्रीरामचंद्रहसक्षकलगायली
नी संसारसाषीसुभपावकआनदीनो देवनदुंदभि
वजायसुगीतगाये त्रैलोकलोचनचकोरनचितभा
ये ॥१५॥ वार्ता ॥ तव श्रीरामचंद्रजूनेहसकरकेसीता
जूको गोदमेलगायलई संसारकेविषसुभसाषीजो
कि अगननेआयकरके दईहै तवदेवतिऊनेनगारे
वजायकरके गीतगानकरे तीनोलोकनकेनेत्रजोहे
चकोर तिनकेचितनको श्रीरामचंद्र चंद्रमाप्यारेलगा
तेहै ॥ ब्रह्मा ॥ दोधकछंद ॥ रामसदातुमअंतरजामी
लोकचतुरदसकेअभिरामी निरगुनएकतुमेजग
जाने एकसदागुनवंतवषाने ॥१६॥ वार्ता ॥ हे श्रीराम
जूतुमभीसदा अंतरकीजानन वारेहो चौदालोकन
मे अभिरामी क्यासुंदरहो एकतोजगतमेतुमकोनिर
गुनजानतहै एकसदागुनवारेतुमकोकहितहै ॥ ॥
जोतजगेजगमध्यतिहारी जायकहीनमुनीननिहा
री कौऊकहे परमाननतेको रूपनआरतनअंतन
जाको ॥१७॥ वार्ता ॥ तुमरीजगतमेजोतजगतहे सो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

157A

कहिनहींजातीहै सुनीतोहै परदेषीकहूनेनहींहै कोऊक
हतेहैताकोपरमानतनहींहै नाआदहैनाअंतहै अरना
जांकोरूपहै ॥तारकछंद॥ तुमहीगुणरूपगुणीतुमता
पे तुमएकतेरूपअनेकबनाये इकहैरजसोंगनरूपति
हारो तिनविश्वरचोबहुजामेथिहारो ॥१८॥ तुमहीगु
णकेरूपहो अरगुणतुमनेहींवनाएहै तुमनेआपने
आपनेहींअनेकरूपवनायेहै एकतोतुमारोरजोगु
णकोरूपहै यानेयहिविश्वरचीहै सोब्रिह्माहै ॥ ॥
गुनसत्वधरेतुमरछततेंको अववविस्नुकहेसगरेजग
जांको तुमहीजगरूद्रसरूपसिंघारो कहिजेजिनमा
हितमेंगुणभारे ॥१९॥ वार्ता ॥ सतोगुणकेरूपकोधा
रहूयेतुमताकोरछाकरतेहो सभजगतमेंतांकोअव
क्यारछकविस्नुकहितेहै फेरतिसजगतकोरुद्ररूपहो
करकेतुमहीसिंघारकरतेहो तिनोंमभारोतमोगुण
कहीयतहै ॥ ॥तुमहीजगहोजगहैतुमहीमें तुमहीवि
रचीमरयादसुनीमें मरयादहिछाडतजाततजांको
तवहीअवतारधरोतुमतांको ॥२०॥ वार्ता ॥ जगतमेंतु
महीहो अरजगततुमारेमेंहै तुमनेहींसंपूरणमरयादा
रचीहै सोतिसमरयादाकोछोडतेहूयेजांकोतुमजा
नतेहो तवतोंकेवास्तेतुमअवतारधारतहो ॥ ॥तुम
हीपरकछपवेषधरेजू तुमहीमीनहुवेवेदन
कोउधरेजू तुमहीजगजगधविराहभयेजू धरछी
नलईहिरनाछहएजू ॥२१॥ वार्ता ॥ तुमनेहींप्रिथवी
मेकछपकोवेषधार्योहै फेरतुमनेहींमीनहोकेवेद
नकोउधारकीयोहै तुमहीजगधअवतारअवाराह
अवतारभएहै तवप्रिथवीछीनलई अरतिसहरण
छसकोमार्यो ॥ ॥तुमनरसिंघसरूपधर्यो यहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोदीरघसोक निवास्यो तुमही बलबावनवेषपरेजू
भिगुनंदनहै छिनछत्रहरेजू तुमही अब रावनदुष्टसिं
घास्यो धरनीमहि डूबन परम निकास्यो तुमही पुनक्रि
सनको रूप धरोगे हनिदुष्टनको भुवभारहरोगे॥२३॥
वार्ता॥ फेरतुमनेही नरसिंघरूप धारण कीयो है तब प्रह
लादजूको बडो दुषदूर कीयो है फेरतुमनेही बलकेवा
स्ते बावनरूप धारण कीयो है फेरपरसराम अवतार होक
रके तुमनेही प्रिथ्वीमै ते छत्रीहरे हे अब तुमने यहि राव
णादुष्टसिंघार कीयो है प्रिथ्वीमै सबूडने हुये परमकी रछ्या
करि है फेरतुमही श्रीक्रिस्नजूके सरूपको धारणकरोगे
नासकरके दुष्टनको प्रिथ्वी के भारको दूरकरोगे॥ ॥
पुनबोधसरूप दयालधरोगे तुमकलकमलेछसमूहह
रोगे इहभांत अनेकसरूपतुमारे अपनीमरयादकेका
जसवारे॥२४॥वार्ता॥ फेरदयाकोबोधसरूपको धारणक
रोगे फेरकलकीहोकेतुमही मलेछनके सबूहनको हरोगे
इसप्रकारतुमारे अनेकसरूप है अपनीमर्यादाके वासने
बनावतहो॥ श्रीमहादेव॥ पंकजवाटकाछंद॥ श्रीरघु
वरतुमहो जगनायक देषहु दसरथको सुषदायक सो
दरसहितपिता पदपावन बेदनकीयतवहीमनभाव
न॥२५॥वार्ता॥ हेश्रीरामजू तुमजगतके स्वामीहो हेसु
षकेदेनवारे तुमआपजो दसरथहै तिनको देषो तब लछ
मनजूके संजुगत पिताके पवित्र चरणों को नमस्कार करी
दसरथ॥ निसपालकाछंद॥ रामसुत परमयुतिसीयम
नमानिजे वपुजनमानगनप्रानसमजानिजे रामकोल
छमनविसेषप्रभुलेषजे ईससुरईसजगदीसमैयरेषि
जे॥२६॥वार्ता॥ तबदसरथजूनेकह्यो हेपुत्र श्रीरामचंद्र
सीताजूको परमके संजगतमन विषेमानो अरु भाईजनो

158A कोअरमानानके समूहो को प्राणों के समान करके जानिये
ईस सिवजी सुरईस विस्नु जगदीस ब्रह्मा इनो समान करके
जानिये ॥ श्रीरामचंद्र वलाछंद ॥ जूक जूक के गये जे वान
रजरिछराज कुंभकरण लोकहरण भक्त पे जे गाजगाज ॥
रूपरेष सो असेषजी उठके रेमु आज आयपाय लागी जे
तिने समेत देवराज ॥ २० ॥ वार्ता ॥ फेर ईंद्र से श्रीरामचंद्र
जू कहा जो वानरों के राजा अरु रिछन के राजा जुध मे जू
क जूक के मरगये हे लोकन के मारणवारे जो है कुंभक
रण ताने गरज गरज जे भक्तन कीये हे तिन के रूपके चिंत
न सहित विसेषता के से जीवकु उठे जैसे सो करो तिने समे
त हि तुम ने मेरे चरणों मे आय करके लागनो ॥ दोहरा ॥
वानर रिछ सरिछ सव पुत्रक लित्र समेत पुसपक चढ श्रीराम
जू चले अवध केहेत ॥ २१ ॥ वार्ता ॥ वानर अरु रिछ समेत रि
छ और मित्र सुग्रीव ने सीताजू इने के समेत पुसपक विमान
पर चढ करके श्रीरामचंद्रजू अयुध्या को चलते भये ॥ छंद ॥
सेतु सीता नहि सोभना दरसाय पंचवटी गये पायलाग अग
स्त के अरु अत्र ये ति विदा भये चित्रकूट विलोकन वहां मुनि
सागु विलोक्यो भारद्वाज वसे जहां जिन ने ननपावनु है विये
॥ २२ ॥ वार्ता ॥ पुस्तकी से आसीताजू को दिषाय करके पं
चवटी मे गये तहां अगस्तजू के चरणों को लाग करके पे
र अत्रज के जाय के तहां ते विदा भये फेर चित्रकूट को देषक
रके प्रियाग देष्यो तहां भारद्वाज जी निवास करते हे जिनो
ने पवित्र दूसरे को ऊ नहीं है ॥ श्रीराम ॥ तारक छंद ॥ कूल के
दुन सूछम सोभत चारू तनु है जनु सेवत है सुरवारू प्रतिविं
वत दीपदिये जल माही जनु ज्वाल मुषीन के ज्वाल अना
ई ॥ २३ ॥ वार्ता ॥ रेतेकि जहां सूछम सोभा सोभती है सो मानो
देवनि ऊके वालक सरिर को धारण करके सेवते हे अरुप्रति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सती
१५९

159

165

विंबनहू दीवतो किसे भाजलमें दीपन हैं मानो ज्वाला
सुषी झों के संवृह मनानकरते हैं ॥ ॥ जल की दुतपित
सितासित सी हैं वहु पानक ध्यान करे इक को है मदपेम
मलपद्म सिकुंक मिनी को न्हिय मारतषंड दीतो जनु दी
है ॥ २२ ॥ वार्ता ॥ तहां त्रिवेणी के जलको पीत श्वेत
ने स्याम सोभा सोभत हैं वहु ते ही पापनको सो नास करत
हैं तो आगे पकतोको आहे सो मानो एक का त्रिग के मद
के सतूरी श्वेत चंदन और केसर इनके राजा जो है प्रियाग ता
के भार घषेडते तिलक कीउो है ॥ कवित्त ॥ चतुरवदन पं
चवदनवदनषटसहस्त्रवदनहूं सहितगनगाएहैं सा
नलोक सातदीप सातहू रिसातल तिगंगाजू की सोभा स
महूंको सुषदाई है जमुना को जलतुरह्यो फैलके प्रवाह प
र के सेदा मवीच वीच गिरा को सुराई है सो मन मरीर प
र कुंम कुंमविलेपन को स्याम लदुकूल फीनफलकत का
ई है ॥ २३ ॥ वार्ता ॥ चार मुष ब्रिह्मा पंचमुष सिव षट मुष स्वा
मकार तक सहस्त्र मुषसे सनागइ नोने हजा रे गीतनमें जा
की सोभा गाई है ऊपरके सातो लोकनमें और सातो दीप
नमें और सातो रसातलोमें श्रीगंगाजी की सोभा तहां सभ
नो के सुषदायक है तो के प्रवाह में पर के श्री जमुनाजू को
जल फैल रह्यो है और वीच वीच में सरस्वती की सोभा है
सो मानो सोभायमान सरीर के ऊपर केसर के लेपनको स्या
म वस्त्र के विषफाई फलकती है ॥ सुग्रीव ॥ चंद्रकला छंद ॥
भवसागर की जनु सेतउजागर सुंदरतासगरी वसको ति
हू देवनकी दुतसी दरसे गति सोधे त्रिदोषनके रसकी क
हिके सव वेद उई मति सी परतापउ ये तनलंकामसकी स
व वेद त्रिकाल त्रिलोक विवेन है के त्रिविक्रम के जसकी
॥ २४ ॥ वार्ता ॥ संसार रूपी समुद्र को मानो पुल है प्रकास मान

159A

संपूरणसूदरताजानेवसकरीहै मानोतीनोवेदनकोसो
भासिदिषाईदेतहै अथवातीनदोषनसोषनवारोरसकी
गतसोहै अथवातीनजोदेवताहैं विधाविस्नुमहेसतिनो
कोरुपसोहै अथवात्रैक्यातीनोदेवनकेप्रतापहै पापन
कोनलक्यापतालमैमसकोदवावनवारो समतीनोलोक
तीनोमसयोमैजाकोवंदतहै वावनजीकेजसकीसोत्रि
वेनीयुजाहै ॥ विभीषण ॥ दंडकछंद ॥ मनलकोवेनी
सीत्रिवेनीसुभसोभयतएककहेसुरपुरमारगविभाग
है एककहेपूरनअनादजोअनंतताकोअंताकोयहिकेसो
दासदुव्यरूपगावतहै समसुषकरसमसोभाकरमेरेजा
नकोनेयहिअदभुतसुगंपअवदातहै दरसपरसहूतेनेषि
रचरजीवनकोकोटकोटवरषकेकुगंपमिटजातहै ॥
॥२५॥ वार्ता ॥ सोसुभत्रिवेनीप्रिथवीकीवेणीकाचोस
रसीसेभतहै ताकोएककहतहैस्वरगकोऊजलमारग
है एककहिहेजोकोऊपूरणअरअनादतेअनंतहै व्रि
ह्मताकोयहिद्रव्यरूपसरीरहै समसुषनकेकरणवारे
समसोभाकेकरणवारोमेरेजानेतोयहिकौनहै यहिअ
दभुतसुगंधहैजाकोदरसनअरसपरसनतेथिरअर
चरूसंपूरणजीवाकेकरोरकरोरजनमकेकुगंपका
पायमिटजातेहै ॥ भुजंगप्रयात ॥ भरद्वाजकीवाटका
रामदेषी महादेवकैसीवनीचित्तलेषी भलेव्रिछमेरा
रहूतेभलेहै कहूकालकेफूलफूलेफलेहै ॥२६॥ वार्ता ॥
ऐसीभारद्वाजकीवाटीश्रीरामजूनेदेषी सोसिवजीसी
वनीहूई चित्तमेविचारी तहांतोएकहीकलपव्रिछहै ॥
इहांसमव्रिछकलपव्रिछतेस्वेष्टहै अरछेहोरितोकेव्रि
छजहांफूलेअरफलेहूयेहै ॥ ॥कहूंहंसनीहंससोचि
तचोरे चुनेओसकेवूदमुकतानभोरे सकालीकहूस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सही
१६०
160

166

सारकाली विराजै पढै वेदमंत्रावली भेद भाजै॥३७॥वार्ता॥
कहूं तो हंसनी हंस साके सहित चित्तको चुरावतहै मोतीनके
मुक्ताके डासके वूंदनकों चुगतीहै कहूं तोतेग्रोंकी पंगत
हैं ग्रर मैनाकी ग्रोंपंगत्रां है सो वेदके मंत्रोंकी पंगतोंके भे
दको सजे हूपे पढतहैं॥ ॥कहूं ब्रिक्ष मूल सघली तो यषी
वे महां मत्त मातंग सीवानकौवे कहूं विप्रपूजा कहूं दे
वअरचा कहूं योगसिक्षा कहूं वेदचरचा॥३८॥वार्ता॥
कहूं ब्रिक्षनके मूल सघलीके वीचमें जो है जल ताको ब्रि
क्ष पीवतहै ग्ररतहां वडे मत्त भी हाथी है पर सीवका मर
याद कोनहीं छोडते है कहूं ब्राह्मणोंकी पूजा होतहै॥
कहूं देवनकी पूजा होतहै कहूं गुरजोगके सिक्षा कर
ते हैं कहूं वेदके चरचा होतहै॥ ॥कहूं साधपौरानकी
गाथ गावे कहूं यग्यकी सुक्रेसाला वनावे कहूं ग्रगन्न
होत्रादके करम धारे कहूं वैठके ब्रिह्म विद्या विचारै॥
॥३९॥वार्ता॥कहूं साधजन पौराननकी कथा वांचते है कहूं
ऊजलजग्यकी साला को वनावते है कहूं ग्रगनहोत्रादिकके
करमनको भुति धारते है कहूं वेदकी विद्याको वैठकरके वि
चारते है॥ ॥सुवौर्ड जहां देषके वक्र रागी चले पिष्पले
तीछ वुष्पा समागी कपे श्री फले सकत हैं जजनीके जुग
मानुरागी सवेरा महीके॥४०॥वार्ता॥ वक्रतो मैं मने हवारी
जहां सुंदर पवन ही दे षीतेहै सीतल मंद सुगंध तन ग्रोरन हीं
है ग्रर चलायमान जहां पिपल ही है तीछन जहां भागन
के सहित वुपही है ग्ररजहां भली प्रकार सो कपिक्या वान
रोकी ही श्रीफलोके तोरवेकी सकतहै ग्रर श्रीरामजके ही
नाम मैं सम मनेह करणवारे है॥ ॥जहां वार देश्विंद वजै नि
साजै मयूर महां न्रित्यकारी विराजै भरद्वाज वैठे जहां वि
प्रमोहे मनोपकही वक्रलोके समाहै॥४१॥वार्ता॥फेर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

160A जहां मयूरन के संवूह हहीं के वाजे सजा रहे हैं आरमे रहीं जहां त्रि
त्यकारी को सजा रहे हैं भारद्वाज ब्रासरण तहां वैठे हूये सोहनते हैं
मानो पक हो सुष को विस्तार सो भनते हैं ॥ दंडक छंद ॥ केसो दास
म्रिगज विछेरू चौषे वाघ्रनी को चाटत सुरभि वाघ वालक के
वदन है सिंघन को सटा षैचे कलभ करनि कर सिंघन को
आसन गयंद को रदन है फनी के फनन पर नाचत मुदित मो
र क्रोध न विरोध जहां मदन मदन है वानर फिरत डोरे डो
रे अंध तापसन रिष को निवास कि धौं सिव को सदन है ॥४२॥
वार्ता ॥ रिष को निवास है कि धौं सिव को सदन घर है रिषन को
वास कैसो है जहां म्रिगज म्रिग सो ऊपजे ते सेजो वछेरू व
चा सो वाघ्रनी को चूषे है वाघ के वालक को सुष सुरभी चाटत
है सिंघन की सटा के सता को कलभ हाथी के वचा कर संड
ता है सो षैचे है हाथन के दांतन सो सिंघन को आसन है फनी
सांप के फन पर मोर राजी भपना चत है मद गरव जहां नहीं औ
मदन काम जहां नहीं वानर जहां अंध तापसन के डोरे डोरे लै
वे लीये फिरत है सिव के सदन कैसो है जहां म्रिगज विछेरू
म्रिग नाम है मैं गज विसेष को औ पसु मात्र को गज को वचा
किं वा पसु के वचा गज जो गनो के भछ है सो वाघ्रनी जे पानि
नो को वृषन है सुरभि वृषभ महादेव को वाहन औ वाघ्रन
सो पर सपर वालक की तरह वदन चाटत है वालक जैसे ष्या
लकरे किं वा वाघ्र वालक को वदन भवानी को वाहन सिंघ
है ताकी सटा के सरता को कलभ गनेस जहां कर नकर हाथन
सो भी संड सो भी षैचत है लोक मै हाथी को भी गनेस कह
त है सिंघन के आसन गयंद को रदन है या को अरथ है समै
जाजा को निब्रित करने मै भी आसन कह्यो है सिंघन को
चल वो ता के निविरत करवे को जहां गज को रदन है सिंघ
चले है तव हाथी अंग पर दांत [illegible] ष्याल करत है ॥

सिवनकीजाजारोकवेकोगयंदकेदांतहै कारनकेयको
वाहनमोरसो सिवकेभूषनसरपतायैनचनहै सानंदहो
यकेहेमकोसमैमदननामधनूराकोभीहैजहांमदगरव
नाहीकाहूकोरहेहे ओमदनथनूराहै किवाकामकोमद
गरवजहांनहीहै ऐसेएकहैवाननजहांडोलेडोलेफिर
तेफिरेहै यहिअरथजैसेकहितहै फलानागांवगांवडोले
डोलेफिरे ऐसीवोलनहै ओजहांअथनपस्वीनहीहै ऐ
सेजानीऐ॥भुजंगप्रयातछंद॥जहांकोमलेवलकलेवा
ससोहै सवैअलपथीकलपसाषीविमोहै धरेसिवसा
दुषदाहेदुरंते मनोसंभजूमंगलनेअनंते॥४३॥वार्ता॥
जहांकोमलवलकलकेसतुसोभतहैसपूरणजोहैतुछ
वुधवारेसोसाषीमांकोकलपनाकरकरकेजाकीसोहतनहो
तहैफेरभारद्वाजजीसिघलाजेतरागर्डोनोंकोधारेहूयेहै
दुसनरदुषकोदूरकरनेहै सोमानोसिवजूसमनागजूसो
मंगलीयहूयेहै॥लछमन॥मालनीछंद॥प्रसमितरजरा
जेहरषवरषासमैसो विरलजठनसाषीस्वरनदीकूल
केसो जगमगदरसावैसूरकोअंसुऐसो सरगनरक
हेतारामकेनामजैसो॥४४॥वार्ता॥अरप्रसमितरजा
दूरभईसीजहांरजसोभतहै वरषाकेसमकेसमान
जहांआनंदहै फेरसाषीक्यासाषावारेजोहैत्रिछतिनो
कीविरलीजठाविषैजलंऐसेहै जैसेगंगाजीकेकिनारे
होय फेरमुनीसरजागनकेमारगकोऐसेदिषावनहैजैसे
सूरजकेअंसहोय अरस्वरगनरककेदूरकरणवारेश्री
रामजूकेनामसमहै॥भुजंगप्रियातछंद॥ग्रहेकेसपासो
प्रियासिवषानो कवैसापकेत्रासनेगातमानो मनोचंद्र
माचंद्रकासोभमाजै जरासोमिलेयोभरद्वाजराजे॥४५॥
वार्ता॥जानेकेसकीयासफाहीसोग्रसेहूयेहै सोजराव्या

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

161A
रि इस्त्री सो है तिनो के सरीर के पते सो ई मानो सरूप के भष
ने के पती है अथवा चांदनी के सहित चंद्रमा सो भासो सज
रह्यो है ऐसे जरा से मिले हूए भारद्वाजजी सोभत है ॥ दो
हरा ॥ भसम त्रिपुंड के सोभ जुत वरनन बुध उदार मनो
त्रिस्रोता स्रोत हुन वंदन लगी लिलार ॥४८॥ वार्ता ॥
भसम को त्रिपुंड के तिलक सोभा के संजुगत बुध मान वरन
न करते है मानो त्रिस्रोता जो है गंगाजी तां के प्रवाह की सो
भो वेदना करते हूए मसतक को लगी है ॥ ॥ मनो अंकु
र लोल से मत्र कै सि किधो वेद विद्या प्रभाई अमी सो
र मे गंग की सोभ जो जनु नीकी विराजै सदा जोत दंताव
ली की ॥४९॥ वार्ता ॥ फेर दंतो की पंगत कैसी है मानो
मंत्र के अंकुर की पंगत सी सोभत है अथवा वेद की प्र
भाई हूई अमी कया चकाकार वेद की विद्या सी है अथवा
जनु की वमन करी हूई गंगा की सोभा है ऐसी दंतावली
की सोभा सोभती है ॥ गीतका छंद ॥ भ्रिकुटा विराजत
सेत मानहु मंत्र अद भुत साम के जिनको विलोकत ही
विलात अरेस करम कुकाम के मुषवास स्वास प्रका
स के सब भौर भौर न साजही जनु साम के सुभ स्वच्छ अ
क्षेर हैं सपछ विराजही ॥५०॥ वार्ता ॥ फेर सुपेद भ्रिगु
टी के सी सोभत है मानो साम वेद के अदभुत मंत्र हैं ॥
जिनो के देषने ई संपूरण कुकरम कामना के दूर हो जा
ते है मुष की सुगंध के प्रकास के सब कारके भमर भौर को
सजर है है मानो साम वेद के सुभ निरमल अक्षर सहि
त पछन के विराजमान है ॥ ॥ तत के कंठ विरेष राज
त रजु सो तुन मानि ऐ अवनी तई दयन गहीतन के विवे
चन मानो पे उपवीत उत्तल सोभिये डर देषयो वारनन
सवै सुरत्राण नगन पसिंधु मे जनुमेनत सम के अवे ॥५१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वार्त्ता॥नम्रभयेजोसषसेकेठहैताभैतीनरेषासोभतहै
तिनोकोरसिसमग्रनुमानकरीताहैग्रवनीतनकाजोनहीं
हैविसेषनीतताभैहटायकेजोईदुयपकरीहैतोने
निरंतरवेपनहैग्ररऊजलजनेऊहीयेमेसोभतहैं
ताकेदेषकेसमग्रसेसकरननकरनेहैनपकेसमुद्रवि
षेदेवनदीगंगाजूताकीस्वतसेभासमकीतीहै॥दोहरा॥
सफटकिमालजुतसोभिजैउरविषराजउदार ग्रमल
सकलस्नुतवरणमयमनोगिराकेहार॥५०॥वार्त्ता॥स
फटकेकीमालाकेसहितरिषिस्वरकेहिरदयसोभतहैं
सोमानोसंपूर्णवेदनकेग्रछरोभैसरस्वतीजूकेहार
है॥सुंदरीछंद॥जद्यपहैरसरूपरस्योमनु देडहैसोग्र
वलेवतहैतनु प्रेमसिषानकेव्याजमनोमुनि देवपु
रीकेपंथरचेगुन॥५१॥वार्त्ता॥जद्यपविल्लकेरूपके
रूपकेरसमैरस्याहूग्रानिषकामनुहै परनौभीसरीर
कोदेहहीसोनिरवाहकरतेहैप्रेमकीसिषानकेवहाने
करकेमानोमुनीस्वरदेवपुरीकेपंथरचतहैं॥ ॥रूप
परेवडवानलकोजनु सोषतहैपयपाननहींतनु के
पमुजेगममेंउवषानो मोहमहातमतेरवमानो॥५२॥
वार्त्ता॥मानोवडवाग्निगनकोरूपधारेहुयेरसिनेजल
हीकेपानसोसरीरकोसोषतहैकोपरूपीसरपकेमं
त्रसेहैमोहरूपीजोहैवडोग्रंधकारताकेसूरजसमहैं
॥ ॥सत्यसुधाग्रवधाकलुकेगनु परवतग्रोषध
सिपनकेजनु पापकलापनकेहिनदूषन देषप्रणाम
करेजगभूषण॥५३॥वार्त्ता॥सत्यकेमित्रहैकलजुग
केसत्रुहैग्ररसिपरूपीग्रोषधकेपरवतहैपापनकेसं
ग्रहनकेदिनदिनप्रतिनासकरणवारेहैतवदेषकरके
जगतकेभूषनजोहैश्रीरामजूतिनोनेनमस्कारक

162A

री॥ पधटकाछंद॥ सीतासमेतनसेषावतार देखैतनकैरिषके
अपार नरवेषविभीषनजामवंत सुग्रीववालसुतहनुमंत॥
॥५४॥ वार्ता॥ सीतालछमनजूकेसमेतअनेकनमसका
रकीये मानुषकेसरूपजेहैंविभीषणअरजामवंतअरसु
ग्रीवनेअंगदअरहनूमानइनोनेप्रणामकीये॥ ॥रिष
राजकरीपूजाअपार सबकुसलप्रसनपूछीउदार सत्रुघ्न
भरथकुसलीनिकेत मंत्रमित्रमाननसमेत॥५५॥ वार्ता॥
फेर रिषराजनेइनोंकीपूजाकरीफेरकुसलप्रसनपूछी तव
रामजूनेकह्योसत्रुघननेभरथकीहमारेघरकुसलहै मंत्री
अरमित्रनेमाताइनोंकेसमेत॥ भरद्वाज॥ कहिकुसलकह्यो
तुमआदिदेव सबजानतहोसंसारभेव विधिविस्नुब्रह्मसार
वसरुद्रार सबपावकादिअंसावतार॥५६॥ वार्ता॥ तव
भारद्वाजजीनेकुसलकहिकरकेफेरकह्योतुमआदिदेवता
होअरतुमसंपूरणसंसारकेभेदनकोजानतहो ब्रह्मा विस्नु
सिव सूरज चंद्रमा औरसबअगनआदिकपहतुमारेअंस
वतारहै॥ ॥ब्रह्मादिसकलपरमानअंत तुमहीहोरघुपति
गुनअनंत अवसकलदानदैपूजविप्र फुनिकरहुविजयवै
कुंठक्षिप्र॥५७॥ वार्ता॥ ब्रह्मानेआदसमपरमाणोकेअंतता
ईसमतुमहीहोसोअैसेतुमअनंतहो अरमोकोकुसलपूछ
तेहो अवसंपूरणब्राह्मणोकोदानदेकरकेअरपूजनकरके
सै॥ फेरवैकुंठविषैसीघ्रतासौंविषजैकरो॥ इतिश्रीईद्रजितवि
रचितायांश्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्री
रामचंद्रचंद्रकायांभरद्वाजसमागमोनामविंशतितमोप्र
कासा॥२०॥ दोहरा॥ याइकीसप्रकासमैदानपरमकोग्या
न भरथमिलनवानरगुणन श्रीमुषआपवषान॥१॥
वार्ता॥ इसईकीसमप्रकासमेदानहैपरमोअरपरमकोग्या
नहै पुनो भरतजीसोमिलवोअरवानरोकेगुणोकोआपनेमु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षसौवरणवो॥ श्रीराम॥ सोमराजछंद॥ कहादानदीजै॥
सुकहूंभांतकीजै जहांफ्लोयजैसो कहोविप्रनैसो॥२॥ वार्ता॥
नवरामजूनेकह्योकहादानदीजे सो कितनेप्रकारहैजहां
जैसोहोयसोहे भारद्वाजतैसेही कहो॥ भारद्वाज॥ दोहरा॥
सत्वकरजसतामसी दानतीनविधजान ऊत्तममधममध्य
यमपुनिकेसवदासवषान॥३॥ वार्ता॥ सोदानतीनप्रका
रकेहै सात्वकरजसतामस अरऊत्तम मध्यम अध
म॥ चंचरीक॥ पूजियेद्विजआपनेकरनारसंजुनजीनीये
देवदेवहिथापकेपुरवेदमंत्रवषानीये हाथलेकुसगोत्रउ
चरस्वरणसंजुनमानीये दानदेकछुऔरदीजेदानसात्व
कजानीये॥४॥ वार्ता॥ जोस्त्रीकेसंजुगतब्राह्मणकोआ
पनेहाथनसोपूजनकीयेदेवतिऊकेदेवजोहैं श्रीभगवानति
नकोअस्थापनकरकेपुरकातिनकेआगेवेदकेमंत्रकहे॥
हाथमैकुसाकोलैकेगोतकाऊचारणकरकेस्वरणकेसंजुग
तयथाप्रमाणदानदेकरकेफेरदानप्रतिष्टाकछुओरदी
जीयेताकोसात्वकदानजानीये॥ दोपकछंद॥ देयनहीआ
पनेकरदाने औरकेहाथजुमेगलजानै दानहिदेतजुआ
लसआव सोवहिराजसुदानकहावे॥५॥ वार्ता॥ जोआपने
हाथसोदानकोनादेवे औरकेहाथसोहीमंगलजाने आप
दानदेतेहूयेआरसआवै सो राजसदानहै॥ गोपालछंद॥
विप्रनदीजनहीनविधान जानहुतिनकोतामसदान विप्र
नजानहुजेजगरूप देषोसगरेविसुसरूप॥६॥ वार्ता॥ जो
विधानतेहीनब्राह्मणकोदेइयताकोनामसदानजानो
जगतमैजोब्राह्मणहैतिनोब्रह्मस्वरूपकरकेहीमनजानो॥
सभकोविस्नुसरूपकरकेदेषो॥ सलोक॥ सावारोवानरा
कारोसाधुरवासाधुमेवच॥ अविद्यो वा सविद्यो वाब्राह्मणो
मामकीतनुः॥७॥ वार्ता॥ यहिमकौहैब्राह्मणआचारस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

163A

हनहोयअथवाआचाररहितहोय सेष्टहोयकेअसेष्टहोय॥
विद्यारहितहोयअथवासहितहोयब्राह्मणमेरेरूपहैं ऐसेहरके
वचनहै॥तोमरछंद॥द्विजधामदीजनजाय बहुभांतपुजसपा
य कछुनाहहनेपरमभु कहिजेसुऊतमदान॥८॥वार्ता॥फेरब्रा
ह्मणकेघरजोजायकरकेदेइयेबहुतप्रकारसोचरणोंकोपूजन
करके कछुयाकेपरमाणनहैसोऊतमदानहै॥ ॥द्विजकेजु
देयबुलाय कहिजेसुमध्यमराय गुनजाचनेमसिदानु अतिहीन
तेकोजानु॥९॥वार्ता॥जोब्राह्मणोंकोबुलायकरकेदेवेसोम
ध्यमहै गुणकेजाचनाकेवहानेजोदानदेइयेताकोअधमजाने
सलोक॥अभिगम्योतमंदानमाहूतेचैवमध्यमम्॥ अधमजा
च्यमानेस्यातमेवादानंतुनिसफलम॥१०॥वार्ता॥अभिगम्यका
घरजाकरकेसोदेइयेसोऊतमदानहै बुलायकरकेजोदेवेसोम
ध्यमदानहै मांगेतेजोदेईयेसोअधमहै सेवातेजोदानहै निसफ
लहै॥दोहरा॥प्रतिदानदैजननेमसेदानसुनित्यवषान कालहिपा
यजुदेतहैसोनैमित्यकजान॥११॥वार्ता॥जोनेमसेदिनदिनप्रति
देइयेसोनित्यदानहै जोपरबआदसमैयेकोपायकरकेदेवेनैमित्त
कहै॥सलोक॥आख्यतंसापकरमाणंब्राह्मणंजोव्रतक्रमात त
स्यपुण्यचयोप्यासुष्यनयानन्तसंसयः॥१२॥वार्ता॥जोअपनेआ
स्रितहैअरसेवकरमवारेहैं ऐसेब्राह्मणकेजोत्यागकरकेदेवेति
सकेपुन्यकासंचूहसोग्रहीनासहेजाताहै॥तोटकछंद॥पहिलेनि
जुस्रितनदेहुअवे फुनियावहिनागरलोकसवै पुनिदेहुसवेनि
जदेसनके ऊवस्योपनुदेहविदेसनके॥१३॥वार्ता॥पहिलेअ
पनेजोस्रितीहैंपुरोहतआदिकतिनेकोदेवो फेरसहिरकेलोगपा
वै फेरअपनेदेसक्याकोदेवोजोवचेसोपनुवदेसिओंकोदेवो॥
दोधकछंद॥दानअकामसकामकहेहै परसवैजगमध्यरहेहै इछि
नहीफलहोतसकामे एमकमित्रवषानअकामे॥१४॥वार्ता॥दान
अकामनेसकामदोतरांकेकहेहै सोसभजगतमेपूरणहैरहेहै जो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

किसी फलकी ईछासे दानदेवे सो सकामहै जो श्रीरामजूके नमि
त देवे सो अकाम है॥ ॥दानुतिदछ्यणवामवषानो परमनिमि
त्ति दछ्यणजानो परमविरुपनेवामगुनोजू दानकुदानसबे
नसुनोजू॥१५॥वार्ता॥फेर दानदछनने वामकहीते है जो परमके न
मित्त करीये सो दछन है जो परमते विरुथसो वाम है फेरदानते कुदा
नजो है ते समसुने॥ ॥देहसुदानसुऊत्तमलेषो देहकुदानतिने
जिन देषो छाडसबे दिन दानतिदीजे दानहीने समके मनलीजे॥
॥१६॥वार्ता॥जो भली प्रकारसे देवे सो ऊत्तमदान है जो षोटी तरेदे
वे तिनेको मतदेषो अर समको छोडकरके दिनदिनप्रतिदानदीजि
ये दानहीने समके मनलीजीये॥दोहरा॥के सब दान अनेन है व
नेन काहू देन यहे जान प्रभु भूपसम भूमदान कहु देत॥१७॥
वार्ता॥दानतो अनेन कहू के देने हूये नहीं वनने है यही जानक
रके जगत मै सपूरण राजा प्रिथिवीके दान को देते है को तामे सभ
पदारथ आपजाते है॥सलोक॥यत्किंचकुरुते पापं ग्यानतो ग्यान
तोपिवा अपि गोचरममात्रेण भूमदानेन सुपति॥१८॥वार्ता॥जो
कोई कस्या है पाप जानकर के अथवा नाजानकरके सो गोचरममा
त्रजो प्रिथवीको दान है ताकर के सुध होत है॥ ॥सप्त हस्तेन दंडे ह
नत्रिंसदंडं नवर्तनम दसतान्यो वगोचरमदत्वा स्वरगमहीयते
॥१९॥वार्ता॥सात हाथ के दंड होत है तिसदंडकरके जो तीसदंडनो का
गीनन है से जो दसहोवे ताको नाम गोचरम है ताको देयके स्वरगको
प्राप्त होत है॥ ॥अन्या येन हृता भूरयैरन्नैरथ्य पहारिता हरे
तो हारयेनसचहन्यस्तेसपतमं कुलम॥२०॥वार्ता॥औरकी दई
हूई प्रिथवीके जो मनुष हरलेत है हरणवाला अर हरणकराव
णवाला तिनदोऊ अपनी सातेकुलाकानासकरावते है॥श्रीराम॥
दोहरा॥कानेदानेदान भुवहै रिषराज अनेक॥भारद्वाज।देहुस
नायनआदहे आये सहितविवेक॥२१॥वार्ता॥फेर रामजूने क
ह्यो किसको प्रिथवी दान देई ये रिषराज तो अनेक है तव भारद्वा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

164A

जजीनेकह्यो सनकाद्यब्राह्मणोंते आदरदेकरके समनेकोंदेके
विचारकेसहितजेआपहैगे॥ ईंद्रवज्रछंद॥ कहेभरद्वाजसना
द्यकोंहे भयकहोतेसमममध्यसोहै हुतेसबैविप्रप्रभाप्रवीन॥
तज्योतिकोंप्रतिपूज्यकीने॥२२॥वार्ता॥ हे भारद्वाजकहोप
हसनाद्यकोंनहे अरकहातेभएहैजोसमनेकेमध्यसोभतहै सं
पूरणहोब्राह्मणप्रभासोंभरेहूयेसेसोक्योंत्यागेआरपहलआस्यनए
जनीयकैसेकरे॥ भरद्वाज॥ गिरीसनारायणसोंसुनीजैसे गि
रीसमोसोकहीकहोत्यों सुनोसुसीतापतमाथचरचा करी
सुजोतेतमब्रिह्मआरचा॥२३॥वार्ता॥ तबभारद्वाजकह्योय
हिजेसेसिवजूनेश्रीनारायणजूसेंसुनीहै फेरसोइसिवजूने
सोसोकहीहै तैसेहीमैतुमसोंकहितहों सोहेश्रीसीतापतितुम
सेवहचरचाकोसुनो जिसतेतुमनेइसब्राह्मणोंकीपूजापीछेक
रीहै॥ मोटनकछंद॥ सिव॥ मोतेजलतेउयसरोजवह्यो ऊचो
अतऊचअकासचह्यो तोमैचतुराननरूपगयो ब्रिह्मार
तनामप्रगट भयो॥२४॥वार्ता॥ भगवाननेसिवजूसोंकह्योप
कसमेमोरेतेजलकेसंबूहमैकमलहोतामया सोअत्यंतऊचा
आकासमैचढतामया तामैतेचारमुखकोसरूपहोतामया
ताकोब्रिह्माऐसेनामप्रगटहोतामया ताकेमनतेसुतचारभ
ये सोहेअतिपावनिवेदमये वोहूंजनकेमनतेउपजे भूदेव
सनाद्यतिमोहिभजे होनेवरहै तिनकोंतिनजू हुयहोतुमब्रि
वार्ता ५ ह्मपरोहितजू॥२५॥ तिसकेमनतैं सनकसनंदन सनातन स
नतकुमारचारपुत्रप्रगटहोतेभये सोअत्यंतपवित्रहै अरवेद
मयहै तिनचारोंचनोंकेमनतेउपजेहैं पृथ्वीकेदेवतासनाद्य
तेमोकोंभजतेहैं तबतिनोंकेतिनश्रीनारायणजूनेवरदीयो॥
तुमब्रिह्मपुरोहितहोवोगे॥ दोपकछंद॥ तोतेरिषराजसबैतुम
छोडे भूदेवसनाढ्यनिकेपहिमंडे होनेतिनकोंतुमहीवररूरे
चहूजुगहोहुतपोबलपूरे॥२६॥वार्ता॥ तिसातेरिषराजतुमने

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सम्भवांटदीपहै ब्रह्मणकोसनकाद्यहै तिनोकेचरणकम
लपूजेहै फेरतुमनेहूंतिनेकोसुदरवरदीएसेचारोजुगमे
तुमतपकेवलसेपूरणहूवो॥ईंद्रवज्र॥सनाद्यपूजाअ
घडोघहारी॥अखंडअखंडललोकधारी॥असेषअप
मावधिभूमचारी सम्मूलनाशेत्रिपदोषकारी॥२७॥वार्ता॥
हेश्रीरामजूसनाद्योकीपूजापापोकेसंमूहकीहरनेवारी
है अखंडकासंपूरणजोहै अखंडललोकचौदांभवनतिनो
मेधारणकरीहै असेषकासंपूरणजोहै अपमावलका
पापीउोकीअवधवडे पापीप्रिथवीमेविचरणवारेदोष
णकेकरणवारेराजातिनोकोसम्मूलसेनासकरतहै॥श्रीराम॥
तोटकछंद॥हनुवंतवलीतुमजाहूतहां मुनिवेषवसेतम
रथजहां रिषकेहमभोजनआजुकरै पुनिप्रातभरथ
हिअंकभरै॥२८॥वार्ता॥फेररामजूनेकह्योहेवलवान
हनूमानतुमतहांजावोजहांमुनिकोवेषकरेभरथजीवस
तेहैहमआजरिषीस्वरकेभोजनकरेगे फेरप्रातेंकालेभरथ
कोगोदमेभरेगे॥चतुषपदीछंद॥हनूमंतविलोकेभरतस
सोकेअंगसकलमलधारी वकलापहिरेतनसीसजटागन
हैफलमूलअहारी वहुमंत्रीगनमेराजकाजमेसवहीसोहि
ततोरे रघुनाथपादुकनितनमनप्रभुगनसेवतअंजुल
जोरै॥२९॥वार्ता॥तवहनूमानजूनेभरतजूदेषेकैसेहैस
हितसोककेहै योतेसंपूरणअंगजोकेमलनताकोधारनवा
रेहै अरवकलकेवस्त्रसरीरपरपहिरेहूएहै सीसपैजटानके
संमूहहै अरफलनेमूलकेभोजनकरणवारेहै फेरवहुतेजो
मंत्रीउोकेसंमूहहै तिनविषेअरराजकाजविषेसभहीसेसने
हकेजोरेहूएहै श्रीरामजूकेपेअनकेमनअरमनसेस्वामि
जानकरकेहाथजोरेहूएसेवनेरहिलेहै॥हनूमान॥संवकसोग
नछंडोम्हूघनमंडोकीजहिविवयवधायेशुरकाजसवारेरा

1.25A

वनमाधेरघुनायककरकमलपर सुग्रीवसजोधनुसहितविभीषन सुनुहभरथसुभगिता जयकीरतसेजुतअमलसकलअंग सोहतलछमनसीता॥२१॥ वार्ता॥ तवहनूमानजूनेकह्यौसे कुअरसोककोहेभरतजूतुमछोडो अरभूषनोंकोंपहिरो नानाप्रकारकेवधावेकरो कोंदेवतिउंकेकारजकेसवारके अररावणकोमारकैश्रीरामजूवरआपहे संगधनुषकेसजे हूयेसुग्रीवहैसहितविभीषनकेहेभरतयहिसुभकथासुनो जेअरजनकेसंजुक्तअपथवाजेअरजनकेसमाननसंपूरणअंग गोकरकेनिरमललछमननेसीताजूसोभितेहें॥ षपटका छंद॥ सुनपरमभावतीभरथवात भयेसुखसमुद्रमेमगनगात यहिसत्यकियेकछुसुपुनिईस अवकह्योकहामोसेकपीस॥२२॥ वार्ता॥ असीअत्यंतभावतीवारताकोभरथजूसुनकरकेसुषकेसमुद्रविषेभरथजूकेअंगमगनहोतभये यहिसत्यहेकिहेईसवसुपनोहै अवमोसोवानरोकेराजानेकहाकह्योहे॥ ॥जैसेचकोरलीलेअंगार पुनभूलजातसगरीसंभार जीयउठतउठतज्योंउदयनंद॥ त्यो भरथभयेसुनरामचंद ज्योंसोयरहितसवसूरहीन अतिहूअचेतजद्यपप्रवीन उदनउठेसवसजनभोग त्योंरामचंद्रसुनतअवधलोग॥ ॥२३॥ वार्ता॥ जैसेचकोरअंगारनकोनिगलतहे तवफेरसंपूरणसंभारकोभूलजाताहे ताकोचितजैसेऊआहैऊगतेहूयेचंद्रमाकेतैसेविरहमैतेश्रीरामजूकेसुननेतेहीभरतजीभयेरजैसेसूरजकेछिपेतेसभसोयरहितेहैं अत्यंतअचेतहूकेजद्यपचतुरभीहे सूरजकेउदैहूयेतेसभभोगनकोभजतेहें तैसेरामजूकोसुनकेअजुध्याकेलोगहोतेभये॥ मालनी छंद॥ जिहतिहगजगाजेदुंदभीदीहवाजे वहुवरनपताकास्यंदनस्याविराजे भरथसकलसेनेमध्यधोभेषकीने सुरपतजनुआयेमेचमालिलीने सकलनगरवासीभिंन

सेनानसाजे रथगजपताकाकुंडकुंडीनराजे बलवलप्रति
सो भोसुभ्रसोनिछाई रघुपतिसनमानोश्रोधंआई ॥२३॥ ˇआप
वार्ता ॥ तवजहांतहांहाथीगरजतेभये अरुनगारेबाजतेभ
ये बहुतेरंगनकीधुजारथमेस्थितभई विराजतहै संपूरण
सेनाकेमध्य भरथजीऐसेभेषकोंवहूपसोभनहै मानोंमे
घमालानकोलीयेहुये ईद्रआयोहै तबसंपूरणनगरके
वासीजुदीजुदीसेनाकोसजेहुये अथसेनानेजुदेसजेहू
ये रथहाथीपताकाइनोंकेसंवूह अरकुंडीकासेनाने
रतसोसोभनहै औरअस्थानअस्थानप्रतिउजलसोभासो
छाईहुईसेनासोभनहै मानोश्रीरामजूकोंसुनकेगंगजू
ध्याहीआयआईहै ॥ चामरछंद ॥ यउतनउतासईसव्योम
न्योविलोकहीवानराजरिक्षराजद्रिष्टस्विष्टरोकहीज्यो
चकोरमेघवीचमध्यचंदलेषहीं भानकेसमानजानत्यों
विमानदेषहीं ॥२४॥ वार्ता ॥ तवजहांतहांतेदासअरति
नोकेसामीसोआकासकीतरफदेषतेहै वडेसरीरकेजो
हैवानरोकेराजाअररिछोकेराजासोस्वष्टजोहैलोच
तिनोकीद्रिष्टकोंरोकतेहै जेसेमेघनकेसंवूहकेविषेचंद्र
माकूंचकोरदेषेतैसेदेषतहै सूरजकेसमानजानकरके
मदनमोदकछंद ॥ आवतविलोकरघुवीरलघुवीरतज
व्योमगतभूतलविमानमहिआययो रामपदपदमसु
षसदमकेहुवेधुजुगहेरतवषटपटसमानसुषपाय
यो चुंमसुषचूंमसिरअंगरघुनाथभरअसुजुनलो
चननदेषकरलायये देषमुनिब्रिंदवरसिष्यसवसिष्य
जनहरषननपुषपवरषानवरषाययो ॥२५॥ वार्ता ॥ छो
टेभाईजोहेभरथतेरघुवनजीतिनोकेंआवतेदेषकेर
रके श्रीरामचंद्रजूआकासकीगतकोत्यागकरके विमान
विषेप्रिथवीमेंआवतेभये तवश्रीजकेजोचरणकमलहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

166A
सुषकेयर तिनेकोदेऊ भाई दौरकरके भ्रमरकेसमान तिस
समैसुषकोपावतेभये तवसुषकेंचुमकरके अर सिरकोसं
घकरके गोदीमे श्रीरघुनाथजू भरकरके भरतजीकेआस
८४ नकेसहितनेत्रदेषकरके हिंयसे लगायलीये तवदेवनाअ
रमुनीस्वरोकेसमूहसेवेष्ट अर संपूरणसिषअरसिषोकेज
नक्याहामसपहसमप्रसंनसरिरहोकरके फूलनकोवरषा
वरषावतेभये॥दोहरा॥भरतचरनलछमनपरेलछमनके
शत्रुघन सीतापगलागतदेषैआसिषसुभ शत्रुघन ॥३६॥
वार्ता॥तवभरतजूके चरणोमेलछमनजू परतेभयेलछम
नजूके शत्रुघनजीपरे अरसीताजूनेचरणोमेलागतेहूये
शत्रुघनको आसीर्वाद दीये॥दोहरा॥मिलेभरथशत्रुघपुनि
सुग्रीवहिंअकुलाय बहुरवभीषनको मिलेअंगदकोसुष
पाय॥३७॥वार्ता॥फेरभरथने शत्रुघनजूसुग्रीवको मिलेफेर
विभीसनको मिले॥मधुभारछंद॥जामवंतनलनील॥
मिलेसुरभसुमसील गदयगवाछगईंद कपिकुलसमसु
षकंद रिषवसिष्टकेदेष जनमसुफलकरलेष रामपरे
ऊठ्धाय लछमनसहितसुभाय॥३८॥वार्ता॥फेर जामवंत
अरनलनेनील अरसुमसीलवारेसुरभअरगदय नेग
वाछअरगईंद औरजेसुषकेमूलवानरोकेसमूहहेसभ
कोभरथशत्रुघनजी मिलतेभये वसिष्ठरषीस्वरकोदेषक
रकेजनमसुफलकरजान्यो लछमनजूकेसहित श्रीराम
जूऊठकरकेचरणोमेपरे॥दोहरा॥लेसुग्रीवविभीषणेक
रविनेअनेत आयइनपरेवसिष्ठकेकपिकुलवलवुध
वेत॥३९॥वार्ता॥फेरसुग्रीवविभीषणकोलेकरकेअर
अनेकवेनतिआंकरकरके श्रीवसिष्ठजूके चरणोमेपरे
वानरोकेसमूहमेजोवलतेवुधवारोहै॥छंद॥सुनिजेव
सिष्टकुलईष्टदेव इनकपिनायककेसकलभेव हमवू

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

डुनघेविपतासमुद्र इनरघवलीपेसंग्रामरुद्र॥४०॥वार्ता॥
फेररामजूनेकह्योहेकुलकेईष्टदेवश्रीवसिष्टमुनजूतुम
सुनो इनवानरोकेस्वामीजोहेसुग्रीवतिनोकेसपूरणमेदह
मविपदाकेसमुद्रमेडूवनेसे इनोनेमयानकजुपनेहमरा
षलीपेहे॥ ॥सवआसमुद्रकीभुवसुफई तवदईजनक
तनआंद्दिषाई निजमयेमरथज्योंदुषहरन आनसमरआ
मरहनकुंमकरन॥४१॥वार्ता॥समनोतेसमुद्रमपंतकीप्रि
थवीसुपायकरकेतवजनककीपुत्रीहमकोवताईदई आप
मरतकेसमानहमारेदुषहरणवारेमयेहे आपंतजुध्यविषआ
मरजोकुंमकरणसोइनोनेमास्योहै॥ ॥इनिहमैविमीषण
सकलसूल मनमाननहोशत्रुघनतूल दसकंठहननसव
देवसाथ इहपेकलेपेवलवंतराघ तजत्रियसुतसोदरवंधुई
स इहमेहमिलेमनक्रमरिषीस देखितुईइजितकीवताय अ
रमंत्रजपनरावनदिषाय॥४२॥वार्ता॥पहविमीषनहैइस
नेसमदुषदूरकीएहै इनकोहमशत्रुघनकेसमानमाननतेहै
हनूमानकेरावनकेमारनेहुयेयामेसमदेवतासाषीहे इ
सीएकलेनेवलवानजोहनूमानसोरघवलीएसे इस्त्रीपुत्र
माईसंवंधीस्वामीइनकोत्यागकरकेएहमोकोमनक्रमकर
केहेरिषीमिलेहै इनोनेहीमेघनादकीष्त्रितुवतायदईसो॥
अरमंत्रजपताहूआरावनदिषायदिआया॥तोटकछंद॥
इनअंगदशत्रुअनेकहने हमहेतसहेदिनदुषघने वहुराव
नकेदुषदेसिषदे तवआयमलेसिरमूषनले॥४३॥
वार्ता॥इसअंगदनेशत्रुअनेकमारेसे अरहमारेवासतेव
हुतेदुषसहारेहै फेररावणकोवहुतेदुषदेकरकेअरसिक्षा
देकरकेतवसिरकेमुकटलेकरके मलीवियसोआयेथे॥
दसकंधरकीजयगूढथली तिनकेतनसोवहुमांतदली
महिमैमयकीतनआकरषी मतिमारअकंपनकोहरषी॥

167A

॥४४॥वार्त्ता॥ फेर रावण के जय की जो थी सू हवली तिसने
किन तिन्हों को सो जाय करके बहुत प्रकार सों दलन करी पृ
थवी मैं मय राकस की पुत्री मंदोदरी सो याने षेची है अर अ
कंपन कस को मारके इन वुध प्रसन भई सो ॥श्रीराम॥ मारो
मय अपराध विन इन को पितु गुनग्राम इन मन सों वाचा क
रमना कीने हम मेरे काम ॥४५॥वार्ता॥ अर गुण के अर या को
पिता मैंने अपराध ते विना मार्या था इसने हमारे मन वचन
करम कर के कारज कीये है ॥गीतका छंद॥ इन जामवंत अ
नेत रछस लछ लछ निहीं हने म्रिगराज ज्यों वन राज मैं ग
जराज गाजन नागने वलभावना वलवान कोटक रावणादि
क हार ही चढ व्योम दीह विमान देव दिवान आन निहार ही
ध्र ॥वार्ता॥ अर इस जामवंत ने अनेक राकस लाष लाष ही
मारे हैं जैसे वन की पांतन मैं सेर हाथियों के राजा को गरजने हू पे
को नहीं गिनते है इसकी वल की भावना के आगे वलवान जो
करोरं रावणादिक थे सो हार जाते थे याको अनुपकर ने को व
डे विमानों मैं चढ करके देवतियों की समा आय करके देष
ती रही है॥ ॥कष्ट न करे है कारन अब कोऊ ऐसे करम जै
से वांध्यो नल उपल जल निधि सेतु मपरम॥४६॥वार्ता॥ ना
काहूं ने कष्ट्यो है ना कोऊ करेगो ना अव कोऊ करत है ऐसे क
रम को जैसे नल ने उपल का पाषाणों को करके समुद्र पर पुल वां
ध्यो है॥हरिगीता छंद॥ हनुवंत पजिन मित्रता रवि पुत्र सों हम
रो करी जल जाल काल कराल चाल उपाल फाल पराए परी
निसंक लंक निहार रावण धाम धाम मणि पायये इक बाटका
नर मूल सीत हि देष के दुष पायये नरु तोर फार प्रहार किं
करि मंत्र मित्र सिधारये रण मार अक्षकुमार रावण गारव
स्यो पुर जारयो मुद्रका मम सीय को दे सी पकी मणि लायये
वलवंत ताव अनेन सागर नै से हि फिर आईये॥४७॥वार्ता॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं सटी १६८ 168

अरु एह हनूमान हैं जिनोंने सुग्रीव सौं हमारी मित्रता करी
है फेर जल के जो समूह था समुद्र काल सम भयानक सो
जिनोंने चलकर के फाल का एक छाल सो उपालक्या उस
पार की प्रिथवी ग्रहन करी है फेर तिसके लंका को देषकर के
रावण के घर घर मैं दौरते भये एक वारी मैं व्रिछ के मूल वि
षे सीताजू देषकर के दुषपायो तहां व्रिछन को तोड़ फा
ड़ कर के अरु तहां के सेवकन को मार कर के वजीर अरु मि
त्र रावण के इसने मारे फेर रण मैं रावण के पुत्र अछकुमा
र को मार्यो अरु रावण के गरव के सहित लंका पुर जार दी
यो फेर मैं रिमुद्रका सीताजू को दै कै सीताजू की मणी ल्या
वते भये हैं अनंत समुद्र को तैसे ही बलवान लांघ कर के
फेर आए हैं ॥ ॥ इसके ठ देषव भीषण रण व्रिसलसकत
चलाय यो करि पीठ तिहि सरनागत नव आय उर सल
गायउ इक जाम जामिनी मै गये हत दुष्ट पर वन ल्या
य के तिह काल लछमन को जिवायो हम जिवाए आय के
॥४८॥ वार्ता॥ फेर जब रावण ने विभीषण को देष के ज
प मै व्रिसलसकत चलाई तिस को सरण आए ते पीठ कै
नर फकार के लछमन जू ने आप हिये मैं लगाई तब रात
के एक पहर मैं पहि गये अनेक दुष्टन को मार के परव
त को ल्याय कर के जिसी काल विषै लछमन जू को जि
वाये अरु हम भी इसने आय के जिवाए ॥ दोहरा ॥ अ
पुने प्रभु को आपु को कर्यो हमारे काज रिषरज क
ह्यो हनुवंत सौ भगतन को सिरताज ॥५०॥ वार्ता ॥ अ
पने स्वामी का अरु अपना हर हमारा इसी ने कारज कीआ है
तब वसिष्ट मुनी ने कह्या एह भगतन के सिरताज है कयों ना
करै ॥ चामरछंद ॥ वीर धीर साहसी वली जु विक्रमी छमी
सा पुसरवदा सु पान पिजस मैं सु संजसी भोग भार जोग जग्गा

168A

वेगवंतहै जिने वायपूत रामकाज रामकाजवारडारीरति
ते॥५१॥वार्ता॥जो पुरषवीरतामेधीरजवानअरसाहसवा
रेवलवारेअरप्राक्रमवारेछमावारे सदासायसवेहुवुध
५४ वारेतेवारेजपवारेसेहुसंजमवारे भोगअरभागअरजो
गतेजगयअरवेगइनेवारे जिननेहै सोसमहनुमानज
केएकरोमकेकारजऊपरनेवारडारिये॥दोहरा॥सी
तापाईरिपुहत्योदेख्योतुमफुनगेह रामयनजेसियाको
कपिसिरटीकादेहू॥५२॥वार्ता॥हमनेसीतापाईअररा
वुमारयो तुमदेषेअरजरदेख्यो सोएहजो रामायनहैताकी
जेकीर्तिसपको तिलकहनूमानजूको दैवो॥सुंदरीछंद॥पु
सपतेउतरेरघुनायक यछपुरीपठयेसुषदायक सोदर
कोअवलोकनयाघल रीफरद्योकपिरिछनकोदलु के
चनकेअतिसुषसिंघासन रामरच्योतिहिऊपरआसन
कोपरहीरनकोअतकोमल तामहिंकुंकमचंदनकोदलु
॥५३॥वार्ता॥तवपुसपकविमानतेश्रीरामचंद्रउतरतेभ
येसोविमानकुवेरकीपुरीकोभेजदीयो फेरभरतजूकेत
पेवलकेदेषकरकेवानरअररिछनकेदलरोफरह्योत
हांस्वरणकेजोसुषसिंघासनश्रीरामजहैतरच्यायातो
केऊपरश्रीरामजूआसनकरतेभये फेरहीरनकाजो
अत्यंतकोमलकोपरकाअरचांघातिसविषेकेसरअर
चंदनकेजललेकरके॥दोहरा॥चरनकमलश्रीरामके
भरतपषारेआप जिननेगंगादिकनकोमिटनसकल
संताप॥५४॥वार्ता॥श्रीरामजूकेचरणकमलभरतजू
नेआपधोये जिनकेतेश्रीगंगादिकनकेभीसंपूरणदुषमि
टतनहै॥पंकजवाटकाछंद॥सूरजचरणविभीषणकेअ
न आपनभरणपवारमहाभति डुयवपुनकरकेवहुभे
वन पुसपहरषवरषेदिवदेवनि॥५५॥वार्ता॥फेरसूरजकपा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुग्रीवजीके चरण अरु विभीषनके आय श्री भरतजूने
पाये तब नगरलोगोंकी पुनकरकै बहुत प्रकारसे प्रसन्न हो
करके सब रागने देवतिउनें फूल बरषे ॥ दोहरा ॥ पीछे परस
न शत्रुघन लछमण आये पाय चरण सो मित्र पवारहु
अंगदादिकै आय ॥ ५६ ॥ वार्ता ॥ पीछे प्रसन्न होकरकै शत्रु
घनने लछमनजूने चरण आये फेर लछमणजूने आय
करके अंगद आदिके के चरण पेषे ॥ तामरस छंद ॥ सिर
ते जटा उतार अंग अंग रागन न्हाय तन भूषन भूषण व
स्त्र कटसोक सतव सत्र ॥ ५७ ॥ वार्ता ॥ श्रीरामजूने सीस
ते जटा उतारि अंग अरु अंगों पर सुगंध धारण करकरि अंग
अरु भूषण ते वस्त्रन सो सरीरको सोभायमान कीये फेर कम
रसो वस्त्र कसे ॥ दोहरा ॥ सिरते पावन पाडुका लैके भरथ वि
चित्र चरणकमलतल हरपरी हसि पहिरे जगमित्र ॥ ५८ ॥
वार्ता ॥ तब सीसते सुदर पवित्र पाउपले करके सो श्रीराम
जूके चरणकमलोके तरे राषे हसकरके जगतके मित्र जो
श्रीरामजू तिनेनें पहिरे ॥ इति श्री इंद्रजीत विरचितायां श्री
मत सकल लोक लोचन चकोर चिंतामन श्री रामचंद्र चंद्रिका
यां भरतसमागमो नाम एक विंशतमो प्रकासः ॥ २१ ॥
॥ दोहरा ॥ बाविसत प्रकासमे अवधपुरि हप्रवेस मानु सि
तन सो भापुरि आय रामनरेस ॥ सुन्दरी छंद ॥ अवधपुरी
को राम चले जब ठौर ही ठौर विराजत है सब भरथ भये
सुभ सारथ सोभन चौर धरे सुग्रीउ विभीषन ॥ १ ॥ वार्ता ॥
जब अयुध्याको श्रीरामजू चले तब अस्थान अस्थानमै
सभ विराजते भये तब भरतजीतो सोभायमान रथवान हो
ते भये सुग्रीवने विभीषणजू चौर दुरावते भये ॥ तरंगनी छं
द ॥ लीनी छरी दुहु वीर शत्रुघन लछमण पीर टारे जि
ह ति हभीर आगे दरजकत समीर ॥ २ ॥ वार्ता ॥ लछमन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

169A नेशत्रुघनदोऊ भाईऊनेहाथमैछरीलईलई तहांनहांतेभी
रवोहहलावतेहै मानेदसहितपिनोकेसरीरहै॥ ॥मूतलहूदि
वपूरविराजै दोहूडुहूदिसदुपमवजै भाटभलेविरदावल
गावै मोदमनोप्रतिविंववठावे॥३॥वार्ता॥तवप्रिथवीवि
षेमारस्वरगविषेभीरहोतीभई मरदोऊतरफनगारेवाज
तेभये भाटभलीप्रकारसौविरदावलगावतेभये मानोम्रा
नंदकेप्रतिविंववठावतहै॥ ॥भूतलकीरजदेवनसावे॥
फूलनकीवरषावरषावे दीननमेषसवेमवलोके होइपरि
डुहूपोडुहूलोके॥४॥वार्ता॥अयुध्याकीप्रिथवीकीरजदेव
तादूरकरतहै कैसेफूलनकीवरषावरषावतहै याते तिससमेनि
मेषतेरहितहूयेसभदेषतहै सोदोऊतरफदेऊलोकनमे जिदय
रीहै देवतातो निमेषहैएहभीनिमेषभयजिदकरतहै॥ तारका
छंद॥सकलेदलस्रौधपुरिजवदेषी अमरापततेमतिसुंदर
लेषी वहूडारविराजतहीरवषाई सुमदेवनरंगनसौफिरम्रा
ई॥५॥वार्ता॥सवरणदलनेजवम्रजुध्यापुरीदेषीदेवपुरीतेभी
म्रत्यंतसुंदरजानी जोकेचारोतरफवडीषाई विराजतहै सोमैा
नोगंगाजीफिरकरकेम्राईहै॥ ॥मणिलालकिगूरनकीरू
वरजै म्रनहीरखकेंवनकोटविराजै पुरसुंदरमथ्यलसैछवका
या परवेषमनोरवकेफिरम्राये॥६॥वार्ता॥लालमणिऊसे
केगुरिऊकीसोभासोभतहै जाकीमैसेवडेस्वरणकोकोटसो
सोभतहै ताकेमध्यमेछवसोछायेहुयेनगरसोभतहै मानो
सूरजकेफिरकरकेपरवेषपस्योहै॥दोहरा॥वहुवरणपताका
सोभिजैऊचेकेसवदास दिवदेवनकेदेषियेमानोव्यिंजनविला
स॥७॥वार्ता॥वहूतेरंगनकीऊंची धुजासोभितहै मानोस्वरग
कीदेवीनकेपषानकोविलासहै॥विजैछंद॥चहूप्रतिमंदरसो
मवहीनतनीम्रवलोकनकोरचुनेहन मनोम्रहिदीपतिदेहय
रेसुकिधोग्रहिदेवीयमोहतहेमन किधोकुलदेवीदीयेकहिके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१७०
170

176

सबकै पुरदेवनको हुलस्योमन जही मुतनहे इह भांतलसो दि
वदेवनको मर चालतहैजन॥८॥वार्ता॥नवमंदरमंदरप्र
ति श्रीरामजूके षनके जो इस्त्री अंचढीं आहे तिनेकी सो
भाकैसीवढीहे मानो घरेकी देहनको धारे हूये सोहे अथवा मा
घरेकी अदेवी अंमनको मोहतहे अथवा कुलकी अदेवी
अंसोभतहे अथपुरकी देवीनको हुलस्यो हुयो मनहे सो
जहांतहां ऐसीसोभती हे मानो स्वरगकी देवीनको मद दूरकर
नहे॥दोहरा॥अतिऊंचे मंदरनपर चढी सुंदरीसापुं सुरनार
नको करनहे मानो अर्थितअगा पु॥९॥वार्ता॥अत्यंतऊंचे
ऊंचे मंदर प्रतिचढी हुई सुंदरी सापुक्या पतिव्रताहे सो अगाप
जो देवनारीहे तिनेकी अतिथपने पूजाकरती हे॥तोटकछंद॥
नरनारमिली सुरनारसबै तिनहूंनपरेपहिचाननवे मिलफूल
नकी बरषै बरषा अरगावत हैजयकी करषा॥१०॥वार्ता॥इस्त्री
नेपुरकोमैजो मिली हुई देवअरदेवतिउंकी इस्त्रीहे सोतिनेने
भी वहि पहिचाने नहीं जाते दोऊ देवांगना मिलेहूये फूलनकी
बरषा बरषावतहे अरजै के उतकरषके गावतहे॥पदमावती
छंद॥रघुनंदन आये सुनसबधाये पुरजनजैसे तैसे दरसन रस
भूलेतनमनफूलेबहुबरणेजायनजैसे पतिके संगनारी अति
हितकारी तिनयों रामहि डिगजोरी जहितहि चहूं ओरन मिलो
चकोरन चाहत चंद्रचकोरी॥११॥वार्ता॥ऐसे श्रीरामजू आये
सुनकरके पुरके लोग जैसे थे तैसे ही दोरते भये दरसनके प्रेममे
भूलगये अरतनमनसें प्रसंन भयेतैसे वरननकी येनहीं जा
ते नवपतिके सहितजोहे इस्त्री अत्यंत सनेहकरणवारी तिने
ने श्रीरामचंद्रजूसों ऐसे द्रिष्टजोरीहे मानो जहांतहांचाऐन
रफते चकोरसोंमिली हूई चंद्रमाकों चकोरी देषतहे॥तोटक
छंद॥बहु भांतनराम प्रतिहार हार अति पूजनलोगसमेउदा
र इह भांतगयेन्रिपनाथगेह जनसुंदरसोंदर सोंसनेह॥१२॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

170A

॥वार्त्ता॥ तव श्रीरामजू को द्वार द्वार प्रति वहुत प्रकार सों सं
पूरण लोगन अस्त्वन पूजन करते भये इसी प्रकार राजा के र
हिनवारे घर मे श्रीरामजू जाते भये सुंदर श्री सीताजू के
अरु लछमनजू के सहित सनेह सों ॥दोहरा॥ सीता सीता
नाथजू लछमन सहित उदार सवन मिले सव के कस्यो
भोजन एक ही वार ॥१३॥ वार्त्ता॥ सीताजू अरु श्रीराम
जू लछमनजू के सहित सो सम मनो को मिले अरु सम
नो के एक ही वार भोजन करयो कौ अनेक रूप धार
ण कीये ॥सोरठा॥ पुरजन लोग अपार ये हो सम जान
त भये हम ही मिले अगार आए प्रिय महमा रही ॥१४॥
वार्त्ता॥ तव पुर क्या नगर के जे जन क्या दास है अरु औ
र अपार लोग है सो सम अैसे ही जानते भये आगे हम ही
मिले है प्रिय महमा रहे हो आये है ॥मदन मोहन छंद॥ सं
ग सीता लछमन श्री रघुनंदन मातन के सुष पाय परे सव
दुष हरे अरु सुन अनुकाये भागन आये जो वन पाये अं
क भरे अरु अंक धरे वदन निहारे सरवस वारे देह सवे स
वही निछने अरु ले हवनो तन मन नन से भोर यहे विचा
रे भाग वडो यहि है अपनो सु कि यो अपनो ॥१५॥ वार्त्ता॥
तव सीता अरु लछमनजू के संग श्री रामचंद्र जू मातान के
सुष सो चरण मे परे अरु दुष दूर कीये तव मातान नेन
के जल सो न्हाय दीये सो अैसे जानती भई हमारे भाग
आये है तव अंक वार मे लीये अरु गोद मे धारन कीये ते मु
ष के देषती है तव सरवस को वारन है तव सम मनो को सरव
देन है अरु वहु ने आसीरवाद लेन हे तासमे देन लेन मे त
न अर मन को न ही संभारत है यही विचारत है यह हमा
रो वडो भाग है कि यो सुपनो है ॥खरगदा छंद॥ धाम धाम
प्रति हो नव धाई लोक लोक तिनकी धुन पाई देष देष कपि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अद्भुतलेषे जाहिजवतहिताहिदेषे होरहोरकपिरा
वरआवे वारकारप्रतिथामनिथावे देषदेषतिनके
दईतारी मानमानविहसेसुरनारी॥१६॥वार्ता॥घर
घरप्रतिऐसेबधाईहै तौहै ताकीलोकलोकमेपुनहो
रतहै तवदेषदेषकेवानरअद्भुतताकोविचारतहै
जहांजातेहेतहांश्रीरामजूकोही देषतहै फेरहोरहोर
करकेमहिलनपरआवतहै तहांभीश्रीरामजूकोदेष
केफेरवारंवारघाघरप्रतिदौरतहै तिनकोआवतेजा
तिनकोदेषदेषकरकेअरनारीदेदैकरकेनानाप्रका
रसोंदेवांगनाहसतहै॥श्रीराम॥दोहरा॥इनसुग्रीवबि
भीषणोअंगदगअरहनुमान सहाभरथशत्रुघनसम
मातजीयमेजान॥१७॥वार्ता॥तवश्रीरामजूनेकह्यो
सुग्रीवबभीषणअंगदअरहनुमानइनोकोहेमाता
सदाभरतअरशत्रुघनकेसमानचितमैतुमजानो॥कौसल्या॥
सोरठा॥प्राननाथरघुनाथसवकीजीवनमूरहो लछम
नहेतुमसाथछमहोभूलपरीजुकछु॥१८॥वार्ता॥हेप्रा
णोकेस्वामीश्रीरघुनाथजूतुमसमनोकीजीवनमूरहो
तुमारेसंगलछमनजूथे तिनोनेजोकछूभूलपरीहोवेसो
सोकोछिमाकरो॥श्रीरामचंद्रकछंद॥पोरियाकहेकिप्र
तिहारकहोकियोप्रभुपुत्रकहोमित्रथकेहाथिआरडरआ
निये नैनकहोमननतुकियोतनुत्रानप्राणवुधकहोकि
योवलविक्रमवषानिये देषवेकोएकहेअनेकरूपकीनो
सेवलछमणकोमाईकौनकौनगुणगानीये॥१९॥वार्ता॥
तवरामजूकह्योहेमातामेलछमनकोदरवानकहो अथवा
चोवदारकहोकेस्वामीकहोकेपुत्रकहोकेमित्रकहोकेसु
षदायकमंत्रीकेसूरमाकहोकेसिछकहो अथवादासक
होकेदूतकहो अथवाहाथकोहथआरकहो अथवानेत्रक

171A होकैमनअरननकहोकै रछससंजोग्याकहोकैकुपकहो
केवलकेसहितग्राकमकहो यहिदेषनेकोतोएककहेग्र
रभ्रनेकरूपोकरकेमेरीसेवाकरीहै लछमनहेमानाहू
मकौनकोतगुणकेभावे॥सोरनकछंद॥पाबुद्धनवो
लकेरामकहे डेरानसजोग्नि हसुषलहे मेरेद्वारसंवति
युकतसवै सुग्रीवहिदेकुनिवासभवे॥२०॥वार्ता॥पु
रपाबुद्धनकोवोलकाबुलायकेश्रीरामजूकहितेभयेति
नोकोसोडेरावतावोजामेपरमसुषपावेतवपाबुद्धननेक
ह्योसंपदाकेसहितजेमेरोद्वारहेतामेअवसुग्रीवकोनि
वासदेवो॥ ॥सोजेजेभरथसवैपनुसो राषहुतिहि
जायविभीषणको नैरित्यनकोकपिलेपानको सोजे
तिनभामनभोगनको॥२१॥वार्ता॥अरजोभरथजूने
सभयनसौसज्याहेतहविभीषणकोजायकेराषतहो॥
औरजोनैरित्यकजातकेराकसहेअरवानरलोगहेति
नकोजहांइस्त्रीनकेभोगहेतिनस्थानोमेसजतहो॥दोहरा॥
एकएकनैरित्यकोतिननेवानरलोग आगहीठाहेर
हितअमितईदुकेभोग॥२२॥जहांएकनैरित्यकोअर
वानरोकोआगेहीषडेरहिअप्रमानजोईदुकेसमभोग
हे॥इतिश्रीईदुजीतविरचतायोश्रीमतसकललोकलो
चनचकोरचिंतामणश्रीरामचंद्रचंद्रकायांश्रीरामचंद्रआ
गमनवरननंनामद्वाविंसतप्रकासः॥२२॥दोहरा॥या
त्रैविंशप्रकासकुंभजादिकआगमलेष राजश्रीनिंदा
कहीश्रीसुषजापविसेष॥१॥मलकाछंद॥येककाल
रामदेऊ सापुंवंयुकरनमेऊ सोभिजेसभासुमेस॥दे
सदेसकेनरेस॥२॥वार्ता॥एकसमैराजारामचंद्रजूजोहै
सेहूभाईजिनोकीसेवाकरनहै सोसुंदरसभामेसोभनेम
एजहांदेसदेसकेराजाहे॥वानरेसजूपनाष लंकनाथ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बुधसाथ सोभजे सुवेसग्रोर मंत्रमित्रठौरठौर
॥३॥ वार्त्ता॥ अरसुग्रीवहै ग्रो सेनानीहै रावणकोभाई वि
भीषणकेसहितहै ग्रोरग्रास्थानग्रस्थानकेबजीरमि
त्रसुंदरसोभतहै॥ दोहरा॥ सूरसरूपविलोकउरउप
जीमदनहिलाज ग्रायगयेतेहिसमेकेसवरिषरिषराज
॥४॥ वार्त्ता॥ तवसूरजवंसीकेसरूपकोदेषकेकामके
होलाजउपजी ग्रैसोमेनहीहो तिससमेरिषरिषउोकेरा
जाग्रावतेभये॥ ॥ग्रसतिग्रत्रभ्रिगुग्रंगराकसप
गौतमव्यास विस्वामित्रग्रगतिजुतवालमीकदुरवा
स॥५॥ वार्त्ता॥ ग्रासितग्ररग्रत्रग्ररभ्रिगुतेग्रंगराकस
पगौतमव्यास देरविस्वामित्रग्रगस्तकेसहितग्ररवा
लमीकतेदुरवास॥ दोहरा॥ वामदेउसुनकन्वजुतभर
द्वाजमतितिग्र परवतादिदेसकलमुनग्राएसहितवसि
ष्ट॥६॥ वार्त्ता॥ कन्वकेसहितवामदेव ग्ररभारद्वाज
ग्रोरपरवततेग्रादिदेकरकेवसिष्टकेसहितसभमुनी
ग्रावतेभये॥ नगसरूपणिछंद॥ सवंधरामचंद्रजूउ
ठेविलोककेतवे सभासमेतपायपरेविसेषएजितेसवे वि
लोसोग्रनेकधौरदईग्रनपग्रासने ग्रनरघरघग्ररघ
ग्रादिदेविनैकेनिपचनेचने॥ ७॥ वार्त्ता॥ तवभारउोके
सहितग्रोरामजूदेषकरकेउठतेभये सभाकेसमेततिन
केचरणोमेपरेसभविसेषतासोपूजनकीये विवेकसोजो
जेसोथोताकोतेसेग्रनेकप्रकारकेसुंदरग्रासनदीये
परग्ररघकपाजिनकोमोलनहीहैग्रैसेग्ररघग्रादिकदे
करकेवहुतेवहुतविनैकीये॥ श्रीरामरूपमालछंद॥ रा
वेरसुखकेविलोकनहीभयदुखदूर सुप्रलापनिहीरहेउ
रमंहिग्रानंदपूर देहपावनहैरसोपदपदमकेपयपा
य पूजहीभयेवेसपूजनग्रासहीसुनिराय सेनिपाति

172A भरतेनके घन धाम धी प्रभु परम अपसयमषेस मे निवषवा
सरकरम ईसजयपद्धिष्ठ हो भई भरसंगल श्रिष्ठ पूजवेक
हूहोतहेसुतथापकाकुवसिष्ठ ॥ वार्ता ॥ नवरामजूनेक
ह्योतुमारेमुषकेदेषनेहीकरकेदुषदूरह्वैगयेहै अरसुंदर
तुमारेप्रलापनकावचनोकेकथनकरवेहीयेमैआनंद
पूरणह्वेरहेहै अरतुमारेचरणकमलोकेजलकोपायकर
केहमारेसरीरपवित्रह्वैरह्योहै अरतुमारेपूजनकरनेही
हमारेवंसपूजनह्वैगयोहै अरहेनाथ भनतुमारेसमीप
हूयेनेआजहमधामकातेजअरबुषअरधनतेपरमइ
हू४ नसोभरेहै अरआजसोंहीमारेदिनोकेकरमनिरवेष
नभयहै जद्यपतुमारेदेषनेहीकरके आजवहुतहमारे
मंगलकीनोवरषाभईहै परतो भीहमारेमनकूवडो
वाकएछवेकोहेनहै ॥ दोहरा ॥ गंगासंगमतेवडोसाधु
नकोसतसंग पावनकरऊपदेसअन अरदमुनकरनअम
ग ॥ ९ ॥ वार्ता ॥ साधुनकोसतसंगगंगासागरतेभीवडोहै ॥
कौवहिनापवित्रहीकरतहै यहिपवित्रकरतहै औरजोना
दूरहोयसकेअरसोअत्यंतअरदमुनउपदेसकरतहै ॥ अग
सतनारगजछंद ॥ कीयेअसेषसाविसेषकाजदेवरायके
सदात्रिलोकनाथनाथ परमविप्रगायके अनादसेष
राजआजसाजआपलीजहो त्रिदेवतानिदेवतानदिह
१० सुषदीजहो ॥ वार्ता ॥ नवआगस्तजूनेकह्योहेनाथतुम
नेविसेषताकेसहितइंद्रकेसंपूरणकारजकीयहै सदातु
मतीनतीनलोकके स्वामीहो रछ्याकरवेको अपरम
नेब्राह्मणगऊइनोकेस्वामीहोतुमअनादसेषहोसो
राजकोआजसजकरकेलेवो नरोकेदेवनाजोराजाअ
रदेवताइनकोवडोसुषदीजिये ॥ दोहरा ॥ मारेअरपारे
हितकौनहेतरघुनंद निरानंदसेदेषयतजद्यपपरमानंद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राम वं
सटी
१०३
173

179

द ॥११॥ वार्ता ॥ जद्यपि तुम परमानंदरूप हो परमानंद
रहित से देषीते हो क्योंकि तुमने शत्रु तो अनेक मारे अरु मित्र पा
ले या मै कहा कारण है जो परमानंद होवे तो मारन पालन
सो कहा है याते आनंदरहित हो तो राज ग्रहन करो ॥ श्रीराम
तो मरकंद ॥ सुनत्यान मानसहंस जगजोग जागप्रसंस ॥
जग मांझ कहै दुषजाल सुष है कहा इह काल ॥१२॥ वार्ता ॥
तब राम जू ने कह्यो हे ग्यानरूपी मानसरोवर के हंस जगत
न मैं जो गुरु जग्य दुसतन के जोग है और जगत मै सब दु
ष के मूल है सुष इस मै कहा है ॥ यहि राज है दुष मूल ॥
सब पाप के अनुकूल अब ता हि लै रिषिराय कहु कौन भ
क हि जाय ॥१३॥ वार्ता ॥ यहि राज तो दुष को मूल है अरु सब
पापों के अनुसार है अब तिस राज को लेकर कैहे रिषीस्व
र कहो कौन नरक को जावे ॥ चौपई ॥ सो दर मंत्रन के जु च
रित्र हम पै इन के सुन जे मित्र इन ही लगे राज को काज इन
होने सब होत अकाज ॥१४॥ वार्ता ॥ फेर भार अरु मंत्री इनो
को जो चरित्र है सो हमारे वास ते है मित्र सुनिये ॥ ॥इन
ही के तो इ तो संपूरण राज को कारज है सो इनो होने सब
राज को कारज होत है क्यो यही राज नास कर देते है ॥ ॥रा
ज भार न लै पै यनदयो छलबल छीन सवै इन लयो जब ली
नो सम राज संभार न लष्टमय जीदये निकार ॥१५॥ वार्ता ॥
क्यो राज को भार न लेने भाई अन को दीया था सो पके सो उ
नो कलबल सो सब षोसलीउो जब सब राज संभार लीआ
तब न लष्मण अरु हम पेती निकार दीये ॥ ॥ राजा सुरथ राज्य की
गाथ सौपी सम मंत्रिन के हाथ सो नृप क्रिया लीन विचार मं
त्रन राजा दियो निकार ॥१६॥ वार्ता ॥ फेर ऐसे राजा सुरथ के
राज की कथा है ता नै सब मंत्रउ के हाथ सौंपिधी आप
निरंतर सिकार मैं लीन रहिता था सो मंत्री उने राजा निकार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

173A तौडे॥ ॥राजसिरीग्रतिचंचलतान ताहूकौसुनलीजे
वात जोवनग्रर ग्रववेकीग्रग विनसोकौन राजश्री संग
॥१७॥वार्ता॥ राजसिरीकोजानग्रत्यंतचंचलहै ताकी
वारतावी सुनलीजिये जोवनग्ररग्रवचारपयो वेगहै
ग्रथ जोवनमेग्रवचारकारेग्रग सो कौनहै जोराजश्रीके
संग होकेनहीतासहुयोहै॥ ॥पर्मसजलहू धोवनतान॥
मलनहोतग्रनजोकेगात जदिपहेग्रनउजलद्रिष्ट न
हियग्रिजनरागनको ग्रिष्ट॥१८॥वार्ता॥ परमसुरूपीज
लकेधोवनेहूये भीताकेसरीरग्रत्यंतमलिनहोतहै ग्रर
जद्यपताकीग्रत्यंतऊजलनजरहै परतौ भीरागनकीचर
चारचहै॥ ॥महांपुरषकेजोकीपीत हरनसुकेफामार
नरीनविषयमरीचकानकीज्येन ईडूंहरनहरनीहोन य
॥१९॥वार्ता॥ जिराजाकोनारायनसोपीतहोवै सोवडे
पवनकेफोलेसमानताकोदूरकरदेतहै फेरविषैजोहैत्रि
गत्रिसनाकोजोतनतामेईद्रुयरूपीजोहैहरण तिनोकेहर
णवारेहोतहै तामैदौनकरैहै॥ ॥गुरकेवचनग्रमलग्र
नुकूल सुनतहोनखवननकोसूल मैनवलितननवस
नसुदेस मिदतनहीजलज्योंउपदेस॥२०॥वार्ता॥ नवग्र
रोकेजोनिरमलग्रनुसारिवचनहै सोसुनतेहूये कानो
कोसूलसाहोतहै सोसमेकायोहुयेजैसेननुवयासूक्षम
वस्त्रसुंदरहोतहै ग्ररताकोजलनहीभेदताहै तैसेराज
श्रीसोराजाकेउपदेसनहीभेदतहै॥ ॥मित्रनहूकेमने
नलेत प्रतिसवदकज्योंउतरदेत पहिलेसुनतिनजोग
सुनेन मानीकरनीज्योंनगनेन॥२१॥वार्ता॥ फेरवहि
मित्रनकेमतोभीनहीलेतहै तिनोकोप्रतसवदककथा
जैसेसवदकेप्रतिसवदहिहोयतैसेउतरदेतहै फेरपहिले
कह्योसुननतनहीहै जोकोऊ ग्रौरसेसुनावै भीतोसुनके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ताकोउनमनहथनीकीन्याई गिनतनहीहै ॥दोहरा॥प
रमधीरनाविनयतासत्यसील आचार राजसिरीनगनैक
छुवेदपुरानविचार ॥२२॥वार्ता॥परमधीरजताअरविन
यताते सत्यअरसील अरआचार अरवेदपुराननेकोविचा
रइनकोंरजश्री कछुनहीगिनतहै॥ ॥सागरमैवहुका
लजुरही सौसवकैनासमिलेलही सुरनरेगाचरननते
तान सीषीवंचलताकीवात॥२३॥वार्ता॥फेरसमुद्रमै
जोवहुतकालरहीहै सोसीसकोदेहोरथवोतहांचंद्र
माते सीषीहै ॥कालकूटतेमोहनरीति मणिगननतेम
नतिठुरीत मदराते मादिकतालई मदरकुदरभई
भ्रममई॥२४॥वार्ता॥जहिरतेमोहनकीरीतसीषी
है मणिउनकेसंवूहनेकठोरमनकरएसीषीहै मदरा
तेमादकतालीनीहै अरमेद्रावलनेताकेहीयेभ्र
मनमैनाभईहै पेकनेएकपेजानहै॥दोहरा॥सेपदई
वहुजिभतावहुलोचनताचार अपसरननतेसीषि
यो अपरपुरषसंचार॥२५॥वार्ता॥सेसनागजूनेतां
कोवुहुतीजि भताअवहुतलोचनतादईहै औरपुर
षपैजायवोयहिअपरोनेसीष्योहै॥चौपई॥द्विठगुनवां
धेहुयवहुभांत कोजानेकिहिभांतविलात गजचोट
कभटकेदनअरे षगाहलनापंजरहूपरे॥२६॥वार्ता॥
सोगुणसोवहुतप्रकारवांधेतेभीकोनजानतहैजोकि
सप्रकारचलीजातहै गुणरजश्रेगुण फेरयाकेहेतहा
थी चोठेकरिटांसुरअांसे भीकोकुअठेअरनरवारस
पीवेलकेपिंजरेमैपरेकामहारे॥अपनायनकीनेवहु
भांत कोजानेकिनहूहै मजजात परमकोसमेउनसुभ
देस नजनअमरज्योकमलनरेस॥२७॥वार्ता॥अरव
हुतप्रकारअपनायनभीकरैपरतोभीसोकोनजानतहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

174A

कहांको भाननजानहै जो कमलकेसमानै जा यरमकोष
जानाहै अरसुमदेसकरसोभतहै ताके भ्रमरकीन्या
ई यहित्यागदेनहैं॥ ॥यद्यपहोयसुथमनसंतु किरे
पिसाचीज्योडनमन्न गुनवंतनिआलिंगतनहीं अप
वित्रनज्यो छाडनतही॥२५॥वार्ता॥जद्यपरजसुथवु
पवारोहोयपरतोभी यहि पिसाचनीलगेकीन्याई उन
मत्तकरदेतहै अरगुणवारिओंको यहि मिलतीनहीं है अ
पवित्रकीन्याईतोको छाडदेतहै॥ ॥सूरनताषतस
हिज्योदेष केटकज्यो वहुसायनलेष सुथासोहराघ
पआप सवहीनेअनकहुकप्रताप॥२६॥वार्ता॥सूरमे
योकोदेषकरकेपरथकीन्याईत्यागतहै केडियोकीन्या
ई वहुतेसायनकोजानतहै जद्यपअविनकी भेनहै
परतोभीसमनोतेअत्यंतकैरेजोकोप्रतापहै॥ ॥
जद्यपपुरषोत्तमकीनार नदयसकलषलजनमनहा
र हितकारनकीअनहेषनी अहितलोगनकीअन्वेष
नी॥२७॥वार्ता॥जदिपयहिपुरषोत्तमकीइस्त्रीहै तोभो
दुष्टजनोकेमनहरणवारीहै हितकारिउंकी यहि अन्वे
तद्वेषकरनवारीहै जोनहीं हितकारी तिनोके हूंढनवा
री॥ ॥त्रिगमनकोसुवयककोगीत विषयवेलको
वारदरीत मदपिसचिकाकीसोअली मोहनींदकी
सिजामली॥२८॥वार्ता॥त्रिगसेजेमनहै तिनोकोव
पकके गीतसमानहै अर विषेरूपीवेलकेवधावनको
मेघनकीरीतसमहै फेरमदरूपीजो पिसाचकाहै
ताकीसषीसमानहे मोहरूपीनींदकेऊपजावनको
सेहसेजासमहै॥ ॥आसीविषदोषनकी दरी गुन
सतपुरषनकारनछुरी कलहंसनकीमेघावली कप
टान्त्यकारीकीथली॥२९॥वार्ता॥सरपोकेसमजो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रोषहै तिनोके थारनकोकंदरासमहै गुनरूपीजोसंघ
पुरषहैताके निकारवेकोछरीसमनहै फेरकलहंसस
जेहैंक विवुधजन तिनकेदूरकरवेकोमचनकीपंगतसी
हैं कपटरूपीजोहै एकान्तिपकरणकारोताकीघ
लीहै ॥दोहरा॥ कामकामकरकी धिकोमलकदलसु
वेष धीरपरमद्विजराजको कियोराहकीरेष॥३३॥वार्ता॥
कुटलजोहेकामरूपीकरक्याहाथीताकोकोमलके लि
अंकीतरांहैं धीरजवानोकाजोहै परमरूपीचंद्रमाताको
राहकीरेषासीहै ॥चोपई॥ मुषरोगनज्यौमानेरहे
वातवरायएकदोयकहे वेधुवरगुपहिचानहैंन
हीं मानोसंत्यपानकागही॥३४॥वार्ता॥ फेरमुषरो
गक्यागूंगेकीतरांयहिमौनरहितहै जोकोऊवहुतवु
लावेतोजोरावरीसेएकदेवारताकहे अरसंवधीउके
सवूहकोपहिचानतानहीमानोसंतपानतनेपकर्याहै
॥महांमंत्रहूहोततनवाय डसीकालहीकरजनकोप
पानविलासउदतआतुरी परदारागमनेचातुरी॥३५॥
वार्ता॥ फेरराजलछमीकेसीहै मानोकालसरपनेको
पकरकेडसीहै तोतेमहांमंत्रकरकेभीताकोग्यान
नहीहोता कामकेविलासकोसीघ्रतासेउदतहोत
हैं परायइस्त्रीपैजानविषेताकीचतुराईहै ॥विगया
यहैसूरतावढीवेदीमुषनचायसेपढी जोकोयोहूचि
तवेयहिहम्रा वातकहेतोवडीयमया॥३६॥वार्ता॥
सिकारषेलवोयहीसूरतावडीहै सोवंदीजनोकेमुषो
नेचायसेपढीहै जोकिसीतरांकाहूकोयहिदेषैतोव
हिवडीदयाजानतहै अरजोवातकहेतोवहिजानेव
डीहीरचहीदयाभईहै॥ ॥हरसनदानेई अतदान
हसवोलेतुवडोसनमान जाकाहूसो अमृतसोकहे स

175A

पनेके सीपदवील है॥ वार्ता॥ जो यहि दरसन्है वे तो
वहि जाने अत्यंत दानही यो है जो हसके वोले तो वडाही
आहर जाने जिस किसीको यहि अपना कहै सो सपने की
जे सीपदवीको पावत है॥ दोहरा॥ जो ई अतहितकी कहे सो
ई परम अमित्र सुषवकताई मानीये संतन मंत्री मित्र॥२७॥
वार्ता॥ सो अत्यंत हितकी कहै सो याको वडो वेरी है निरंतर
याके सुषके कहिनवारो ही मानते है मंत्री क्या मित्र क्या॥
॥चौपई॥ कहो कहा लगनाके राज तुम सम जानत हो
रिषराज जैसो सिवमूरत मानिये तैसो यहि राज सिरी
जानीये॥२८॥ वार्ता॥ ताके राजमे के हातोई कहो तु
म अपहे रिषीस्वरो के राजा सम जानत है जैसे सिवजू
की मूरत है तैसे यहि राजलछमी है॥ ॥साष्ये यान है से
वे याहि सो चे देय परमपद ताहि जितने न्रिप याके व
स भये पेल स्वरग पषनरक हि गये॥२९॥ वार्ता॥ को
याको सावधान है के सेवत है ताको तो सोच है परमपद
क्या वैकुंठ देत है और जितने राजा याके अधीन हो यग
ये है सो स्वरग के रसने को धका देकर के नरक को गये है
इति श्री ईदुजीत विरचतायां श्री मन सकल लोकलोच
न चकोर चिंतामन श्री रामचंद्र चंद्र कायां राज्य श्री दोष
वरननं नाम त्रियो विंसतम प्रकास:॥२३॥ दोहरा॥ या
चौवीस प्रकास मे राम विरकत वषान विस्वमित्र वसिष्ट
सो वो यकहि समभ्यान॥१॥ वार्ता॥ इस चौवीस मे प्रका
स मे विस्वामित्र ने वसिष्ट से विरकतता कहैगे सो पेरग्या
गकहेगे॥ श्री राम॥ अम्रितगत छंद॥ सुमति महारिष
सुन जे जग महि सुषन हि गुन जे मरन हि जीवन न जहि
मरमर जनम न भजहि॥२॥ वार्ता॥ हे से वुधवारे म
हारिष तुम सुनो जगत विषे सुषन हीं विचारता है को

182

रामचं
मंडी
१२६
176

मरनेकोचाहिजीवननहीत्यागताहै मरमरकरकेफेर
जन्ममोकोग्रहनकरताहै ॥ ॥उदरनमध्यरहित
है वहुदुषसेनिकसतहै अंतहीपीरअननतही न
नउपचारसहितही ॥२॥वार्ता॥ प्रथमतेदुषकहित
थ॰ है प्रेमतोहिदयेमेपरताहै तहांतेवहुतेहीदुषसो
निकसताहै फेरयांकोपीराजोप्रेमहोतहै असीरी
रयाकोऔरहीउपचारक्याअलाजोकेसहितहो
तहै कौवोलेतोवतावै ॥ दोयकछंद॥ पोचभली
नकछूजियजानै लेसववसनननआननआनै मे
स्वतेकछूहोतवडेई षेलतहै जिअयानचहेई ॥४॥
वार्ता॥फेरकछूवडोहुयो भलीवुरीकछुनहीजानता
है सववस्तुनकोलेकेमुषमेपायलेतहै जवसेसवक्या
वालकअवस्थातेकछुकवडोहोतहै तवअयानपने
मेचव्येभुयेकोषेलनहीमेहै तहोतहोतहै ॥ ॥ है
पितुमातनभयमारे श्रीगुरतेअतहोतदुषारे भू
षनप्यासननींदनजोवे षेलनकोवहु भांतनरोवे
॥५॥वार्ता॥फेरयाकोपितामातातेमारेभयहोतहै
अरपढावनवारेश्रीगुरूतेअत्यंतभयहोतहै भूष
प्यासनींदकोनहीदेषताहै षेलनेहीकोवहुतप्रका
चित॰ ररोवतहै ॥जारतैचितादुचिताई दीहतुचाअहि
कोपचवाई कामसमुद्रफकोरनफूल्यो जोवनजो
रमहाप्रभुभूल्यो ॥६॥वार्ता॥फेरचिनकोदुचिता
ईक्याचितारूपीजोहैचितासोजारतहै अरकोपरू
पीसरपदोरचतुचाकोचावलेतहै जवकामरूपीसमु
जा॰ द्रकेफककोरनमेपडिफूलतहै तवजोवनकेजोर
सोमहाप्रभुयाकोभूलजातहै ॥ रूमसुनीलनिचोल
मैसोहै जापकछूरनविलोकतमोहै पावकपापसि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

176A

षावइवारी जारतहैनरकोपरनारी॥७॥वार्ता॥पे
रयाकोपरईइस्त्रीरूपीत्र्प्रागनजारतहै जांपैसूंदरनीलो
वस्त्रसोईधुमहै त्र्प्ररतिसीकेसमानछोहीनहीजातीहै
देषतेहीमोहलेतहै फेरपापरूपीजोवडीलाटहैतिसवारी
है॥ ॥वंकहिपनमभासरसीसी करदमकामककछूपर
सीसी कामनकामनडोरगासीसी मीनमनुषनकीवनसी
सी॥८॥वार्ता॥फेरताकीप्रभाहीपेमैकुटलतीरसीलागत
है त्र्प्रथवातालसीजिसतेपारनहीहूसकत फेरकामरूपी
जोहैकरदमकीचतासोमिलीसीहै मीनसेजोहैमनुषति
नकेषेचवेकोकुडीसमहै॥विजयछंद॥षैचनलोमदसोदि
सकोमहिमोहमहाइनपासकेडारे ऊचेतेगरवगीरावत
क्रोपमुजीहूकोलूहरलावनभारे येसेमेकोहीकीषाज
ज्योकेसवजारतकामकेवाणनिहारे मारनपाचकरेपच
टूकहिकासोकहैजगजीवविचारे॥९॥वार्ता॥फेरइस
जीवकोलोमनोदसोदिसाकोषेचतहै त्र्प्ररमध्यमेवडो
जोहैमोह सोइपरफांसीकोडारतहै त्र्प्ररगारऊचेतेचहा
यकेगिरावतहै त्र्प्ररक्रोधयाकेजीवकोभारेलहिरलगा
वतहै त्र्प्रेसेसमेविषेकोहकीषाजकेसमानकामकेवान
जारतेदेषे फेरपांचोईद्रीयांचटूककरतेहूपेमारतेहै सो
यातेजगतकेविचारेजीवकिससेदुषकहै॥ ॥भूतल
हैकुलधरमसवैतवहीजवहीवहिज्ञानग्रसेजू केसि
ववेदपुराननकौसुनेसमफेनहसेनत्रसेजू देवनतेन
रदेवनतेनरनेवरवानरज्यौविलसेजू मंत्रनजंत्रनसू
रगनेजगजोवनकामपिसाचसवेजू॥१०॥वार्ता॥
फेरजवजोवनमेकामरूपीपिसाचयाकोत्र्प्रायकेग्रस
तहै तवहीसवकुलकेधरमभूलजातहै वेदत्र्प्ररपुराना
कोतातवकोनसुनो कोतिनोकोसमफतेभीनहीहै डरते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१२२

183

177

मीनहीहै हसनेहै देवतिडोअरराजिडोनेमानुषोनेवेए
वानरसोअपीनभयोनाचतहै मंत्रजंत्रअरमूरक्याचूटी
इनकोनहीगिनताहै॥ ॥खानानकेतनजाननकेनिहफूल
केबानतवेपकजोतो कायलगायविवेकनकोवहुसायुक
कोकहिवापकजोतो औरकोलूटतकेसबजनमअनेकन
केतपसानकोयेतो तोममलोगसवैजुगजातोजुकामवडो
पटफारतहोतो॥११॥वार्ता॥ हेमुनिपेजोपहिएककामरू
पीवडोयाडवीनाहोतो तोगयानिडोकेजोसंजोयेहैतिनको
नव फूलकेवाणसोकेनवेपकहोतो फेरवायकोलगायकरकेव
हुतेविवेकिआकोकहोवहुतेसापजनोकावापककौनहोता॥
अरअनेकजनमोकोतपेकेजोहैयेतवथाषजानेताको
औरकौनलूटता तौतौमेरेलोगवैकुंठहीकोसमजगतजा
ता॥मकरंद॥कयेवरवानीडरडरतीठतुचारिकुचेसकुचे
मनवेली नवेनवग्रीवथकेगतकेसवग्रीवथकेगतकेसववा
लकतेसंगहीसंगषेली लीयेसबव्यापनआपनसंगजुरा
जवआवैजराकीसहेली भगेसवदेहदसाजीयसायरहेदु
रदूरदुरासअकेली॥१२॥वार्ता॥ फेरवुधअवस्थामेंस्त्रिह
वानीतोकंपजातहै अरद्रिसटरसोडिगजातहै, तुचारकुच
जातहैकहावलपरजातहै अरवुध्यरूपीवेलसकुचजात
है अरग्रीवानीचेकोनवजातहैजोवालकतातेसंगहीसंग
षेलीहैसेगतीव्याचालथकजातीहै फेरजवआयेअर
व्यापनकोसंगलीयेहूयेजराकीसहेलीजोहैजरा व्याजू
ढीसोआवतहै तवजीउकेसाथसभसरीरकीअवस्था
भागजातहै पकअकेलीदूरछिपकेदुरासारहिजात
है॥ ॥विलोकसरोरहुसेतसमेननरूहकोविदयो
गनगायो उठेकियोअबुकेओपकेअंकुरूमूलकियो
सुषसोपनसायो जरेकियोकेसवव्यापनकीकियोओ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

177

यकेआभरनपहरनपायो जरासरपंजरजीऊजरयो किजरज
रकेवरसोपहिरायो॥२३॥वार्ता॥सिरोरहुमाथेकेकेसमे
ताननु रुहसरीरकेरोमतिनकोस्वेतविलोकके केसवकवनेपा
नरहै याकोगुनकह्योहैकेसकोउतप्रेक्षाकरतहै मानोउमर
कीअवयकेअंकुरउठेहै कियेसूलहै जासेमूलसहितमु
षनष्टभयोहै कैसोसूलजोवनकेसुषकोवेधकरनिकरेहै॥
किधोरूपकोजोभूपहैजोवनसमैमेस्वछरूपहैतानेकुरू
पजोकोईभूपहैतासोरूपकेमानीसोयराजयलषाईहै रूपके
भूपहारयो यहअरथ कियेविधाताने जराबुढाईरूपजो
हैसरपंजरक्याकमानकेपीजरा तामेजीवकोजरयोहै रोको
है किपेजरारूपजोजरकेवररूपाकोवस्त्र जरतामरूपाको
सोताकोजोपहिरायोहै किवाजरानेज्वररूपजोकेवलहैसो
पहिरायोहै किवाजरानेज्वररूपजोकेवलहैसोपहिरायोहै
विषमतामेज्वरहोतहै जाकोबहुतदिनज्वररहेरहेसोस्वेतहोय
जातहै॥मदनमोहनछंद॥दिनहीदिनबाढतआपहीपेज
रजायसमूलसोओषधयेहै कियेयाहीकेसाथअनाथजो
केसबआवतजातसदादुषसेहै जगजांकीतूजोतजगेज
हजीवनयोपैतूजीवततूजानपैहै सुनबालदसागैयज्वानी
गईतैसेजायहैजराउडरासनजौहै॥२४॥वार्ता॥फेरदिनअ
निआपपीढावापतहै जिसतेसमूलजहजायऐसीविष
यरूपओषधपावतहै सोमानोइसीकेसाथअनाथकीनरां
आवनाजानाहूआमहादुषसहारतहै सोहेजडजीवैंगतमे ज४
जांकीजोतकरकेतूजागतहै इसीपेतूजीवताहूआजान
वेकोनहीपावताहै आपवाजानके तनबालअवस्थाअ
रजुआनीअवस्थातोगईतैसेजराभीजायगी परयाकी
डुरासानहीजायगी॥दोहरा॥जहांभामनीभोगतहविं
तुभामनकहिंभोग भामनछूटेजगछूटेजगछूटेसुषजो

ग ॥१५॥ वार्ता ॥ जहां इस्त्री है तहां ही भोग है अर विना इ
स्त्री के भोग कहा है इस्त्री के छूटे तें जगत छूटजात है जगत छू
टे ते सुष होत है ॥ ॥ जोई जोई ज्यों करे अहंकार साथ स
नान दान होमादि व्रित भसम होत है नाथ ॥१६॥ वार्ता ॥
जो जो जैसे अहंकार के साथ सनान दान होम ते आदि लै क
र के व्रित यहि करत हैं सो सभ भसम होत है ॥ तारक छंद ॥
जिय मांहि अहंपद जो दमिये जिनही जिन हो गुन औ र
मिये जिनही तिनही लष लोभन से पलतानन वंदर ज्यो
न त्रसे ॥१७॥ वार्ता ॥ तांते चित्त मै अहंकार को पद है ताको
दमन करिये जिन जिन गुणो मै श्रीकृष्णा कल्यान होय तिनो
मै रवण करिये तिन तिन गुणो को देष कर के लोभ दूर होत
है जैसे पलतान क्या मास कीत नू मैका नर ना च ने कुछ तो न हो
नहीं मैं मान होत है ते ही यहि भौंडर न ॥ ॥ आंषन हूं छिन आ
परे जीव करे वहु भांत पीरन पीरज वितु करत त्रसना रात
॥१८॥ वार्ता ॥ फेर यहि त्रिसना कारी रात के समान जीवन को
आंषन के होते हूए आंधरे समान वहुत प्रकार सो कर देत
है अर पीरजवाने को पीरज ते विना कर देत है ॥ ॥ क्रि
स्ना क्रिस्नाबट पद्दि दै कमल मै वास मत्त दंत गज गंद गु
गनर के औरक विलास ॥१९॥ वार्ता ॥ फेर त्रिसना सोई
कारी भ्रमरी है हिदय रूपी कमल विषे जाको निवास है अ
र जगत रूपी उनमत्त हाथी के जो हैं नरक अर सरग रूपी
है कपोलस्थल तामै जाको विलास है ॥ विजय छंद ॥ दान
दया सम सील सषा विभु के गुन भिक्षुक को विकुकावै के
सव साय सुषी सुरभी सभ माजगई भ्रम भूरभजावै सज
न संग वछेरू डरे विडरे विडरे व्रिष भाद प्रवेस न पावै ॥
नारव डे अघ वाचव पेउरमे दरवार मुकंद न आवै ॥२०॥
वार्ता ॥ दान अर दया अर सुभ सील ते गुण तेई भये सषा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

178A

मित्रसो दूरहो जाते है के वजेव पद्म मिछुक को हटा
वते है इनके गयते के रुउर मे पाप रूपी सेर आवत है म
व त्सव जो पथी सुंदर पीक्याबु यसो सम भाजगई तिनो
को सिंघ को वडो भ्रम भजावतो भयो सजनो के संग
रूपी ताके वछे रूपे सो डर गये अर विषम क्या परम आ
दजो विषम वेल सो तो तहां प्रवेस होतन नही पावत है दा
रवडे पाप रूपी सिंघ को वपे देष के उर मंदर मे कलमुंक
दर भी नही आवत है पेर तिपापपपो तिपि मे मनम
ठमनो जजहां जचवहेई घेलत ऊनन जे जगजीव जो ऊ
वठवा नलक्ष्यो पडडेई रूठनरंगन मै उरके इते परलो
भप्रवानवहेई वूडत ते जिहमांत रेक हिके सिवका हून
पाठ पहेई ॥२१॥ वार्ता॥ तव पहि मन पापके समुद्र मे
तिरत है कामके जहाज मे चढ्यो हुयो फेर वडवाअगन
के समान जो क्रोप है तामे जयपजरता भी है परतो भी
ज यहि जीवँगन के षेलन को नही त्यागत है फेर रूठके नरंगो
मे भी उरकता है इसतेउ परंत भी लोभ रूपी पवन वयत
है तव दुवता है जिस प्रकार सो तरे सो काहू ने पाठ पढ्याई
नही है॥ ॥कौनगने यहि लोकन रीन विलोक विलोक
जहाजन वोरे लाज विसाल तलालय ही न रथी रज सत्व
तमालन तोरे वंचकता अपमान अपान अलाभ भुजं
गभयानक क्लिस्सा पाठवहो कहु यातन के सव कौन
रजापतरंगन त्रिस्ना॥२२॥वार्ता॥फेर त्रिस्ना रूपी जो है न
दी तामे या लोक की नरीक्यानौ का को नो को एपगए
सके देषो विलोक क्या स्वरग के जहां जन के भुव पदेन है
अर जिनसो लजा रूपी वडी लता लपटी है ऐसे जो धीर
जते सत्य रूपी तमाल व्रिछ तिनको तोरत है फेर ठगयाजा
ना अर निरादर अर मूरषता ते अलाभ पई जामे भयानक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कारे सरपहै वेदमंत्र आदकनको पाठ रूपी वाट सो जहां
कहूं भी नहीहै तौसो त्रिसना रूपी नदी कैसे तरी जाय॥दो
हरा॥जो कोऊ हूं सुष भावना काहूं को जग होन काल आष
पलनेन ज्यौ तवही काटन जोन॥२३॥वार्ता॥जो किसीन सुस
षकी भावना जगतमे काहूको होनी भी है तौ तिसी समेका
लरूपी चुहा मासकी नांतके समान ना को काटदेन है॥ ॥
दानसयानन के कलपद्रुम टूटन ज्यौ रिन ईसन्हि माहीसू
षनसागर सेदुष के सवज्यौ दुष श्रीहरके अनुरागे पाप
विलान पहारन सेपल ज्यौं अपराद्यव की निसि जागे ज्यो
द्विजदेषने संतनमास नित्यौ गुन भाजत लोभ के आगे॥२४॥
वार्ता॥सयाने पुरषो के जो कलप व्रिछ के समान दान सो
जैसे सिव के ऊपर चन्यो हुये जो रिण क्या सिकनि रमाथ
लना के मांगे ने टूट जात है अरजैसे हिन सो श्री भगवान
जू के सनेह की ये ते दुष के समुद्र से सूक जाते है अरऐसे श्री
रामचंद्रजू की जो रात है रामनौमी की रतना आपीपल के
जागे ते पहारे के वडे पाप दूर होजाते है अरजैसे ब्राह्मण
के देषने संतान नास ह्वैजाती है तैसे ही लोभ के आगे या
जीव के गुण भाजजाते है॥दोहरा॥ब्रिह्म विस्नु सिव आ
दहै जितने द्विस सरीर नासद्दि को पावत सवै ज्यौ वडवान
लनीर॥२५॥वार्ता॥ब्रिह्मा विस्नु सिव इनते आद देकरके
जितने देषवे मै सरीर है सो लोभ ते समनास को पावत है॥
जैसे वडवा अगन मै जल॥मुंदरी छंद॥दोषमई जुदवा गल
गी अति देषन ही तिणतेज जरीमत भोगकी आसन गूढ
उजागर ज्यौ रजसागर मे मुनि नागर॥२६॥वार्ता॥दोषमई
जो अत्यन्त सा वा अगन लगी है देषते ही त्रिण के समान तां
के तेज मै वु धजरती है तो ते हे मुनी से छ गूढ अथवा प्रगट भो
गन की आसा हमको नही है जैसे समुद्र मै रज नही होत है॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

179A

विजयछंद॥माषीकहे अपनो घरु माकर मूसेकहे अपनो
घर ऐसे कौने चुरी कहे सूसघिरोरा विलारयो व्याल वि
ले मे हि वैसे कीटक सांप सु पछयो भिछक मृतक है अ
मजास हि जैसे हो हू कहो अब के सिव नै सेही ना घरसो अ
अपने घर कैसे॥२७॥वार्ता॥देषो महिजा को माषी तो अ
पनो घर कहित है अर माछर ते मूसे जो कौ ऐसे ई अपनो घ
र कहत हैं कोण मे चूसी हुई छीसक हित है मे रो इ है अर घिरो
ला क्या न्वोले अर वीली अर विल मे वैठे हूये सरप अपने ई
कहित है कीट सो अपछी अर मंगने अर मृतपहू जो कोजे सो अ
म हे तैसे अपने ई कहित है॥सुंदरी छंद॥जैसे हो हो अब तै
से रहो इ जग आपद से पद केन चले मग एकही देह तिआ
ग विना मुनि हौन कछू अभलाष कहो मुन जो कछु जीव
उधारन को मतु जानत हो तु कहो मुनि हे रतु यहि कहि मो
न गही जगनायक के सव दास मनो वच कायक॥२८॥वा
र्ता॥तो नै जैसे अव मै हो हे मुनी तै से ही जगत मे रहोंगो विप
दा अर संपदा के मारग नही चलोंगो एक सरीर त्यागन ते वि
ना हे मुनी मे औरकछू चाहना नही करहो जो कछु इस जीव
के उधारन की मत तुम जानते हो तो कहो हमको सुनवे की है
सुन प्रीत है यहि कहि करके श्री रामचंद्र जू ने मौन ग्रहिन करी
मन वचन करम करके॥चामर छंद॥साधु साधु के सभा अ
सेष हरष हरषयो दीह देवलोक ते प्रसून व्रिष्ट वरषयो देष
देषराज लोक मोहियो महाप्रभा आई उतहा तुरंत देव की स
भेसभा॥२९॥वार्ता॥तव सभ सभा स्वेष्ट स्वेष्ट करके आनंद
सो आनंदन होते भये अरदे तिउ के लोक ते वडी फूलन की व
रषा वरषती भई तक देष देष करके वडी सोभा को राजको लो
ग मोहत होते भये तव तहां देतिउ की सभ सभा से जो है ईंद्र
सो आवता भया॥विस्वामित्र॥व्यासपुत्र के समन सथवुथ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जानीये ईसकोंअसेषसत्वनत्वसेवषानीये इह्रहो वसि
ष्ट विष्ट नित्यसवनुसोधिये देवदेवरामदेवकोप्रबोध
वोधिये॥३॥वार्ता॥तव विस्वामित्रजूनेकह्यो हे वसिष्ट
मुनव्यासकेपुत्रकेसमानसुपबुपवारेतुमश्रीरामजूकोजा
नो सिवजीकोजोसंपूरणतत्वहैताकेसारसेहै वसिष्टका
जगतमैजोनित्यवसुनहैकहाअमरवस्तुहैताकोसेपो
देवजिउकेदेवजोश्रीरामदेवजूहै तिनकोग्यानप्रवो
धनकरो॥इतिश्रीईद्रजितविरचतायांश्रीमतसकललो
कलोचनचकोरचिंतामणश्रीरामचंद्रकायांवैराग
दसावरननंनामचतुरविंशतमोप्रकासः॥२४॥दोह
रा॥यापचीसयेप्रकासमैरामवसिष्टप्रवोध पूजाविध
श्रीसिवकहीकहोपरममतसोध॥१॥वार्ता॥इसपची
समेप्रकासविषेश्रीरामजूकोवसिष्टजूसमझावेगे अर
जोसिवजूनेकहीथी पूजाकीविधसोपरममतसोधकेक
हीहै॥वसिष्टपधटकाछंद॥तुमआदमध्यअवसानएक
तुमजीवजनमजानेअनेक तुमहोजुरचीरचनाविचार तिह
तोनभांतसमझोमुरारि॥२॥वार्ता॥तववसिष्टमुनजूनेक
ह्यो तुमआदअरमध्यअरअंतएकहीहोअरतुमअनेकजी
वनकेमोकोजाननहो तुमनेहीयहिरचनाविचारकरकेरची
हैतांकोकिसप्रकारसमझेहै॥ ॥सवजानवूझिपेमोहूराम॥
सुनियेसुकहोजगब्रिह्मनाम तिनकेअसेषप्रतिविंवलाज ते
जीवजानजगमैक्रिपाल॥३॥वार्ता॥हेरामजूतमजानकर
केतुममोकोपूछतहो सोसुनियेजगतमैजोब्रिह्मकोनाम
है तिसब्रिह्मकेहीजोसंपूरणपदप्रतिविंवनकेसंवूहहैतेज
गतमैजीवजानोहेक्रिपाल॥ ॥लोभमदमोहनसिकाम
जवहीभये भूलगयेरूपनिजवंपुतिनसेगये वूझीअन
वानयहिकोनविधिऊपरे वेदविधिसोपवुधजनतनवहु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

180A
याकरे ॥४॥ वार्ता ॥ लोभ अरु मद मोह ने काम इनो के वस ज
व जीव भये तव आपने रूप को भूल गये तिनका सो वे पगपेतव
रामजू ने कह्यो हम यह बात पूछत है याको किस प्रकार के उधा
र होवे तव मुनी ने कह्यो वेद की विधि को सोभ करके बुधवान व
हुत प्रकार सो जतन करै ॥ श्रीराम ॥ दोहरा ॥ जितलेजय है वा
सना तित तित हू है लीन जतन कहो कैसे करे जीव कापुरो दीन
॥५॥ वार्ता ॥ जिधर इसको वासना लै जाती तिधर तिधर यहि
लीन हू जात है सो कहो लंगाल दीन यहि कैसे जतन करे ॥ वसि
ष्ट ॥ दोयकछेद ॥ जीवन की जम भान दुराशा होत सभा सुभरू
प प्रकाशा जतनन सो सुभ पंथ लगावे तो अपनो तव ही पद पा
वे ॥६॥ वार्ता ॥ जीवो की है मान की खोटी आशा है सुभ ते अरु
भरूपो कर के प्रगट होत है जतनो सो सुभ पंथ के विषै जो लगा
वै तो अपने पद को पावैं त है ॥ ॥ होमन ने विधि पुत्र ऊपायो ॥
जो ऊपारन मंत्र सिषायो है पर पूरन जो न तिहारी जाय कहीन
सुन निहारी ॥७॥ वार्ता ॥ एक समै व्रिह्मा ने मै मन ते पुत्र ऊपजा
या तव जीव के उधारन को मंत्र मो को सिषायो सो सम भतु मारी ही
पर पूरन जो न है सो ना कही जाती है ना सुनी जाती है ना देषी जा
ती है ॥ दोहरा ॥ तां की इछा ते भये नारायन अनमिय तिन ने च
तुरानन भये तां ते जगत प्रसिय ॥८॥ वार्ता ॥ फेर तिस जो न की इछा
ते सिय मतवारे श्री नारायन जू होते भये तिनो ते व्रिह्मा भये व्रिह्मा
ते जगत भयो ॥९॥ वार्ता ॥ चौपई ॥ जीव सबे अव लोक दुषारे ॥
आपने चित्त प्रयोग विचारे मोह सुनाये तु मै तु सुनाऊ जीव ऊ
धारन गीत सुगाऊ ॥१०॥ वार्ता ॥ फेर सम भ जीवन को दुषी देष
करके आपने चित्त विषे प्रयोग विचारे सो मो को सुनाये मै वहु
तुम को सुनावत हो जीव ऊधारन की कथा कहत हो ॥ दोहरा ॥
सुकत पुरी दरवार के चार चतुर प्रतिहार सापन के सुभ संग
अरु सम संतोष विचार ॥११॥ वार्ता ॥ सो पह सुकत रूपी पुरी के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दरवाजेके चारे चतुरचोपदार हैं एकतो सुभसंतनको संगअरु
समता अरसंतोषने विचार ॥ ॥जगतचकावूज्योंरच्योक
जलकलत अगाप तामैहौयेजुनीसरे अरकेलकतसोसाय
॥१२॥वार्ता॥प्रथमसंतसंगकोलछन यहै अपारकजलसो
संजुगतचकावूहकेकिलेकेसमानतुमनेजगतरच्योहैं॥
तामैप्रवेसहोकेकलंकतेरहितजोनिकससोसायहैं॥दो
धकछंद॥देषतहूंइककालछिये हूं वातकहेसुनेभोगके
कैहूं सोवतजागतनैकुनछोभे सोमतासमहीमैसोभे॥
॥१३॥वार्ता॥एकजोदेषनेहैंसभकालकेछायेहूएहै हम
भीहेंअरकिसनंरं भीभोगकीवारताकहिनेसुननेहैं नहीं
कहिनेसुनते अरसोवतेहूएनेजागतेहूपेरतीकुभीनहीं छोभा
यमानहोते सोतिससमनेमैसमतासोभतहैं॥ ॥जीअअ
भलाषनकाहूआवै पायेगयसुषदुषनपावै लैपरमानंदसो
मनलावै सोसवमध्यसंतोषकहावै॥१४॥वार्ता॥जोकिसीको
चित्तमैचाहनानाआवै अरवसतकेपायेतेअथवभाएतेजो
सुषतेदुषकोनापावै परमआनंदसोमनकोलगावै सोसभमै
संतोषहै॥आयेकहा अवहोकहिकोहो ज्योंअपनोपद
पाऊसुटोहो वध्यअवध्यहीयेमहिजाने ताकहुंलोगवि
चारवषाने चारमैएकहूंजोअपनावै तौतुमयेप्रभुआव
नपावै॥१५॥वार्ता॥मैकहांतेआयेहो अवमैकौनहो जैसे
अपनेब्रिसपदकोपावो सोविचारो यहिमामासोवंधुहैं यहि
अवंधहै ऐसेहृदेमैजानेताकोविचारकहिनेहैं इनचारोमै
जोएकअपनीकरेतोतुमारेपासआवनोपावै॥राम॥ज्येर
तिननीहनिरंजनमानी तामहिकौरिषइछइछवषानी
॥१६॥वार्ता॥तवश्रीरामजूनेकह्यो जोइछातेरहितअर
मायातेरहितनेनामनेरहितजोतहै तामैहेरिषीसरइछा
कैसेकहीहै॥वसिष्ट॥दोहरा॥सकलसकतऊनमानीयेअ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

181A

दमुतजोतप्रकास जोनेजगकेहोतहैउतपतइस्थितनास॥१७॥
वार्ता॥तववसिष्टमुनजूनेकह्यो अदमुतजोजोतहैताकीसकत
क्या मायाकेअनुमानकाप्रकासहैतामैईछाहैतिसतेजगत
कीउतपततेथ्राइस्थिरताअरनासहोतहै॥श्रीराम॥चौपई॥जो
ववधेसवआपनीमाया कीनोकुकरममनोवचकाया जीव
नचित्तप्रवोपनआने जीवनमुकतकेभेदवषाने॥१८॥वार्ता॥
जीवसवआपनीमायामेंवंधेहै जिनोनेमनवचकरमकरकेकु
करमकीनेहैं जोचित्तमेंतोग्यानकोजीवल्यावतेनहीहैंअरजी
वनमुकतकेभेदकोकहतेहै सोक्याहै॥वसिष्ट॥वाहरहूंअन
सुपद्दियोहूं जाहिनलागतकरमकियोहूं वाहरमूढसुअंनगैर
आनो ताकाहुजीवनमुकतवषानो॥१९॥वार्ता॥जोवाहरवी
अरहिदेमैभीअत्यंतसुध्यहैताकोकरमकीयेहूयेनहीलाग
तहै अरजोवाहरतेमूरषतेअनरतेसयानेहैताकोजीवनमुक
तकहितेहै॥दोहरा॥आपुनसोअवलोकीयोसवहैजुगतअ
जुगत अहंभाव मिटजायतोकौनवुधकोमुकत॥२०॥वार्ता॥
अपनेआपकोजानेदेषलीयेहैतोसमअजुक्तहीजुक्तहो
तहोतहै जोअहंभाव मिटजावैतवकौनवंधहैअरकौणमुक
तहैसमअपनोहीरूपभासतहै॥श्रीराम॥चौपई॥पसगरेसु
नहोतहूजानो थावरिजीवनमुकतवषानो॥वसिष्ट॥जाम
सवैगुनदोषनछांडे जीवनमुकतनकेपदमांडे॥२१॥वार्ता॥
जामेंपहसमगुणहोमैताकोजोमुकतजानोतुमनेकह्योहैतो
थावरोकोभीजीवनमुकतिहोतिनेमैसमताआदहै तववसि
ष्टजूनेकह्योजोसंपूरणगुनदोषनकोग्यानकरकेछोडेसोजी
वनमुकतनकीपदवीकोमंडतहै॥दोहरा॥साधुकहावतकर
तहैजगमैसवव्योहार तिनकोमिचनछेसकैकहिप्रभुकौनवि
चार॥२२॥वार्ता॥फेररामजूनेकह्योजोकहावतेतोसाधहै अर
जगतमैसमव्योहारकरतहैतिनेकोछिन्नुनहीछोडसकती

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हैसोकहाविचारहै॥वशिष्ठ॥षपदकाछंद॥जगतजिन
कोमननुवचनलीन तिनकोतननश्रिस्तुनकरनछीन॥
तिनछिनहूंछिनदुषछीनहोत जोकरतश्रमितश्रानंद
उदोत॥२३॥वार्ता॥जगतमेजिनकोमनतुमारेचरणमेली
नहै तिनकेसरीरकोश्रिस्तुनहीछीनकरसकती तिनको
छिनछिनमेदुषछीनहोतहै तेश्रपारश्रानंदकोकरतेहू
॥ ॥जोचाहतहिजीवनश्रतिश्रनंत तोसाधेप्राणायाम
जंत सुभरेचकपूरकेनामजान श्ररकुंभकादिसुषदासमा
न॥२४॥वार्ता॥जोश्रपारश्रत्यंतजीवनचाहे तोजीवप्राण
यामकोसाधे सोसुभरेचकश्ररूपकापूरवककुंभकहै
सुषकेदेनवारे॥ ॥योक्रमसोसाधनसाधवीर तेतुमहि
मिलतएहीसरीर॥२५॥वार्ता॥श्रेसेक्रमसोसाधनकोकरके
धीरजवानसाधसाधे तोइसीसरीरसोतुमसोमिलतेहै॥श्री
राम॥जगतुमनेकोसरवगयश्रान श्रवकहोदेवपूजाविधान
॥२६॥वार्ता॥फेरश्रीरामजूनेकह्योजगतमेतुमेसरवगयश्रोर
कोनहै तातेश्रवदेवपूजाकोविधानकहो॥वशिष्ट॥तारक
छंद॥हमएकसमेनिकसेतपसाको तवजायभजेहिमवंत
रसाको वहुभातकस्योतपुक्योकहिश्रावे तिसकेठप्रसंन
भएजगगावे॥२७॥वार्ता॥हेश्रीरामजूहमएकसमेतपके
करवेकोनिकसेथे तवजायकरहिमालयकीप्रिथवीकोग्र
हणकरतेभए तहांवहुतप्रकारतपकीयोसोकैसेकहिनमे
श्रावे तवसिवजूप्रसंनहोतेभए जिनकोजगतगावतहै॥
॥ ॥ऊजरेऊदारसुरवासुकि विराजमानहारकेसमानऊ
पमानश्रानटीहीए सोभतजटानवीचगंगाजूकेजलवूंद
कुंदकेसीकलीकेसोरायमनमोहीए नषकीसीरेषचंद
चंदनसीचारूरजश्रंजनसिंगारहूं गरलरूचहोहिए सवस
वसिपसिवासोहैसिवजूकेसाथजावकुमुपाककुलिलाटला

182A

ग्यो सो ही पे ॥२८॥ वार्त्ता ॥ उजल अरु ऊदार क्या वडो जो है हि
दे ता मे वासुकी विराजमान है सो हार के समान है ताकी और
उपमान ही विचारीती है अरु जटान के बीच सो जो गंगा जू कौ ल ऽज
की बूंद सो भत है सो कुंद की कली सी मन को मोहत है अर
नष की रेषा सी चंद्रमा है अरु चंदन के लेप सी सुंदर रज है अरु
अंजन के सिंगार को भी जहर को ऊवरो कन है अरु रस मसुषो
की सि पसी पारवती संग सोहत है ॥ सिव ॥ छंद ॥ वर मांग कु
छू रिषराज सियाने वहु भांत चले तप पंथ पयाने ॥ वसिष्ट ॥
पुज वो परमेस्वर मो मन ईछा सिष वो प्रभु देव प्रपूजन सिछा ॥
॥२९॥ वार्त्ता ॥ हे रिषराज तुम याने हो कछु वर मांगो वहुत प्र
कार तप के रसते मै तुम चले हो तव वसिष्ट जू ने कह्यो हे परमे
स्वर मेरे मन की इछा पूरण करो देव जू के पूजन सीष मो को
सिषावो ॥ शिव दोहरा ॥ राम उमापत देवन हि देहन रूप न
भेऊ देव कहित रिष कौन सो सिषये या की सेव ॥३०॥ वार्त्ता ॥
लछमीपति जो श्री राम जू है सो देव नही है कोउ ति नो के ना देहा
है ना रूप है ना भेद है सो हे रिष तुम कौन को देव करते हो जा की
सेवा सिषावो ॥ वसिष्ट ॥ तोमर छंद ॥ हम कहा जाने अगय तुम
सरवदा सरवग्य अव देऊ देवन ताय पूजा कहो समुझाय ॥३१॥
वार्त्ता ॥ तव रिष ने कह्यो हम मूरष कहा जानत है तुम सदा सम
को जानवे वारे हो अव देवता को भी वताय देवो अरु तिन की
पूजा भी समझाय कर के कहो ॥ तामरस ॥ सति चित्त प्रकास अ
मेव सभ देव मानन देव तिह पूजीये रिष मंड सभ प्राक्रित तन
को छंड ॥३२॥ वार्त्ता ॥ जो सत चित्त प्रकास मान है जो को सभ देव
ता देव मानते है ता को हे रिष पूजन करीये सभ प्राक्रित जो है
माया सहित देवता तिन को छंडकर के ॥ सिव ॥ पूजा यहे ऊर स्थान ॥
निरव्याज पर जे ध्यान यो पूज घट का पेक अनुकी पे जगत अने
क जीय जान याही जे भा सभ परम करम प्रयोग सभ रूप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जप्रकास समभये हमसे दास यहि वचन कहि परमानु प्रभु
भये अंतरध्यान ॥३३॥ वार्ता ॥ पूजा यही चित्त मे जानो जो ति
नको कलरहत ध्यान धारीये ऐसे जो एक घडी भी पूजे सो ति
सने मानो अनेक जग्य कर लीये इसी चित्त मे योग जानो अरइ
सी को सभ धरम नेकरमा का प्रयोग जानो ऐसे सभ रूप से
प्रगट पूजन करके हमसे सभ दास भये है यहि वचन कहि करके
हे श्रीरामजी अंतरध्यान होते भये ॥ दोहरा ॥ पूजा अरचमुन अ
गन करसुन प्रभु पूरननाथ सभे सुभासुभ वासना जारी मेनि
जसाथ ॥३४॥ वार्ता ॥ सो यहि जो पूरजरूपी अरचमुन अग
न है ताकर के हे पूरणस्वामी तुम सुनो अपने हाथ सो मे सभसु
भते असुभ वासना जार दई ॥ कूलना छंद ॥ इह भांत पूजा पू
ज पावन परम भगतन कहाई भव भगत रसु भागिरथी महि
इय भ्रमन वहाई सुन महां करता महां त्यागी महां भोगी हो
य सुयम रव सेरम पतिको पूजह ई सभ कोय ॥३५॥ वार्ता ॥
इस प्रकार पूजा पूजन करके हे परम भगतन कहावते है अरसेसा
रमे जो भगतन के रस की गंगा है तामे भ्रमभो को वहाय देते है अ
र सोई सुन महां करता अर महां त्यागी ते महां भोगी होते है जो
सभ को ऊ ऐसे पूजते है ताकी श्री भगवान मे सुयभाव रहित है
॥ दोहा ॥ रागद्वेष विन के सहूं परमा परमन होय हरष सोग ऊ
पजे नही करता महां सु लोय ॥३६॥ वार्ता ॥ राग अर द्वेष ते विना
किसी तरी भी धरम ते अधरम नही होते है तिन ते विना हरष
सोक नही उपजता जां के एसमन ही सो महां करता होते है ॥ ॥
जो कछु आंषनि देषि जे कनी वरनी जाय महां तियाज ानजे
कूठ जाने ताय ॥३७॥ वार्ता ॥ जो कछू आंषन ते देषी ता है अर
वाणी ने वरणी आ जात है तिन को जो कूठ जानो सो महां त्यागी
है ॥ दोहरा ॥ भोजन भोजन विरत रत नी रस विरस समान भोग
होय अभलाष विन महां भोगता मान ॥३८॥ वार्ता ॥ षाने के जो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

183A

गअरुअजोग विरागअधीन तौरसअरविसेषरसपहजोको
सुभसमानहोवै अरचहिनातेविना भेगहोयसोमहाभोगनाहै
॥तोमरछंद॥जीयग्यानवहिव्योहार अरजोगभोगविचार इ
हहोयजुराम मिलेहैसुतेरेधाम॥३९॥वार्ता॥जाके चित्तमैग्यो
ग्यानहोयवाहरतेव्योहारकरे अरजोगतेभोगकाविचाररापै
असेजोहोवेसोहेरामजूतुमारेधामकोपावतहै॥चंद्रकला
छंद॥तिसवासरवसतुविचारकरे सुषसोंचहीयोकरुनापतु
है अवनिग्रहसेग्रहधरमकथानिपरग्रहसाधुनकेगनुहै॥
कहिकेसवभीतरजोनजगेअतवाहरभोगनसोतनुहै मनु
हाथसदाजिनकेतिनकोवनहीघरहैघरहीवनहै॥४०॥वार्ता॥
जोपुरषरातदिनवसतुजोहै ब्रिस्ततीकोविचारकरे सुषतेसाच
कहेहीयेमै दयारूपीपतुकोराषैपापनकोदूरकरे धरमकीक
थानकोग्रहनकरे अरचारोडोरतेसाधनकेसमूहकोग्रहनकरे
अर चित्तमैजेनजागेअरवाहरतेभोगनसोसरीररहे जिनके
मनसदाहाथमैहै तिनेकोवनहीघरहै अरघरहीवनसोहै
कहेरहे॥दोहरा॥लयेजुकहिजेसाधु अनुलीनेकहिजेवाम
समकोसाधुनपकजगरामतुमारोनाम॥४१॥वार्ता॥जोना
मकोलेवेसोतोसाधुजोनालेवैसोवामवपाइस्त्रीजितहैतो
तेसमकोसाधनहे श्रीरामजूएकतुमारोनामहै॥श्रीराम॥दो
हरा॥मोहूजुहूतोजनायवेमवहीजान्योआज अवजुकहो
सुकीयेकनेकहेतुमारेराज॥४२॥वार्ता॥मोकोजोजिता
वनाथासोसभजनायकेआजजान्योअवतुमारेकहेतेजो
कारजतुमकहोसोहमकोकीहीवननहै॥इतिश्रीइंद्रजि
तविरचतायांश्रीमनसकललोकलोचनचकोरचिंतामणि
श्रीरामचंद्रचंद्रकायांजगद्वारवरनंनंनामपंचविंसतमो
प्रकासः॥२५॥दोहरा॥छवीसयेप्रकासमेरामनामके
तत्व श्रीवसिष्ठसमसोकहैवियपैसुन्योजुसत्व॥१॥वार्ता॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

छब्बीसमे प्रकासमे श्रीरामनामकेजोसारहेजोव्रिह्मानेसुन्याथा
सोवसिष्ठजूसभसोकहेगे॥ अबवषकोनसब श्रीरामकोकह्योज
थाविधअभ मिहिरावनसबकोदईलईनअंगदजान॥२॥वार्ता॥
अरश्रीरामजूनेराजतिलककोउतसवहोयगो यथाविधिसो॥
अरश्रीरामजूनेसभकोपहिरावनिसभकोदई अंगदनेनही
लईयहिकथाहोयगी॥मोटनकछंद॥वोलेरिषराजभरथ
तवे कीजेअभिषेकप्रयोगसवे शत्रुघनकह्योचुपकेनरहे
श्रीरामकेनामकोतत्वकहो स्तयावद्गुधउरआनमई व्रि
ह्मासुतसोविनतीविनई॥३॥वार्ता॥ तवविसिष्ठजूभरतजू
सोवोले अवराजतिलककेप्रयोगसभकरो फेरशत्रुघनजू
नेकह्योपताचिरतुमचुपहोकरकेनारहो श्रीरामजूकेनाम
कोसारकहो हमारेहीयमेवहुतप्रकारसो स्तियाभईहै ऐसे
वसिष्ठजूसोवेनतीकरी॥ विसिष्ठ॥ स्वागताछंद॥ चितमा
कजवआनअरूफी वानतानकद्रुमेयहिवूफी जोगजागक
करजाहिनआवै सनातनदानविधमरमनपावै हेअसकनसभ
भांतविचारो कोनभांतप्रभुताहिउधारो॥४॥वार्ता॥जवमन
नेकह्योएकसमेऐसेईयहिवारताजवहमारेचित्तमेआनके
उरफी तवअपनेपितावि्ह्माकोमेपूछी जाकोजोगअरुज
ग्यकरनानाआवै फेरसनातनअरदानइनकीविधकेमरमको
भीनापावै सभप्रकारकरकेजोअसकतहैहे प्रभुताकोकिस
प्रकारऊधारकरतहे॥ व्रिह्मा॥ भुजंगप्रियातछंद॥जहीवि
दवुनानंदरूपैधरेगो सुत्रैलोककेतापतीनोहरेगो कहेगोस
वेनामश्रीरामतोको सदासियहैसुपऊचारजाको॥५॥वार्ता॥
जवसतचितआनंदरूपको धारणकरेगे सोतीनलोककेतीनो
तापनकोदूरकरेगे ताकेश्रीरामनामताकोजोकहेगो सदा
जाकोसुपऊचारसियहै॥ ॥कहेनामआयोसुआपेनसा
वे समरेनामएकोसुवैकुंठपावै सुपारेदुहूंलोककोवरणहोऊ॥

184A

द्धि ये छद्दम छांडके हे वरण कोऊ॥६॥वार्ता॥ अरु जो आये
नाम को भी कहे पीडान को दूर करत हैं जो पूरण नाम सुमरे
सो वैकुंठ पावत है दोनो आपर्लोऊ लोकन को सुधारते हैं॥
हीयमै ते छल को छोडके चारो वरणमै से कोऊ कहे॥ ॥सु
नावे सुने साधु संगी कहावे कहावे गहे पाप पूजे न सावे सम
रावे समरे वासना जारडारे तजे छद्दम को देवलोक सुधारे॥७॥
वार्ता॥ जे सुनावे अरु सुने सो ह्यापन के संगी कहावत है जो कहा
से४ वे अरु आप कहैं आपन के संचूहन को न सावत है जो सुमर
वे अरु सुमरे सो वासन जारडारत है छल को तजके देवलोक
को सुधारत है॥ तारक छंद॥ जब सब वेद पुरानन सो है जपन
पती रथ हूं मिट जै है द्विज सुर भी नन को ऊ विचारे तव ज्या केव
ल नाम उधारे॥८॥वार्ता॥ जब सम वेद अरु पुरान दूर हो जावेगे
अरु जपन पजे तीरथ भी सम मिट जावेगे अरु ब्राह्मण अरु ग
ऊ इनको कोऊ भी नही विचारेगे तव जगत मै केवल नाम ही
उधारेगे॥९॥~~वार्ता~~॥ दोहरा॥ मरनकाल कासी विषै महादेव
सिव धाम जीवन को उपदेस है रामचंद्र को नाम॥९॥वार्ता॥
फेर मरण के समे कासी विषे कल्याण के अर्थ जो सिवजू है सो जी
वन को श्रीरामजू को नाम उपदेस करेगे॥ ॥मरनकाल को
ऊ कहे पापी होय पुनीत सुध ही हरपुर जायगो गावे सव जगगी
त॥१०॥वार्ता॥ मरणसमे कोऊ पापी कहे सो पवित्र होयगो अ
रु सुध ही सो वैकुंठ मै जावेगो॥ ॥राम नाम के तत्व को जानत वे
द प्रभाऊ गंगाधर के परन प वालमीक मुनराऊ॥११॥वा
र्ता॥ राम नाम के सार को प्रभाव वेद जानत है कै सिवजू के से स
नागजू के वालमीकजू जानत है॥ दोधक छंद॥ सात निसि य
न के जल रूरे तीरथ जालन के पयपूरे कंचन के घट वानरली
ने आपन पहर आनंद मीने॥१२॥वार्ता॥ जब ही सातो सम
द्रन के जो सुंदर जल है औ ।तीर। थन के संचूहन के जे जल है ति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नोकोस्वरणकेखंडेजोमेलीयेहूयेवानरआगयेआ
नंदमैभरेहूये॥दोहरा॥सकलरतनसबखिनकासुभ
औषधीअसेष सातद्वीपकेपुसपफलपल्लवरससविसे
ष॥१३॥वार्ता॥संपूरणरतनअरअस्थानोकीखिनका
अरसमसुभऔषधिऔअरसातोद्वीपनकेफूलनेफ
लनेपत्रनेविसेषताकेसहितरसपहल्याये॥ ॥अंगनही
रनकोमनमोहे कुंकुमचंदनचरचित सोहे हंसरसीसम
सोमप्रकासी लोचनमीनसरोजविकासी॥१४॥वार्ता॥
तासमेहीरनकेजोअंगनहैसोमनकोमोहतहै केसरअरचं
दनसोचरचितहै तालकेसमाननतीकीसोभाप्रकासमईहै
~~केसरअरचंदनसोचरचितहै~~॥नेत्रजोहैलोगनकेसोईता
मैमीनहैअरकमलषिलेहै॥दोहरा॥गजमोतनकेसंगसो
भिजेमरकतमणकेथार ऊदककेबूंदसोजनुलसतपुरइनप
त्रअपार॥१५॥वार्ता॥तहांनीलमणिउकेथालगजमोति
ओकेसंगसोभितहै सोमानोजलकीबूंदनकेसहितनीलक
मलनीकेअपारपत्रसोभितहै॥विसेषकछंद॥भांतनभांत
नभांजनराजनकोनगने ठौरह्निठौरनिहारहैजनुफूलसरोज
चने भूपनकेप्रतिविंवविलोकतरूपसने षेलनहैजलदे
वमनोजलमध्यवने॥१६॥वार्ता॥तहांतरोनरोकीजोभा
जनोकीपंगतेहैतिनोकोनगनसके सोमानोअस्थानअ
स्थानविषेबहुतेकमलफूलरहेहैं तिनोमैजोराजोकेप्र
तिविंवपरेहैदेषनेहूपरूपमेमिलेहूये सोमानोजलकेम
ध्यवनेहूयेजलदेवताषेलनेहै॥पद्धटकाछंद॥मृगमद
मिलकुंकुमसनीर॥घनसारसहितअंबरउसीर घसके
तरसोबहुविधपीर छिनछिरकेचारयावरसरीर॥१७॥
वार्ता॥कसतूरीसोमिल्योहुयोजोहेकेसरसहितजलके
कपूरअरअंबरकासुसकावरनेषसइनकोचंदनसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

185A वसकरके वहुतप्रकार सो पीरजवान चरअरुअस्थावरो केसरीरको पृथिवीमेछिरकतेहै॥ ॥वहुवरणफूलफल दलउदार तिह्मभररषेभाजनअपार तह्विपुसपवृछसो हैअनेक मणिवृछ स्वरणकेवृछएक॥१८॥वार्ता॥तहां वहुतेरंगनके जोवडेफूलअरफलअरपत्रहै तिनसोअ नेकभाजनभररायेहै अरतहांअनेकफूलनकेवृछसे भनहै तिनोमेएकमणिउकेवृछहै एकस्वरणकेवृ छहै॥ ॥तिह्मउपररच्योएकवितान दिवदेषतदेव नकोदितान दुहुंओरहोतमंगलविधान निरपतगीन वाजेनिसान॥१९॥तिनकेऊपरएकचंदोआरचिआ है ताकोस्वरगमैदेवनकीसभादेषतहै दोऊतरफमंग लकेविधानहोतेहै निरत्यतेगीतहोतेहै अरनगारेवा जतहै॥ ॥थलसेभतअतआसनअनूप तह्मिरचि नहैममयविस्वरूप तिह्मवैठेआपुनआयराम सीयस हितमनोरतिस्वरकाम॥२०॥वार्ता॥तिसअस्थानमेअ त्यतसुंदरआसनसोभतहै सोस्वरणमेरचितहैविस्वक रमाने अथवाताकेस्वरणमेविस्वकोरूपरचितदेषिल तहै तहांआपआयकेरामजूवैठेतमपेसीताजूकेसहि त सोमानोरतनेकामहेसुंदर॥ ॥जनुघनदामनआने ददेत नरुकल्पकलपवलीसमेत कियोमुविद्यासहि तग्यान केतपसंजुतसमसिद्धजान॥२१॥वार्ता॥मानोमे घतेवीजुरीआनंदकोदेतहै केकलपलताकेसहितक लप्रवृछहै कियोसविद्याकेसहितग्यानहै कियोसुभ सिधकेसहितनपहै॥२२॥कियोविक्रमजुतकीरतप्रवी न कियोश्रीनारायनसोभलीन कियोसोभतहैस्वहास नाथ कियोसुंदरतासिंगारसाथ॥२२॥वार्ता॥कियो कीरतकेसहितपराक्रमहै कियोसोभासोमिलेहूएश्रीना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रायनहै किधोताधजोहै अगनतंके सहितस्वाहा है
कैसिंगारके सहितसुंदरताहै ॥सुंदरीछंद॥ केसवसोभि
तअत्र विराजत जातनदेषसुधाधरलाजत सोहतसोहत
केमनकेगन जगजीवनके जनुलागरहे मन॥२३॥वार्ता॥
श्रीरामजू के सोभायमानछत्र विराजतहै जाकीतरफ
देषके चंद्रमा भीलज्यामानहोतहै जामेमोतिडोकेअ
रमणिडोके संवूह सोभतहै मानोजगतकेजीवोकेता
मेमनलागरहेहै ॥दोहरा॥ सीतलतासुभतासमै सुंदर
ताकेसाथ अपनीरवकीअसुलेसेवतजनुनिसनाथ॥
॥२४॥वार्ता॥ सीतलताअरसभताअरसमसुंदरताउ
नोकेसहितआपनीअरसूरजकीकिरणोकोलेकरके
मानोयहिचंद्रमासेवतहै ॥सुंदरीछंद॥ताहिलीयेर
वपुत्रसदारन चौरविभीषनअंगदढारत चंदनचंद्रक
चंद्रसदारज कीरनलेजगकीसववारत फतनिलछमन
वंधषवावत लछमणदरपणलैदरसावति भरथहलै
नरदेवसदारत देवअदेवनपायनपारत॥२५॥वार्ता॥
तोकोलीयहयेसदासीनसोसुग्रीरहितहै चौरकोविभी
षननेअंगदढुरावतहै सोमानो चंदनकपूरचंद्रमार
नकोसदासीनसोअरजगतकीकीरतकोलैकरकेवा
रतहै पानतकोलछमनके भाईसत्रुघनजूषवावतहै
लछमनजूदरपनकोदिषावनेहै भरथजूनरदेवए
जोअरदेवताअसुरराषसइनकेचरणोमेलगावते
है ॥दोहरा॥ ॥जामवंतहनुमंतनलनीलमरा
तवसाथ छरीछवीलीसोभिजे दिगपालनकेसाथ
॥२६॥वार्ता॥ जामवंतअरहनूमानअरनलनेनील
एहमरातवेकेसंगसोभितहै अरदिगपालोकेहाथ
मे छवीली छरीसोभितहै ॥दोहरा॥ रूपवहि कमसर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

186A मसमवचनरचनबहुभेव सभामध्यपहिचानजे मूनरदे
वनदेव॥२७॥वार्त्ता॥ रूपअरप्राक्रमअरसुगंधपहस
ममैससमानहै एकवचनोकी रचनबहुप्रकारकरीहै सभा
केमध्यपहिचानेनहीजाते प्रिथवीकेदेवता ब्राह्मणअर
राजेतेदेवतापकसेहै रहेहै॥दोहरा॥ आईजवअभिषे
ककीघटकाकेसवदास वजेएकहीवारमुवहुदमदी
हआस॥२८॥वार्त्ता॥ तवराजतिलककीघडीआईतक
वारहीप्रिथवीतेअकासमैनगारेवाजतेभये॥कूलना
छंद॥ तवलोकनाथविलोकके रघुनाथकेनिजुहाथ स
मविसेषसोअभिषेकके पुनउचरीममगाथ रिषराजई
सवसिष्टसोमिलगायनेदनआय पुनवालमीकजुव्या
सआदजितेहुतेरिषराय॥२९॥वार्त्ता॥तवब्रिह्माजूनेदेष
करकेश्रीरघुनाथजूकोअपनेहाथसेसहितविसेषताके
राजतिलककरकेफेरसुमकथाविचारी जवरिषीस्वरोके
राजाजोहै रिषवसिष्टजू तिनसेमिलकरके विस्वामित्रजू
आवतेभये फेरवालमीकजू ब्यासतेआदजितनेरिषरा
जथेसोसभआये॥ ॥रघुनाथसेमुखअंभकेनिजभग
नदीसुषपाय सुरलोककोसुरराजकोतवकीडतिरभैरा
य विपसोरिषीसनसेवनैकरपूजअररपरपाय वहुधादई
तपव्रियकीसवसिध्यसुयसुभाय॥३०॥वार्त्ता॥तवरघुनाथ
जूनेसिवजूनेब्रिह्माकोअपनीभगतदईसुषपायकरकेअ
रइंद्रकोस्वरगलोककातिरभयराजभकीयो फेरब्रिह्मासेअ
ररिषीस्वरोसोवेनतीकरकेअरपूजनकरकेआचरणोमेप
रकरके वहुप्रकारकेवडेतपकीजोसमसिपषीसुयसुभा
वसोसोदई॥दोहरा॥ दीनेमुकटविभीषनेअपनोअपनेहा
थ कंठमालसुग्रीवकोदीनीश्रीरघुनाथ॥३१॥वार्त्ता॥ श्रि
रअपनोमुकटअपनेहाथसोश्रीरामजूनेविभीषनकोदी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यो अरकंठमाला सुग्रीवको दई॥चचरीकछंद॥माला श्री
रघुनाथके उरसु असीतहिको दई आपयो हनुवंतको तिन
द्रिष्टकै कारनासई डोर देवन देव वानर जाचिकादिक पाय
डो एक अंगद छोडके जो जासुके उर आय आयडो॥२२॥
वार्त्ता॥जो माला श्रीरामजू के हृदे की उजल सीताको दई
थी अथवा सीताजू ने श्रीरामजू को दई थी सो तिन सीताजू
ने कै रामजू ने सो हनूमानजू को अरपण करी दयामई
द्रिष्ट करके और जो देवता अर राजा ने वानर जावके ते आ
दलै करके आए थे तिनो ने जो याके मन मे आय आ सो लीआ
एक अंगद को छोड करके॥अंगद॥देव हे नर देव वानर
नैरतादिक धीर है भरत लछमन आद दै रघुवंस के सब
वीर है आजु मो सो जुध मांडो एक एक अनेक कै वायको न
वहो तिलोदकु देऊ दीह विवेक है॥२३॥वार्ता॥तब अंगद
ने कह्यो रहो देवता है अर राजा है अर वानर है अर राकसो
ने आदलै कर थीरजवान है फेर भरत ने लछमनजू को आ
द दै करके सभ रघुवंस के सूरमा है आज मोरे साथ एक एक
हो करके अथवा अनेक हो करके जुध को करो तब मै पिता
को वडे विवेक करके तिलाजुली देउगो॥दोहरा॥कोऊ मेरे
वंस को तुम सो कर है जुध तब ते रामनु ह्वैयगो अंगद दूस
सो सुध॥२४॥वार्ता॥कोऊ क मेरे वंस को तुमारे सो जुध करे
गो तब हे अंगद तेरो हम सो सुध मन ह्वैयगो॥दोहरा॥वि
प्रसो पाय पषार के रामजगत के नाह दीने गाऊं सनौढी अ
न मथुरा मंडल माहि॥२५॥वार्ता॥जगत के स्वामी जो श्रीराम
जू है तिनो ने ब्रिह्म सो चरण धोय करके फेर मथुरा मंडल विषे
सनौढी अनकैं गाम दीये॥इति श्री इंद्रजितविरचितायां श्री
मनसकल लोक लोचन चकोर चिंतामणि श्रीरामचंद्र चंद्रकायां श्री
रामज्याभिषेक वरननाम षट्विंसतिप्रकासः॥२६॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

187A दोहरा॥मनौंसेप्रकासमैब्रिह्मसिवादिकदेव मनवचन
कसेयश्रीरामकोबहुविधिगुननसमेव॥१॥वार्त्ता॥सताईस
मैप्रकासविषेब्रिह्माअरसिवआदिकजोहेदेवतातिनेबहु
तप्रकारगुणनसोश्रीरामजूकेउसततकीयेहै॥ब्रिह्मा
फूलनाछंद॥तुमहोअनंतअनादसरवगसरवदासरव
गय अवयेकहूँकिअनेकहो महिमानजानेअगय अमि
वेकरेजगलोकचौदहलोभमोहसमुद्र रचनारचीतुम
नाहिजाननदेवदेवनरुद्र॥२॥वार्त्ता॥तुमारोअंतनहीहै
आदनहीहै सरवगामीहो सदासरवकेजाननवारेहो अ
वक्यारकछकतुमएकहेकेअनेकहो इसमहिकोहमअग्या
ननहीजाननहो औरजगततौचौदहिलोकनमैलोभअ
रमोहकेसमुद्रमैभ्रमनकरतहै सोकहाजानेजोतुमनेर
चनारचीहेताकोनादेवताजानेहैनाब्रिह्मातेसिवजान
तहै॥दंडकछंद॥सिव॥अमलचरनतुमवैरनमलति
करेसाधुकहेसाधुपरदारप्रीयअतहो एकथलथिर
एकसबबसतजगजननी१केसेराषहिपदयेबहुयदग
स४ तहो भषनंकलजुनसीसपरेभूमभार भषरफिरनसु
अभूनमवयतिहो राषगायचाभननिराजसिंघरमचं
द्र थिरचिरराजकरोअद्भुतमतहो॥३॥वार्त्ता॥तुमारे
निरमलचरित्रहैसोवैरीनकोमलीनकरतेहै यहिविरोध
कौजोअमलहोयसोअमलकरेअवरोपअरथकिवै
रिसनकेसोभाहीनहोतहे साधुजनतुमकोसाधुकहतेहै
पराईनारकोअत्यंतप्यारेहो दूजोअरथसाधुक्याभली
प्रकारसोसत्रुनकेसाधकेहो तिनकीजोइस्त्रीप्रिथवीसो
अत्यंतप्यारीहै फेरएकअस्थानपैथितहै परजगतकेजी
वनमैवसतहै यहिअद्भुतफेरहै हैपहनवारेपरबहुतेपद
नमैजिनकीगतहै कहाबहुतेअस्थानोमेरहितहै संपूरण

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भूषणोंके सहित है अरु सीस पै प्रिथवी के भार को धारते है जो
भूषन पहिरे सो भार नहीं धारत अरु थकि सरव प्रिथवीपत हैं
फेर प्रिथवी पै फिरते हैं पर भ्रमन जो कहूं ने नहीं देषे ऐसे रा
जा है फेर राऊ ते ब्राह्मणों की रछ्या करते है अरु राजि डो मे
सिद्ध से है ऐसे जो अदभुत मतवारे रामचंद्र जू सो चिरकाल
लाई राज करो ॥ ३ ॥ वैरि गोपवामनके ग्रथन मै सतियन लो
चनन हू के सुवरण हरकाज है गुर सेज गामी एक बालक वि
लोकयत मां नगनि हूं के मतिवारे के सो साज है अरु नगारीन प्र
ति होत है अगम्यागौन दुरगनि हीके के सो दास दुरगत सी आ
ज है राजा दसरथ सुत सुनो राजा रामचंद्र थिर चिर राज करो
जो को ऐसो राज है ॥ ४ ॥ वार्ता ॥ फेर आय के राज मै राऊ ने
ब्राह्मणों के वैरि ग्रथन ही मै सुनीले है पीछे भए अरु सोने को
चोर नहीं है सुवरण को सुंदर अंबर नके हरने को काज एक
ने जो ही के है फेर गुरो की सेज पर गमन करणवारो एक बालक
ही देषीता है दौर के वहत है अरु मतवारे जैसे साज हाथी म
के ही है अगम्या को जो नहीं जमन के जो गता मे गमन वो सत्रु
ओं की नगरी ही होत है व्यभचार मे नहीं दुरगत कहू कीन ही
किल ओं ही मे दुरगत सी देषीती है कहां दुष कर जाई अत है
हे राजा दसरथ के पुत्र श्रीरामजू जो को ऐसो राज है सो तुम
थिर हे के चिरकाल राज करो ॥ चितर ॥ वैठ एक छत्र तर छा
ह सभ छितपर सूरजकुल कलस राहु हित मन हो त्यक तरा
म लोचन कहित सब के सो दास विद्यमान लोचन द्वै देषयत
मन हो अक व कहावत धनुषधरी देषियत परम त्रिपाल
पे क्रिपालन करियत हो चिर थिर राज करो राजा रामचंद्र स
व लोगन लोगन के हे नर देव देव गनत हो ॥ ५ ॥ वार्ता ॥ फेर तुम
वैठे तो एक छत्र के नरे हो अरु छाया संपूरण प्रिथवी मे है ॥
फेर सूरज के कुलके कुलस हो अरु राहु के सनेह मे मति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

188A है यहि विरोधपरिहरण काहू सेह मारग बनावति हैं फेर विद्यमा
न ह्वैने त्रहे देषीतिहै अरु वामनेत्र करहीन होय का कुटलजिन दु
ष्टनके नेत्रहै तिनोंतेरहित हो फेर धनुषको धारे हुये हो अर
अकर हो का काहू के तुम पैकर का दंड नहीं है फेर पर
मकिपाल हो अर हाथमें तरवार है अरथ किक्रियानजो
सूरमा तिनोके पति हो ऐसे तुम चिरकाल थिर राज करो स
रबलोकके हित हैं राजा अरदेवतानकी तुम गति हो ॥ आग
ना॥ दंडक फेर॥ चित्रही मे आज वरणसंकर विकीयत व्याह ही
मे नारिनके गार ही सोकाज है मे घोतो गगनपर गाजत नगर
घेर अपजस डर जस ही को लोभ आज है दुषही को दंडनै है
मे डुनसकलजग चिरजीयो रामचंद्र जो को ऐसो राज है ॥२॥
वार्ता॥ वरणसंकर एक चित्रही मे देषीना है रंग मिले हूये
हैं जान मे नही फेर व्याहि मे रुत्रीये के ही एक गारी सो कार
ज है कंपन के जो गावारी एक धुजा ही हैं अर वियोगी चक
वा ही है अर मित्र दोषी द्विजराज चंद्रमा ही है क्योंमित्र सूर
जतो के अस्त भये बढत है अरु एक कुमदनि आकास माज
है फेर नगर को घेर कर के आकास पर मेघही गरजते हैं अरउ
र अपजस ही को हैं ते लोभ जस ही को है जहां दंड दुषही को
है जिनको ऐसो राज है सो श्री रामजू चिरजीवो ॥ वायु॥ राजा
रामचंद्र तुमराजो हूं सुजस जो को भूतल के आसपास साग
र को वास सो ॥ सागरमे बडभाग वेषसेष नाग को सो सेषजू
मे सुषदान विस्नु के निवास सो विस्नुजू मे भूर भार भव को
प्रभा ऊजे सो भवजू के भाल मे विभूतन के विलास सो भूतनमे
फ चंद्रमा सु चंद्रमे सु याको अंस अंसन मे के सोदास चंद्रका
प्रकास सो ॥ देवनग॥ दंडक फेर॥ राजा रामचंद्र तुम राजक
रो समकाल दीरघ दुसहि दुपदीनन के दारिदे केसोदा
स मंत्र दोष मित्र दोष विप्र दोष देव दोष राज दोष देसतें निरी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पै कलहि कितव्रन महि मंडलके वल वड पाषंड अषंड ष
डषंड करि डारीये वंचक कठोर ठेल कीजे वाट आठ आठ
कूट पाठ षंड पाठ कारिका ठमारीये ॥७॥ वार्ता॥ हे श्री राजा
रामचंद्र जू तुम विराजो जिनको जस प्रिथ्वी के आस पास
रहिंनवारे जो समुद्र ता सम है फेर समुद्र मै वडे मथानवारे
सेसनागजू के वेष सम है सेषजू मै भी सुषदायक विस्नु के
निवास सो है विस्नुजू विषै भी सिवजू के वडे भाव के प्रभा
व जैसो है सिवजू के मस्तक विषै भी विमलता के विलास सो है
फेर विमलता मै चंद्रमा सम है चंद्रमा मै अंम्रितन की किरण
सम है किरणो मै चंद्रमा के प्रकास सम है हे राजा रामजू तु
म सुभ काल राज करो दीनो को वडे दुषन को दूर करीये॥
फेर मंत्री द्वैष अर मित्र द्रोह अर विस्वास घात देव द्रोह इनो
को देस ते निकार दीजिये फेर कलह अर कितव्रन अर प्रि
थवी मंडल के जो वलवारे पाषंडी है अषंड क्या सपूरण
तिनको षंड षंड कर डारीये फेर वंचक जो है ठगीये अर क
ठोर तिनको ठकेल करके आठो आठ रस ते कार दीजीये
फेर कूटपाठ अर षंड पाठ के करणवारे जो है तिनो को का
ठमार राषीये॥ रिषयकचु:॥ भोगभार भागभार के सि
व विभ्रमभार भूसभार भूरअभिषेकन के जल से दा
नभार मानभार सकल सिध्यान भार परनभार परमभा
र अध्यन अमल से जयभार जस भार राजभार राजन है
राम सिर सिष असेष मंत्र वल से देस देस जंत्र जंत्र देव देष
जिह दुष काटत हे दुष्टन के सीस दुस्त्यो फल से॥८॥वा
र्ता॥ भोगन को भार अर भाग को भार संपदा को भार प्रि
थवी को भार वह जो भार है अभिषेक का मंत्रन सो मार
जन करण के जल से फेर दान भार अर मान भार अर से
पूरण सिध्यांन को भार अर पनु भार अर परम को भार वह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

189A ब्राह्मणों के निरमल अछत देने से फेर जै भार अरजस भार अ
रराज भार पहूं सपूरण में जो के वल कै आसी वीदो से श्री रामजू
के सीस पै राजत है सो देस देस विषे जहां जहां देष देष कर के नि
न भारन के दुष सो दुष जनों के सी स अन्नार के फल से फट जाते
है यह अदभुत ॥ विजय छंद ॥ जा पन ही करतूं तक ही सब
श्री मवता कवता करहारो या ही ते के सव दास अस्रीस पढे
अपनो कर ने कु निहारो कौ रन देवन की दुलही जस दूलहु श्री
रघुवीर जिहारो सात रिसातल सातहू लोकन सातहूं सागर
पार विहारो ॥ ९ ॥ वार्ता ॥ करतूं तक ही जा नी श्री रामजू की श्री
सूरजजू भी कविता करके हार गये है इसी ने के सो दास जू आ
र वाद देत है के हिनकी सामरथ नहहे तुम मो को अपना कर
के देषो देवतियों कि कीरत तो दुलहनी है हे श्री रामजू तुमारो
जस दूलो है सो सातो दि सातलो मे अर ऊपर सातो लोकन मे
अर सातो समुद्रों के पार मे विहार करो ॥ किंनर जऊ ग परवाद
को सुत ॥ रामलीला ॥ अज अमर अने तज पजय चरत श्री
रघुनाथ करत सुर नर सिय अचरज स्रवन सुन सुनगाथ का
यवव मनन ने ममानन सिला सम पर नार सिला ने पुन परम सु
दर कर तने कु निहार ॥ १० ॥ वार्ता ॥ तुम अचरज हो क्या विष
ताने रहित हो अर सत्पने रहित हो अरजो कोअ तन नहीं है तु
तुमारी जै हो यजै हो यहे श्री रामजू तुमारे चरित्र की कथा
को देवता मानुष सिप सुनसुन कर अचरज को करते है कै
से सरीर मन वचन के नेम कर के पराई इस्त्री को सिला के समा
न मानते है सो तन नही करने फेर सिला ने रती कदेष कर के पर
म सुदरी इस्त्री कर देते है ॥ चौरठा रन मानऊपर पान पीठा हो
य विसहे दुज्यो को देड हर को हूं क कीनो दोय सापहे यम
सापर ाषत द्विजन ही को मान सकल मुनगान मुकट मणि को
मर दये अममान ॥ ११ ॥ वार्ता ॥ फेर मानता पर चौर को ठार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं सटी १५० 190 नेहू पेह्नायन मे पीड़ा होती थी अरु शिवजू के धनुष को भी सा
के दंड समान तोड़ू टूक कर दीना फेर सा पुहोय अथवा अ
सा य होय सभ ब्राह्मणों के मान राखने हैं अरु संपूरण मुनी
श्वरो के संदेह को जो मुकट मणि था परसराम तां को अभिमा
न दूर कीयो सुघर सुंदर सरसर चिरंजीव करन रत है लाल॥
एक पतनी व्रत निवाहन मदन को मद घाल सुषद सुहृ
द सप्तन सोदर रक्षन तन्हि पय काल पलक मे सोई राज छाडयो
मात पितन की लाज मंथरा सो मोद मानत बिन पठयो ठेल
सरपनषकी नाक काटी करन आई केल चिचुचापत अं
गुली मुक अेंचलेन उराय बंधु सहित कवंध के उरम ध्य पै
ठ्याय सरदा सरवग्य सरवग सरवधार सएक अग्यज्यौ मि
ना विलोकी विग्य भ्रमत अनेक बान चूकत लक्ष्य को कोग
ने के तक वार ताल सातो भेदियो सर एक एक हू वार वार॥
वार्ता॥ फेर हे चतुर जव सुंदर सहित रस के रत क्या प्रीत मे
र चन होत वर त्ति को लाल क्या लडावने हो फेर एक इस्त्री के
व्रत को निवाहते हो रत पराई काम की इस्त्री है ताको लडाय
के पत्ति काम को मद दूर करने है फेर जिस राज के वास्ते सुष
दायक जो मित्र अरु सुपुत्र अरु भाई इन को राजा मार देते
हैं सो राज मात पिता की लाज सो पलक मे छोड दीउ फे
र जिसने यकेल कर के बन को भेजे तिस मंथरा चेरी सो सने
ह मानते भये फेर जो केल करण को आई थी तिस सूपन
षा की नाक काट दई फेर जब तो ताचुसे आंगुरी को दवा
वतासा न वडरकर के षे चलते से फेर भाई के सहित क
वंध राकस के उर विषै दोर के प्रवेस होते है फेर जो सदा सर
व के जानन वारे है अरु सरवगामी है सर्व अस्थान मे एक
रस है सो तिनो ने अरण्य क्या जो ना जाने ता के समान सीता जू
हूडी तिस चरित्र मे अनेक विग्य जो पंडत सो भ्रमते है को

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

190A

नगनने लछन साडे नेकितनी कुवार वानकों चूकते भये फेर एक
वानसें एक ही वार सातें ताल भेद दीये॥ ॥सापराध असा
पराधत सुग्रीव कीनो मित्र अपराध विन अपन साथ वालहि
हन्यो जान अमित्र चलजव चौगानकौ लै चलन दल चतु
रंग देव सेवहि चलो जीतन रिष्य वानर संग॥१३॥वार्ता॥
फेर सहित अपराध के जो अत्यंत षोटो सुग्रीव सो जिनोंनें
मित्र कीउ है अरु अपराध ते विना अत्यंत साथ जो वाली सो
शत्रु गपन के मार्यो है जब चौगान क्या षुदो को लेके चलन
से तब चार प्रकार के दल संग चलते से अरु देवनि ऊके शत्रु
रावण को जब जीतने चले तब रीछ अरु वानरों को संग लीयो
भल हूं जातन निहारत गरसगीरन समान तिगर देष भये
गीरगन जद मे ज्यों पान जतन जतन नित रत सरजू ऊडुडो
लत डीठ गय सागर पार दै प्रग प्रग हय प्राहूतनीठ॥१४॥वार्ता॥
फेर भूलके भी जा की नाय देषने से सो परवतों के समान भा
री होतासा अरु तिगर क्या भांति जो परवतों के समूह थे सो समु
द्र मैं देषते पत्रन के समान होते भये फेर सरजू मैं जतन जतन से
तरते हू थे डोरी पै तो दूषडोल जानी थी अरु प्रगट ही पाषान
पै संसों मसों चरण दै के समुद्र ते पार गये॥ ॥वाजगाज रथ व
हनो चह चलत विमान सुभाय लेक कोनि रसेक नाग गये
अपनो पाय जग्य को फल गहित जातन न जग्य पुरष कहा
य वेरज ऊठ दये सिवरी भक पै सुष पाय॥१५॥वार्ता॥हाथी
घोडे रथ इनका हनों पै चढके चलते हूये सुभाय सें एक जाते
है अरु लोकों को निसक अपने चरणों सो गये फेर जग्य पुरष कहा
य करके जको फल जतनो सो ग्रहन करते है अरु जूठे वेर स
वरीने दीये सो सुष पाय करके षाये॥ ॥कुसम कुंद कल गे
कौपन सूर लोचन सूल सत्रुसन सुष सहे हसहसेल अ
मसर सूल दूर करतन दयाद रसन देहदंस तुदंस भई वान

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

[illegible]
सती
१९१
191

करन रावन वंसको निरवंस वा थेउह आनको लगनाव
अपनो लेन कालको रिपु आ पहन जय तिलक उर हिदेन
पुन्य कालन देन विप्रन तोलतोल कनेक सत्रु सोदर को
दई सब स्वरन हीको लंक ॥१६॥ वार्ता॥ फेर फूलन की ओदल
गेते नेत्र संदके कांपने से अर सत्रु के सनमुष ह सहसकर
के परवतन तरवार तीर सूल सहारे फेर सरीर को देस क्या मा
छरके डरते हूंए दूर नहीकरने से दया को दिषावते से अर राव
वं४ णकें सको निरवंस करते हूंए देरनाकरी फेर निसाने मे जो वा
णलगता सो ओर का तव अयनाना मलेते से अर काल के
सत्रु जो रावणता को मार कर के जय को तिलक ओरन को देते हैं
फेर पुन्य समय ब्राह्मणो को तोल तोल के स्वरण देते रहे अर स
त्रु के भाई को सरब स्वरन की हो लंका दै दई ॥ ॥ हो पमुक
न सु जाय इनको मरत आवे नाम मुकत पकन भ पेकातर
पी करं संग्राम पकपल विन पान षाएवार का जंभात बर
ष चौदह नींद मूष पिआस साथी रात ॥१७॥ वार्ता॥ अर जो
के मुष मे मरते हूंए इनको नाम आवे सो मुकत हूं जात है प
र एक वानर जुयकर के परते भी मुकत न भए फेर कन के षा
ए विना एक पल मे वार वार आसआं लेते होने से अर चौ
दह वरष नींद मूष त्रिषा सरीर पे साथी ॥ ॥ यमे वर अप
र जे अपने केट कोट कराल अपराय आयन सहस कै हृ
ज दीनको तिह काल जद पल छमन करी सेवा सकल भा
व समेव तदप मानत सरव थां कर भर थ ही की सेव ॥१८॥
वार्ता॥ अपने करोड करोड जो भयानक अपराध है सो छि
मा कीए है अर दीन जो परसराम ब्राह्मण ता की ये आ
पो अपराध मी ना सहि सके फेर जद्यप लछमन जू ने सं
पूरण भाव सो सेवा करी परंतो भी सरवथा कर के भरत ही
की सेवा मानते है ॥ ॥ कहित इन सो सरवसांचे सकल र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

191A

नाराय ननकेसेवा दासकी कहिकोटगुननवगाय उरतप
कप्रलोकतेपजीतचौदहलोक ठौरजाकहिकहूननाकहुदे
तअपनोओक॥२१॥वार्त्ता॥फेरसमरानारायइनकेसाचेक
हतहै ओरजोरतीकुभीसेवादासकीहोयताकोकोटगुनीगा
यकेकहिनेहै फेरचोदांलोकंकोजीतकेएकपरलोकतेडरते
है अरजेकोकहूभीठोरनहीहैताकोअपनोलोकदेतहै॥
छोडरिषरिषरजद्विजसवदेवतासुषपाय प्रगटसकलसनो
हियनके प्रथमपूजेपाय छोडपितरत्रसंकहैविपरीतजद्यप
देह ओयकेसिवजानसूकरस्वानस्वरगसदेह॥२०॥वार्त्ता॥रि
षअररिषराजसमब्राह्मणअरदेवताइनकेछोडकरके प्रि
थमप्रगटहीसंपूरणसनोइयोकेचरणपूजे फेरपितरजोत्रि
संकहैताकोजद्यपविपरीतभीसरीरहैक्योउलटोलटकतहै
ताकेछोडकरके अयुध्याकेसूकरअरस्वानसवदेहसहित
स्वरगकोजातहै॥ ॥एकपलऊरमांहिआएहरतपेसंसार आ
यकेसंसारमेइनहस्योभूतलभार सेषसंभुस्वयंभभाषतनि
गमनेतहिजासु ताहिलघुमतिवरनकैसेसकलकेसवदास
॥२२॥वार्त्ता॥फेरएकपलभीजोपहहिदेमेआमेतोसंसारको
हरतेहै सोइनोनेसंसारमेआयके आपप्रिथवीकोभारदूरकी
योहै सेसनागजीसिवजीब्रिह्माजीअरवेदजाकोनेतकहि
तहै ताकोतुछमतवारोकेसवदासकैसेवरननकरसके॥
दोहरा॥इहविधचोदहिभवनकेगावतजनुजसगान प्रेमसहि
तपहिरायसवविदाकेरैरघुनाथ॥२३॥वार्त्ता॥इसप्रकारचौ
दाभवनकेजनजोकेजसकोगावतहै फेरप्रेमकेसहितपहि
रायकरकेश्रीरामजनेसमविदाकीये॥फूलनाछंद॥अभि
षेककीयहिगाथश्रीरघुनाथकीनरकोय पलएकगायेपाये
हैवहुपुत्रसंपतिसोय जरजायगीसवकामनासवविसुभ
गनकहाय जमराजकेसिरपायदेकरसुरगलोकनजाय
॥२४॥वार्त्ता॥श्रीरघुनाथजकेराजतिलककीजोयहिकथा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
१५२
192

198

है ताकेजोकेऊ मानुषएकपल भीगावे सोबहुतपुत्रअर
संपदाकोपावतहैताकीसभवासनाजरजावेगी अरजगत
मेश्रीविस्नुकोभगतकहावेगो जमराजकेसिरपेचरणदे
करकेवैकुंठकोजावेगो॥इतिश्रीईद्रजितविरचतायांश्रीमत
सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायां
श्रीरामराज्यवरननंनामसप्तविंसतमःप्रकासः॥दोहरा॥
प्रकासअठाईसवेकथाराजनीतसविसेष कहीकथासुन
जैनथामनक्रमवचनअसेष॥भुजंगप्रयातछंद॥अनंता
सवेसैविलासस्पयुकता समुद्रावधिसपतिईनरविसुकता॥
सदाब्रिछफूलेफलेतत्रसोहै जिनेअलपथीकलसाषीविमो
है॥२॥वार्ता॥तहांसंपूरणप्रिथवीसदासमपकाषेतीउंके
सहितहैसमुद्रपरयंतसातईतोनेरहितहै सदाजहांब्रिछ
फूलतेहैअरफलतेहै जिनकूतुछबुधवारेकलपब्रिछ
कीसमताकीसाषीदेकेमोहतहोतहै॥सवैतिस्वगाछीरके
पूरपूरी भईकामगोसीसवैधेनुरूरी सभैवाजस्वरवा
जनेतेजरूरी सवेदंतस्वरदंतसेदरपपूरे॥३॥वार्ता॥
संपूरणनिम्नगाकानदीओदुगधकेप्रवाहकारकेपूरण
हैअरसमगऊओकामधेनुसीभईहै अरसंपूरणघोडेस्व
रगकेघोडेजोहैसूरजकेतिनोतेतेजमेसुंदरहै सभहाथी
स्वरगकेहाथीजोऐरावतितेकेसमदममेपूरेहै॥ ॥सवै
जीवतेसरवदानंदपूरे छमीसंजमीविक्रमीसाधुसूरे॥
जुवासरवदासर्वविद्याविलासी सदासरवसंपतिसोभाप्रका
सी॥४॥वार्ता॥अरसंपूरणजीवसदाआनंदमेपूरणहैअर
छमावानहैसंजमीहै प्राक्रमीहैसाधुहैसूरवीरहैसदाजुआ
नहै सबविद्याकेविलासवारेहै सदाजोसभसंपदाहैताकी
सोभाकेप्रकासीहै॥ ॥त्रिंजीवसंजोगजोगीअरोगी सदा
पकपतनीव्रतीभोगभोगी सवैसीलसोदरपसोगंधपगी॥
सवैब्रिह्मगयानीगुनीधरमचारी॥५॥वार्ता॥संजोगवारेअर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

192A जोगवारे सबजहां चिरंजीवहै ओर जो भोगी गोके भोगनवारे एक ५
इस्त्री ब्रिती है सब सीलाअरसुंदरताते सौगंधनके पांनवारे है सभ
गुनी ब्रिह्म ग्यानी अर परमधारी है॥ सभेदान असनान करमापि
कारी सबै सत्य चातुरय चिंताप्रहारी सबै पुत्र पौत्रादिके सुषमाजे
सबै भगत मातापिताके विराजे॥८॥वार्ता॥ सभजहां दान अर स
नान आदि करमोको अर्थकारी है सभसत्य अर चातुर
यतासो चिंताके दूरकरणवारे है सभपुत्र अर पौत्र आदकोके
सुषसोभजे है सभमातापिताके भगत है॥ ॥सबै सुंदरी सुंदरी
साधुसोहै सची सोमती सी जिने देषमोहै सबै प्रेमकी पुण्यकी
सदमनी है सबै चित्रनी पुत्रनी पदमनी है॥७॥वार्ता॥ सभ इस्त्री
सुंदरी है पतिव्रता है इंद्राणी अर सती सी है जिनको देषके मोह
तहोईयत है सभप्रेमकी अरपुन्यकी धारी है सभचित्रकी पुत्र
नी है ओ पदमनी सी है॥ ॥अधर्म संभ्रमी पत्रसोके ससोकी अ
परमै अरमी अलेपके अलोकी दुषते दुषी है तपेता पधारी द
रिद्री दरिद्री विकारे विकारी॥८॥वार्ता॥ अरभ्रम ही जहां भ्र
मवान है अर चिंताको अभाव है अरसोक ही सहित सोकके है
परम ही परमी है अपजस ही अपजसी है दुष ही ते दुषी है
तपके धारी ही तपते है अर दरिद्र ही दरिद्री है विकार ही विका
री है॥ चोपई॥ होम धूम मलनाई जहां अंन चंचलचलके
लहे नहां बालननाम है सुहाकरम नीछुनता आयुषकी पर
म॥९॥वार्ता॥ होमके धूममै ही मलनताई है अरअंत चंचल
कपलके पत्र ही है सुहाकरममै ही बालनको नाम है बालक
नामनही नीछुनता धारनी एक ससुनही को परम है॥ ॥
देतजनेऊ भिछ्यादान कुटलचालसरतामै जान व्याक
रने द्विज ब्रितन हरे कोकुलकुलपुत्रनपरहरे फागही लो
गतैल जहं देषिये जुआदवारि दिवसलेषिये दिनउठवे
को ही नारीये षेलन मै ज्यो ही हारिये॥१०॥वार्ता॥ भिछ्या

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मांगेदानजनेऊ यारनहीमेंदेतहै कुटलचालदंभहीमेंहै व्या
करणहीमेंब्राह्मणवृतीनकोहरतेहै वृतकयाजीवकानहीहरतेस्त्री
पुत्रकोंकोकलाकेसवृहहीत्यागतहै अरफागहीमेंलोकनिरल
जदेषीतेहै अरजूआदिवारीकेदिनहीदेषीताहै द्विनिप्रतिनि
सानेहीकोउठकेमारीताहै अरक्राहुतरैपकबेलनहीमेंहारीता
है॥दंडकछंद॥भावजहांविभचारीवेधरमेपरनारीहुजेजगदं
डधारीचोरीचितधीरकी माननीनिहीकोमनमानियतमानभं
गसिंधुहीउलंघेजातजीतहैसरीरकी मूलेहीतोअयोगतवत
हैकेसोदासमीचुहीसेहैवियोगईब्यांगनानारकी वेथ्याकाम
नानजानुविधवाहैवाटकाईऐसीरीतएजनीतराजेरघुवीरकी
॥११॥वार्ता॥व्यभिचारीजहांभावनहीमेंहै औरकीनारीक्याना
डीकोवेधहीरमतेहै ब्राह्मणहीदंडधारीहै परमदंडदेतहै भ
अरचित्तनेधीरजताकीजहांचोरीहै अरमानभंगजहांमननीआ
केमनकाहीमानीताहै उलंघकेसमुद्रहीचलताहै अरजीतना
सरीरकाहीहै चाहनागंगाजलकीहीहै वासनाहीवंध्याहै जा
मेफलनहीफुरे अरठाठीहीविधवाहैजाकेपतिनहीसमफूल
नोरेहै ऐसीराजनीतश्रीरामजूकीसोभतहै॥दोहरा॥कविकु
लहीकेश्रीफलेउरअभिलाषसमाज तिथहीकेक्षयहोतहै
रामचंद्रकेराज॥१२॥वार्ता॥श्रीक्यालक्ष्मीकोफलसमकेहै
श्रीफलक्यानारीयेलकी चाहनाज्वानरोंकेहीहै अरक्षैतिथका
हीहोतहै॥दंडकछंद॥लूटवेकोनाऊपापपटिनेकोलूटिअ
तितोरवेकोहतनतोरडारियतहै घालवेकोनाऊगरवघालयत
देवनकेजारवेकोनाऊअवगुणजारीयतहै बांधवेकोनाऊता
लवांधियतकेसोदासमारकेकोनाऊतोदरिद्रमारियतहै राज
रामचंद्रजूकेराज्यजगजीतयतहारवेकेनातेआनजनमहारप
नहै॥१३॥वार्ता॥लूटनेकेनामसोपापकेनगरहीलूटीतेहै तो
रवेकोमोहरूपीब्रिक्षतोरीताहै दूरकरवेकेनामतेदेवतिउंके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

193A

गरबदूरकरीतेहैंविभोस्यो जारवेनामपावनकेसवूहजारीतेहै
वांधवेकेनामसेतालवांधीतेहैमारवेकेनामदरीद्रमारीताहै। ए
जारामचंद्रजूकेराजमैजगततेजीतीताहैहारवेकेनामनेग्रोर
जनमहारीताहै॥चंद्रकलाछंद॥सबकेकलपतरूवनहैसब
केवरवारगगाजतहै समकेचरसेभतदेवसमासमकेजयदु
दभिवाजतहै निधिसिधिविसेषग्रसेषनसैं सभलोगसवैसुष
साजतहै कहिकेसवश्रीरघुराजकेराजसवैसुरराजसेराजतहै
॥१४॥वार्ता॥सभनकेकलपव्रिछोकेवनहै सवकेद्वारहाथी
गरजनाकरतेहैं सभकेद्वारमानोदेवसभासीसोभतहै सभनो
केजयकेनगारेवाजतेहै नौनिधिग्राठसिधजोहै विसेषताकर
केसंपूरणतिनसौसभलोकसभसुषकोसजतेहै श्रीरामजूके
राजमैसभइंद्रसेसोभतहै॥दंडकछंद॥जहांहीमेकलहुकल
हप्रियनारदेकुरूपदेकवचैलोभसभकेधयनको पापनकी
हानडरगुरनकोवेरिकामुग्रागसरवमध्यीदुषदाईकुत्र
यनको विद्याहीमेवादवहुनायकवारपपकुजारज्योहैहै
नुवंतमीचुउदयनको ग्रोषनग्रछिनग्रयनालकेरद्रिस
कटग्रैसोराजराजैरामराजवनयनको॥१५॥वार्ता॥कल
हिजुपछीमेहोतहैयाकहिकेप्यारेनामकहीहै करूपकवच
हीहैमे लोभसभनेकेगऊग्रनकेराषनहीकोहै ग्रहान
पापनहीकोहै डरगुरहीकोहै वैरीकामहीहै सभकेषानवा
रोग्रगनहीहै नहोंदुषकेदेनवारोवरकोक्याकोनहैकेउ
नहीवादविद्याहीमेहोतहै वहुरस्त्रीनकोनाथकसमुद्रही
है जारजकाजरावनवारएकहनूमानहीहै उद्दिग्राच
लकेजोराकसतिनहीकीमोतहै सूरजतिनकोमारकेग्राव
तहै ग्रंग्रोषनतेरहितग्रयनारीयलहीहै किसकरमहीहै
कमनेत्रश्रीरामजूकोग्रैसोराजराजतहै॥दोहरा॥कुटल
कटाछकठोरकुचपैकेदुषीग्रदेय दुस्पभावसलेषस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

200

रामचं
सटी
१९४
194

दावामनजानतअजेय॥१८॥वार्ता॥कुटलकलाघ्यही हैं कठो
रकुचही हैं एकदुषही अदेयहैं दुखभावकादुषसो भावजान
कोमलेषहीमैंहैंषाटेसुभावनही अजोतन्नासलाहीकीजानतेहैं
तोमरछंद॥वहुसवदवंचकमान अलपस्वतोहरजान नर
छाहरूअपवित्र सरषडगनिरदयमित्र॥१९॥वंचकठगीएमे
हनवारेसवदहीहैं एसाहके देषतेहुएचुरालेनवारेसुगंधके
मोरहीहैं सुनारेनही मानुषकीछायाही अपवित्रहैं निरदय
ताती रतरवारहीमैंहैं॥सोरठा॥गुननजिओगनलाजग्रह
तनित्यप्रतिचालनी पुंसचलीतिहकालयकेकोरतजानजे
॥१९॥वार्ता॥गुणोंकोतजकेओगनोकेसंग्रहकोप्रतिचाल
नीकया छालनीहीग्रहितकरतीहैं अरपुंसचलीकाघरघर
मैंविचरणवारीएककीरतहीहैं॥दोहरा॥पनदलोगसुरलो
गमेंयसत्यलोककेसाज सपतद्विपवतिमहिवसोरामचंद्र
केराज॥२०॥वार्ता॥कुवेरलोकदेवलोकअरसत्यलोककेज
हासाजहैं सातोद्वीपनकेसमान श्रीरामजूकेराजमेंप्रिथवी
वसीहैं समद्वीपनकेफलदेतहैं॥इतिश्रीइंद्रजीविरचितायां
श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामन श्रीरामचंद्रचंद्र
कायांश्रीरामराज्यवरननंनामअष्टाविंसतिमोप्रकासः॥
॥२८॥दोहरा॥उनीसये प्रकासमैं किहाविधिचोगान प्रताप
वरनन आगमनमंदरसुककी चानि॥१॥वार्ता॥उनीसयेप्रका
सयेप्रकासमैंचोगानकेषलनकीविधि होयगी अरप्रतापको
वरणनहोयगो मंदरमैं आवनेनोनेकेवचन॥चौपई॥एक
कालअनरूपनिधान षेलनकोनिकसेचोगान हाथ्यधनुष
सरमनमथरूप संगयवादेसोदरभूप॥२॥वार्ता॥एकसमै
अत्यंतरूपकेजोवरहैं सोचोगानषेलनकोनिकसे हाथमैंजि
नोकेधनुषवानहैं कामसमरूपहैं संगमेभाईअरराजेपिआ
देहैं॥ ॥जाकोजचही आयुसहोय जायचढेगजवाजन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

194A

सोय पसुपति सेखर पतिलेषीपे महासेन अगनत देषिये
॥३॥ वार्ता॥ जिसके जब आगया होत है तब सो हाथी छोढ
ऊपर जायके चढत हैं सिवजू के समान श्रीरामजू देषीत
हैं वडी सैना जाके पाछे देषीयती है॥ ॥वीथी सब अस्वसवार
न भरी हैं हाथिन सों सोभत षरी नर पुंजन सो सरना भली मा
नहु मिलन समुद्रहि चली॥४॥ वार्ता॥ गली सब अस्वसवार
न सों भर गई थों है हाथीन सों अत्यंत सोभत हैं सो मानो ब्रि
छन सो मिली हुई नदी समुद्र के मिलन को चली है सेनात
रु संबूह गली नदी चौगान समुद्र॥ ॥इहि विधि राम नग
र चौगान सावकास सब भूम समान सो मन एक कौ सर
पमान रची रूचि रतनापर चौगान॥५॥ वार्ता॥ इस नगर रामजू
चौगान षेलन को गये अवकास सहित जो प्रिथवी है तहां
जाको एक को सकोप रमान सो मन है तापे सुंदर चौगान र
चौ॥ ॥एक ओर रघुनाथ उदार भरथ दूसरी कोद विचा
र सो हतलीने हाथन छरी कारी पियरी रातीहरी देषन
लागो सब जग जाल डारदयो भुव गोला लाल गोला जा
य जहीं जह जवे होत तते तिहीं तिन सबे॥६॥ वार्ता॥ एक
तरफ श्रीरामजू भये दूसरी ओर भरतजू हाथो मे छरीका
रीपी री लाल हरी लाये सोभत हैं॥ ॥नव समदे षन लागे
प्रिथवी मे लाल रेसम को गोला डार दीयो जब गोल जहं ज
हो जात है तव तिसतिस तरफ ही सम होत है॥ ॥मनो रस
क लोचन रूचर चे रूप संग बहु नाचनि नचे लोक लाज छो
डे अंग अंग डोलत जनु वे थ सनके संग॥७॥ वार्ता॥ मानो
छकवमै रचे हूये जो रसक जनों के नेत्र हैं सो रूप के संग बहुते
नाचन मे नव रहे हैं अपवाल जा अंग अंग को छोड कर
के प्रेम से डोलत है जैवे सांगन के संग लोक डोलै॥ ॥गोला
जो के आगे जाय सो ताहि चले अपनाय जैसे त्रियगन को

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पतिरहे जिन्हपायेताहीकेभये॥८॥वार्ता॥जाकेआगे
गोलाजातहै सोईताकोअपनेकरकेलेवलतहै जैसेई
स्त्रीउनकेसवहूनकोएकस्वामीरहे जानेपायेतिसीकोहू
जातहै॥ ॥नेकुहूठालनपावेसोई इतितेऊतऊततेर
तिहोई कामलोभमदवयोअपार मानोजीऊभ्रमैसं
सार॥९॥वार्ता॥सोगोलारतीकुमीथितताकोनहीपाव
तहै इधरतेउधरउधरतेइधरहोतहोतहै मानोकामअर
मदकेलोभमेवंध्योहुयोसंसारमैजीवभ्रमतहै॥ ॥जहं
तहांमारेसभकोई ज्योनरपंचविरोधीहोई चरीचरीप्रति
ठाकुरसवे वदलतवाहनवासनतवे॥ वार्ता॥जहांतहां
तेसभकोऊमारतहै जैसेपंचनकोविरोधीमानुषहोय चे
रिचरिचरिचरीकेप्रतिसभठाकुरवाहनअरवस्त्रनकोव
दलतेहै॥ दोहरा॥जवजोजीतेहालहरितवतववजत
निसान हयगयभूषनभूरपटदीजतलोगनदान॥११॥
वार्ता॥जवगोकागोलेकीकरिजोमरयादाताकोश्रीराम
जूजीततेहै तवतवसीघ्रहीनगारेवाजतहै घोरेहाथी
गहनेवहुतेवस्त्रकेलोकनकोदानदेईतेहै॥ ॥तवति
हसमेएकवेताल पढ्योगीतगुनवुधविसाल लोगन
कीविनतीसुषपाय रामचंद्रसोकीनोआय१२॥वार्ता॥
तवतिससमेविषेएकजोवेतमल्लकाकवीस्वरहैवडोवुध
वारोतानेगुणोकोगीतपढ्यो तिसगोलेकीवेनतीश्रीराम
जूसोआयकेकरी॥ चंडकछंद॥पूरवकीपूरीपुरीकाप
रीपुरीसेततनवापुरीकेदूरहीतेपांयनपरतहै दछनकीद
च्छनीसीराव्यअंतरीछमगापछमकीपछहीतीयछौज्यो
डरतहै उत्तरकीहेतहैउतारसरनागततनवाततऊताय
लीऊतारउतरतहै लोगनकीमूरतनिदीजैजूअभयप
दरामवैरकहांजाहिविनतीकरतहै॥१३॥वार्ता॥परीसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

195A

सुंदरजोंकोसरीरहैसोयहिगेंदपूरवकीपुरीपुरीकेपगोंमेजा
यकेपरे वेकेगालनतें दूरहीतेयाकेपायनमेपरे हमारेमतो
रेरावनकोवलनहीं फजछनेसीजो दछन दिसाकीहैसो
मैसेकहेहैनेंआकासकेमारगकोजाइ आरपंषनतेहीनपछी
केसमानपछमकोडुरतीहै परऊवरकीभीसरणाईकोऊ
तारदेतहै उसायलीवाननकोउतारके कहावनायकेकहि
तीहै अबहेरामजूगोलेकीमूरतकोअभेपददीजीये एम
जूकेवैरनेकहूंजावेनातेवेननीकारनेहैं॥चौपई॥गोलन
की विनतीसुनईस चरकेगमनकयोजगदीस पुरपैठत
वहुसोभाभई वीथीअसवारनभरगई मनोसिंधुमिलसहितऊ
छाहु सरतनकेफिरचलेप्रवाहु तेहीसमैछोसुनसुगयो दीप
उदोतनगरमैभयो॥३॥वार्त्ता॥गोलेकीवेनतीसुनकरकेजग
तकेस्वामीचरकोगमनकरतेभये पुरमेप्रवेसहोतेहूयेवडी
सोभाभई गलीअसवारनसोसभभरगई मानोसमुद्रकोमि
लकेसहितउतसाहकेनदीनकेप्रवाहफिरकेचलेहै तिससमैदि
नवतीतहैगयो दीपनकोप्रकासनगरमैहोतभये॥ ॥नय
ननकीनगरीसीलसी केधोअवयदिवागिरवसी नगरअ
सोकुविष्यरूचियो सपुप्रभुदेषप्रफुलभयो॥४॥वार्त्ता॥सो
मानोतारियेकीनगरीसीसोभायमानभईहै अथवाअजु
धामैदिवागिरकाद्रोणाचलकीसोभावसीहै कैनगरछव
सोमिलयेहुयेअसोकविछहै सोवसंतसश्रीरामजूकोदेषके
प्रफुलभयेहै॥ ॥अपअथऊपरआकास वलनदीपदेषि
यतप्रकास चौकीदेजनुअपुनेभेव वहुरेदेवलोकके देव
॥५॥वार्त्ता॥आकासविषेहेठोहेठोऊपरतेऊपरवलतेहूये
दीविउकाप्रकासदेषीताहै सोमानोअपनेभेदसोचौकीदार
चौकीदेतहै अथवाईद्रकेभेजेहूयेदेवलोकके देवताहै॥ ॥
दीपीविमलसुगंधसमान दुहदिसदीसतदीपप्रमान महरा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जकेसहितसनेह निजनैननजनुदेषमगेह॥६॥वार्ता॥नि
रमलजोसुगंधनपकसीअरुजुथ्याकीगलीहै तिनकेदोऊ
तरफदीपकदिषाईदेतहै सोमानोसहितसनेहकेअपनेनै
ननसोश्रीमहाराजजूकोघरदेषतेहै॥ ॥वहुविधदेषतपुर
केभाव राजसभामेवैठेजाय पढ़िपढ़निसवीतीजहां विन
तीकेसुषआपेतहीं॥७॥वार्ता॥ऐसेवहुतप्रकारसोंपुरके
भावनकोदेषतेहूयेराजसभामेविराजमानहोतेभयेतवप
कवहिरानतवतीतीनवपकतोत्तावेनतीकरणकोआवताम
या ॥प्रियाछंद॥दोहिपेकृपानिधान देवदेव रामचंद्रचंद्र
चंद्रकासमेतचित्रचित्तरैनमोहै मनोसुमनसुमनसंगारचेरू
चरसुकितरंगआनंदमेअंगअंगसकलसुलछनसोहै ल
लितललनकेविलासभमरवृंदहैंउदासअमलकमलके
सवासआसवासकीने नजतजमायाधुरतभगतरावरे
अपनेतनवकरपदनघनमानहुमनदीने॥८॥वार्ता॥हेद
वतिउनकेदेवकृपाकेघरश्रीरामजूआपवयेहीपे चंद्रमा
अरुचांदनीकेसमेतजोसुंदररातहै सोचित्तकोमोहतहै मा
नोस्वेषवुधनेस्वेष मनकेसंगहोकरकेसुंदरपुन्यकेरंगर
चेहै अपनेदमेअंगअंगविषेसंपूरणसुषसोभतहै फेरसुंदर
जोललनकेविलासहैतिनोतेभमरोकेसवूहउदासहोकरके
निरमलजोकमलोकेकोसहैतिनोकेआसपासअस्थानकी
नेसोमानोदुसतरमायाकोत्यागत्यागकरकेतुमारेजोअने
कभगतजनहैतुमारेहाथचरणनेत्रनमेमनवचनकोदी
पहूयेध्यानकरतहै॥ ॥चरचरंसंगीतगीतवाजतवाजेअ
जीतकामसुपसआगमजनुहोतहैवधावे राजभवनआस
पासदीपावृच्छकेविलास जगतजोतजोवनजनुजोतवंतआ
प मोतनमयभिंनतनईचंदनचंद्रकासुमईपेकअंकेकेति
भुवमूरभेदसोकरी मानोसमपंडनकरीजेभनजोतमेडुन

196A

श्रीषंड मेलकी अषंड सुभ्र सुंदरी दरी ॥२१॥ वार्ता॥ फेर चर
छर से संगीत होत है सो मानो अजीत जो कामदेव राजा है ता
के आवन के बधायेन के बाजे बाजत है और राज भवन के आ
स पास जो दीपन के त्रियन के विलास हू है रह्यो है सो मानो
जगत की जोतन के देषन को जोतवेन क्यारे लगायें है फेर
नवीन में नितडयें मीन है चंद और चांदनी सो मिली हूई चं
दन के कीच के चिन सो अकन बहुत में बन सो करी है विश्राम
सो मानो चंद्रमा जो पंडत है ताने चांदनी की जोतसो चंदन के
परवत की जे ऊजल सुंदर दरी हैं सो संपूरन सोभायमान क
री है दरी सी चंदन की प्रिथवी॥ ॥एक दीप दुति विभात दी
पन मणि दीपन यौ मानो भुव भूप तेज मंत्रन में राजे अभे
मन षचत षरे भाजन बहु भांत भरे राषे ग्रह ग्रह अनेक मनो
मैन साजे अमल सुमित्र जल निपान मोतन के सुभ वितानन ता
तर पलंका जराय जटित जीऊ हरषे कोमल ननन तर सिसाल
तन सुष की सेज लाल मनो सो म सूरज पसुधा विंदु वरषै ॥२२॥
वार्ता॥ तहां एक दीपन की जो सोभा है सो मणिऊ के दीके फी
पंगा नमें दीपत है मानो प्रिथवी में राजा को तेज मंत्रीन में सोम
त है मणिऊ सो षचित संदर आरे है बहुत प्रकार के भाज
नो सो भरे हूये सो अनेक घर घर में राषे हूये मानो कामसज
रहे है अथवा काम के बनाये है फेर निरमल और जल नि
पान क्या मचन सो मिले हूये मोतीन के सुभ चंदोये है तिनो के
तरे जराऊ के जर पलंग है जिनको देषमन प्रसंन होत है॥
कोमल तन की तरक्या अति से रस भरी तन सुष क्या लाल
रेसम की लाल सेजा है सो मानो सूरज पर चंद्रमा अंमृत
की विंदु को वरषावत है॥ ॥फूलन के विव पहार बुरलनऊ
रामिन उदार विच विचमन स्याम पांत उपमा सुद भाषी जी
त्यो सम जगत जानत म से हिय हार मानमन हु मदन पन्न

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

203

रामचं
सखी
१८०
197

षिननै गुनऊतार राषी जलवल फल भूरवार पटवास पूर
सछ स्वछ करदम जियदेवन अभिलाषै कुंकम कुंकमा जुवा
दाष्त्रिगमद करपूर आद वीरा वनति निवनाय भाजन भर रा
षे ॥ ३३ ॥ वार्ता ॥ तहां नाना प्रकार के फूलन के हार हैं सो चुरल
क्याषू टिउं पै लटकाए हैं तिनके बीच बीच मे स्याम मणीन
की पांत है ताकी तिने ऐसी उपमा कही है कामने सम भंग त ज
जीत्यो है पै तम सों हार मान के मानो कामदेव नै धनुष ते ज
हिरनार के राषे हैं नील मणि भमरो के चिल्ले सी है तिन हा
रों का जे जल परया है थल मै अर बहुत जो फल फूलन को
जल है कैसे अकास ते वस्त्रन को मानो सुगंधन भूर परी है अ
थवा ओबर क्या मुसका वर अर वस्त्रो की सुगंध की पूर इनो को
जो निरमल कीच है ताको देवता भी चाहना करते है केसर
कुंकम क्या गुलाब जल अर जुवाय क्या दालचीनी तो कसन
ति कपूर इत्यादि को के बीरा इस्त्री ये के बनाय के भांडे भर रा
षे हैं ॥ ॥ धनसी सुगी कुमार आसुरी सुरी मुरारि विविध
वीन किंनरीन कीं नरी बजावै मानो निस काम भगत सक
न आप आपनी न देह नि धर प्रेम निभर भजन भेद गावै ॥
सोदर सामंत वसत सेनापति दास दूत देस देस के नरेस मंत्र मि
त्र लेषियो बहु रे सुर असुर सिध मंडल मुनि कब प्रसिध
के सब बहु राय राज रजलोक देषियो ॥ ३४ ॥ वार्ता ॥ सरपो
की परवतो की परवतो की जो पुत्री है अर असुरो की तदेव
तिउं की जो पुत्री है सो अनेक प्रकार की वीना को अर किंनरी
की इस्त्री किंनरी क्या सारंगी को बजावै है सो मानो तुम्हारी
जो निस काम भगत है तिनने अपनी आपनी सकत करके स
रीरन को धार के प्रेम मे भर के भजन के भेद गावत है तहां जो
भाई सामंत वजीर सेनानी दास दूत अर देस देस के राजा
मंत्री ते मित्र इनको देषो अर भेहृप ईड्ड के जो आए है देव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

197A

ताग्प्ररन्युमुरक्षिपमुनीस्वरप्रसिंधकवीस्वरइनकोंबहुरायका
विदाहैकरकेफेरहेराजनराजलोककोंदेषिये॥दोहरा॥
कहिकेसवसुरकेवचनसुनसुनपरमवचित्र राजलोकदेष
नचलेरामचंद्रजगमित्र॥२५॥वार्ता॥नवसुंदरतोतेकेव
चनोकेवचनोकोंसुनसुनके जगतकेमित्रश्रीरामजूराजलो
ककेदेषनकोंचले॥नाराजछंद॥सुदेसराज्यलोकआस
पासकोटदेषिये रचीविचारचारपौरपूरवादिलेषिये॥
सुवेसएकपौरसिंद्धएकदेतराजहै सुएकबाजराजएकने
दवेससाजहै॥२६॥वार्ता॥सुंदरजोराजलोकहैताकेआसपा
सकोटदेषीताहै विचारकेचारजोकेपूरवादिकदिसनमैंद
रवाजेरचेहैं सुंदरपूरवमेंएकपौरपैसरकोचिनहैएकपैहा
थीकोहैएकपैस्वेतघोडेको एकपैवैलको॥दोहरा॥चौक
मध्यफिररचेसातलोकनरहार॥षटऊपरतिनकेनहांचित्र
चित्रविचार॥२७॥वार्ता॥मध्यविषेजोकेपांचचौकरचेहैं
तलेसातलोकरचेहैं छैलोकऊपरचित्रनसोंचित्रेहैं॥चाम
रछंद॥भोजएकचौकमध्यदूसरेरचीसभा तीसरेविचार
मंत्रऔरनित्यकीप्रभा मध्यचौकमेंनहांविदेहकेन्यकाल
मेंसरवभाऊरामचंद्रलीनसरवदावसे॥२८॥वार्ता॥एक
चौकमेंभोजनकोंअस्थानहै दूसरेमैंसभारचीहैतीसरेमैं
मंत्रविचारहै चौथेमेंनित्यकीसभाहोतहै मध्यकेचौक
मैसीताजूसोभतहैं सभभावसौंश्रीरामचंद्रजूमेंलीनहूये
व सदांसतेहैं॥दोधकछंद॥मंदरकेचनकोंइकसोहै स्वेतन
हांछतुरीमनमोहै सोभतसीरषमेरहिमानो सुदादेवदिवा
नवषानो॥२९॥वार्ता॥एकनहांस्वरणकोमंदरसोभतहैं
तापेस्वेतछतुरीमनकोमोहतहै सोमानोसुमेरकेसीसपेसु
ददेवनकीसभासोभतहै॥ ॥मंदरलालनिकोमनमोहै
स्यामनहांछतुरीसगसोहै ताहियहेउपमासवसाजे सूर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
द्री
१५८
198

जश्रेकमनोसनिराजे॥४०॥वार्ता॥एकलालकोमंदरमन
मोहनहै ताकेसंगस्यामचक्रतरीसोभतहैताकीयहिउपमा
समकहितहै मानोसूरजकेअंकमेसनिश्वरहै मंदरनील
वन्योमनलोमेस्वेतनहाछत्तुरीसमसोमे मानोहंसनकीअ
वलीसी प्राविटकालउडायचलीसी एकनीलमंदरवन्योजु
योमनमोहतहै तहांस्वेतछत्रीसोभतहै सोमानोहंसनकी
पंगतसीउडायकेवरषाकालमेचलीहै॥ ॥मंदरस्वेत
लसेअतिभारी सोभतहैछत्तुरीसुषकारी मानहुईस्वर
केसिरसोहे मूरतरामकेमनमोहे॥४१॥वार्ता॥एकस्वेत
मंदरअत्यंतभारीसोभतहै तापेकरीछत्रीसोभतहै सोमा
नोसिवजीकेसीसपेश्रीरामजूकेमनकोमोहतीहूई मूरत
सोभतहै॥ ॥समयामनमेरकुथामवन्यो अतिसुंदरस्वे
तसरूपसन्यो सनिसूरविहस्पतिमंडसे परपूरनचंद्रमनो
वलसे॥४२॥वार्ता॥समग्रमेएकद्वारवन्योहैअत्यंतसुं
दरस्वेतसरूपमेमिल्योहूयो सोमानोसनिश्चरसूरज
व्रहस्पतिइनकेमंडलमेवलसोपरपूरणचंद्रमासोभत
है॥चौपई॥वहुधामंदरदेषतभले देषनसुभसालकादे
ले सीतभीतज्योनेकुनत्रसे पलकुवसनसालमेलसे॥४३॥
वार्ता॥ऐसेवहुतप्रकारकेमंदरोकोदेषतेहूयेफेरजल
सालाकेदेषनकोचले प्रथमसीतमेभेमानहूयेकीतरासीत्र
तासोसत्रसालामेगये परतहांरतीकुभीमेमानताहूये
~~केसिसे~~ पलकवस्त्रसालामेसोमे॥ ॥जलसालाचात्र
कज्योरये अलिज्योगंधसालकुगये तिपटसोभज्यो
सोभितभये मेवाकीसालामेगये॥४४॥वार्ता॥जलसा
लामेपपीहेसमभिलेमोहनाकीउो गंधसालामेभमरसे
गयेसीम्रफिरेफेरसेवाकीसालामेगयेतहांअत्यंतसोभा
ससोभतभये॥ ॥माननीनकेसमनमेव गयेमानमाला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

198A

मेदेव सुभसिंगारसालाकोदेष उलटेललननैनसेलेष॥
॥५५॥वार्ता॥फेरमाननीनायकाकेमनकेमेहजेसेसमभसा
लामेगये फेरसुभसिंगारसालाकोदेषकरसुंदरनेत्रसेफिर
तेमये कोसिंगारकीचाहनानेत्रनहीकोहोतहै॥ ॥मेत्रिन
ज्योवेठेसुषपाय पलकुमंत्रसालामेजाय चतुरचोरसेसो
भतमये धरनीयरयतसालागये॥५६॥वार्ता॥मत्रीउोकी
त्याईपलकमंत्रसालामेजायवेठे फेरयनसाला मेजोराजाराम
चंद्रजूगयेहैसोरसेचतुरसोभतेमयेहै यनदेषनमे॥ ॥जवरा
वरमेरघुनाथगये वहुधांअवलोकनसोभमये सवचंदनकी
सुभसुपकरी मनलालसिरनसुधारधरी॥५७॥वार्ता॥फेर
जवमहिलोमेश्रीरामजूगये तववहुतप्रकारकीसोभाकोदेष
तेमये समजहांचंदनकीसुभऊजलकरीकाकडीअ्राहै ति
नपेलालमणिउोकीसिरनकातषतीअ्रावनायकेधरीअ्राहै
वरणाअ्रनलालसुचंदनके उपजेवनसुंदरनंदनके गजदंत
नकीसुभसीकनई तिनवीचवीचनस्वरनमई तिनकेसुभ
ऊपरराजनहै कलसामननीलविराजतहै॥५८॥वार्ता॥ला
लचंदनकेवरणाहैसुंदरनंदनवनकेउपजेहूयेहै फेरहाथीके
दंतोकीजोसुभसींकहैनवीनतिनोकेवीचवीचस्वरणकीसी
कहैतिनकेसुभऊपरसोभतहै तिनोपेनीलमणिउोकेकल
सविराजतेहै॥ ॥अ्रनउनतथंभनकीदुगई गजदंननसुके
चनचित्रमई तिनमोफलसैवहुभांतनके सुभकेचनफूलज
रायनके॥५९॥वार्ता॥अत्यंतऊचीथंभोकीदुगईहोहरीति
वारीहै हाथीकेदंतअ्ररस्वरणकेचित्रसोमिलीहूईहै तिनमै
वहुतप्रकारकेस्वरणकेजरावकेफूलहै॥रूपमालाछंद॥
वरणवरणजहांतहांवहुयाननेसुविनान फालरेसुकतान
कीअ्ररूमकाविनमान चोकठेमननीलकीपटकोनके
सुकपाट देषदेवजुहोतहै समदेवताजनुभाट॥ ५०॥
॥वार्ता॥रंगारंगकेजहांतहां वहुतप्रकारकेचं   दोयेतनेहै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

205

रामचं
सखी
१८८८
199

अमोतीउंकी कालरें है विन प्रमानके झूमका झ्यागुछे है
नीलमणिउंकी चोरा है अरफरकोंके सुंदरतनषते है जिनकेछे
षदे षके सपूरण देवताउ सनकों करणको भाट से होत हैं ॥
स्वेतपीत मणीनका परदार चीरु चलीन देषके तिहि देषजे
जनु लोललोचनमीन सुभहीरनके सुअंगन हैं हिंडोर लाल
लसुंदरी जिहफूलहीं प्रतिविंवके तहि जाल ॥५१॥ वार्ता ॥ फेर
स्वेतअरु नीलमणिउंकी चाह मैमिलके परदार वीहै जिनको
देषके तहां देषीते हैनेत्रमिनसे वंचल हूपे मणिजलने त्रमीन
अंगन मे उजलही रिउंके लाल हिंडोरा है तिनमे सूंदरी फूलत
है तिनके प्रतिविंबोंके संवूह होत है ॥ छंद ॥ धाम धाम प्रति आस
न सोहे देषदेष रघुनाथ विमोहे वरनि सो भक विकैनक है जत्र
तत्र मनु मूलरहै ॥५२॥ वार्ता ॥ तहां घर घर प्रति आसन सोभित
है तिनकी रामजू देष देषके मोहत है तिनें भेम कौनकवि व ँकी
रनन करके कहे जहां तहां मन देषके मूलर हित है ॥ दोहरा ॥ जा
के रूप नरेष रगु जानत वेदुन गाथ रंगमहिल मे रामगय राजसि
रीके साथ ॥५३॥ वार्ता ॥ जांके रूपरेष रंग नहीं है अरु जांकी क
थाको वेद भी नहीं जानत है ऐसे श्रीरामजू राजश्री के संग रंग
महिल मै जाते भये ॥ इति श्री मतसकल लोललोचन चकोर चिं
तामणि श्रीरामचंद्र चंद्रकायां राजमंदर वरननं नाम नवविं
शतम: प्रकास: समाप्त: शुभं ॥२९॥ दोहरा ॥ याती सये
प्रकासमै वरनन सुभसंगीन सैन प्रवोधन रामको सुनत नसा
रकासीत ॥१॥ वार्ता ॥ इस तीसमै प्रकासमै सुभसंगीत वरनन
होयगो अरु श्रीरामजूके सैनको सार काकहेगो ॥ ॥ सना
न दान भोजन कह्यो षटरस विधन वनाय सो भावरनी राज
कितु सोरम सुमन निकाय ॥२॥ वार्ता ॥ सनान दान षटरसके
विधनको भोजन अरु राजा रामजूकी दिन किनकी सोभा
व सेत मै फूलनकी सुगंध वरनन होयगी ॥ चतुषपदी छंद ॥
इति रंग सदनकी सहिमवदनिकी वरणे मतिन विचारि ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

199A

अथरूरचरनी रंगसुभातीरचिवहु धासषकारी चित्रेवहु
चित्रनपरमवचित्रन रघुकुलरजसुहावे समदेवअदेवनअ
नरदेवनतिरषनिरषसुषपावे॥३॥वार्ता॥रंगमहिलकीजो
सोभाहेताकोहजारमुषवारेसेसजूकीभीवुयविचारीक्या
गिरीवनीनहीवरननकरसकतीहे तलेअरऊपरजांकेला
लरंगहेअोरवहूतप्रकारकीछविसोभतहे अरपरमचतुरो
नेवहूतप्रकारकेरघुकुलमेजिनकेसुंदरचरित्रहे तिनोकेच
रित्रोकरकेचित्रतहे जांकोसमदेवतिडोनेअरराकसोनेअ
रराजियोनेदेषदेषकेसुषपायेहे॥तिहिअाईवालागुनगन
सलावुयवलरूपनिवाहो सुभजातचित्रनोचित्रगेहनेतिक
समईजनुराही मानोगुनसंगनियेप्रतिअंगनरूपकरूप
विराजे वीनानिवजावेअदभुतगावेगिरगनीलाजे॥४॥
॥वार्ता॥जहांरसोईअावतीभईकेसीहेगुणोकेसमूहकी
सालाहे वुधवनरूपइनोकरकेअधिकहेसुभजिनकीजा
तहे मानोचित्रयरतेचित्रनीनिकसकेठाहीभईहे मानोगु
णोकेसंगतिनोकेअंगअंगप्रतिरूपकेरूपकविराजतहे
फेरवीनाकोविजावतहे अरअदभुतगावतहेसरस्वतीकी
रागनीभीजिनतेलजामानहोतहे॥दंडकछंद॥अपछन
यायनविलोकियतयायलनचेनोसुषकेसोरायप्रगट
प्रमानहे सोहेमनभूलेतनुनैननरुदनहोनरूषेसोच
पोचदुषसारनविधानहे अागमअगमतेत्रसोयसमजे
त्रमंत्रनिगमनिवारवेकोकेसवअयानहे वालनकीन
नुत्रानअमतिप्रमानसभरीकेरामदेवकामदेवकेसे
वानहे॥५॥वार्ता॥व्यायजुगनहेगयेहे अपछनक्यास
रिरजिनकेअेसेजोघायलहे तिनकोभीजहांप्रगटसुष
देषीनाहेसोताने मनकेमोहतहे जिनकोदेषसरीरभूल
जातहेनेत्रनतेजलचलनलगजातहे सोचक्याविचार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सो दूर होत है अरु मद दुष के हरण को कारण है फेर कहत
जो सास्त्र है अरु तंत्र किनको विचार ते समझे त्र अरु मंत्र अरु
वेद एह जिन तनोके निवारवे को कह्ना भेद भिंन करवे को
अयान कह्ना वालसे है अष्टवार ने ते पुरष के हटायवे को
ऐसी जो इस्त्री ये की ताने है अनंत है प्रमान जिनको काम
देव के वान सम तिनको श्री रामजू देष के रीझत है॥ पद
री छंद॥ सुरग्राम नाद नित्य तित ताल सुभ वरग विवि
धि लय अलित काल चहूं कला ज्योत मूरछना भांत व
डलाग राग मक गुनन चतिजान॥६॥ वार्ता॥ ताल के सहित
सुर अरु ग्राम के नाद सो नाचत है जामै सुभ वरग का आ
षर है अनेक तरे की लै है आलाप समै मैं अरु वहुत कला
की जोत है मूरछना के प्रकार है वडला अरु राग मक नित्य नसे
नाचत है॥ ॥वहुवचन विविधि आकास चाल सुष चाल चा
र अरु सवद चाल वहु उरप तिरप नो वव टा अडाल अरु ला
गडाट रभंग जाल॥७॥ वार्ता॥ वहु वचन अरु अनेक तरे की
आकास चारी अरु सुष चाली सुंदर सवद चाली अरु वहुत उ
रप ते तिरप अरु तोडव अरु अडाल अरु लाग ते डाट अरु रारे
गइन नित्य तो के संवूह॥ ॥उलछ सुटेक अलग सम हिंड॥
पद पलट रमै निसेक रिंड सु तिनकी भ्रमी देष मति थीर भ्र
म सी षत है सत या समीरु॥८॥ वार्ता॥ फेर उलछ अरु सुटेक
अरु अलग म सहिंड इन नित्तन को चरन पलट के निसंक इ
स्त्री रमती है सो तिनो भ्रमन को देष के अनेक प्रकार सो मा
नो पवन भ्रमन सीषत है तिनोते॥ मोहन छंद॥ नाचे रस वे
ष अस वषत वे वर सेर सभांत विसेषसमै जो हूर सम सिष्वत भा
वन वे कोनो न हि हसित कमै ववदे॥९॥ वार्ता॥ संपूरण रस
के सरूपन सो नाचत है अरु विसेषन रैसो सम प्रेम को वरषा
वत है फेर नवो रसन सो मिले हूए भावन को रचती है जिनो

200A

नेकोउभीहसतकमावनहीवचनहै ॥ दोहरा ॥ पंचमषावजना
लसोप्रतिधुनसुनजनुगीत मानोचित्रवचित्रमनिपठतसकल
संगीत ॥ १० ॥ वार्ता ॥ चरणअरपषावजइनकेतालनसोधुन
धुनप्रतिमीतसुनियतहै मानोतिनेनेसुंदरसंगीतहीसुंदरवुध
सोपढतहे ॥ ॥ अमलकमलकरअंगुलीसकलगुननकीम
र लागतमधुरछिदेगमुषसवदरहितमरमूर ॥ ११ ॥ तिनोकेनि
रमलजोकमलसहाथोकीअंगुरीहै सोसमगुणकीमूलहै
कोमधुरजोछिदेगहैताकेमुषपैमीलागतहैतोभीसवदमर
मूरहूरहितहै ॥ ॥ कोटमांतसंगीतसुनकेसवश्रीरघुनाथ
सीताजूकेग्रहिगयेगहेप्रीतकेहाथ ॥ १२ ॥ वार्ता ॥ ऐसेकरेरम्भा
तसेसंगीतकोसुनकरकेश्रीरामजूश्रीसीताजूकेघरजातेम
येप्रीतकेहाथमेगहेहुयेकाप्रीतवसभये ॥ सुंदरीछंद ॥ सुंद
रमंदरमैमनमेहन स्वरणसिंघासनऊपरसोहन ॥ १३ ॥ वार्ता ॥
तहांमंदरमैसुंदरसीताजूमनकोमोहतेहूये स्वरणकेसिंघा
सनमेविराजतहै कमलकेजोकरहाटकहैकेसरतापेमा
नोपारवतीजूषणवालकमिजूहै ॥ ॥ फूलकेसुवितानत
नोवर कंचनकेपलकाइकतातुर जोनजराउजरोअन
सोमन सूरजमंडलनेनिकसोजनु ॥ १४ ॥ वार्ता ॥ तहांफूलन
केसुंदरचंदोआतन्याहै ताकेहेठंस्वरणकोपलंगहै जरा
यसेजेजरोहुयोहैताते ताकीअत्यनसोभासोभतहै मानो
सूरजकेमंडलतेनिकसोहै ॥ कुसमवचित्राछंद ॥ दरसतहै
नैननरूचवने वसनविछायेसमसुषसने अतिसुचसोक
वहुनसुने जनुतनुलेकेससिकरवने ॥ १५ ॥ वार्ता ॥ देषतेहू
येसोनेत्रनमैरूचकोवधावतहै समसुषसोमिलेहुयेतायेव
स्त्रविछायेहै अत्यंतचाहतासोजोकवीहरनहीहोते सोमा
नोचंद्रमासूष्यमकिरणोकोलेकेविनवतहै ॥ चौपई ॥ चंपद
लदुतकेगेंदुवे मनहूरूपकेरूपकऊवे कुसमगुलालनकी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गलसुई वरनीजायननैननछुई ॥१८॥ वार्ता ॥ तहां चंप
कके पत्रकी छविके गेंदवेकाथि नुहै मानो रूपके रूपकड
गेहै अरगुलाबके फूलनकी गलसुईका गालतलेकेन
कीआहै सो वरनीनहीजाती नेत्रनहीसो देषीजातहै ॥ दो
हरा ॥ रामचंद्र रमनीयतरतातरपौहे जाय पदपंकजनप
षारके कहिके सब सुषपाय ॥१७॥ वार्ता ॥ तहां अत्यंत सुंद
रजो श्रीरामचंद्रजू है सो ताकेतरेपौढते भये चरणकमलो
को धोयकरके सुषपायके ॥ तोमरछंद ॥ जिनकेन रूपरेष न
नहियोहियोनरवेष निसनासगोतिहवार वहुवंदवोल
तद्वार ॥१८॥ वार्ता ॥ जिनोके रूपअररेषनहीहै सो तहां मा
नुषके रूपपौढते भये तिससमेजवरातवीतीतभईतवव
हुतवंदीजनद्वारपैवोलते भये ॥ दोहरा ॥ राजलोगजागो
सवैवंदीजनके सोर गापजगावनरामको सारिकोद्विजस
मोर ॥१९॥ वार्ता ॥ तव वंदीजनोके सोर करके समराजके
लोगजागते भये श्रीरामजूके जगावनको मोरसमैसारका
द्विकजाते भये ॥ सारका ॥ जागीये त्रैलोकादेव देव रामदेवदे
वभोरभयो भूमदेव भगतदरसपावै ॥ ब्रिह्मासनमंत्रवरनवि
सुचित्तचातकघनरुद्ररिदैकमलमित्रजुगतगीतगावै ग
गनउदनरवअनंतसुक्राद्विजोतवंतछिनछिनछवघीन
होतलीनपीनतारे मनहुपरदेसदेसब्रिह्मदोषकेप्रवेसठौ
रठौरनेविलातजातभूपमारे ॥२०॥ वार्ता ॥ हे तीनलोकके
नाथहे देवतिऊके नाथ श्रीरामदेवजू आपजागीये अव
भोरभयोहै ब्राह्मणअरु भगतजनआपके दरसनको पा
वै आप ब्रिह्माके मनरूपी मंत्रके तो अक्षर हो अरविस्नु
के चित्तरूपी चात्रकके मेघहो सिवजूके हिर्दैके हिर्देरूपी
कमलके सूरज हो समजगत अैसे गीतको गावत है आका
समैसूरजउदैहोतहै अरसुक्राद्विकजो वडे जोतवारे तारे

201A

हैं तिनोकी छिनछिनमैछीनछबिहोतहै सोमानोदेसपरदेस
विषविप्रदोषकेप्रवेसहूपतेठौरठौरतेमानोभारभपदूरहोतेहैं
अमलकमलनजअमोलमधुपलोललोटलोटवैठनउडकर
कपोलदानमानकारी मानहुमुनग्यानद्विपछोडकोडयु
हिप्रहियसेवतगिरगनसंप्रियसियसियपरी तरुनकिरन
उदतभईदीपदेहमलनगईसचेहिदेवापउदैज्योकुबुयन
से चक्रवाकनिकटगईचकईमनमुदतभईजैसेनिजजो
तपायजीवजोतमासै॥२१॥वार्ता॥निरमलअमोलककम
लेकोत्यागकरकेचंचलजोभ्रमरहेकेसंवूहसंवूहहैसोहा
थीकेकपोलनपेउठकेबैठनहै जोहाथीमदकेगरवकरण
वारेहैसोमानोग्यानमेवडेजोमुनीहैयरकीसंपदाकोछो
डछोडकरकेपरवतनकेसंवूहनकोप्रगटहैकेसेवतहैजोसि
यअरिथनवारेहैं फेरसूरजकीकिरणउदतभईहैदीय
ककीदेहमलीनभईहै जैसेदयाकेसहितहूदैहैतामेग्यान
केउदेभयेतेषोटीवुधदूरहोतहै फेरचकवेकीवानीतेचक
वीमनमेप्रसंनभईनेहगईहै जैसेआपनीजोतकोपायके
जीवकीजोतप्रकासहोतहै॥ ॥अरुणतरुणकेविलास
एकदोपउडुअप्रकासकलकैसेसनईसदिसनअनदाषै दी
सतआनंदकेदतिसवितहुतमंदचंदज्योप्रवीनजुवनपुर
षहीनदीनभाषे तिसचरचैकेविलासहासहोतहैनिरसम
रकेप्रकासजासनासततमभारे फूलतसुमसकलगातअ
सुमहैतसेविलानआवनज्योसुषदरामनामसुषतिहारे॥
॥२२॥वार्ता॥फेरलालजोसूरजहैताकेविलाससोएकहै
कुमारेरहिगयेहै कलजुगमेसंतनकोजैसेकहूंकहूंईस्वर
दिसानकेअंतरायनहै हेआनंदकेमूलरामविनाचंद्रमा
मंदछविकोदिषाईदेतहै जैसेचतुरअसुरसरहीनेहीनहुये
दीनसोभासतहै फेररातकेविचरनवारेजोहैराकसचोरआ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

द्विनिनोके संवूहनके जोहैहास विलासनेदूरहोत हैं जैसेसरज
केप्रकासके भयेते मारेअंधकार दूरहोतहैं औरफुलन भयेहैं
समनोके सरीरते परवन सेअसुम दूर भयेहैं जैसेनुमारे श्री
रामनामके मुषमेंआयेतेहोवे॥ सारोसुक सुभमरालकेकी
कोकलारसालवोलनकलपारावत मूरभेदसुनिये मन
हूमदनपंडतनिरिषमिष्यगुननपंडनकरअपनीगुदरदेनपठ
येप्रभुसुनीये सोदरसन मंत्रमित्र दिसदिसवे मंत्रवचित्र
पंडनमुनकविप्रसियसियसिपपारे रामचंद्रचंद्रओरमा
नहूचितवतचकोरकुवलयजलयजोरचौपचित्तमारे॥२३॥
वार्ता॥ ऐरसारकातेजेतेसुमहंसमोरकोकिलाअरपाराव
तक्याकवूतरयेहूरसभरेवोलतहैं सोआपविचारियेसोमा
नोकामदेवरूपीजोपंडतनिरिषहैताकेअपनेसिष्यगुणसोसे
भावमानकरकेअपनीषवरदैनकोभेजेहैं सोहेनाथसवण
करीये परमाईअरतिनोकेपुत्रअरवजीरअरमित्रअरदि
सादिसाकेजोप्रसिधराजाहैं अरब्रह्मिय जोपंडतमुनकवीस
रहैंअरसिपजनहैंतेसमद्वारपैठाहैहैं सोश्रीरामचंद्रजू जो
चंद्रमाहैतिनोतरफमानोंचकोरदेषतेहैं अरपवासमुद्रके
जलकेजोरविषेचौपकोचित्तमेंवढायेहूयेकुमदनीकयाके
मिश्राहैं॥ ॥नचतचतुरचिहपकजाचकगुनगनअने
कचारनमांगयअगाधविरुदवंदटेरे मानहुमंडूकमोर
चातकचैकरतसोरतडनवसनमंजुतछनस्यामहेतनेरे॥
केसवसुवचनचारजागेदसरथकुमाररूपध्यायज्यायली
नजनजनलथलऊकके वोलहसविलोकविलोकवीरदा
दानमानहरीपीरपूरेअभिलाषलाष भांतभांतलोकलो
कके॥२४॥वार्ता॥ सुंदरताकोरचतेहूयेपकयासमेंमेनाच
तेहे अरजाचकअनेकगुणोकेसंवूहनकोकहितहैंअरअ
नेकजोचारणमांगपवदीजनहैंसोविरदकोटेरतहैं सोमा

202A तोमंडुकडडूअरमोरपपीहेयाकेसंबूहसोरकरतेहैं कौ
वीजुरीपीनवस्त्रकेसंजुगतजोमेघनमेस्यामअंगपहेंति
नकेवासतेनवग्रेसतेनेकेसुंदरवचनसुनकेदसरथकेपु
त्रश्रीरामजूजागतेभयेजबजलथलकेअस्थानोकेजो
वेजीवसेभूपकोपिवायकेजिवायलीने फेरबोलकेअ
हसतेहूयेदेषकेदानमानसोश्रीरामजूनेसभकीपीरादू
रकरी अरलाषनरैतरैकेलोकनकेअभिलाषपूरणकीने
दोहरा॥ जागतश्रीरघुनाथकेबाजनबाजेद्वार निगरनगा
रेनगरकेबजेएकहीवार॥२५॥ वार्ता॥ तबश्रीरामजूके
जागतेहूयेद्वारमेबाजेबाजतेहूये अरनगरकेगारिडोकेसं
बूहएकहीवारबाजतेभये॥ मरहठा॥ दिनदुहुनिकेदनश्री
रघुनंदनअंमानअपप्जान अईनबनारेभूवनसिंगारीफू
रीलीनेपान हास्येनकरतहेमतिनहरतहैवीरवोरथनसार॥
तजसजविषभषनप्रतिकेडूकनडारतग्रहतअपार॥२६॥
वार्ता॥ दिनदिनप्रतिदुहूनकेनासकरणवारेजोश्रीराम
जूहै सोअंगागनमेआवतेभयेतबहीसुंदरईस्त्रीआवती
भईफूलनसोसिंगारीहूईसवरणकीफारीकोहाथमेलीयेहू
ये तबरामजूहासुनकोकरतहैकेएरमेवोरवोरकेअर
मनोकोचुरावनहैं फेरसूकनकथासुषमोचनकीविषकोसज
सजकरकेप्रतिकेडूकयाकुरलीकुरलीकेप्रतिजलकोडारते
है फेरग्रहनकरतेहैं॥ दोहरा॥ संध्याकरिरविपायपरवाहरआ
आयेराम गनकचिकितसनआसिषावेपुनकीयेप्रणाम
॥२७॥ वार्ता॥ फेरसंध्याकरकेश्रीसूरजजूकेचरणोमेपरकेश्री
रामजूबाहरआवतेभये तबजोतसीअरवैदौनेआशीर्बाद
कीयेअरभाईउनेप्रणामकीउ॥ छंद॥ सुनशत्रुमित्रकी
नृपचरित्रकीरैयतिरावनवात सुनजाचकजनकेपसुपछि
नकेगुनगनअनअबदात सुतननमंजनकरसनानिदानकर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पूजे पूरणदेव मिल मित्र सहोदर बंधु सु भोदर कीने भो
जन भेव ॥२८॥ वार्ता ॥ तहां मत्र अर मित्र की सुन के अर राजि
ऊ के चरित्र की अरु रैयत की अरु रावनत्व्यान्याव की वारता
सुनके फेर जाचकजनो के अरु पसु पक्षीऊ के उजलगुनो
के संवूह सुनकरके फेर सरीर को मंजनकरके अरु सनानतें
दानकर कै पूरणदेव जो श्री विस्नु तिनकी पूजन करी फेर
मित्र अर सहोदर का एक उदर के भाई अर संबंधी कुटं
वी इन सो मिलके भोजन कीये ॥ दंडक ॥ निपट नवीन स
भरोगहीन बहुछीरलीन पीनतन मन नयन हरन है तामे
मठीपीठ लगे रूपके पुरन ईठ स्वरन सिंगजुत नित आनं
द भरत है कांम की दोहनी स्याम पाठ की ललिन लोई चेटि
न स्यो पूज पूज पायन परत है सो मन सनेहीयान रामदे
व दिन प्रति गो सत सहस्व दे दे भोजन करत है ॥२९॥ वार्ता ॥
जो गऊ अत्यंत नवीन है अर सभरोगन ते रहित है बहुते
दुगपसो मिली हूई है अर अस थूल अस थूल जिनके त
न है देषते हूये मन तन सो जो आपने पुत्रन को मोह लेत है
तिनकी तो वैसी पीठ मही है अर रूपके पुर है अर स्वरणसिं
गो के जुगत है जिनको देषके द्रिष्टि नित आनंद पावत है
कांम की दोहनी है स्याम रेसम को सुंदर लोयन्या णो है ॥
चेटन सो पूज पूज के तिनो के चरणो मे परत है सो ऐसी हजा
र गऊ अन को देदे के दिन दिन प्रति सनाध्यन को फेर श्री
रामजू भोजन करते है ॥ तोटक छंद ॥ तिह भोजन श्री रघु
नाथ करै षटरीत मिठाईन चित्त हरै पुन षीरसु सो विधि
भांत बन्यो तकि तीन प्रकारन सो मसन्यो ॥३०॥ वार्ता ॥ त
हां श्री रामजू भोजन करते है छै प्रकार की मिठाई है षीर
का भोजन चार तरै को बन्यो है छाछ के सो भावान तीन
प्रकार के है ॥ ॥पट भांत पहीजवनायर की पुनपांचसु

203A

विंजन रोनरची विधि पंच सुरोदन मांगत है विधि पांच वरा
अनुराग तहे ॥ ३१ ॥ वार्ता ॥ छै प्रकार की पहीन क्या दाल
वनाई है फर पांच तरे के विंजन पांच तरै की रोटीन को मां
गत है अर पांच प्रकार के वरान सों सनेह करत हे ॥ ॥ विधि
पांच सि धान विनायक कीये पुन छीर सु ये विधि मांगलीये वि
धि दोय पछावर आन दीये पुन फार सु द्वै विधि स्वाद की
ये ॥ ३२ ॥ वार्ता ॥ पांच प्रकार के चावल वनायके कीये हे अर
दुइ प्रकार को दुग्ध मंगलेत हे द्वै प्रकार की पछावर क्या को
जो आनी हे द्वै प्रकार की घने स्वाद की फार क्या वूंदी भई है
॥ दोहरा ॥ पांच भांत ज्यो नार सम षट रस रुचिर प्रकास ॥
भोजन के रघुनाथ जू वोले केसव दास ॥ ३३ ॥ वार्ता ॥ पांच प्र
कार की ज्यों नहारे छै प्रकार के सुंदर रस इनको भोजन क
रके श्री राम जू दासन को वुलावत भये ॥ हरलीला छंद ॥
वैठ वि सुथ अ हि अंगन अग्र जाय देषी वसंत रितु सुंदर मो
ददाय मौले रसाल कुल कोमल केलकाल मानो अनंग
धुज राजत है विसाल ॥ ३४ ॥ वार्ता ॥ फेर पवित्र जो चर है ता
के अंगन में जायके श्री राम जू आगेही वैठत भये तहां आनं
द दायक जो वसंत रितु सो देषी जामें आवन के संवूह मोरे है
तिन पै कोकिला है औ सो कौ ठा समें देख्या सो मानो कामकी
धुजा सोभत है ॥ ॥ फूली लवंग अवली लतिका विलोला
फूले जहां भ्रमर विभ्रव मत्त डोल वोले सु हंस सुक कोकिल
के किरज मानो वसंत भट वोलत जु य काज ॥ ३५ ॥ वार्ता ॥
अर लौंगन की वेलन की चंचल पंगत फूली है भ्रम मै मत्त डो
लत हूये जहां भ्रम फूलत है फेर हंस तोते कोकिला मोर वो
लत है मानो जुय के निमित्त वसंत के सूरमा वोलत है ॥ ॥ सो
है पराग चहु भांग उठे सुगंध जाने विदेस विरही जन होत अं
ध पालास माल विन पत्र विराजमान मानो वसंत हिय का

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मह्हिअगनवान॥३६॥वार्ता॥अरचारोतरफजो फूलनकी
परागसो भ्रमतहै ताकी सुगंधउडतहै जिसतें विदेसमे विर
हीजन अंधहोतेहै अरविनपत्रोके पलासकी पंगत विरा
जमानहै सो मानो वसंतकाकामने अगनवानदीउहै॥
॥विजयछंद॥ फूलेपलासवलासथलीवहुकेसवदास
प्रकासनथोरे सेषअसेषमुषानलकी जनुज्वाल्लविसा
लवलीदिवडोरे किंसुकश्रीसुकतुंडनकी रुचिराचेरसा
तल्लमे चितचोरे चिंचनचायेचहूदिसडोलनचारुचके
रअंगारनमोरे॥३७॥वार्ता॥विलासकीथलीमेजोपलास
फूलेहै तिनोकेथोरेप्रकासतही मानोसेसनागजूकेसए
रणमुषोके अगनकी स्वरगकीतरफवडीज्वालकपालादच
लीहै प्रिथवीमेजोकेसूपरैचित्तकोचुरावतहै सोसोभायमा
नतोतेकीचुजकीछविसोरचेहै तहांसुंदरजो चकोरहै सो
तिनमे अंगारनकेमुलावेचे चुनसोद्दचायकेचारोतरफफि
रतहै॥ मोकनकिदामछंद॥जरेविरहीजन जोवनगान प
रेउरसीनलसेजलजात मानोमनरमाननिकेरघुनाथ॥
पसारदयोजनुमनमथहाथ॥३८॥वार्ता॥तिनकोदेष
केविरहीजनोके सरीरजरेहै सोउरमैसीनल्लसेकमलोको
धरितहै श्रीरामजूकहितहै मानोमनरूपीमीननकोका
मदेवनेहाथपसारदीउहै॥ ॥जितेनरनागरलोगवि
चार सवेवरनेरघुनाथविहार किधोपरमानंदकोयहिफू
ल विलोकतहीजुहरेसमसूल॥३९॥वार्ता॥जिततेनग
रकेलोगहैतेविचारकेश्रीरामजूको वरननकरतहैदेष
करके यहिकिधोपरमआनंदकेमूलहै क्यौजाकेदेषते
हीसमसूलनासहोतहै॥ ॥किधोवनजीवनकोमधमा
स रचेजगलोचनभौरविलास किधोमधुकोसुषदेनअनं
ग पत्योमनमीननकारजअंग॥४०॥वार्ता॥अथवास

204A

भजीवनके प्रसंनकरणको यहि चेतमास है जगतकेने
त्रजो भ्रमरहे तिनकौ जानेविलासरच्यो है समदेषमुद
नहोतहै अथवा यहि वसंतकै कामदेव मुषदेतहै ताने
मनरूपी मीननकेकारज सरीर धरयो है॥ ॥किधौं रतकी
रनकेलनिकुंज व सेगुनपछ्छनको यहि पुंज किधौंसरसीर
हू ऊपर हंस किधौं उदयाचलके सिरहंस॥४१॥वार्ता॥
अथवा प्रीनरूपी बेलनको यहि केलनिकुंज है अथवा से
पूरण गुणरूपी पछ्छीनको संवूह है अथवा कमलपै हंस है
कमलसो मंदर हंससो राम कै उदयाचलकेसीसपै सूरज
है॥दोहरा॥प्राची दिसतें ही समै प्रगट भयो निसनाथ व रत
नता हि विलोकके सीतासीतानाथ॥४२॥वार्ता॥तिही समैमे
पूरवदिसामे चंद्रमा प्रगट भयो ताको देषके सीताजू केप्रति सीता
नाथजू कहिन लागे॥फूलनकी सुभगै दनई सूंधसची जनु डारद
ई दरपनसो ससि श्रीरतिको जनु आसन काम महीपतिको॥
॥४३॥वार्ता॥यहि फूलनकी नवीन सुभगै दहै सो मानो इंद्राणि
ने सूंघके डारदई है यहि चंद्रमा सो भावानरती को दरपनसो है
अथवा कामरूपी राजको सिंघासनहै॥ ॥मोतिनको सुन
भूषमनो भूलगई रविकी त्रियमनो अंगदको पितु सो सुनि
ए सोभत तारहि संगलीयै॥४४॥वार्ता॥अथवा मोतीनको
कान भूषन है ताको मानो सूरजकी इस्त्री भूलगई है अरु अं
गदके पिता बाली समय हि सुनीता है कौ तारा को संगलीयै
यहि सोभत है अरु वहि बालि तारा इस्त्री को संगलीयेसोभत है
॥भूपमनो मव छत्र धरयो लोक वियोगनको विडरयो देवन
दी जलरामकह्यो मानहु फूलसरोज रह्यो फनु किधौं नमसिं
धुलसे देवनदी जलहंसवसे॥४५॥वार्ता॥मानो कामरूपी
राजाने यहि छत्र धारण कियो है जाने वियोगीलोगनको हटा
उहै मोरे रजमे विडोगीको ऊना रहे अथवाआसगंगाकेज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लमेयहिकमलफूलरह्योहे केंग्राकासरूपीसमुद्रकी
फेंगसोभतहै केंगंगाकेजलमेहंससोभतहे।।दोहरा।।
चारुचंद्रकासियमेसीतलसुखकसनेज मनोसेसमयसोभि
येहरिनाधिष्ठतसेज।।४६।।वार्त्ता।।ग्रथवासमुद्रमेनिरम
लग्ररसीतलनेतेजकेसहितसुंदरचांदनीहै ग्रथवा
यहिसमुद्रसेसनागमेसोभतहेकौविस्नुकरके ग्रधिष्ठत
सेजजाकीग्ररचंद्रमाहरएक।।रामदंडक।।केसोदास
हेउदासकमलाकरसोकरसोधकग्रदोषनापनमोगुनना
रीये ग्रंम्बितग्रसेषकेविसेषभावबरषनकोकदनमोदंचं
डषंडतविचारीयै परमपुरषपदविमुषपरूषरूषसमुष
सुषदविदूषनउरधारीये हरिहैजू हैयमेनहरिनहरिन
नैनचंद्रमाचंद्रमुषनारदनिहारीये।।४७।।वार्ता।।हरिहैरि
हियमेनहरनहरननैनीचंद्रमुषीचंद्रमाननारदनिहारी
ये श्रीरामचंद्रजूचंद्रमाकोदेषकेउरमेसोपरतरकसकरतहे
सीताजू पूछेहे रामजूसो यहिचंद्रमाहे रामजीकहितहे
नकोग्ररथनही फेरकहितहे यहिस्यामताहेपैहे साका
लोहरनतोनहीहे रामजूकहितहेहे सीतेनहरनहरननही
हेतोकहाहे हिदेमेहरभगवानहैजाकेग्रेसेनारदजी
कोनिहारीये एकभगवानकीस्यामतानारदजीमेदेषी
येहे नारदजीकेसेहे जिनकोकरहाथकमल रंगनाना
केकरसोउदासहे वरंगनाकेपति ग्रहिननहीकरतहेहे
ममेग्राकरनामसंग्रहकोग्रोषनकोकिंवाजाकोकर
कमलालछमीताकेग्राकरसंग्रहसोउदासहे संपदके
हाथसोनहीछुवे किंवाजाकेकरकमलकेग्राकरसंग्रू
हतिनसोउदासहेताकोभीनहीछुवैलछमीकोनिवासजा
नके ग्रथवालछमीकीषानजोपदीनर तिनसोउदा
सहेसनेहननहीकरत फेरनारदजीकेसेहैं सा

205A

तापत्राक्रिष जो दोष पाप अपराधता सो भयो है जो तापदु
ताको सोषक मिटावनहारे है तम सो गुन ताके ये तमोगुन के
कारज को यथापान ताको नारदजी तारै है ताहे है किंवा
तमोगुण तातमोगुणपनो ताके अरपनु पनारदजी है नारद
जी को स्वपन मे भी देषे तो भी तमोगुन नहीं रहे फेर नारदजी
कैसे है असेषक हीये संपूरन जो आश्रितमो छ सालोक्य आ
द पांच प्रकार के ताको जो विसेष भाव क्रिया ताको वरषत है दे
त है जा हि क्रियान के करै मोछ है यता को सिषावत है जैसे
ध्रुव को सिषायो फेर नारद नारदजी कैसे है कोक कामसा
स्त्र ताको न दस वद ता सो उपजे जो मेद आने द ताको चं
ड हीये उग्र षंडन को अरथ षंडन करनवाले है अथवा को
पसे षंडन करनवारे नास करनवारे है यही विचारिये है
कुवेर के पुत्र ले गायन सहित मत्त होय विहार करै थे ति
नै सराप दियो फेर कैसे है परमपुरष जो भगवान तिनके
जे पदचरन तिन सो जो विमुष लोग है तिन सो पुरुष कठो
र है तोर जा की रूषीन जरतादि देषत है औ भगवान सो सं
मुष जे विदुष पंडत है तिन के सुषद है तिने उर मे धारे है किं
वा भगवान सो जो संमुष धारे है सोई विदूष है और अग्या
न है यही वात जान कै उन विषै उर को मन को धारे है असे जा
निये या के हीये मे हरि श्रीरामजू है हरन नहीं है याते चंद्रमा
नहीं नारद है ॥ अथ चंद्रपक्ष ॥ चंद्रमा कैसे है कमल के आ
कर सं वूह तिन सों अथ वा आकर क्याषान तिन सो जो के
कर किरन उदास है कमलन को नहीं प्रकासे है प्रदोष क
हीय संध्या ताहि विषै सूरज को जो है तापता को सोषक
दूर करनवारे है किंवा संध्या को औ तापको सोषक है ॥
फेर तम जो अपकार ताके जे गुन लोकन को अपकरने
ताको तारिये है ताहि येहै संपूरन आश्रित ताको विसेष भा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं सटी २०६ 206 वसो विसेषचाहसो वरषतहे क्योंग्राषधोडोलोकताके
दिनकोतापमिटैयहिसेषभाव अंघ्रिनके याकी ठौर अंघ्रि
त्रिनको ख्रेसेजानीपे सलेषमे दोषनहीं अरथ सो विभग
नफिरजातहे कोकनदआरकतकमलताकोजो मोदता
को चंडतीव्रजैसेहोय वाको नसयो जाय अंसपंडनकरन
वालाविचीपहै अथवा कोक क्याचकवेचकिडोके जो
नदसवद तिनको मोदको प्रचंड षंडनवारे है परमपुरषजो
है सिवजू तिनमे जाको अस्थान है फेर सिवजूते विमुष
न पे कठोर रूषके है अर सनमुषोपै सुषदायक है अथवा
परमपुरष आके जो अपने पुरषपतिताको जोपद स्था
नग्रहि किवासजा किवासके त ता सजो विमुषहै मानती
है ताहि विषपुरषहै रूषी है क्रूर जाको अरनायक सो
न४ सनमुषविदूंषको क्या समकवारलुगाइनको सुषद है
ताहितुरयारी ये है हित जानत है किवा नायकसो जो स
मुष है समकवार है ओनायक को उरमे धारे है चंद्रोदय
मे मान नहीं रहै है हरत है याते है सो ते चंद्रमा है नारदन ही है
अथवा सीताजू की सषीन हो श्री सीताजू के मन की श्री
रामजू मे प्रीत जान के सीताजू के प्रति कहित है हे म्रिग
नैनी है चंद्रमुषी यहि चंद्रमा नहीं अर नारदन ही है तव सी
जू ने कह्यो कहा है सषीने कह्यो यहि कामदेव ही ये के मो
हनवारे हरि क्या श्रीरामचंद्रजू ही है कैसे है जिनोके दा
स कमला क्यालक्ष्मी अथवा सोभा ताके करदंड सो उदा
स है क्यों जिनपे लोभमोह नहीं व्यापत फेर कर क्या हाथी
की सुंडके अग्रभागको जो भयाघाप्र दोष क्या बडो दुष
तं दूषके ग्रसनते ताके दूरकरनवारे है अरतमोगुनके ता
डना करनवारे है फेरसंपूरण अंघ्रि त्रिनक्या मोक्ष के भाव
को वरषावत है फेर कोक क्या चकवे भ्रां के जो है आने

206A

दसवद तिनकोचंड क्या कोपसो षंडनकरनकारेहै रातमै
विष्णु रनको सापदीउोहै अथवाकै क्या प्रिथवी अरक
क्या ब्रिह्मा अरन क्या तिनके संवधी देवता इनकोद क्या
दाताहै सो दृष्यानंदकेकौ इनके विनैने अवतारधारनक
रके इनके दुषदूरकीयेहै इसीते चंडक्या प्रचंडराक्नस आद
कोकेषंडनकरनवारे विचारीनेहै अथवा चंडक्या कालके
षंडनवारेहै के परमपुरषहै क्या अनाद पुरषहै तिनके
चरणोनेजेवेमुषहै तिनको कठोररूषकेहै अरजो समुष
है सरणागत तिनको सुदायकहै अथवा परमपुरषक्या
परमातमाको जोहै पदग्यानमारग तिसते अथवा परम
पुरषपदक्या श्रीभगवानके चरणोने अथवा तिनके पद
अस्थान वैकुंठते जो नमेवेमुषहै इनोको सापनहीकीये
जिनेभे अरकठेरपुरषकेहै क्या नामसी असुरहै तिन
कोभीसनमुषहूये नेजुधमैसुंदर जोषक्या आकासजा
कापरमव्योमकहीनेहै जहांग्यानीजनजानेहै ताकेदे
क्यादेनवारेहै परमपुरषक्या वडेपुरष यहिहै पदक्या
विरदजिनको फेरवीक्यानष्ट भयोहै मुषजाको अैसाजो
कंवधराकस कठोररूषको ताके सनमुषहूये तेताकोप
रमव्योमकेदायकहै फेरविदूषक्या पंडतजनोने उरमैधा
रनकीयेहै अैसेश्रीरामजूहै फेरतहां श्रीरामजूके अौ
रकीजो सषीहै सोचतुराईसो सीताजूके प्रति अरण फेर
के श्रीरामजूसो कहितहै हेहरे हेश्रीरामजू इनकेजो
हीएमैहै कहास्यामता सोनहरणवक्या म्रिगनहीहैनै
कहाहै जैसे सीताके हरणसैनैनहै तैसेही यामैभी हरन
सैनैनहै अथवाहै म्रिगनैन श्रीरामचंद्रजू याकेहीयेमै
हरक्या श्रीरामजूहै अरहरणनहीहै याहीते यहिचंद्रमा
नहीहै चंद्रमषीजो नरश्रीसीताजू कैसेदक्या हातासो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

है तिन को देषीयत है ऐसे हैं के सो क्या के सब श्रीरामजू तिन
की दास हैं अरु जाके आगे कमलो के जो आकार क्या सं
कूह सो उदास है मुषनेत्र हाथ चरण अंग की सोभा ते अथ
वा लछमी जु के संकूह जाके आगे उदास है अपार सोभा सो
फेर सोकर सोक क्या सोक की भर क्या अगन के सोषन वा
रे भगतन को सोक नहीं है न देत फेर वडे जो दोष क्या अप
राध अरु तिनोताप अरु तन सो गुन इनके नास करन वारे है
फेर संपूरण अंग त्रितन से जो मधुर वचन है तिनको विसेष भा
व क्या पूरण रत अभिप्राई भाव सो वरषावत है अरु कोक सा
स्त्र के सब दन मै जिनको आनंद है फेर वड जो है कोपमाना
दि को काता को जामै षंडन विचारीयत है अथवा वंड जो
रावन आदिक तिनके षंड मै जिनके विद्या विषय आचा
रण है क्यो तिने नेहीं नास करयो है फेर परम पुरष जो श्री
रामजू तिन मै जाको पद क्या अस्थान है पीय के हीय मै व
सत है फेर जे वे सुष है तिनको कठोर रूप की है जो सन सुष
सरण आय है तिनको सुषदायक है अरु पंडतो ने जो उर मै
धारन करी है ॥ दोहरा ॥ आई जान वसंत रितु वन नि वि
लोकन राम । घर निय सो सीता सहित रति समेत जनु काम
॥४८॥ वार्ता ॥ फेर वसंत रितु को आई जान कर के वाग के
देषन को श्रीरामजू प्रिथवी पै चलते भये सीताजू के सहि
त जैसे रति के सहित कामदेव होवे ॥ इति श्री इंद्रजित वि
रचितायां श्रीमन सकल लोक लोचन चकोर चिंतामन श्रीराम
चंद्र चंद्रिकायां वसंत विलोकनेनाम त्रिंशमो प्रकाशः ॥३०॥
॥ दोहरा ॥ एकतीसवे प्रकास मै वन दरसन सविसेष सीय स
षी सिंगार को वरनन सुक मुष लेष ॥१॥ वार्ता ॥ एकतीसमै
प्रकास विषै वाग के देषन अरु तोते के मुष सो सीताजू की
सषीन को सिंगार वरनन होयगो ॥ त्रिहल रूपक छंद ॥ भोर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

207 रस्ताम हैगये सुराजलोग मध्य कागवाजस्थान येजु एक
इगनव्यसानुराग सुभसोभ वारहीनअंसुरेनुके डहार
सीषसीषलेतहै त्रिचित्त चंचल प्रकार॥२॥वार्त्ता॥ सवेर
के हुये तेही सुंदर जोराजलोक है सोबागमेंजाते भये फेर
सहित सनेह के श्री रामजू ये ईगुनु व्यक्या चेष्टा के जानवे
वारे एक घोडा ल्याहा जो उजलहै अरु राजा के आगे अस
रेण कया सूरज के जो वडे घोडे है सो सुंदर सो भा करहीन
होते है अरु चित्त में चंचलता के प्रकार तिसो ते सीष सीष
लेत है॥तोमरछंद॥ चढि वाजऊपर राम वनको चलेन
जधाम चढि चित्तऊपरकाम जनु मित्र के सुनताम॥३॥वा
र्त्ता॥ अेसे घोडे पर श्रीरामजू चढ के घर को छोड के बाग को
चले सो मानो अपने मित्र जो वसंत है ताके नाम सुनकर चि
त्त मे चढ के काम चल्यो है॥ ॥मगमै विलेवनकीन वन
राज मध्य प्रवीन सम रूप भूप दुराय जुवती विकीयजाय
॥४॥वार्त्ता॥ रसते मे देरना करि बाग की पांत मे राजा के रू
प को छिपायके इस्त्री ये जाय करके देषिअं॥ स्वागताछं
द॥ रामसंग सुक्रप एक प्रवीनो सीय दास गुन वरनन लीनो
केसपास सुभ सिंगारम तनेही दास होत प्रभु जीव संदेही
भांत भांत कवरी सुभ देषी भूपरूप तरवार विसेषी पीय
प्रेम क्रम राषन हारी दीह दुख वल षंडनहारी॥५॥वार्त्ता॥
श्री रामजू के संग एक चतुर जो नायका सो श्री जानकी दासी
न के गुन कथन मे लीन भयो के सस्वच्छ सुभ है अरु स्याम
है तेसचिक्कन है हे प्रभु श्री रामजू जोको देषके विदेही जी
व भी दास होत है अरु तरैं तरैं की सुभ चांमर है सो रूप जो
एक राजा है ताकी तरवार है पीय के प्रेम के क्रम की रा
षन वारी है वडो जो विरहको दुष ते छल है ताके नास क
रन करन वारी है॥चोपई॥ कियो सिंगार सरित सुषकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
द्रिका
२०८
208

214

चंचलता निवहावनहार कंचनपत्र पातसे पात मनो सि
गारलोकके जात ॥६॥ वार्ता ॥ अथवा यहि सिंगारकी सुष
कारी नदी है चंचलतासे वहनवारी है तामें स्वरणके पत्रन
की जो पांत है सोई तांकी पोही है सिंगारलोकके जानकी
सीसफूल अरु वेंदा लसे भाग सुहाग मनो सिर वसे फवनि
चमक चिंत चोपनी मानो दमकत घनदामनी ॥७॥ वार्ता
करसी सपै जो सीसफूल है सो मानो सुहाग सीसपै वसत है
अरु वेंदासो मानो भाग सोभत है अर पान्हीनकी चमक चि
तकों चोपाइमान करत है मानो मेघनमें दामनी दमकती है
सेंदुर मांग भरी अति भली तिनपै मोतीनकी आवली गं ५८
ग गिरा तनसों तनु जोर निकसी जनु जमुना जल फोर ॥८॥
वार्ता ॥ सिंदूरसों मांग भरी हूई है तापै मोतीनकी पंगत है ॥
सो मानो गंगा अर सरस्वती सरीरसों सरीर जोरके जमनाज
लको फारके निकसी है ॥ ॥ सीसफूल सिर जस्यो जराऊ
मांग फूल सो है सुभ भाऊ वेनी फूलनकी वरमाल भाल
भले वेंदा जुत लाल ॥९॥ वार्ता ॥ सीसपै सीसफूल जराऊ
सो जस्यो हूयो है अर मांगमै सुभ भावसों फूल सोभत है फूल
नकी चोवर है अर स्रेष्ठ माला है अर लालीके सहित भा
लपै भले वेंदा है ॥ तमनगरी परते जनपान वैठे मनो वार
हू भान भ्रकुट कुटल वहु भांयन भरी भाल लाल दुत
दी मन षरे ॥१०॥ वार्ता ॥ सो मानो राहुकी नगरीपै तेजके घ
रवार हल सूरज वैठे है कैसे राहुकी नगरी अर वेंदा सूरज है
भ्रकुटी वहुत भावनसों भरी हूई कुटल है मसतकपै अ
त्यंत लालसों भासोभत है ॥ ॥ म्रिगमद तिलक रेषजुग वनी
तिनकी सोभा सोभत घनी जनु जमुना षेलन सुभगाथ प
रसन पितु हैपसारे हाथ ॥११॥ वार्ता ॥ कसतूरीके तिलक
की द्वै रेषा वनी है तिनकी घनी सोभा सोभत है मानो समक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

थाकी रिजमुनाषलतहैंताने पिताके सपरसकरनकोहाथ
पसारेहैं॥ पंकजवारकका॥ लोचनमनकुमनोभवजंत्रित सु
जगडूपरमनोहरमंत्रित सुंदरसुषदसुअंजन अंजित॥ वा
नमदनविषमोहियरंत॥१२॥ वार्ता॥ अरुनेत्रसोंमानोकाम
देवकेजंत्रहैं द्वैजोऊपर भृकुटीसोमानोमंत्रहै फेरुनेत्रसुंद
रहैं अरुसुषदायकतेअंजनसोअंजितहैं तिनकोकटाछसो
मानोविषसोंविश्रामकीयेकामकेवानहैं॥ मुषसुषदनासक
नजगमोहीयो मुकनाफलनजगतसोहियो आनंदज्यो
लनकामनोतूल जनुसेयतज्यौ ससिसकलफूल॥१३॥
वार्ता॥ फेरमुषपेजोसुषदायकनासकाहैसोजगकोमोहत
तहैं अरमोतीफलोकेसहितसोभतहैं सोमानोफूलकेसहि
तआनंदकीवेलकेसमानजोनासकातांतेकलाकेसहितजो
चंद्रमातिसनेसेयकेफूलत्यागदीयोहै॥ ॥जनुभालतिल
करचव्रितनलीनविपदीपप्रकासनिदीपदीन ताटंकज
टतमनिघुतिवसंत समपकचकेरथसेलसंत॥१४॥ वार्ता॥
फेरमसतकपेजोतिलकहैसोसूरजकीरीतमैलीनहै दीप
कासोभाकेरजाहै जानेआकासमेसोभादईहै अथवा
सोभारूपीजोरजाहैताने आकासकोदीपकदीयोहै फेर
मणिजोभ्राजतहैहूवेतनोठेकानोमेकसतेहैं तेसमपकहैंपही
आजाकेरथकेओसेसूरजकेसमानसोभतहैं॥ ॥अतिफू
लमुलीनसहितफलकेलीन फहिरानपताकाजनुनवीन अ
तिरूनअरूनद्विजदूनलसंत जनुदाडमिवीजनकोहसं
त॥१५॥ वार्ता॥ अत्यंतजोफुलमलीवपापत्रिउकीवालि
आहेफलकमेमिलीहूईसोमानोपताकाफहिरतहैं फेर
इछीनकेदंतोकीलालसोभासोभतहैवीरीसों सोमानोअ
नारकेवीजनकोहसतहैं॥ ॥संध्याहिडकासनिसमदेव कै
केवामदेवकीकरनसेव सुभतिनकेसुषमुषकीसुवास भय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उपवन मलिया चल निवास ॥ १६ ॥ वार्ता ॥ अथवा ब्राह्मण
संध्या करत हैं कै सरस्वती की सेवा करत हैं तिनके सुख कों स
हि जकी जे सुगंध है ता सो वाग मलयाचल के निवास सम भयो
है ॥ चौपई ॥ विदु मुसकान लता मनुहरे बोलन बोल फूल
से फरे तिनकी बानी मुनि मनुहारि सुन बानी वीना य रिउ
तार ॥ १७ ॥ वार्ता ॥ फेर कोमल जो मुसकान है सो मानो मन के ह
रनवारी वेल है बोल जे बोलत है सो तिनके फूल से फरते हैं फेर
तिनकी वानी मुनी स्वरों के मन के हरनवारी है जाको सुन के स
रस्वती जी ने भी वीना उतार धरी है स्वरगा को ॥ ॥ लटके अल
कि अलक कि चीकनी सूक्षम अमल चिलक सें सनी नकु सो
नी दीपन दुत जान पाटीर जन हिये हित आन ॥ १८ ॥ अलके
जो लटकी हैं अलक कहा माथे पे सो चीकुनी हैं सूक्षम हैं निर
मल हैं अर चिलक सों मिली हुई है ताक कों जे भांती है ताकी
दीपक सी सोभा है पाटी कितहां रात सी सोभा हो ये मे आनो
जोनव छावत दसा उसार मानो स्याम लसी कवसार जनु क
व हित रविरथ कों म स्याम पाट की डोरि डोर ॥ १९ ॥ वार्ता ॥ ता
मे स्याम जो नथ को डोरा है सो मानो पीक पसारी है सो दीपक को
उसार के वती जो नव पावत है यहि अरद सुन क्यों वार्ता को सीं
क ऊसारत है वाती दीपक को नहीं उसारत है अथवा सुक के ण
स रा घन वास नें सूरज ने रथ के अंत सो स्याम पाट की डोर वांधी है
क्यों यहि अ सुर सहाय क असुरो को ना जाय जिनावे मो मी सुक
तनों रे सूरज डोई सो डोरी कर राख फूल रथ ॥ रूप अनूप रुचि
र रस भीन कनुरनै ननकी पुतरीन नेहुन चावत हैं नरघना
थ मरकट कुटल लीये जनु हाथ ॥ २० ॥ वार्ता ॥ रूप जिनको अ
नूप है अर सुंदर रस में भरी है ऐसी जो नैनों की पूतरी है सो पा
तुर है ताको काम के उसजावन हैत नेहन चावन है हाथ में नी
ल मणी की लाठी के लीये हुये नथ की स्याम डोरी लाठी है ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

209A दोहरा॥गगनचंद्रतेअतिवडोत्रिमुषचंद्रविचार दई विरंच
विचाररचितकलाचोगुनीचार॥२१॥वार्ता॥आकासकेचंद्रमा
तेअत्यंतवडेइस्त्रीनकेमुषचंद्रमाहै इसीतेब्रिह्मानेविचारके
रचे तिसतेचौगुनीकलाचोद्दहकलादईहै॥दंडकछंद॥दीनो
ईसदंडवलदलवलद्विजवलतपवलप्रवलसमेतकुलवलकौ॥
केसवपरमहंसवलवहुकोसवलकहाकहौवडोवडाईदु
रगजलको विधिवलचंद्रवलश्रीकोवलश्रीवलकरतहैमि
त्रवल्लरछापलपलकौ मंत्रवलहैनिजानअवलामुषनआ
ननिकेहैछिडायलीनीकमलाकमलकौ॥२२॥वार्ता॥जैसे
राजिउकेदंडदेनकोवलहोतहै तैसेहीइसकमलमेभीइस्व
रनेभेहरकेआस्वेरहितहै याते दंडवलदीउहै फेरतिनकेदलो
कोयाकेदलपत्रनकोवलहै तिनकेद्विजक्या ब्राह्मणोकोया
केभ्रमरोकोवलहै तिनकोएरनपेकोयाकेजलमेरहिनरू
पतपकोवलहै फेरदोऊनकोकुलकेवलसमेतप्रवलकीउ
वे४ है तिनकेसयाकेसवहै तिनकेपरमहंसनकोयाकेहंसनको
वलहै तिनकेकोसक्याषजानेआकावलयाकेकोसमीन
रको तिनोकेवडीवडीवडिआईदुरगजलक्याकिलेनकेज
लकीकहाकहो याकेदुरगक्यादुसतरकेजानवारेजलकी
कहावडिआईकहो फेरतिनकोविधक्या भागरूपब्रिह्माको
वलअरश्रेषपोमेअत्रितवरषननेचंद्रमाकोवलअरलछ
मीकोवलतेविस्नुकोवलुअरमित्रनकोवलपलपलकीरछ्या
करतहै अरयाकोब्रिह्मापिताचंद्रमाभाईलछमीभेणविस्नु
मनेऊमित्रक्यासूरजभाई इनसवेंपनतेइनकोवलपलप
लकीरछ्याकरतहै यातेयहिकमलराजासमहै परएकमंत्र
केवलमोरहिनहै सोयहिवातजानकेइस्त्रियोकेमुषोनेआ
पकेकमलकीसोभाछुडायलईहै अरमुषमेभीराजासे
समवलहै दंडवलकसनूरीकीरेषाको अरपाहीआदकत

कीसोभाके दलसोंवल द्विजदंननकीउजलताकोवल न
पक्यातेजकोवल भलेकुलकीलाजकोवल हंसकीउनमगत
कोवल कंचनकेघटसेकुचसोईकोमलताकोवल दुरगमजोस्व
दसाख्वककोवलपूरविधिक्या रचनाचित्रनकरनोताकोवल
चंद्रमासीसोभाताकोवलअरसोभाकोवलअरश्रीरामज
कोवलनेमित्रजोसषीजनतिनकोवल पहपलपलकीरछ्याक
रतहै सषीनमेमेत्रकसो कैसीकुसोभाभईहै इसमंत्रवल
कीअपकाईनेमुषानेकमलजीने॥ ॥रमनीमुषमंडलनि
रषराकारमनलजाय जलदजलधिमिवसूरमेरषीवदन
दुराय॥२३॥वार्ता॥इस्त्रीउोकेमुषमंडलकोदेषकेपूरणमा
सीकोचंद्रमालजामानभयो ताते मेघसमुद्रमेवजसूर
जइनमेमुषकोछपायराषतहे॥ह्ाकलेक॥भूषनग्रीवनके
वहुभांतनसोभतहे लालसितासितपीतप्रभामनमोहनहे
सुंदरराग नकेजनुवालकआनवसे सीषनके वहुरागनके
समदासलमे॥२४॥वार्ता॥ग्रीवाकेभूषनवहुततरेकेसो
भतहे लालसुपेदस्यामपीतजिनकीसोभामनकोमोहती
हे सोमानोसुंदररागीकेवालकआनकेवहुतेरागनकेसी
षनकोआयकेवसेसोभतहे॥ ॥हरपुरसीसुरपुरदूषित॥
मुकतामरनप्रभामूषित कोमलसवदनिवनसुत्रिने अले
कारमनमोहनुमित्र॥२५॥वार्ता॥फेरवैकुंठसीग्रीवासो
भतहे वैकुंठहेदेवनकेपुरनकोअपनीसोभासेदुषनक्या
निंदतहै असेहीग्रीवामयुरतासो सूरनकेपुरनकोनिंदन
हेक्योमानमरोतेअधिकहे फेरवैकुंठवारमुकतेरूपीभू
षनकीसोभासोसोभतहे ग्रीवमेतिउोकेभूषनोकीसोभा
सोफेरतहांकोमलसवदनवारीदेववानीहे इहांकोमलस
वदवंसकेसुभायसो तिनकेमित्रनकेमनमोहनवारेभूषनहे
कावअसुपधितसोभारहे तिनसोवाहुपासकविकहे न

210A

वरंगवहु अ सोकके पत्र तिनमै राघनराजकलत्र देषहु
दंतद्युनकेनाथ हरतिकुसमके हार तिहाथ संदरअंगवि
रमंसुंदरीवनी मणिमयस्वरण सोभअनधनी॥२६॥वार्ता॥
कैसेहैकाव्यमेजेसेवरननकीयपतहैतैसेसोभाकोलीये
हूयेहै तिनकेसहित भुजाकोफाहैसोकविकहितहैं नवी
नरंगकेजोवहुतअसोकके पत्रहै तिनमेराजइस्त्रीअसेसो
भतीहै दंतद्युतिनकेस्वामीश्रीरामजूअापदेषिपे फूलनके
जोरतेहूयेइनइस्त्रिउंकेहाथहारतेहै तिनकीसुंदरअंगु
लीनमैसुंदरीसोभतहै सोमणिउंमेहेअरस्वरणकीअनंप
त जिनमेसोभाहै॥राजलोकके मनरुचरपे मानहुकामन
वसकरलपे अतसुंदरउरमेउरजात सोभाअसेजनुजल
जात॥२७॥वार्ता॥सोमनीनही मानोछविमेमिलेहूयेराज
लोकनकेमनहै सोमानोइस्त्रिउंनेवसकरलीयेहै अत्यंत
सुंदरहीयेमे जिनकेकुचहै मानोसोभाकेतालमेकमलहै
अषलरूपजलमयकरथरे वसीकरनचूरनचयभरे काम
कुवरअभिषेकनमित कलसरचेजनुजोवनमित्र॥२८॥
वार्ता॥अथवासंपूरनरूपजोजल तिसविषेकरकेराषेहै
केवसीकरणकेचूरणसंबूहसोभरेहूयेहै अथवाकामरू
पीजोकुवरहैताकेतिलककेवासतेजोवनरूपीमित्रनेक
लसरचेहै॥दोहरा॥रोमराजसिंगारकीललनलतासीराज
जिनेफलेकुचरूपफललैजगजोतिसमाज॥२९॥वार्ता॥पे
ररोमनकीजोपंगतहैसोसिंगारकीसुंदरवेलसीहैजिनमे
कुचरूपीफलफलतेहै जगतकीजोतनकेसमाजकोलेकर
के॥चोपई॥अतिसूछमरोमावलसुवेष उपमादीनीसु
कसविसेष उरमेमनोमदनकीरेष ताकोदीपनदिपतअ
सेष॥३०॥वार्ता॥फेरअत्यंतसूछमरोमावलीहै ताकोवि
सेषताकेसहित तोतेनेउपमादईहै मानोहिदेविषेजोका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मदेवकी रेषा है ताकी संपूरणसोभा सोभमती है॥ दोहरा॥ क
टकेतनत्वनजानिजे सुनप्रभु त्रिभुवनराव जैसे सुन जिनजगनके
सतअरअसत सुभाव॥ ३१॥ वार्ता॥ कमरको सारतिनेकेन ही
जानी ताहै हे तीनभवनके स्वामी आपस्रवणकरीऐ सुनवे
ही मैहै जैसे जगनके सेष्ठ अरअसेष्ठ सुभाव सुनीते है कि
इन ईनके यहिफल है देषवे मैन हीं आवत है तैसे ही कमर है॥
॥नाराजछंद॥ नितंवविंवफूलसे कटिप्रदेस छीनहै विभूत
लूटली सवै सुलोकलाजलीन है अमोलऊजरेउदार जंघजु
गमजानिजे मनोजके प्रमोदसों विनोद जंत्र मानजे॥ ३२॥ वा
र्ता॥ फेर जिनाके नितंवविंवके फूलसे है अरकटको अस्थान
अत्यंत पतरो है सो मानो कमरकी विभूतसंपूरणलूटलई
है यांते सो कमर लोकलाजमे मिली है इसते छीन है फेर अमो
लक अरउजल हे जंघ जानीते है सो मानो कामदेवके वडे आ
नंदसों आनंदके जंत्र जानीते है॥ ॥छवानकी छूई नजा
यसुअसुपमा पुरी विलोकमूलमूलजात चित्तचालचातु
री विसेषपादपदमचारु अंगुलीनषावली अलक्तजु
गतमित्तकी सुचित्तवैठकै भली॥ ३३॥ वार्ता॥ फेर छवानकी
ऐडीनकी जोउजलता अरसुपतातेमा पुरजता है ताकी सो
भाका हूउपमानतेन ही छुई जाती कथा ग्रहनकरी जाती ता
को देषके तिनोके चित्तकी चालकी चतुराई मूलमूल जाते है
फेर विसेषतासो सुपचरणकमलोकी सुंदर आंगुरीनकीन
षाकी पंगत है अलक्तनक्या महावरके सहित सो मानो मित्रके
सुंदर चित्तकी वैठक है॥ दोहरा॥ कठनभूमअतिकै वरेजा
त कजुन सुभपाय जनुमानक तनुत्रानकी पहिरे तरीव
नाय॥ ३४॥ वार्ता॥ फेर प्रिथवी तो कठन है अरमहावरके
सहित जो सुभचरण है सो कोमल है ताकी के सीसो भाहै मा
नो माणको की जो तनत्रानक्या संजोय है ताकी पगोके तरे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

211A तरिपहिरहे॥ ॥वरनवरनअंगियाउरपरे मदनमनोह
रके मनहरे अचलअतिचंचलरूचरचे लोचनचलजि
नके संगनचे॥ २५॥वार्ता॥ फेररंगरंगकी चोलीउरपरपरेहू
येहे सोसुंदरकामके मनके हरणकलीहे अररूपरवस्त्र
अत्यंतचंचलऊ विमैमिलेहूयेहे सोमानो चंचलनेत्रनके
संगनाचतहे॥ दोहरा॥ नषसिषभूषितभूषननननिपहि
सुवरणमैयमंत्र जोवनश्रीचलजानजनुबांधेरछ्याजेत्र
॥२६॥वार्ता॥ नषतेलैके सिषाप्रयंत जोसोमतेहे अत्यंत
भूषनसो सुवरणमयमंत्रहे सुवरणकिअसुंदरअराष
रमै जेसमंत्रहोतहे सोपढके जोवनकी सोभाको चंचल
जानके मानो रछ्याको जंत्रबांधेहे॥ सपूरणविजपदछंद॥
मोहनमकतिनिश्रेसी मकरध्वजपुजजेसी मंत्रवसीक
रनाजेमोहनमूरतराजे॥२७॥वार्ता॥ सोमोहनमकतसीहे
अरकामकी पुजजेसीहे अथवावसीकरणके मंत्ररूपया
रैसजरहेहे कोजिनकी मूरतमोहनीहे॥ रूपमालकाछंद॥
भालमै भवराषियो ससिकी कलासुभयेक तोषतिहउप
जावही सिदुहासचंदुअनेक मारपकविलोकके हरिजा
रकैकीयछार नैनकोरचतेकरे पतिचित्तमारअपार॥२८॥
वार्ता॥ सिवजूनेसुभमसतकमै चंद्रमाकीयेककलाराषी
हे सोतिनकोवहिसंतोषउपजावतहे इनके सिदुहास
अनेकचंद्रमाहे फेरयककामको देषकरके सिवजूने
राषकरदियो अरइनेनेनेत्रनकीकोरसो देषकरके स्वा
मीऊको अनेककामउपजायेहे॥ कछंद॥ कंटकअट
कनफटफटजात उडऊडजातवसनवसवात तऊन
तिनकेनमलषपरे मनगनअसुअंगप्रतिपरे॥२९॥वार्ता॥
तिनकेवस्त्र कंटिकोमे अटकतेहे अरफटफटजातेहे
अरपवनकेवसतेउडउडजातेहे परतोभी तिनकेसरी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रनही देषजातेहैं क्यौमणिडो के संबूहन की किरणोको अंगअंग
गप्रति धारतहैं ॥दोहरा॥उपमागनउपजायहरवगरापेसमा
र तिनहिपरमपरउपमारचिराषिकरतार ॥४०॥वार्ता॥उप
माकेसंबूह मगवाननेउपजायकैनालायकके जानकेसं
सारमैपडायदीये तिनको तिनहीकोपरमपरउपमारचकेराषी
है॥इति श्रीईद्रजितविरचतायां श्रीमनसकललोकलोचन
चकोरचिंतामणि श्रीरामचंद्रचंद्रकायांनुवर्तीजनवरनने
नामएकत्रिंशतमोप्रकासः॥३१॥दोहरा॥वतीसयेप्रका
समेसीताजूजगमात उपवनदेषनकोंकहीरचोमिल
वात॥१॥वार्ता॥वतीसयेप्रकासमैजगतकीमाता श्री सीता
जूने श्रीरामजूसों वागकेदेषनकी वारताकही॥सुंदरीछं
द॥उठिपररघुनाथअवानक जानकीकेजीयकेसुषदा
नक अैसेचलेसवकेचललोचन पगजकायुलनमनरोच
न॥२॥वार्ता॥फेरअचानकही श्रीरामजूदेष सीताजूके
चित्तकेसुषदेनवार तवसमकेनेत्रदेषकेअैसेचलेजैसे
पवनकेलगेतेसुगंधसोंकमलोपेभ्रमरकेमनकीचाह
नाहोवे॥रामसोरामप्रियाकह्योयोहसि वागदिषावोले
गनकेसषि रामविलोकतवागअनेनतहि ज्योंभ्रवलोक
नकामवसंतहि॥३॥वार्ता॥तव श्रीरामजूसोंसीताजूने
हसकरकेअैसेकह्यो हेलोकनकेचंद्रमामोकोवागदि
षावो तव श्रीरामजूअनेतजोवागताकेदेषनलागेजे
सेकामदेववसंतकोंदेषे॥ ॥वोलतमोरतहांसुषसंजु
त अैसेविरदावलभाटनकेसुत कोमलकोकलकेकु
लवोलत ग्यानकपाटकुचीपुनषोलत॥४॥वार्ता॥
तहांसुषकेसंयुक्तमोरवोलतेहैं जैसेभाटकेपुत्रविरदा
वलीकोकहे फेरकोललाकेसंबूहकोमलवोलतेहैं॥
सोमानोग्यानरूपीतषितिडोंकोपुनरूपीकुंजीसोंषो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

212A लतेहै॥ ॥फूलतजेबहुब्रिछनकोगनु छाडतआनंदआसु
नकोजनु दाहमकीकलिकामनमोहत हेमकुपीजनुवंद
नमोहत॥५॥वार्ता॥फेरबहुतजोब्रिछनकेसमूहफूलतेहै
सोमानोश्रीरामजूकोदेषकरकेआनंदकेआसूनकोछो
डतेहै अरअनारकीकलीषिडीनहोमनकोमोहतीहैसोमा
नोस्वरणकीकूपीसिंदूरसेसोभतहै॥दोहरा॥मधुवनफू
लेदेषसुककरनतहैनिरसंक सोहतहाटकघटतिरितुजु
वननिकेतोटक॥६॥वार्ता॥वसंतमेवनकोफूल्योदेषकेरषै
पीनफूलनमोतोता तिसकवरनतहै रितरूपीइस्त्रीकेस्वरण
सोघटहूयेतनोरसोभतहै॥दोपकछंद॥वेलकेफूलसेअ
तिफूले भोरभ्रमैतिनकेरसभूले योकरवीरकलीवनराजे
मनमथवाननकीगतसाजे॥७॥वार्ता॥अत्यंतफूलेहूयेवेल
नकेफूलसोभतहै तिनकेरसमेभूलेहूयेतिनपेभोरभ्रमत
है करवीरकयाकनेरकीकलीवनमेऐसीसोभतहै मानोका
मकेवानोकीगतसजरहीहै॥ ॥केतकपुंजप्रफुलनसोहै॥
भोरउडेतिनतेमनमोहै श्रीरघुनाथहिआवनभागे जेअ
पहोकहूतेअनुरागे॥८॥वार्ता॥फेरफूलेहूयेकेतकीकेसमू
हसोभतेहै तिनपेभोरउडतेहूयेमनकोमोहतहे सोमानोराम
जूकोदेषकेजोनसेअपजसथेसनेहवानहूयेसोअपवाअ
पजसोमेसनेहवालेसोभागतेहै॥दोहरा॥स्यामसेनदुति
फूलकीफूलेवहुपालास जरेकामकेलाभनोमधुरितुवा
नविलास॥९॥वार्ता॥स्यामअरलाललहैसोभाजिनकेफू
लनकीऐसेपलासजोवहुतेफूलेहैसोमानोवसंतरितुमेप
वनकेविलाससोसिवजूसेजरेहूयेकामकेकोलाहैकोजे
हांतेसुलगेहैसोलालभयेहैजाहांतेनहीसुलगेतहांते
स्यामहै॥तोटक॥वहुपंचककीकलिकाहुलसी तिनमे
अलिस्यामलसोमलसी उपमासुकसारकचित्रपरी ज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नुहेमकूपीसमसोपेभरी॥१०॥वार्ता॥चंपककीवहुतीक
लीषिडीहै तिनमेस्यामभ्रमरनकीसोभासोभतहै ताकीतो
तेअरसारकातेयहिउपमाचित्तमेधारनकरी मानोस्वर्ण
कीकुपीसमसुगंधनकेजोसेंधाहैतासेभरीहै॥अलि
उडपरतमंजरिजाल देषलजसजनसववाल अलअ
लनीकेदेषतिधाय चुंवतचतुरमालतीजाय॥११॥वा
र्ता॥तहांभ्रमरउडकरकेमंजरीनकेसमूहोंकेग्रहिनक
रतहै ताकोदेषकेसभइस्त्रीलजामानहोतहै कियेभ्र
मरभ्रमरीकेदेषतेहुयेदोरकेचतुरजेमालतीहैताको
जायकेचुंवतहै॥ ॥अथमुनगनसुंदरीविलोक विहस
तचुंचेटपटमुषरोक गिरतसदाफलश्रीफलउेज जनुपु
टदेतदेषिवछोज॥१२॥वार्ता॥इसअदमुनगनकोसुंद
रीओदेषकरकेचुंचटकेवस्त्रमेमुषकोदेषकरकेहसती
है फेरतहांसदाफलेहुयेजोश्रीफलोंकेसमूहगिरतेहै सो
मानोकुचनकोदेषकेसोभाहीनभयेवृक्षफलोकोसिट
देतहै॥तारकछंद॥विदरेउरदाडिमदीहविचारे तिनके
सुभसोभनहारे अतिमंजुलवंजुलविराजे वहुगुंजनकेति
नपुंजनसाजे॥१३॥वार्ता॥अनारोकेदीरघजोह्रीयेफटगये
है सोमानोतिनोकेसुभजोसोभायमानदंतहै तिनकोदेषके
फटेहै फेरअत्यंतउजलवेतकेवृक्षनकीकुंजविराजतहै ति
नोपरवहुतेरत्तकोकेसमूहविराजतहै॥ ॥तरअंधमयेदर
सेतरुमोरे तिनकेजनुलोचनहैंइकठोरे षलसीतलतपरसु
भावनसाजे ससिसूरजकेजनुलोकविराजे॥१४॥वार्ता॥सो
मानोमानुषजेमैंषेहुयेवृक्षनकोदेषकरकेआयेभयेहैति
नोकेएकठोरहुयेनेत्रहै तहांअस्थानसीतलअरताते सुभा
यनकेवनायेहुयेहै सोमानोचंद्रमाअरसूरकेलोकसोभत
है॥ ॥जेलजेत्रविराजतभांतभलीहै धरतेजलधारअकास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

213A

चलीहै जमुनाजलसूछम भेषसुधास्यो जनुचाहतहै रवि
लोकविहास्यो॥ १५॥ वार्ता॥ तहां मलीतरैसोजलजेऊजोहैफु
हारे सोसोभतहै प्रिथवीतेतिनको पार आकासकोचलतीहै
सोमानोश्रीजमुनाजूकेजलनेसूछमरूपधारनकीउहै॥
सोसूरजकेलोकमैविहारकिउचाहतहै॥ चचरीकछंद॥ भं
तभांतकहौंककहांलगवाटकावहुपैमली ब्रिह्मघोष
घनेतहांजनुहै गिरावनकीथली नीलकंठचैवनेजनुजान न
जोगिरजावनी सोभिजेवहुधासुगंधमनोमलैवनकीघनी॥
॥१६॥ वार्ता॥ कहांताईकिहै तहांनरैतरैकीवहुतप्रकारकी
वाटकाहै सुहतहांब्राह्मणोकेघनेघोषकथाविद्याकेस
वदहोतहै सोमानोसरस्वतीजीकेआवनेकीथलीहै फेर
तहांनीलकंठमोरनाचतहै सोमानोपारवतीकीवनीहै तहां
नीलकंठसिव वहुतप्रकारकीसुगंधेतहांसोभतहै सोमा
नोसनमलैकीहै॥ हालकाछंद॥ करुनामयवहुकामनफली
जनुकमलाकीवासथली सोभैरंभासोभाघनी मनोसची
कीआनंदवनी॥१७॥ वार्ता॥ फेरवनीवहुतकरुणाव्रिछनमे
है यातेइस्त्रीहै सोकरुणादयामेहै सोमानोसोभावानलछ
मीकीवासथलीहै रंभाकेलेअरसनीइनकीजहांसोभासोभ
तहै सोमानोआनंदकीइंद्राणीकीवनीहै कौनतामेरंभाअ
पसरा सोभासोमिलीहुइसोभतहै॥ कामलताछंद॥ तरुउ
जलचंदनतनुधरे लपटीनागलतामनुहरे न्रिपदेषद्रिगव
रवंदनकरे चित्रचंद्रकलाधररूपनधरे॥१८॥ वार्ता॥ फेरज
हांचंदनकेउजलसरीरकोधारेहुएव्रिछहैं तिनसोनागलता
लपटीहुईमनहरतहै सोमानोराजारामजूकोदेषकरकैचंद
कीकलाधरजोसिवजूहै तिनकेरूपकोधारेहुए वंदनाकर
तहै कोसिवजूसेपेहउजलतनकेहै अरतिनकेनागपाअ
सेपेहनागलताधारीहै अरतिनकेदिंगवरसेपहदिसाहीव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सु जिनको ऐसे है अरु तिनकी चंद्रकलासी सी सपेवेलनको
धारेहै ॥ ॥अति उजलता सबकाल हि वसे सुकपिकादि
सब आनंद रसे रजनी दिन आनंद कंदन है सुषचंद्रन की
जनु चंदिन मे ॥ १९ ॥ वार्ता ॥ तो तेकों किला आद जो आनंद
मै सब दकरत है सो तिनकी पुनकी अत्यंत उजलता समस्त
मे वसत है रात दिन आनंद की मूल है इस्त्रीन के मुष रूपी
चंद्रमा की वहि ऊजलता मानो चांद्रनी है ॥ ॥सम जीवन
को वहु सुष जहां विरही जन को है दुष तहां नहि आगम पो
नहि को सुनीये तिन हां न असोक हकी गुनीये ॥ २० ॥ वार्ता ॥
जहां सम जीवन को वहुत सुष है एक वियोगी जनों को है तहां
दुष है अरु आवनें जहां एक पवन ही को सुनीता है अरु हांन
जहां सदा एक असोक ही की है ॥ दोहरा ॥ ताप ही को ताहन
तहां त्रिषचातिक के चित्त पानफूलफल दलनको भ्रम भोर
नको नित्त ॥ २१ ॥ वार्ता ॥ अरु तहां तिन तापन ही को ताढवो है
त्रिषा पपीहे के ही चित्त मे है अरु फूल फल दल इन ही को गि
रवो है भोरन ही के भ्रम है को भ्रमत है ॥ तारक छंद ॥ तिन मे
इक क्रितम परवत राजे म्रिगयच्यन की सम सो मन लाजे
वहु भांत सुगंध मलय गिर मानो कल धोत सरूप सुमेर व
षानो ॥ २२ ॥ वार्ता ॥ तिन मै एक वनायो हू यो परवत सो भत है ॥
तहां स्त्रिगपंछी उ कीसे भाषजत है वहुत रेकी है सुगंध जामे
ऐसे सो मानो मलियाचल परवत है अरु स्वरण के सरूप है याते
मानो सुमेर परवत है ॥ ॥अति सीतल संकर को गिर जैसे ॥
सम स्वेत लसे उदयाचल ऐसे दुतसागर मे मेंनाक मनो
है अजलो कमनो जुत है सज्यो है ॥ २३ ॥ वार्ता ॥ फेर अत्यंत
सीतल है यांते केलास के समान है अरु सुभायमान स्वेद उद
याचल के समान है फेर समुद्र मे क्या समुद्र सी उजलजा की
सोभा है यांते मानो मेनाक गिर है क्यो ताकी समुद्र मे सोभा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

214A

है अरु बहु नेह हूं सो के सहित है याते मानो त्रिलोक को लोक है॥ ॥
सरिता तिनते सुभ सी न चली सगली सरितान की सोभ दली इक
चंदन के जल उजल है जग जनु सुता सुभ सील गहै॥२४॥ वार्ता॥
तिस परवत ते तीन नदी चली है जिन ते सम नदीऊ की सोभा द
लीहै एक तो चंदन वे जल सो उजल है सो तो जगत मे श्री गंगाजी
को सुभ सील को ग्रहिती है॥ ॥सुरपुर को मारग कवि लख्यो जनु
द्विवते भूतल पर आयो जनु परनी मेल सत विसाल त्रुटिति जु है
की जनु वन माल॥२५॥ वार्ता॥ कवि लख्यो जो स्वरग मारग है
सो मानो स्वरग ते प्रिथवी पर आयो है अथवा हू है जो जु है की व
न माला है वड़ी सो प्रिथवी मे सोभत है॥ दोहरा॥ तज्यो न जावे
एक पल के सब सुषद समीप तिहते सोभत तिलक सो दीने जंबू
दीप॥२६॥ वार्ता॥ जाको सुषदायक जो कनारो है सो एक पल भी न
हि तज्यो जात तो ते जंबूदीप को दीयो हू यो सो तिलक सोभत है॥
॥दोहरा॥ येतन के मद के जल दूजी है जमुना दुत के जब सूजी
पार मनो रस राज विसाल पंकज जाल भई जनु माल॥२७॥ वार्ता॥
क.५ दूसरी सनूरी के जल सी है सो मानो जमुना की सोभा करके पूजी हू
ई है अथवा शृंगार रस की विसाल पार है अथवा कमलो के स
मूह मे मिली हूई माला है॥ दोहरा॥ दुष दुंद नन रवार सी कि पो खिं
बलाचक त्रिहागिरं तें गकीइ है कहे संसार॥२८॥ वार्ता॥
दुष के दूर करन को तरवार सी है के त्रिहा को परवत सो भयो
हाथी ना कीय हि जगत मे तरंग नहीं है॥ दोहरा॥ कीह गिरि ते
अलन की अवली चली विलास किधो प्रतापानलन की पदवी
के सब हास॥२९॥ वार्ता॥ फेर त्रिहा के परवत ते भमरो की वही
पगत चली है सो मानो श्रीरामजू के प्रतापरूपी अगन की पद
वी है॥ दोपक॥ और नदी जल कुंकमसो है सुभ्र तिराम
तु मानहु सो है कंचन के उपवीत हि साजै भावन सो यहि षंड
विराजै॥३०॥ वार्ता॥ और तीसरी नदी तहां के सर के जल सी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सो भनहै सोउजलमरस्वतीमानो मनको मोहनहै सो यहिजो
भरतखंडहै सो ब्राह्मणके समानजो सोभनहै ताके वहिस्वरग
को जनेऊसे मनहै॥ फूलपरागनमेमनमोहै पावनकूलदूकूदि
ससोहै लोभा फूलमय सेवटिलेषी पलवीजवहु वालकदेषी
३१॥ वार्ता॥ तहां फूलनकी परागनमेमनमोहनहोनहै अरु
पवित्रताके किनारे दोऊतरफ सोभनहै सोनदीजो लोगनके
फूलनमेहै सोईनामेसेवटक्यासिवारदेषीहै अरु इलाचीनके
जोनामेवीजहै सोइवालकक्यारेनदेषीतीहै॥ ॥केलफूलद
लेनउनमांहि श्रीसुगंधनहिहै वहुधांहि॥३२॥वार्ता॥ फेर
केलनके जोनामे फूलनेफलहै सोईवेही अंभेहै तिनोके विषेजो
वहुतप्रकारकी सो भावानसुगंधहै सोई चहनवारे है॥ दोहरा॥
षेचटमत्तमलाहअलको वरनेवहितेन तीनोरसतामिलतजि
हतिहि त्रिवेनीहोत॥३३॥वार्ता॥ तिनोपे जो भ्रमरहे सोईषव
टडनमत्तमलाहहै तिनकोकेभवरनेजहीं तीनोनदीअंगमि
लतीहै तहां त्रिवेनीहोतहै॥ ॥सीताश्रीरघुनाथजू देषीसमन
सरिर द्रुमअवलोकनछोडके गयेजलासेतीर॥३४॥वार्ता॥
श्रीरामचंद्रजूने सीताजू तवथकनहूपे सरीरके देष तववृक्ष
नके देषवेको छोडकरके तालके किनारेगये॥ चौपई॥ आ
पकमलवासमुषदेन मुषवासनआगेहैलेन देषजायजला
सेचारु सीतलसुषदसुगंधअपार॥३५॥वार्ता॥ सुषदेनवा
रेजो वमलोके सुगंधहै सो सीतारामजूके मुषनकी सुगंधके
आगेलेनआयेहै तहांजायके सुंदरजलासे देष सो कैसेहै
सीतलहै अरु सुषदायकहै तेवडेसुगंधतहै॥ चतुषपदी॥
वनश्रीको दरपन वंद्रातपजनु किधो सरस्वआवास सुनग
नमनसो विरही जनसो विसवलयानविलास प्रतिविंवतिथि
रचरजी रमनोहरजनुहरउदरअनंत वंपनजुनसोहै त्रिभुव
नमोहै मानो वलजसवंत॥३६॥वार्ता॥ सो मानो वलकी सोभा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

215A

केदरपनहै अथवा चंद्रमाको अस्थान वनेजहै अथवा सरद रितु-
को अस्थान है मुनीओ के समूहो के मन समउजल है फेर विरही
जनो के मनके समान है क्यों वहि विसकया दुष के विलास करके क्षा
ये होत है अर यहि विसकमलो के विलाससौ फेर जामे थिरचर
जीव सुंदर प्रतिबिंबत है सोमानो श्री भगवानजू को हिरदे है फेर
वेपन के सहित तीन भवनो को मोहत हो हूया सो मत है याते मानो
जस वारे राजा वल समहै सो भी वावनजू ने वांध्यो है ॥ चौपई ॥
विषमे षयस वसुष को धाम संवररूप वहावे काम कमलन
मध्यम युपसुष देत संतहिदै जनु हरहि समेत ॥ ३ ॥ वार्ता ॥
विषमे है ये समन को सुष को घर है यहि विरोप अरथ विरोप
क्या विषक्या जल मैहै ऐसेही फेर संवर क्या वाथ्यो हू यो है
रूपजामे अथवा जलको ही रूप है फेर कमलो मे भ्रमर सुष
देते है सो मानो भगवानजू के समेत संतन के ही ये है ॥ ॥ वी
चवीच फूले जलजात तिनते अलकुल ऊडऊडजात संत
हीयन ते माने भाज चंचल चलीअसुभ की राज ॥ ३ ॥ वा
र्ता ॥ तिन तालो के वीचवीच मे फूले हूये कमल है तिनो ते भोर
उडउड जाते है सो मानो संतो के हिरदे ओ ते चंचल असुभो की पं
त भागी है ॥ कवित्त ॥ एक दमयंती ऐसी हरै हंस हंस वंस एक हं
सनी सी विसहार हीये रोहीये भूषन गिरत एक ले तवूडवीच
वीच मीन गन लीन हीन उपमान टोहीये एक मत के ठलागला
गवूडवूडजात जल देवतासी डिगदेवता वि मोहीये केसोदास
आस एक स भ्रमत भवर जलकेल मैजलज मुषी जलज सी सोही
ये ॥ ३९ ॥ वार्ता ॥ जलकेल मै जलजमुषी जलजैसी सोभत है ए
क दमयंती ऐसी सुंदर है हंस के छल करके हरै है एक रैहे हंस
के वंसवालकन को दमयंती भी हेस को पकर के चली है याते
समता किवा हास्य सो हंसके वंस की उजलता को हरै है एक हं
सनी सी है विसविनाल को है हार जिनके हंसनाम भगवानको

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भीहै ताकी इस्त्री लछमी सारीरभीहै कमलसोप्रीतहै यांतेश्चिता
लकोहाररोहैहै सोभैहै यांतेवीचलहरी यांतेकिवीचमे याकी
चंचलताके आगेमीनकीजोगतहै सोलाजसोछपजातहै यांते
मीनकीजोउपमासोहीनहै सोनहीदोहीये नहीयोजीये फेर
जलकीदेवतासीहै अरद्रिगदेवतानेत्रोकीअधिष्ठात्रीदेव
तानेत्रमेजोदेवतारहितहै सोजासोविमोहतहोतहै जाकेच
हुंओरभौरफिरतहै इसतरांजलकीक्रीडामेकमलमुषीआं
कमलोसीसोभतहै ॥दोहरा॥ क्रीडासरवरमेनिपतकै वहुवि
धजलकेल इवसैतरु विसमेतज्यो सूरजकिरणसमेत॥४०॥
वार्ता॥ क्रीडाकेतालमेश्रीरामजू वहुतविधसोक्रीडाकरके
इस्त्रीनकेसमेतऐसेनिकसेजैसेसूरजकिरणोकेसमेतहोय॥
हाकलका॥ नीरनतेनिकसीत्रीयसवे सोहतहैविनभूषन
नवे चंदनचित्रकपोलननही पंकजकेसरसोभितनही॥४१॥
वार्ता॥ फेरजलोतेजवसभइस्त्रीनिकसी सोविनाभूषनोकेसो
भतहै॥ ॥मोतिनकीसभविथुरिछूटे हैलपटीउरजातति
लटै हासिंगारलताजनुवनी भेटतकलपलतानिनघनी
॥४२॥वार्ता॥ तिनकेमोतिडोकीसभछटाविड्गईहै अरल
टांकुचनपैलपटगाईआंहै सोदोऊमानोसिंगारनेहास्यरस
कीवेलेहै अथवासिंगारहारकेफूलेकीसोवहुतिकलप
वेलनकोमिलेहै॥ ॥केसनओरनसीकररमे रिझनको
तमधीजनुवमे मजलअंवरछोडतवने छूटतहैजलकेक
नचने भोगभलेजिनसोमिलकरे छूटतजानतरोवतपेरे॥४३
वार्ता॥ केसनकीतरफेसेकनकेजोपरनेहै सोमानोअपका
रताउकोपीयकैवमनकरतहै फेरसहितजलकेवस्त्रनको
जोवहियागमीहै तिनोनेजलकेवहुतेकनकेछूटतेहै सोमा
नोजिनवस्त्रनसोमिलकेतिनोनेभोगकरेहै सोवस्त्रतिनोको
वियोगजानकरकेअपंतरोवतहै॥ ॥भूषनजेजलमधदि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

216A
रहे तेवनपालवपूलनिलहै भूषनवस्त्रजहीसजलये चार
हूंढूांरनढूंढ्मदये॥४४॥वार्ता॥जेहेगहिनेजलमेरहिगयहै
सोवागावानोकी इस्त्रीयोनेलीयेहै फेरजवभूषनअरवस्त्रस
भनोनेसजलीये तवचारोंदरवाजिडोमेनगारेवाजतेभये॥४५॥
दोहरा॥गूंगेकूवेवावरेवहिरेवामनविय जानलीयेजनआ
यगेषारेषडप्रसिध॥४६॥वार्ता॥गूंगेकूवेवामरेवोहेवाउनेवू
हेषारेक्यागंजेअरषेडक्याअंगहीनतवइनोनेआपेश्रीरघ
जूजानलीये॥हाकलकाछंद॥सुषदसुषासनगनपालकी
फिरकवाहनीसुषचालकी पकनजोतैयसोहीये विषम ह
कुरंगअंगमेकीये॥४७॥वार्ता॥तवसुषदायकजोसुषास
नअरपालकीअरपहीडोकेवाहनवालीजोहेसुषचाल
कीगडीआदितिनोमेसेपकनमेतोचोहेजोहूयेसोभनतहैअ
रपकनमेवलतेहरणजोअंगनसेमेहनहैसोहे॥ ॥तिन
चहराजलोगसवचल्यो नगरनिगरसोभाफलफल्यो मणि
मयकनकलजातिकाचनी मोतिनकीफालरअतिवनी॥४८॥
वार्ता॥तिनेपेचहकेसभरजलोकचलतेभये नगरमेनिग
रक्यासंपूरणसोभाकोफूलफलतेभये मणिडोमेषचित
स्वरणकीवहुतजगतकाक्याजेजीरीहे अरमोतीडोकीफा
मेअत्यंतफूलरैसेभलहै॥ ॥चेटावाजितचहूदिसचले॥
रामचंद्रतवराजचहचले चपलाचमककवाहगगनगूढ मानो
मेघईद्रआरूढ॥४९॥वार्ता॥अरजाकेचेटाचारोंतरफवा
जनहै तवऐसेहाथीयेचहकरकेश्रीरामजूचलतेभये॥
वीजुरीकीसुंदरजोचमकहेगूढगगनक्याछपीचालसोंक
हूहोवेकहूनाहेवेतासोमानोमेघपेचढ्योहुयोईद्रहै वी
जुरीसेपीतपटमेघसेहाथीईद्रसेश्रीरामजू॥आसपास
नरदेवअपार जापपवादेराजकुमार इहिविधिगयेराजदरवा
र वेदीजनजसपढतअपार॥५०॥वार्ता॥जिनकेआसपास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अनेक राजा हैं अरु पाथन सो पञ्चाइ राजकुमार हैं इस प्रका
र श्री रामजू जिनो के आगे वंदीजन जस पढत हैं सो राजद्वार बा
र मैं जाते भये ॥ विजै छंद ॥ भूषन देह विभूत दिगंबर नाहिने अं
बर अंगन वीने दूर कै सुंदर सुंदरि कै सभ दूर दरीन मे मंदर कीं
ने देषिये मंडित चंडन सो भुज दंड दुओ असि दंड विहीने राज
न श्री रघुनाथ के वैर कुमंडल छोड़ि कमंडल लीने ॥५२॥ वार्ता ॥
श्री रामजू के वैरीडो के सरीर विभूत सों सोभत हैं अरु अंगन पैन
वीन वस्त्र हैं नहीं दिसा ही वस्त्र हैं फेर सुंदर जो इस्त्री हैं तिनो के त्या
ग कर के दूर दरिडो मे जाय के मंदर कीये हैं जिनो के दोऊ जो भु
ज दंड सो दंडो सो सोभते हैं कहा दंड पकड़्यो अर तरवार के दंड
सो हीन भये कहां लौ गिरा जे ऐसे श्री रामजू के वैर सों पृथवी
मंडल को छोड के कमंडल ग्रहन कीये फकीर भये ॥ दोहरा ॥
कमल कुलन मे जात ज्यों भौर मस्त्यो रस चित्त राज्य लोक मे त्यों
गये रामचंद्र जगमित्र ॥ ५३ ॥ वार्ता ॥ जैसे कमलो के समूहो विषे
भ्रमर रस मै चित्त मस्त्यो हूयो जाता है तैसे राजलोक मै श्री रामजू
गये ॥ इति श्री इंद्रजित विरचतायां श्रीमत सकल लोक लोचन
चकोर चिंतामणि श्री रामचंद्र चंद्रिकायां उपवन चरनने नाम
द्वाविंसतमः प्रकासः ॥२२॥ दोहरा ॥ तेईसवे प्रकास मै मु
नजनु आगमजान सकल देवगन सहित अरु ब्रिह्मा विनै वषा
न ॥१॥ वार्ता ॥ तेईसमे प्रकास के विषे मुनीस्वरो का आगम हो
यगा संपूरण देवगणो के सहित ब्रिह्मा जू विनै करतगे ॥ दोहरा ॥
सीता को त्यागन कह्यो रामचंद्र रघुवीर लवकुल की उतपन्न
अरु कही परम रणधीर ॥२॥ वार्ता ॥ फेर सीता जू को त्यागन श्री
रामजू करेगे श्री लवकुश जू की उतपत वरनन होयगी ॥ त्रिभं
गी छंद ॥ दुरजन दल घायक श्री रघुनायक सभ सुषदायक
त्रिभुवन नायक सो भे सिंघासन प्रभा प्रकासन करम विना
सन दुषनासन सुग्रीव विभीषन सत्रुन वंधु जन सहित नवो प

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

217A

नरूपतिगन आयेसंगमुनिगनसकलदेवजनाभिरातपका
ननचतुराननन॥३॥वार्ता॥दुरजनोकेदलोकेनासकरनवारेसं
पूरणसुषकेदेनवारेजोतीनभवनोकेस्वामीश्रीरामजूहैसोसिं
घासनमेसेभनतेभयेसोभाकोप्रकासकरतेहूयेकैसेहैकरमोके
नासकरनवारेहैंग्रारदुषोकेदूरकरनवारेहैंसुग्रीवतेविभी
षनअरुसजनअरुभाईजनतपहीहैंपनजिनकोग्रैसमुनी
स्वरतेरजायनकेसहितहैंतिससमेमुनीउंकेसमूहोसहि
तसेपूरणजोदेवजनहैंग्ररतपरूपीवनकेभ्रिगकपसियेसे
जोविसष्ठहैवहसभमग्रावतेभये॥तोटकछंद॥उठआदरसे
अकुलायलये बहुपूजनकेबहुभाविनये - सुषदायकआ
सनसोभरये समकोजुतथाविधिआनदये॥४॥वार्ता॥
उठकरकेअकुलायकेग्रादरसोंआवतेहूयेश्रीरामजूने
लीने बहुतपूजनकरकेवेनतीकरी नवसुषदायकजोआ
सनहैसोभासेमिलेहूये होजथाविधिसोसमनोकोआन
करवैदीये॥दोहरा॥समनपरसपरबूझिउंकुसलप्रसन
सुषपाय चतुराननबोल्यौवचनसलाघ्याविनयविनाय॥५॥
वार्ता॥नवसभनोकेकुसलप्रसंनसुषपायकेपूछिउंपरस
पर फेरउसनननआरुविनयकेवचनवनायकरकेविसष्ठज
कहितेभये॥मनोरमाछंद॥सुनिजेचितदेजगकेप्रतिपा
लक सबकेगुरहोहरिजगदपबालक सबकोसमभायस
दासमलायक गुनगावतवेदमनोवचिकायक॥६॥वा
र्ता॥हेजगतकेप्रतिपालनाकरनेवारेचित्तदैकेवचनसुनी
ये जगदपग्रापबालकहोपरसभनोकेगुरहोसभनोके
समसुभावकेहो अरसभनोमैलायकहो मनकरमसोतु
मारेगुणोकोवेदगावतहैं॥ ॥तुमलोकरचेरुचिसोंवहु
भानव सुनिजेप्रभुऊरजहोसगरेअव जनुभूलहूकोऊ
नजायनरेमग भिटगेसबपापहूपुन्यनकेमग॥७॥वार्ता॥

तुमनेंही चाहनासो जो वहुनें लोक रचेय सो हे प्रभु सुनी
ये सव अवऊ भरहे अरु भलकरके भी कोऊ मानुषनरके
केस रते कौ नहीं जानताहे मेस्वरन पापने पुन्य के जो स्वरग
नरक के रसते थे सो समझि टनपे ॥ दोहरा ॥ पवनपुरी धन
पतपति पुरी सुरपतिपुरसुषपाय सत्यलोक वैकुंठ सव त
स्यो अवपनै आय ॥ ८ ॥ वार्ता ॥ वरणकी पुरी अरु कुवेरकी
पुरी अरु ईद्रकी पुरी अरु वेकुंठ पहुंस मझ युधमें आय
करके वसे हे ॥ श्रीराम ॥ तोमरछंद ॥ हरियों कह्योर घुना
थ समकूसमे विधिगाथ ममईछ पकस जान कवहूं न
हो यसु आन ॥ ९ ॥ वार्ता ॥ नवहंस करके ऐसे श्रीरामजू
ने कह्यो हे व्रिह्मातुमने संपूरण कथा हमने समझी परप
कहमा रमनमे ईछाहे सो औरते किवी नहीहोनी ॥ ॥
तुमपुत्र हे सनकादि ममभगत जानहु आदि सुतमान सि
कतनके जु भुवदेव भुवप्रगटेजु ॥ १० ॥ वार्ता ॥ तुमारे पुत्र
जो सनकादिक हे सो मेरे आद भगत हे तिनो ते जो मनतेउ
पजे पुत्र हे जो प्रिथवी व्राह्मण हैके प्रगटे हे हमने सुभाव से
क कुक तिनको दीपहै अरु कछुक औरगाम देने हे सो हम
कौन से अस्थान मे तिनको देव सो हे देव अरु मानुषों केसु
कट तुम कहो ॥ व्रिह्मा ॥ मंदराछंद ॥ सव वेमु नि पूरे नपव
ल सूरे विद्विनसनाह्यजान वहुधा वहुवारन प्रति अविनार
न दे आपेसमभांन सुनि प्रभु आवंडल मथुरा मंडल मेदी
ने तिनि सुभ ग्राम वाहे वहुकीरनलवण सुरहनअतिप्र
जेय संग्राम ॥ ११ ॥ वार्ता ॥ हेनाथ सव वहि पूरन मुनो सुर
नपके वलमे सूरमाहे अरु सनाह्य तिनो की जात विद्वित
हे वहुतवार वहुत प्रकार सो अवतार प्रविनार प्रतिस
मतरे सो आप दे आपे हो सो हे प्रभो सुनिये संपूरण जो म
थुरा मंडल हे तिनको सुभ ग्राम दीजीये तहां लवणासुर हे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

219A तांके मारे बहुत की रतन पेगी सो अंतरजुप मे अजीत है
दोहरा॥ जिनके पूजे तुम भये अंतरजामी श्रीप तिनवा
त कहा हमै बूझन त्रिभुवन दीप॥१२॥ वार्ता॥ तुम जो अं
तरजामी लछमी के नाथ हो सो जिनके पूजे ते भये हो ति
नों की है तीन भवन के दीपक हमको कहा पूछते हो॥ दो
हरा॥ द्विज आयो तेही समे म्रित क पुत्र के साथ करत क
लाप विलाप हा रामचंद्र रघुनाथ॥१३॥ वार्ता॥ तिसी स
मे म्रितक पुत्र को लीये हूये एक ब्राह्मण आवता भया॥
हे रघुनाथ हे श्री रामचंद्र ऐसे कहि के विलापो के संबूहो
को करता हूआ॥ मलकाछंद॥ श्री राम॥ बालके गता
सु देष परम राज सो विसेष बात यो कही निहार कर्म
कोन को विचार॥१४॥ वार्ता॥ तिस बालक के गये हूये
प्राण कया प्राणों को देष करके तब विसेषता सो तहां परम
राज को देष करके यहि बात कही यहि विचारे किसका कर्म
मे है या ते बालक म्रित भयो॥ परमराज्य॥ मनोरमा छंद॥
निज संद्र तिकूतन पसा तिसु बालक पाम विदेवन के सब बा
लक कर वेग विदा मगरे सुरनायक चढ पुसपक आस
चले रघुनायक॥१५॥ वार्ता॥ आप जो सूद्र कीन पस्या कर
नी है सो बहुत तप का जो ब्राह्मणों के बालके है तिसु तिनो
के नास करणवारी है तब सब देवतिड़ो के सौ मोड़ो को
विदा करके पुसपक पे चढ के सीघ्र श्री रामजू जाते भ
ये॥ दोपकछंद॥ राम चले मुनि सूद्र की सीता पंकज जो
मगाये जह सीता देष लगी पग राम की रानी पूजि के बूझ
त कोमल बानी॥१६॥ वार्ता॥ सूद्र की कथा सुन के श्री राम
जू चले आरज हि माजू जहां सीता जू थे तहां गये तब श्री
रामजू की रानी देष करके चरणों मे लगी फेर पूजन करके
कोमल बानी सो पूछने लागी॥ ॥ कोन हो पूरव पुन्य ह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
तकी
२२५
219

225

मारे आजु फरेजु इहां पगु पारे देवनके सब काज सवारे॥
रावन मार सबै दुष टारे॥ २७॥ वार्ता॥ कोऊ कहूं मारे पूर
वलेपू तौ करके आजतुमने इहां चरण पारे है तब ब्रिह्मा
ने कह्यो देवतिऊ के तुमने सब कारज समारे है रावनकों
मारके सब दुष दूर कीये है॥ ॥ मैथिन तौ बहु भांतनि की
नी लोकनकी करुणारस भीनी उत्तर मोहि दीजे सुनसी
ता जाकी न जान परे जीयगीता मांगत हो कछु मो कहु दी
जे चित्तमे और विचार न कीजे आजु ने चाल चलो तुम तै
से रामचले वैकुंठहि जैसे॥ २८॥ वार्ता॥ सो मैने बहुत प्रका
रसें वेनती करी लोकोंकी करुणाके रसमे भरी हुई सो
हे सीते तुम सुनो जो उत्तर मोको दीये है तो कौ चित्तमे काहि
न नहीं जानी जाती सो मै तुमते कछु मांगत हो आप मो
को यह दिवातही जिये आजने चित्तमे और विचार ना करि
ये आज ने आपन्ने सी चाल चलो जैसे श्रीरामजू वैकुंठ
को जावें॥ ॥ सीय जहीं कछु नैन निवाये ब्रिह्म जहीं नि
जलोक सिधाये रामजहीं सिर सूद्र को षंड्यो ब्राह्मण
के सुत जीवन मंड्यो॥ २९॥ वार्ता॥ यहि सुनके जब
सीताजूने नेत्र निवाये तब ब्रिह्माजू आपने लोकको ग
ये उपर जब सूद्र को सीस श्रीरामजूने षंडन कीउ त
व ब्राह्मणको पुत्र जीवतो भयो॥ ॥ एक समै रघुनाथ महं
मति सीत हि देष सगर्भ बहौ रति सुंदर मांगजु जी
य मैं भाउन सो मन तो निरषे सुष पाउन॥ ३०॥ वार्ता॥
एक समै बडी बुधवारे श्रीरामजूने गरभ सहित देषके
प्रीत सबबपतो भई हे सुंदरी जो तुमारे मनमै भावत है
सो मांगो मेरो मन तुमसो देषके सुष पावत है॥ ॥ जो तु
म हो तप्रसंन महांमत मेरे बहे तुमही सो सदा रति अंत
र की सब बात निरंतर जानत हो सबकी सबते पर॥ ३१॥ वार्ता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उ

3.19A जो तुम महां मन मो पेषसंन है ते हे तो अरे सदा मैं सो प्रीत
बहे अंतर कि जो अंजनरे ते बिना सुभ मनत है सो सम कि तुम स
भजानते हो॥ श्रीराम उवाच॥ दोहरा॥ निरगुनन ते सरगुन
भयो सुन सुंदर तुम हेत औरकछु मांगो सुषरुचे तुम्हारे
चेत॥२२॥ वार्ता॥ हे सुंदरी सुनन तेरे नमित मे निरगुण ते सरगु
ण भये हो औरजो तुमको रुचित है सो मांगो॥ सीताजू॥
सुंदरी छंद॥ जो सब को हितमो कहु कीजत ई सदया करके व
र दीजत हे जितने रिषि देवन दीनत हो तिनको फहिरय
फिरो पट॥२३॥ वार्ता॥ जो सबते मो पेहित करते हो तो हे ई
सदया करके मोको वर दीजिये जितने गंगाजू के कनारे
रिषीस्वर हे मे तिनोको वस्त्र पहिराय करके फिरो॥ श्रीराम
जी॥ दोहरा॥ प्रथिम दोहद कौ करे निफल सुनय हि वाम॥
पटपहिरावन रिषन को जे ये सुंदर प्रात॥२४॥ वार्ता॥ प्रि
थम ते तुमा रे गरभ है ताके निसफल मे कैसे करो तोते व
स्त्रन के पहिरावन को हे सुंदरी रिषन के प्रातेकाल जाईयो
॥चोपई॥ छंद॥ भोजनन के तव श्रीरघुनंदन पोहर हे बहु
दुषनिकंदन वाजे वजे अपरात भई तब दूत निश्रांनप्र
णमकस्योतव॥२५॥ वार्ता॥ तवभोजन करके श्रीराम
जू दुष के दूर करण वारे पोहते भये जब अपरात भई त
ब बाजे बाजते भये तब दूतो ने आन करके नमस्कार करे
चंचला छंद॥ दूत दूत भावना कहीं कहि न जायवेन कोटिंथ
विचारिये परे कछू विचार पेन सूर के उदोत सूरवंषु आ यडो
सुजान रामचंद्र देषि उो विमान चंद्र के समान॥२६॥ वार्ता॥
दूतोने जो भूतक्या वतीती भावता है अथवा भूत जीवन के
वित्तांतक जो कही है सो वचनो ते नहीं कही जाती तव श्रीराम
जूने करोर प्रकार सो विचारयो पर विचार मे कछु ना आयो
फेर सूरज के उदे हू पे ते सूरवंषु जो भरथ जू सो आवते भये॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
२२०
220

तिनोने श्री रामजू प्रातके चंद्रमाके समान देषे ॥ संजुता छंद॥
बहुभांत बंदनताकरि हूसिबोल्लि डोनकृपाकरी हमनेक
कूद्विजदोषहै जिहतेकह्यो प्रभुरोसहै ॥२७॥ वार्ता॥ तिनोने
बहुतप्रकारसे नमस्कारकरि श्री रामजू नासहिसकेल
नाकृपाकरी तबमननेकह्यो हमारेतेकछू ब्राह्मणको दोष
भयोहै तिसतेस्वामीनेहमपेकोपकीओहै ॥ भरतोवाच॥
दोहरा॥ मनसावाचाकरमना हमसेवकसुनतात कौनदोष
नहिबोलियतज्योंकहिप्रापवात ॥२८॥ वार्ता॥ हेनाथहम
मनवचनकरमकरकेसेवकहैं साकौनदोषतेहमसेनही
बोलीता जैसेजानवेहमसेवारताकहीजाय ॥ श्रीरामसंजुता
छंद॥ कहिजेकहानकहीपरे कहिजेतज्यौबहुतेडरे तबहू
नबातसबैकही बहुभांतदेहदसादही ॥२९॥ वार्ता॥ कहा
कहैंकछुकहीनहिजाती जोकहीयेतोचित्तमेबहुतडरीता
है ताससमेहूतनेसमवारताकही सुनकेबहुतप्रकारसोदेह
दसाक्यादीपककीवातीसमहगयभई ॥ दोहरा॥ भरथ॥
सदासुयगतजानकी निंदतज्योषलजान जैसेसुनहिसं
भावहीपाषंडीसमभांत ॥३०॥ वार्ता॥ सीताजूसदाअत्यं
तसुपहै ताकेदुषजातऐसेनींदतहै जैसेसभकाजमेबेदको
सुभावकहूपाषंडीनदे ॥ दोहरा॥ भवअपवादनितेतज्योयो
चाहतसीताहि जोजगकेसंजोगतेजोगीजनममताहि ॥३१॥
वार्ता॥ तुमजगतकीनिंदातेसीताजूकोऐसेतज्योचाहतहो
जैसेजगतकेसंजोगतेजोगीजनममताको ॥ रूपमालछंद॥ भ
रथउवाच॥ मनिमानिकैतुमसुपसीतहि आनहोनिजपम
अबलेकपावक अंककज्योंरवि अंककपेकजदाम कहिभांति
ताहिनिकासहो अपवादवादवषान सिवसंभूपरमसमेतु
श्रीपितुसाषिवोलिपग्रान ॥३२॥ वार्ता॥ अपनेमनमेसीता
जूकोसपमानकरकेचारमेल्याहीथीअगनकेगोदमेतेदेष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

220A करके जैसे सूरज के गोद मे कमलो की पंगत होय ताको कि
सप्रकार अवनिका मे गकूठी निंद्या कहि करके जानकी सिवज
ने परम के अरपिता दसरथ के सहित सोष कही थी ॥ ॥ कवि
ता ॥ जवनाद के अपवाद को द्विज कोउ है कपिलादि विरहीन
के दुष देन को हरि डारि चंद्र कलाहि यहि है असत्य जु होय
गो अपवाद सत्य सुनाथ प्रभु छाडसु ष सुधान पीव हु आपुने वि
षु हाथ ॥ २३ ॥ वार्ता ॥ मलेछ दे को की निंदा ते कहो ब्राह्मण कप
ला के के स छोडेगे अर विरही जनो के दुष देन मे कहे सिवजू चं
द्रमा की कला को के सडारदेमेगे हे नाथ हे नाथहि निंद्या झूठी
पर अब सांची निंद्या होवेगी हे प्रभो तुम सुष अमृत को छो
डकरके अपने हाथ विषपीवते हो ॥ दोहरा ॥ प्रियपावन प्रियवा
दनी पतिव्रिता अतिसुष जगके गुर अगुर वनी छाडे वेद वि
रुध ॥ २४ ॥ वार्ता ॥ जो प्यारी अर पवित्र अर प्रियकहिनवारी अर
पतिव्रिता ने अत्यंत सुष अर जगकी स्वामिनी ने गर भणी इनको
त्यागवो वेद सो विरुध है सीताजू मै ॥ दोहरा ॥ वे माता वे से पिता
तुम से मे आपाय भरथ मपे अपलोक के भाजन मृतल आ
य ॥ २५ ॥ वार्ता ॥ वेसी तो माता अर वैसे दसरथ से पिता तुम से भा
ई इनको भी पायकरके प्रिथवी मे भरथ निंद्या के मांडे मये ॥
श्रीराम ॥ हरिलीला छंद ॥ साची कही भरथ कान्त सुमे सुजान
सीता परम सुषवुधि क्रिपा निधान मेरी कछु आवत ईछय
ही सुह हेरि मोको हू ताजवा तकहो न मफेरि ॥ २६ ॥ वार्ता ॥ त
व रामजू ने कह्यो भरत चतुर तुमने सम वात साची कही है
सीताजू सदा परम सुष है अर वुधि क्रिपा की घर है पर जो मे
री कछू ईछा मे आवत है सो ईदेषो जो तुम पेर ऊलटाय
के कछू वात कहो तो मो को मारो ॥ लछमणो वाच ॥ दोधक
दूषत जेन दसा सुभगंगा छोड कुगे वहु तुंग तरंगा मायाहि
निंद है सव जे भगि कौन जिहे मुव भूपति भोगी ॥ २७ ॥ वार्ता ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

फेरलछमनजूनेकह्यो जैनसदासुभगमकौदूषनलाव
तिहै परतिसऊचेतरंगोवारीकोछोडदेवेगे अरमाधमम
जोगीनिंदतेहै ताकोप्रिथवीमेभोगीराजाकैसेत्यागदेवेगे
॥ ॥घरघाससहितिनिंदतिहैमठिधारी भावतिहैहरिभगतनि
भारी निंदतहैनवनामहहिकमी काकहिजेतुमस्वंतरजामी
॥३९॥वार्ता॥अरजगधसुजोहैग्यानधारनवारेताकोमठधा
रीनिंदतेहै जोतिनोकोहरीकीभगतिनहीभावती अरतुमारे
नामकेवामीनिंदतेहै त्योक्यानिंद्योजातहैयातेहेस्वतंत्ररजा
मीआपकहाकहिलहो॥दोहरा॥तुलसीकोवानतप्रियाभो
तमत्रियकोअरघ सीताकोकेनकहोकाहेकेमरवघ॥३९॥
वार्ता॥तुलसीकोअरअहिल्याकोतुमप्रियमानतेहो अरसी
ताजूकोछोडनकहितेहो यातेतुमकाहेकेसरवग्यहो॥अनुप्ररू
पमालाछंद॥स्वपनहूनहिछोडिऐविपगुरवनीपलदोय छो
डिजेतवसुपसीनहिगरभमोचनहोय पुत्रहोयकिपुत्रकोय
हिवानजाननिजाय लोकलोकनमेअलोकविलोकवोरघुरा
य॥४०॥वार्ता॥फेरशत्रुघ्नजूनेकह्योजोगरभणिस्त्रीहैताको
दोयपलसुपनेमेभीनहीछोडिये सुपसीताजूकोनकछो
डीयेजवगरभमोचनहोयलैवेकोपुत्रहोयकिपुत्रीहोयय
हिवाननहीजानीजातहै नहीतोलोकनमेअपजसकोदेषवोहो
वेगो॥दोहरा॥चरचरप्रतिहैजगसुषीरामतिहारेराज अपने
हीघरकरतदुषसोकअसोकसमाज॥४१॥वार्ता॥चरचरप्र
तिहेश्रीरामजूजगततुमारेराजमेसुषीहैतुमअपनेहीघरमे
दुषकरतहो जामेअसोककावासोकनहोवे असेसोकहै॥
॥दोहरा॥रामचंद्रजगचंद्रतुमदलफलसमेत सीतापावन
पदमनीत्यागनहीदुषदेत॥४२॥वार्ता॥हेरामचंद्रतुमजग
तकेचंद्रमाहो दलतेफलअरफूलइनोकेसहितसीताजू
पवित्रकमलनीहैसोत्यागनहीहैजोदुषदेतहो॥श्रीरामचंद्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

221A दोपकछंद॥ तुमवालकहो वडुरूपासमे प्रतिउतरदेउनफेरहमे॥
जुकहेहमसवातसुजायकरो औरविचारचित्तमेनाधरो॥दोहरा॥
औरहोयतौजानीये प्रभुसोकहावसाय यहिविचारकेशत्रुहनु
भरथगयेअकुलाय॥४३॥वार्ता॥जोकोऊ औरअनीतकरैतौ
जानीयेस्वामीसोकहावसहै यहिविचारकेशत्रुघ्नतेभरथजूव्या
कुलह्वैकेगये॥श्रीराम॥दोपकछंद॥सीतहिलैपुनशात्वरजै
ये रुषमहावनमेपुनआये लछमनजोफिरउतरदैहो सास
नभंगकेपातकपैहो॥४४॥वार्ता॥श्रीरामजूकह्यो सीताजूको
लेकेसीघ्रजावोमहावनमेराषवेफेरआवो जोहेलछमनतुम
फेरऊतरदेवोगे तौआग्याभंगकेपापकोपावोगे॥लछमन
लेवनसीयसिधाये थावरजंगमहूंदुषपाये गंगहिदेषिक
ह्योयेसीता श्रीरघुनायककीजनुगीता॥४५॥वार्ता॥तवल
छमनजूवनमेसीताजूकोलैगये देषकेअथिरतेचरसमजीवो
नेदुषपाये गंगाकोदेषकेसीताजूनेकह्यो श्रीरामजूकेमानोक
ह्यो है अथवागंगाहीनेऐसेकह्यो॥ ॥पारभयेजवहीजनुदो
ऊ भीमवनीजहंजंतुनकोऊ निरजलुनिरजनुकाननदेख्यो
भूतपिसाचनकेघरलेख्यो॥४६॥वार्ता॥तवदोऊजनेगंगाजूते
पारभये भयानकवनीविषेजहंजीवकोऊनहीहै विनाजलके
अरुविनामानुषोंतेवहिवनदेख्यो सोमानोभूतनेपिसाचनके
घरदेख्यो॥नगस्वरूपणीछंद॥सुनोनग्यानकारका पढेसुकीन
सारका नहोमधूमदेषीये सुगंधवंपुलेषीये॥४७॥वार्ता॥ग्या
नकीकारकाइहांनहीसुनतहो तोतीअरसारकाभीनपढतेहै
अरहोमकाधूमभीनहीदेषीताहै सुगंधकेसमझ॥ ॥सुनोनवे
दकीगिरा नवुधहोनहेथिरा रिषीनकीकुटीकहा पतिव्रिता
वसेजहां॥४८॥वार्ता॥वेदकीवानीभीनहीसुनीतीहै अरवुध
भीमेरीथिरनहीहोतहोनहै रिषयोंकीकुटीकहांहैजहांपति
व्रतावसतीहै॥ ॥मिलेनकोऊवेकहूं नआवतेनजातहूं च

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लेहु मकहांलीये डरतहोमहांहीपे ॥४९॥वार्ता॥वहिनेभ
हू भीनहीं मिलतेहै नाआवतेहैं ताकोऊ जाते हमको कहांली
ये चलेहो इहांतो मैवड़ी हीये मेडरती हो॥दोहरा॥सुनसुनल
छमन भीतअति सीताजू के वैन उतर मुष आवे नहीं जलभर
आये नैन॥५०॥वार्ता॥सीताजू के वचन सुन सुनकरके लछम
नजू अत्यंत डरतेहै मुषते उत्र नहीं आवतहै नेत्रजलसें भरआ
येहै॥नाराजछंद॥विलोक लछमणतभई विदेजा विदेहसी गि
री अचेतहुयमनो वनेचनी तहत्रसी करेजु छाहयकहां षपक
वायु वाससे मिच्यो सवे सरीतनेनैन नीरहीप्रकाससे॥५१॥वार्ता॥
लछमनजू को देषकरके सीताजू विना देहकेसे हुगये तव अचे
तहूके गिरपरी मानो मेघनते वनी भयमानभई बीजुरी गिरीहै
तव लछमनजू एक हाथसो छाया करतेहैं एकसो वस्त्रसे पवन
करतेहैं नेत्रनके जलसो प्रगट हो सीताजू को संपूरण सरीर छि
ड़क्यो॥दोहरा॥स्वितकमानत लछमन तहां मरन लगे तिहिका
ल मेअकासवानी अरेजाहुजी वही वाल॥५२॥वार्ता॥तिस
समे स्वितकसी मानकरके लछमनजू तहां मरनलागे तवआ
कासवानी भई तुम चरजाहु यहि वालीजी वेगी॥रूपमालाछंद॥
रामकीजयसिपसी सीयको चले वनछाड़ छाहएक फनीक
री फनहीं हमांलनिमंड वालमीकमीक विलोकई वनदेवता
सीजान कलपवृछ फलताकि पोहिदितेगिरी भुवआन॥५३॥वा
र्ता॥श्रीरामजू की जय की लछमी जो सीताजू ताको छोड़करके
वनमे चले तहां एक सरपने ताको छाया करी वड़े जो फणहै तिनो
की माला सी करके तव वन की देवताजे सी वालमीक मुनने तहां
आयके देषी अथवा स्वरगते प्रिथवी मे कलपवलता आयके
गिरीहै॥ ॥पंचमंत्र संजीवजी वनजीऊठी ततकाल पूछीये
मुनकौन की विटी आवहु अरवाल सीताजू हेसुता मिथले
सकी दसरथपुत्र कलत्र कौन देषतजी नजानत कौन आपुन

222A

अत्र ॥५४॥ वार्ता॥ तवननेको संजीवन मंत्र है ताते सींची ति
सी समे सीताजू जी उठे तव मुनी ने पूछ्यो तुम कोन की वेटी हो
अर कोन की वहू हो सीताजू ने कह्यो मैं राजा जनक की तो पुत्री
हों अर राजा दसरथ के पुत्र की स्त्री हों अर मैं कोन दोष तें त्या
गी हों यह नहीं जानती हों अर इहां आप कोन हो सो कहो ॥
सुन वालमीक ॥ पुत्र के सुन मों हिमान हु वालमीक द्विजान स
रवथा मिथलेस को गुर सरवदा सुव मांत होहिगे सुत है सुधी
पगु पाइजे मम लोक रामचंद्र छतीस के सुनगायवे तिहु लोक
॥५५॥ वार्ता॥ हे पुत्री मो को वालमीक ब्राह्मण मानो अर सभ प्र
कार सों मैं राजा जनक को गुर हों सदा सुभ गीत सो तुमारे वुपमा
न द्वै पुत्र होमेगे मोरे अस्थान चारण पारो वे तीनो लोक में राजा
रामचंद्र जू के पुत्र गाईएगे ॥ ॥ सरवथा गुनि सुप सीत हि लेग
ऐरिवराय आपनी तपसा नि कों सुभ स्त्रिय हि सुषपाय पुत्र है
भए एक कुस दूसरे लव जानि जातकरमन आदि देस व कसो
वेद वषान ॥५६॥ वार्ता॥ सभ प्रकार से मुनवान जो सुप सीताजू
है तिनको रिषो के राजा ले गए आपुने तपकी मानो सुभ स्त्रिय
की सोभा को ले गए हैं ता के तहां द्वै पुत्र भए एक कुस दूसरो लव
तिन के जातकरम ते आदि सभ वेद मो रिषने कीए ॥ दोहरा॥
वेद पढाए प्रथिम मुनि धनुरवेद सविसेष अस्त्र सस्त्र दीने सवे दी
मंत्र असेष ॥५७॥ वार्ता॥ प्रथम तो वेद पढाए फेर विसेष ता सो
धनुरवेद पढाए सस्त्र अस्त्र अर सभ मंत्र दीए ॥५७॥ इति श्री
इंद्रजित विरचतायां श्रीमत सकल लोक लोचन चकोर चिंता
मणि श्रीरामचंद्र चंद्रकायां कुसलव उतपति रनाम प्रकास त्रिं
स्त्रिंसतमः ॥३३॥ दोहरा॥ चौतीसए प्रकास में स्वान फिराईवो अ
न द्विजवर सो मठपति कीयो लवन सुर वध जान ॥१॥ वार्ता॥
चौतीसमे प्रकास के विषे स्वान फिराइ आवेगा ब्राह्मण को
मठपति करेगा अर लवण असुर को वध होवेगो ॥ दोपक छंद॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

एकसमेहर परमसभामे सोभतहैनरदेवसभामे संगसवे
निषराजविराजे सोदरमेत्रनसेसुषसाजे ॥२॥ वार्ता ॥ एकस
मे श्रीरामजू परमकी सभामे से भतेसेराजिताके सहित संग
समरिषराज सोभतहै भाईअर सेवषीन सोसुषपूरक सोभत
है ॥ ॥ कूकर एक फिरादहि आयो दुंदभ परम दुआर वजा
ये बाजतही उठलछमन पाये स्वानको करनवूझन आये ॥
३॥ वार्ता ॥ तहां एककूकरफिरादी आवता भया ताने दुआरमे
परमको नगारो वजायो बाजते ही सुनके लछमनजू उठदौ
रे हे स्वान तुम कहा हम तुमको पूछने आये है ॥ स्वान वाच ॥
काहूके कोप विरोध न देख्यो रामको राज तपोमय लेख्यो ॥
तामहि दो दुष दीरघ पायो सुनि वेद तिराम हि सुन आयो ॥
॥४॥ वार्ता ॥ इहां श्रीरामजू के राजकोा तपोमे जानो नाकाहूके
कोपहै ना विरोध है तिसमे मैने वडो दुष पायो सो मे राम
जू के सुनावनकोा आयो हो ॥ लछमण ॥ परमसभा महि रा
महि जानो स्वान चलो निज दुष वषानो ॥ स्वान वाच ॥ हो अब
राजसभा मेहि आऊ आऊ तो कसवसो मनापाऊ ॥५॥ वा
र्ता ॥ तव लछमनजूने कह्यो है स्वान अव रामजू परमसभा
मे है तुम चलके दुष कहो तव स्वान कह्यो मे अव राजसभामे
आवो परजो आवो तो सोभा को नापावे ॥ दोहरा ॥ देवकुदेही
न्हे देव घर पावन घल सुषदाय अनवोले आने दमति कुन
सितजीउनजान ॥८॥ वार्ता ॥ देवता अरकुदेव का ब्राह्मण अ
र राजा इनोके पवित्र घरके अस्थान विषे आनेदमति विनाबु
लाये षोटजीव नही जात है ॥ ॥ राजसभा तव स्वान बुलायो
राम विलोकतही सुष पायो राम कह्यो जु कछू दुष तेरे स्वा
न तिसक कह्यो पुर मेरे ॥७॥ वार्ता ॥ तव श्रीरामजूने राजस
भा विषे स्वानकोा बुलायो तिसने श्रीरामजूकोा देषतेही वडो
सुष पायो रामजूने कह्यो है स्वान जो तेरे दुष है सो तिसके मे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

223A रे आगे कह्यो ॥ स्वान वाच ॥ तारक छंद ॥ तुम हो सरवग्य सदा
सुषदायक अरु हौ सम को सब ही विधि लायक जग सेवत है
जगती पति जागे अपने अपने सब मारग लागे ॥ ८ ॥ वार्ता ॥ हे
नाथ तुम सदा सम की जानवेवारे हो अरु सुषदायक हो अ
रु सम को सम विधि सो लायक हो जाके राज मै जगत तो सोव
तो होय अरु राजा जागतो होय ता मै सब अपने अपने रस तै ला
गते है ॥ ॥ नरदेवन पाप परे परजा के निसवासर होत न रक्ष
कता के गुर दोषन को नृप होय न दरसी तब ही नृप होत न नरे
पद परसी ॥ ९ ॥ वार्ता ॥ परजा के पाप राजिउ के ऊपर ते है जो
राजा तिनते के रात दिन रक्षक नहीं है ऐसे है राजा जब गुणते दो
षन को देषनेवारो ना होवे तब बहि नरक के जानवारो होत है
॥ दोहरा ॥ निज स्वारथ ही छिप द्विज मो को कह्यो प्रहारु ॥ वि
न अपराध अगाय मति ताको कहा विचारु ॥ १० ॥ वार्ता ॥ अ
पने स्वारथ के लिये वा ते ही ब्राह्मण ने मो को प्रहार कीयो है हेव
डी बुधवारे विना अपराध के सो ताको कहा विचार है ॥ तारक छं
द ॥ न वना के लैन गये जन पाये तब ही नगरी मधि ते गहि पाये ॥ श्री
राम ॥ यहि कूकर को विनदोष प्रहारयो अपने जीय त्रास क
छू न विचारयो ॥ ११ ॥ वार्ता ॥ तब तिस ब्राह्मण के लैन वास्ते जन दौ
रे नगर के बीच सो पकर के ल्याये अरु कह्यो यहि कूकर विना दो
ष के को तुम ने मार्यो है अपने चित्त मै कछू ना विचार्यो ॥ ब्रा
ह्मण उवाच ॥ दोहरा ॥ यहि सोवत हो पंथ मै हौ भोजन को जा
त मै अपडर अकुलाय उ याको कीनो घात ॥ १२ ॥ वार्ता ॥ तब
तिसने कह्यो यहि रसते मै सोवतो थो अरु मै भोजन को जातो थो मै
अपने भै सो व्याकुल है के याको मार्यो है ॥ श्रीराम सभाप्रति ॥
स्वागता छंद ॥ ब्रह्म ब्रह्म रिष राज बषानो परम करम बहु
भांत न जानो कौन दंड द्विज को द्विज दीजे चित्त विचार क
रि सो इ कीजे ॥ १३ ॥ वार्ता ॥ तब राम जू ने कह्यो हे रिष राज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो हम तुम सब मे ब्रिह्मब्रिह्म कहत है अथवा तुम ब्राह्मण ने
ब्राह्मणो के राजा अरि छिराजसम है अरु परम तेक रम समनो
को जानत हो अब ब्राह्मणो को कौन सा दंड दे ईये चित्त मे विचा
र के कहो सो ई करीइये ॥ कसप ॥ ईस सीषयहि या को दीजै ॥
चूक हीन अरु दंड कीजे है अरु दंड मुबदेव सहाई जन तन असु
नीय रघुराई ॥१४॥ वार्ता ॥ हे ईस्वर यहि सिक्षा याको दीजीये
चूका रोअर सत्रु या को दंड हीदई ता है अर ब्राह्मण सदा अदं
डहै सो जहां तहां सुनी ता है ॥ श्रीराम ॥ तोमर छंद ॥ सुन स्वान मू
कहि दंड हम या हि देह अषंड कहु वात नू डरु डार जीयम थ
आप विचार ॥१५॥ वार्ता ॥ तव राम जू ने कह्यो हे स्वान तु हीं दं
डवताव सो हम सम या को देमेगे डर को दूर कर के तही बातको
कहु चित्त मे आप विचार करके ॥ स्वान ॥ दोहरा ॥ मेरो भायो
जो करो राम चंद्र हित मंड कीजे द्विज यहि मठ पती और दंड
सब छंड ॥१६॥ वार्ता ॥ जो हे श्रीराम जू मेरो भायो करनहो
हित को धार के और स मदंडन को छोड करके इस ब्राह्मण
को मठ पति क्या जारी करीये ॥ निसपाल का छंद ॥ पीत पहि
राय पटि बांप सी स सो पटी बोर अंग राग अंग सो रव हु पाग ही
पूज पर पांय मठ ता हित वही दीयो मत्त गजराज चढ विप्र मठ को
गयो ॥१७॥ वार्ता ॥ तव राम जू ने ता को पीत वस्त्र पहिराय के अर
सी स पेपटी पाग हीवां पके अंग राग क्या सुगंधन को अंग न मे
लगाय के अर बोर क्या हजार मत कराय के पेर पूजन करके
अरु चरण मे पर के ता को मठ क्या सिवजू मंदर नवहीं दीयो सो
मत्त हाथी पै चढ के ब्राह्मण मठ को जाता भया ॥ दोहरा ॥ भयो
रंक ते राज द्विज कीयो स्वान करतार भोगन लागो भोग तव व
जत दुंद भी द्वार ॥१८॥ वार्ता ॥ कंगाल ते ब्राह्मण राजा है गयो सो
स्वान रूपी ब्रिह्मा ने ता को कर दीयो सो भोगन को भोगवे लाग्यो ता
के द्वार मे नगारे बाजन लागे ॥ सुंदरी छंद ॥ पूछन लोग सभा

समस्तानहि जानततनाहिनयापरमानहि विप्रहितेजुदेई
पदवीवहु हेपहिनिग्रहिकियोअनुग्रहि ॥१९॥वार्त्ता॥
तवलोकनसभामेसमस्तानकोपूछवेलागे सोइसकानके
अंतकोनहिजानतहेदेषोयाकोब्राह्मणतेजुवडीपदवीदई
हेसोयहिवैरकीयोहेकिक्रिपाकरीहे॥स्वानोवाचदोध
कछंद॥एककुतोजहुतोमठधारी देवचतुरभुजकोअ
धिकारी तापयकोऊवडोजनआवे अंगभलीरचनाहि
वनावे॥२०॥वार्त्ता॥तवस्वानवषानितोएकमठधारीक
तोजोआब्राह्मणथा सोचतुरभुजजोविसुजू तिनकाअ
धिकारीथा सोतिसपासजवकोऊवडोजनआवताथा त
वतोठाकुरकेअंगकी भलीरचनावनावताथा॥ ॥जादिन
केसिवकोऊनआवे तादिनपालकतेनउठावे भेटनलेव
हुपापनकीने नित्यकरेवहुभेगनकीने॥२१॥वार्त्ता॥जि
सदिकोऊनहीआवता तिसदिनपलंगतेभीनहीउठावता
था भेटोलैकेवहुतप्रकारकेपनतानेइकठेकीने नित्यनवीन
वहुतेभोगकरयाकरे॥ ॥एकदिनाइकपाहुनआयो भो
जनकोवहुभांतवनायो ताहिपरोसनकोपितुमेरो वोल
लियोहितुहैसवकेरो॥२२॥वार्त्ता॥एकदिनताकेएकपा
हुनोआयो तववहुतप्रकारकाभोजनवनाया ताकेपरोस
नवास्ते मेरेपिताकोवुलायलीयो सोसभनेकाहितूथा॥
ताहितहांवहुभांतपरोस्यो कोंहूंकहूंनषमाकरद्योस्यो॥
ताहिपरोसजवहीघरआयो रोवतहीहसकेछलगायो॥२३॥
वार्त्ता॥तिसमेरेपितानेतहांवहुतप्रकारपरोस्या किसीतरां
कहींकनषमेरहिगयोतिसकोपरोसकेजवघरआयातवमे
जोरोवताथासोताकोहसकेकंठसोलगायो॥चामरछंद॥मो
हिमानहूपमांततपतभोजकोदयो वातसेसिरानतानतछीर
अंगुरीदयो दूध्यो भछ्योगयो मरेअनेकनरकिरो होमअस्यो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अनेकजो तिर्थों पआन स्नान भयो ॥२४॥ वार्ता ॥ मोको
माताने दुगयते भातनाको भोजनकरणकों दीये पव
नसो सीतलकरतेहूये मेरे पिताने अंगुरीसो दुगयको छू
ह्यो सो जो तामे छित दवगयो सो मैने षायो ताते मे अने
न४ कैरकों मैगयो फेर मे अनेकजो तेमे भ्रम्यो तव अजुध्या
मे आनकरकेस्नान भयो ॥ दोहरा ॥ वांके पोरो दोष मे दी
नो हे डु अगाय रामचराचर ईस तुम छमियहु यहि अप
राय ॥२५॥ वार्ता ॥ वाके दोषथोरोसा अर मे हे डवडो दी
यो है सो हे रामतुम सम भचराचर के स्वामी हो यहि अपराध
छमाकरना ॥ दोहरा ॥ इहिलोककीये अपवित्र ऊहले
कनरकगनवास छुवे जुको ऊमठपतिहता को पुन्य विना
स ॥२६॥ वार्ता ॥ यहिलोक भीति समठपतीने अपवित्र की
यो अर परलोकविषनरकोके संवूह मे वास पायो जो कोऊ
ति समठपती को छुवै ताके पुन्यन को नास होत है ॥ स्कंधपुरा
ने यथा सलोक ॥ हर अंअन्यदेवस्य के सवस्वविसषतः मठा
पत्यतुपः कुरपाल सरवे परमेव ही क्रितः ॥२७॥ वार्ता ॥ सि
वजू को अर औरदेवता को अर श्री भगवानका विसेषताक
रके जो मठपतिताको करम को करत है सो सम परमते वा ह
र होत है ॥ विष्णु पुराणे ॥ सलोक ॥ अभोज्यं मठनामं नेभुत
काचान्द्रायनेचरेत सप्रष्टवा मठपति विप्रंसवासजलमा
विसेत ॥२८॥ वार्ता ॥ मठपती को अन्नषायकर के चंद्राय
णव्रत करै जामें क्रिस्न पष्ष ते घटावते जाय अर सुकलपाष
ने वधावे अहार प्रयंत भोजन को जो सपरस करै मठपती ब्रा
ह्मण को सो वस्त्रन के सहित जल मे वसै तो सुध होवे ॥ दोहरा ॥
औरेपककथा कहो विमल भपकी राम वहे अजो पावसन
हे वंसकारकेपाम ॥२९॥ वार्ता ॥ औरपकनिरमल राजा की
कथा कहित हो प्रिथम वहि अजुध्या मे वसता था वंसकारो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२२३A

केचरि ति सो पुन्य ते राजा भयो॥ वसंततिलकछंद॥ राजा
हुतो प्रवल दुष्ट अनेक हारी कारन सो विमल छेत्र निवा
सकारी सो सत्यकेत प्रसिध यहि नाम सूरो विद्या विनोद
रति परम विधान पूरो॥२२॥ वार्ता॥ सो राजा बडे जो दुष्ट ति
नोके नास करणवारो भयो निरमल देत्र जो कंसीजु तामै
निवास करणवारो है सो तिसका सत्यकेत यहि प्रसिध नाम
है विद्या के आनंद मै प्रीन वान है अरु परम के विधान मै पूरन
है॥ ॥परमाधिकार परद्विजांत एक कीलो संकल पद्रव्य
बहु पातिन चोर लीनो वेदी विनोद गणिकान विलास कर
ता पावे सदा सुपज दानी अ सेष हरता॥२३॥ वार्ता॥ परम
के अधिकार ये एक तिसने ब्राह्मण कीयो ताने संकल पजो
द्रव्य चुराय लीयो वोही यो मै जाको अनंद था अरु वेस्यान सो
ए४ विलास के करणवारा था सो ब्राह्मण दैसांसपावर्त सा परम पूरण
दान को चुराव लेता भा॥ ॥राजा विदेस बहु साज सैना ग
यो है जू फैौ तहां समर जो पान सो भयो है आप करण कि
लहून कलेसकारी लाने गये न्रिपत को जहां दंड धारी॥२४॥
वार्ता॥ सो राजा बहुत सेना को सज करके विदेस मै गया तहां
जो पान मै जू फगा यो ताको लैन को भयानक जो कलेस के क
रणवारे दूत सो आये राजा को लेके गये जहां जम थे॥ पर
म राजवाच॥ भुजंगप्रियात छंद॥ कहा भोगवैगो महारा
ज हूं मै किधा पै कि पुन्य के रैम्र रम्र मै॥ राजोवाच॥ सुनो दे
व मै कोक छू सुपना ही कहो आप ही पाप जो मोह माही
॥२४॥ वार्ता॥ हे महाराज तू दोनो मै कहा भोगैगो पाप के
पुन्य तुमने प्रिथवी मै दोऊ कीये है तब राजा कह्यो हे देव
तुम सुनो मो को कछू सुपन ही है जो मेरे मै पाप है तुम ही क
हो॥ परमराजोवाच॥ कीयो हो द्विजांतीने परमाधिकारी
सुनो नित्य संकल पवितापहारी दीये दुष्ट रंडानि सु डानि ले

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

के महापाप माथे तिहारे सुंदे कै ॥२५॥ का०॥ हे राजन
ते परम पै अपकारी एक ब्राह्मण की आज्ञा से नित्य के
संकलप के द्रव्य के चुरावन वारो था तिस ने दु सूरंडी ओं को
ले के दीयो तुमारे माथे परम महापाप को दै कर कै ॥ ॥ कुंतो
ते सब वेद सही को नियंता भले की बुरे की करी लैन चिंता महा
सूक्ष्म है परम की बात देषो जितो दान दीनो तितो पाप ले
यो ॥३६॥ वार्ता॥ तूं सब देस को नियंता क्यान्याऊ करण वा
राथा ते भले बुरे की चिंता ना करी परम की बात महा सूक्षम
जानो जितना दान दी आज्ञा तितन का पाप भया ॥ दोहरा॥ का
लमरय समसमकी यो सवै राज के परम ताहूं ते अति विषम रा
जनि पत दान के करम ॥३७॥ वार्ता॥ सब राज के परम भया
नक सरप से देषीते है तिन ते भी अत्यंत कठिन गत के करम
है ॥ स्वानोवाच ॥ भयो को ट पानरक संपरकता को हते दो
ष ते सरग के सुषतो को सभे पाप भे छीन मै मुकत लेषी र
ह्यो औपमे आन है लोक वषी ॥३८॥ वार्ता॥ करोर प्रकार
से नरक के संपरक क्या मिलापता को करके बहुतो सुषपा
ता को संगर क्या संगत करके दोष भये से सो सब पापतां के ना
स मै भयो भोग के तव छूट्यो अयुध्या मै आय करके कोल
क्यावर ठहाय के रह्यो ॥ दोधक छंद ॥ कोल उठो दरबार
विलासी द्विज द्वारल से जमुनातट वासी आदर सो तिस भा
महि बोल्यो पूजन के मग के स्वम षोल्यो ॥३९॥ वार्ता॥ तिसी
समै द्वार पै रहिन वारे बोल्यो जमुना के तीर रहिन वारो ब्रा
ह्मण द्वार पै षडो है ताको आदर से सभा मै बुलायो ताको
पूजन करके मग को स्वम षोल्यो ॥ श्रीराम ॥ आप कहां से
प आप सहीजे आज मनोरथ पूरन कीजे जीवन मै सब
राजनि हमो निरमै है भुवलोक विहारो ॥४०॥ वार्ता॥ आ
प कहां ते आवे हो आज्ञा दीजीये आज अपने मनोरथ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

226A चरणकरीपे हमारेजीवसहित सभराजतुमारोहीहै मेर
हितहैके प्रिथवीलोकमेफिरे॥ रूपमालाछंद॥ सुषदेषन
रावरेसुभयेसभेपहिवार इसश्रागमसंगमादिकहीश्रनेक
प्रकार पामपावनहै गये पदपदमकेपयपाय जनमसु
षभयोजुवैकुलद्विषसुनराय॥४१॥वार्ता॥इससमेतुमारे
देषनेतेसम सुष भये हेईसतुमारेश्रावनकोजोसंगश्रादि
कहे सोश्रनेकप्रकारकहेहे तुमारेचरणकमलोकेजल
कोपायकरकेहमारोघरपवित्रहेगयो श्रसपरसकीयेतेजन
मसुप भयो श्ररदेषनेतेकुल॥ ॥पदपदमकेपरनामही
भयेसुपसीरषहाथ सुपलोचनरूपदेषतही भयेसुननाथ
नासकारिसुनाविसुप भईसुगंपसुनाम करनकीनेसुपस
वदसुनापपियुषपाम॥४२॥वार्ता॥श्ररचरणकमलोमेप्र
णामकरतेसीसतेहाथसुपहैगये श्ररूपदेषतेहीनेत्रसुप
हैगये फेरनामकानेजिभाश्रापकीसुगंपग्रहिनतेश्ररनाम
कहिनतेपवित्रभये श्ररश्रेष्ठिनकेघेरजेसवदतिनोकोसु
नायकरकेकानपवित्रकीनीने॥ मरहिठा॥ तुमहोसभला
यकश्रीरघुनायककऊकउपमादीजेकाहि मुनिमानिसरे
नं॰ ताजगतनियंताश्रादिश्रंतेंहिजाहि मारेलवणासुरजेसे
मधुसुरमारेश्रीरघुनाथ जगजयरसभीनेश्रीसिवदी
नोसूलहिलीनेहाथ॥४३॥वार्ता॥जवरिषिउनेकह्योहे
रामजूतुमसभलायकहोतुमारीउपमाकाकोदीजीए॥
मुनीउके मनमेरवणकरणवारेहो जगतकेपालवरेहो
जाकोश्रादश्रंतनहीहै सोहेनाथलवणासुरकोमरोजेसे
मधुनेसुरमारेहै जगतकेजयकेरसमेभयोहुयोश्रीसि
वजूकोदीयोजोताकोत्रिसूलहैताकोहाथमेलीयेहै॥
दोहरा॥जाकेमेलतसूलवहिसुनिजेत्रिभुवनराय ता
हिमसमकरसरवपावाहीकेकरजाय॥४४॥वार्ता॥हेती

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नपवनके स्वामी वहि सूल जाको नारत है तिसको समतरा
मसमकरके तिसीके हाथमें जायरहित है॥ दोपक छंद॥
देससवे तर हारगये जू और जितेनर देवमये जू श्रीरिषिने गु
दनजु पनमांझ्यो सकरको करि सेवक कांड्यो॥४४॥ वार्ता॥
समदेवता तिसनेजु थमें हारगये और जितनेराजा है अरप
रसराम नेतासेजु पनहीकीयां सिवजूको सेवककरके छो
ड दीये॥ दोहरा॥ पादरथहमको दयो मथुरामंडलु आपु
वायेवसनन पावही विनावसे अतिआय॥ ४६॥ वार्ता॥
पादअरथ करके हमको तुमने मथुरामंडलमै गाम दीयेसे सो
तहां हम वसना नही पावते है और विनावसे अपने दुष है
श्रीरामरूपमाला छंद॥ रछहि गसत्रुघ्नके सुत तुमको सवका
ल वासदेव है रछ्यहो हो तुमको निह कल्ल॥ ४७॥ वार्ता॥
सम काल मै तुमको सत्रुघ्नके पुत्र रक्षा करेंगे फेरमै वसुदेव
को पुत्र हैके करके रक्षा करोंगो॥ भुजंगप्रियात छंद॥ चलेवरा
सत्रुघ्न ताको सिंघारो वहेदेसतो आवतो है हमारो सदासुप
विंदावनी भूमली है तहां नित्यमेरी विरसथली है॥ ४८॥
वार्ता॥ तव रामजूने कह्यो हे सत्रुघ्न तुम वे राजा वो ताको मारो
वहि देस तो हमारो पास्यो है विंदावनकी सेष प्रिथवी तहां सदा
सुप है तहां मेरी सदा विहार करणकी थली है॥ ॥यहे जान
भूमे द्विजनमान दीनो वसे जत्र विंदा प्रियाप्रेम भीनी सना
ध्यानिकी मगतजे जीयजागे महांदेवके सूलता कोन ला

गे॥ ४९॥ यही जानकरके प्रिथवीमें ब्राह्मणोंको दई है जहां प्रे
ममे भरी हुई विंदावसत है जो तुम कहो वा पे महादेवको सू
ल है तो जाके चितसनाध्योकी भगतजभात है ताको महादेव
को सूल नही लगत है॥ ॥विदा लै चले रामपे सत्रुहंता च
ले साथ हाथी सजे जु परंता चतुरथा चमू चारहू डोरसाजे व
जे दुदभी ही हहदिग वेवला जे॥ ५०॥ वार्ता॥ तव श्रीरामजूपै

227A

सेसत्रुघ्नजूविदालैकेचलतेभये चलेहैंसंगहसतीमजेहूयेजु
पमेरवणकरणवारे चारप्रकारकीसेनाचारेनरफसोमतहै
ग्ररवडेनगारेवाजतहै तिनोकोदेषकेदिसानकेदेवतलेजा
मानहोतहै ॥दोहरा॥ केसववासरवारहे रघुवरकेवहुवीर॥
लवणासुरकेजमुज्योमेलेजमुनातीर ॥५२॥वार्ता॥ तववारमे
हितश्रीरामजूकेभाईलवनासुरकेजमोकेसमान तिनेजेज
मुनाकेकनारेत्योंदे॥मतेमसमाऊद॥ लवनासुरग्रायगयो
जमुनातट ग्रवलोकहस्योरघुनंदनकेभट पनुवाणलीये
निकस्योरघुनंदन मदकेगजकोसुतकेसरकोमनु॥५३॥
वार्ता॥ तवलवणासुरजमुनाकेकिनारेग्रायो श्रीशत्रुघ्नके
सूरमयोकोदेषकेहस्यो तवधनुषवाणकोलीयेहूयेशत्रुघ्न
ग्रायेमदकेभरेहूयेहाथीकेमानोसिंघकेपुत्रग्रायेहै॥
लवनासुर॥सुन्योतनहैतूरहांमलग्रायो वडेभागमेरवडो
भष्यपायो॥शत्रुघ्न॥महाराजश्रीरामहैकुपतेसे नजोदे
सकोकैसजेसुपमासे॥५४॥वार्ता॥ हेशत्रुघ्नतेमाकोनहींस
स्योतूमलकेइहांग्रायगयोहैसोमेरेवडेभागहै जिसतेमैव
डाभष्यपायाहै तवशत्रुघ्नजूकह्योमहाराजरामजूतोपे
वडेकुयतहैतोतेतुमदेसकोत्यागोकेमेसेजुधकरो॥लव
णासुर॥वहैरामराजादसग्रीवहैना सुनोवधुमेरोसुरईस्त्री
निरेता हतोहूंवाकोकरोचित्रमायो महादेवकीसेवडोम
षणयो॥५६॥वार्ता॥ तवराकसकह्योवहीराजारामहैजो
रावणकेमारणवारेहै सोरावणतोमेराभाईथा देवतारीन
सोरवणवारा सोपातेमैवाकेमारेतोग्रपनेमनकोग्राजभा
वतेकरोगोमाकोसिवजूकीसुगदहै मैवडोभष्यपायोहैं॥
भयकुपदोऊदुवेजुपरेता दोऊग्रस्त्रसस्त्रप्रयोगीनिहं
ता वलीविक्रमीधीरसोभाप्रकासी नस्योहरषदोऊसुवा
वेषरासी॥५५॥वार्ता॥तवदोऊजेजुपमेरवणवारेहैसोके

पवनतनय पै दोऊ भ्रात ते असुरन के चलावन वारे है आनंद दोऊ-
न को दूर भयो वाणन की वरषा सी वरषत है ॥ दोहरा ॥ लवणासु-
र सिव सूल विनु और न लागे मोहि सूल लीये विन मूल हू है
न मार है तो हि ॥५६॥ वार्त्ता ॥ तव शत्रुघ्न जू ने कह्यो है लवणासु-
र सिवजू के त्रिसूल ते विना मो को और नहीं लागेगो अरु मै भी
तो को त्रिसूल ग्रहि न करै विना मूल करके भी नहीं मारोगो ॥
मोटनक छंद ॥ लीनो लवणासुर सूल जही मार्यो रघुनंद-
न वाण तहीं काट्यो सिर सूल समेत गयो सूली कर सुख त्रि-
लोक भयो ॥५७॥ वार्त्ता ॥ जव ताने हाथ मै सूल लीयो तव ही
सत्रु सत्रुघ्न जू ने वाण मार्यो तव सीस काट दीयो सूल के स-
मेत सो सूल अरु सीस सिव जू के हाथ मे जात भयो तव
तीनो लोकन मे आनंद भयो ॥ ॥ वाजे दिवि दुंदुभि दीह तवै
आये सुर इंद्र समेत सवै देव ऊ कीने वहू कमयारन मै मा-
गो वर हो न रुचे मन मै ॥५८॥ वार्त्ता ॥ तव स्वर्ग मे वडे नगारे वा-
जे अरु इंद्र के समेत सव देवता आये तिनै नै कह्यो आप ने व-
डो पराक्रम जु यमै कीयो है जो तुम को चाह है सो वरदान मांगो
शत्रुघ्न ॥ नगस्वरूपनी ॥ सनाढ्य वृत्ति जो हरे सदा समूल सो
जरे अकाल मृत्यु ते मरे अनेक सो परे ॥५९॥ वार्त्ता ॥ जो
सनाढ्य जात के ब्राह्मणो की जीविका को दूर करे सो सदा सहित
मूल के नास होत है अरु अकाल मौत ते मरत है ते अनेक नर-
क मे परत है ॥ देव ॥ सनाढ्य जाति सर्मदा पथा पुनीत नर-
मदा भजे स जे सि संपदा विरुध ते असंपदा ॥६०॥ वार्त्ता ॥ स-
नाढ्य जात सदा पवित्र है जैसे नर्मदा है जो या के भजत को
पूजत है सो संपदा सो सोभत है अरु जो विरोध करै है सो असंप-
दा सें ॥ दोहरा ॥ मथुरा मंडल मधुपुरी के सव सुव सव साय ॥
देषन तव शत्रुघ्न जू रामचंद्र के पाय ॥६१॥ वार्त्ता ॥ मथुरा मंडल
मै जो मथुरा पुरी है ताको भली तरै वसाय करके तव शत्रुघ्न जू

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

228A केचरणहेवे ॥ इति श्री इंद्रजितविरचितायां श्रीमतसकल
लोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रकायांलव
णासुरवधनवरननंनामचतुरत्रिंसतमोप्रकासः ॥३४॥
दोहरा ॥ पैंतीसयेप्रकासमेंअस्वमेधआरंभ देसाटनहै
सत्रुहनलवमोहनसारंभ ॥१॥ वार्ता ॥ पैंतीसमेंप्रकासकेवि
षेअस्वमेधयेकोआरंभ देसमेंजोहोकोफिरवोसत्रुघ्नने
लवजूकोमूरछाकरदैनो ॥ दोहरा ॥ विस्वामित्रवसिष्ठसे
एकसमेरघुनाथ आरंभीकेसवकरनेअस्वमेधकीगाथ
॥२॥ वार्ता ॥ एकसमेश्रीरामजूनेविस्वामित्रनेवसिष्ठजूसे
अस्वमेधकीकथाआरंभकरी ॥ चामरछंद ॥ मैपलीसम
नमेंअसेषह्यानतेहीये राजसूहंभाहिआदिदेअनेकज
ग्यमेकीये सीयत्यागपापतेमहांहीयेसुहोडुरो औरएक
अस्वमेधजानकीविनाकरो ॥३॥ वार्ता ॥ सीताजूकेसहित
तोमैनेअनेकदूरवदीयेहे औरराजासूजतेआदलैकेय
नेकजग्यकीयेहे अवसीताजूकेत्यागनकेपापतेमैवडोहीं
पमेंडुरतहों तातेसीताजूतेविनाएकऔरअस्वमेधकरों ॥
वसिष्ठ ॥ दोहरा ॥ परमकरमकछुकीजहेसफलतहुनके
साथ ताविनजोइकीजही सोईनिसफलनाथ ॥४॥ वार्ता ॥
तबवसिष्ठजूकह्यो जोकछूपरमकरमकरीतेहेसोइस्त्री
संगहीसफलहोतेहेतिसतेविनाजोकरीतेहेसोनिसफल
होतेहे ॥ श्रीराम ॥ तोटकछंद ॥ कीजैजुतभूषनरूपरई ॥
मिथलेसमुतासमसवरणमई दिषराजसवेरिषवोललीं
ये सुचसोसवजग्यविधानकीये ॥५॥ वार्ता ॥ तवरामजूके
ह्योभूषनेकेसहितरूपमेंमिलीहुईसमसवरणकीसीताव
नायलेडुये पहिमानकेरिषियेवेराजेमेसमरिषीवुलाये
पवित्रतासेंसमनोनेजग्यकेविधानकीये ॥ ॥ हयसाल
नतेकेरलये सतिवरणसकेसरसोभरयो स्तुतिस्यामल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पेकु विराजत है अलि ज्यों सरसी रुह राजत है॥६॥ वार्ता॥
फेर घोड़ सालनते घोड़े लीये चंद्रमा से स्वेत जो कोरंग
है अरु केसर सो रंग्यो है अरु पद्मानजो के स्याम सो भनेहै
भवरन से जैसे कमल होय तैसे सोभत है॥ रूपमालती
छंद॥ एजरे चनस्व छक्ष्मछतपद्वव पीयमाल भूषि
भूषनि सत्रु दूषन छोड़िये तिह काल मंगल चनु साम
नास ग्रहे ताराय मांतमांतन मानदे पठ्ये सबै रघुना
थ॥७॥ वार्ता॥ ताके भागे वन सो अरु निरमल अछत
सो पूजन करके माथे पे स्वरण का पटा बांध्या फेर भूषनो
सो सो भायमान करके शत्रुन को नास करणवारे जो है
सब से छोड़ दीये तिस समे चार प्रकार की सेना को ले
करके अशत्रुघ्नजू के साथ लैके नरेनरे सो मानहैं के सं
पूरण श्रीरामजू ने भेजे॥ ॥जात है जित बाज के सब जा
त है तित लोग बोल विप्रन दान दै जनु जत्रनत्र सयोग वे
नवीन मृदंग बाजत दुंदभी बहु भेव मांतमांतन होत मंग
ल देव से नरदेव॥८॥ वार्ता॥ जिस तरफ घोड़ा जाता है तिसी
तरफ सभले चले जाते है अरु जहां तहां सहित मंगल के ब्राह्म
णो को बुलाय के दान देई ते है वंसी वीना मृदंग नगारे व
हुत भेदन सो बाजत है अरु नरे नरे के मंगल होत है देवति
उ से राजा सोभत है॥ कमल छंद॥ राघव की चतुरंग चमू
चपके गने के सब राजसमाजन सूर तुरंगन के उरफे पग
तुंगपतीकनि के पटसाजन टूटपरे तिनते मुकता परनी
वरनी उपमा कवि राजन विंदु मनो मुष फेननि के कि यो
राजसिरी स्रवे मंगल लाजन॥९॥ वार्ता॥ श्रीरामजू की चा
र प्रकार की सेना के सब हू हक अरु राजियो के समाज को कौन
है जो गिन सके ऊंचे जो पताकन के वस्त्र सजरहे है ताके
सूरज के घोड़ों के चरण उरफ गये है तब तिन पताकानते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

229A सो कै हूटपरे खिथवी विषे तिनो की उपमा कवी ऊने ऐसे सीव
रनी है मानो तिनचोहिऊ के मुषो ते फूटोके विंदु गिरे हैं अथ
वा राज लछमी मेगल वासते पानो की फुलीआं के वरषाव
तहे ॥ सवैया ॥ राघव की चतुरंग चमू चयपूर उठी जल हू थ
ल छाई मेनो प्रताप हुतासन धूम सके सवदास अकास न
माई मे टके पंचप्रभूतकि धोंवि पुरैन मई तवरी तचलाई ॥
दुछन देवनको भवभार के भूमकि धो सुरलोक सिधाई ॥
॥१०॥ वार्ता ॥ श्री रामजू की चार प्रकार की सेना के संहूह की
जो तमसमे पूर उठी जल थल मे छाई है सो मानो प्रताप
रूपी अगनको धूम अकास मे नही समावति है अथवा
पंच भूतन को मेट के विसाने रेग मै मिहू चलाई है अथवा
संसार के भार के दुष कहिवे को प्रथवी ही देवलोक को गई
है ॥ दंडक छंद ॥ नदी पूर पूर पूर तरु वन चूर गिर सोष सोष
जल भूर भूर थल गाथ की केसोदास आस पास ठोर ठौ
र राषजन तिनकी संपति सब आपने ही हाथ की उनतन वा
पतन उनत वनाये भूप शत्रुनि की जीवकानि मित्रन के हाथ
की मुद्रत समुद्र सात मुद्रा निज मुद्रन तिके आई दिसदिस जी
त सेना रघुनाथ की ॥११॥ वार्ता ॥ नदीऊ के प्रवाहन को पूर
सो पूरण करके अरवनो को तोर के परवतो को चूरण करके
अरु सोष सोष करके वडे जलो को तहा वडे थलो की कथा
करदई अरु अस्थान अस्थान मे अपने मानुषो को राष के
तिन अस्थान वालिऊ की संपदा सब आपने हाथ करी
जो ऊचे हे गये से सो नीमे कीए जो नीचे से ते ऊचे कीए रा
जा सत्रुन की जीवका से मित्रो के हाथ करी फेर सातो स
मुद्रन को मुद्रकरके परसो मानो अपनी मुद्रीसे मोहर का
पकरके दिसदिस को जीतके श्री रामजू की सेना आवती
भई है ॥ दोहरा ॥ दिसविदिसन अवगाहके सुषही केसदा

रामचं सटी २३
230

236

स बालमीकके आस्रम हि गए तुरंग प्रकास ॥१२॥ वार्ता॥
दिसा ते विदिसान को अवगाहन करके सुख सो बालमी
कजू के आस्रम में जो डा गया ॥ दोधक छंद ॥ दूरहीं ते
मुनि बालक धाये बाज न बाज विलोकन आये भालको
पटजहीं लव बाच्यो वो पतुरंग मजे रस राच्यो ॥१३॥ वार्ता॥
ताको देषके दूरहीं ते मुनीसर के बालक दौरे पूजन केरिता
जो घोडा है ताके देषन को आये माथे का पटा जब लवजू ने
बाच्या तब घोडे को बांध करके जै के रस में रचे ॥ मत्ता का॥
एक वीरा कौसल्यानंदन पुत्रो रघूद्वहः तेन रामेन मुकतो
सो वाजी गृह्णात्वं बली ॥१४॥ वार्ता॥ ताके माथे पै के से
लिख्यो एक वीर पुत्र के उपजावनवारी कौसल्या ताके पु
त्र श्रीरामजू हैं तिनोंने यहि घोडा छोड्या है सो इस घोडे
को जो बली होय ॥ ॥ घोढ बमूच हूं ऊरसेगाजी को हेरे
यहि को ध्यावाजी बोल उठे लव मैं हूं यको ध्यो यो कहि
के धनुसायक संधा ध्यो ॥१५॥ वार्ता॥ तब भयानक सेना चा
रेन तरफ तें गरजती भई कौन है रे जाने यहि घोडा बांध्यो है तब
लवजू बोल उठे यहि घोडा मैं बांध्यो है ऐसे कहि के धनु
ष पै बान संधान्यो ॥ मार भगाय द पे सऊरेया मनमथ के स
र ध्यान धनेज्यो ॥१६॥ वार्ता॥ तब सब मार के भगाय दीये
जैसे काम के बान करके वडे ध्यान ॥ भुजंगप्रयात छंद॥
जो पाम जे वीर शत्रुघ्न आये कोदंड लीने महा रोष छाए॥
ठाड्यो तहां एक बालो विलोक्यो रोक्यो तहीं जो न नारा
च मोक्यो ॥१७॥ वार्ता॥ जो पिडो के भागे ते वीर शत्रुघ्नजू
आये धनुष को लीये हूये वडे क्रोध में छये हूये तिसने त
हां उठत भयो एक बालक देख्यो तब सो जो बाण था सो
तहीं रोक्या ताको छोड्या ॥ शत्रुघ्न सुंदरी छंद॥ बालक का
ड दे छाड तुरंगम तो सो कहां करो संगर संगम उपर वीर

230A

हीएकरुनारस विप्रनवीरहतेनकहूंजस॥१८॥वार्ता॥हेका
लकनेछोडदेछोडदेघोडेको तोसोमैकहंजुयकरो शत्रुघ्न
जूकेऊपरतोवीरहेहीएमेदयाहै वीरनकोब्राह्मणकेमार
नमेकहूंजसनहीहै॥लवतारक॥कछुवातवडीकहोमुषघो
रे लवसोनजुरोवलनासुरघोरे द्विजदोषनहीवलतांको
सेघास्यो मरहीजुरह्योसुकहातुममास्यो॥१९॥वार्ता॥तव
लवजूनेकह्योघोरेमुषसोकछुवडीवाततनाकहो लवणासुर
केमुल्लावेवलसोनाजुरो कोतांकेवलतोब्राह्मणकेदोषे
नेहीदूरकरदीयाथा सोतोआगेहीमरगयाथातुमनेकहा
मास्योहै॥चामरछंद॥रामवंधुवाततीनछाडिओत्रिसूल
से भालमेविसालभल्लागीयोतिफूलसे लवघातकीनरा
ज्यतातगाततेकिपूजीये कौनशत्रुनैहन्योजुनाऊसत्रुहालो
ये॥२०॥वार्ता॥तवशत्रुघ्नजूनेत्रिसूलजैसेतीनवानछोडे॥
तिनाकेमाथेमेवडोजोभालक्याअग्रहेसोफूलसेलागे तव
लवनेकह्योहेराजपुत्रतेमेरेसरीरमैघातकीउहेकिपूजेहै
तुमनेकोनसोसत्रुमास्योहे जिसतेनामशत्रुघनपस्योहे॥
निसपालकछंद॥रोसकरिवानवहूभांतलवछंडिओ एकघ्व
जसूतजुगतीनरथषंडिओ सत्रुदसरथसुतअस्त्रकरजोय
रे ताहिसीयपुत्रतिलतूलसमषंडरे॥२१॥वार्ता॥तवक्रोधक
रकेलवजूनेवहुतप्रकारकेवाणछोडे एकभुजाहैरथवानती
नरथषंडनकीये इधरदसरथकेपुत्रजोहाथमेसस्त्रअस्त्रधार
तेहै तिनकोसीताजूकेपुत्रतिलसमषंडनकरतेहै॥दोधकछंद॥
रिपुहाकरवानवहेकरलीनो लवनासुरकोरघुनायकदीनो॥
लवकेउरमेउरकोवहिपत्री मुरकायगिरोमहिमेतवछत्री॥
२२॥वार्ता॥शत्रुघ्नजूनेतववहीवानहाथमेलीयो जोलवना
सुरकेमारनकोरामजूनेदीआथा तववहिवानलवजूकेउर
उरकगयो तवमूरछाषायकेप्रिथवीमैगिरे॥मोटनकछंद॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मोहेलवमूर्छपरेजवही जयदुंदभिवाजउठीतवही सूतेरथ
ऊपरआनपरे एत्रुघनसुधोकरूनानभरे॥२३॥वार्त्ता॥मूरछा
हूए जवलवजू प्रिथवीमेगिरे तवही जेकेनगारेवाजतेभए प्रि
थवीमेगिरेतवहीजैकेनगारेवाजतेभए प्रिथवीतेरथपैल्याय
केराषे सत्रुघनजूतवदयामेभरे॥ ॥चोरोतवहीजिनछो
रयो सत्रुघनहिआनंदचित्तभयो लैकेलवकोतचल्योजवही
सीतापहिवालगएतवही॥२४॥वार्त्ता॥तवतिनोनेघोडाछुडा
यलीओ सत्रुघनजूकेचित्तमेवडोआनंदभयो तवलवजूको
लैकेचले तवजहांकेवालकसीताजूपैगए॥वालक॥चंचलाछं
द॥मुनिमेथलीन्रिपएककोलववंधिडोवरवाज चरंगसेनभ
जायकेतवजीतिडोवहिआज ऊरलागगोसरएककोभुवमेगि
रयोमुरछाय वहिवाजलैलवलैचल्योन्रिपदुंदभीनवजाय॥२५॥
वार्त्ता॥हेसीतेसुनएकराजाकोघोडेलवनेवांधलीआघानाकी
चारप्रकारकीसेनाभगायकेजीतेसे फिरतिनकेउरमेवाणएक
कवानलगाया तवप्रिथवीमेमूरछाषायकेगिरयो सोवहिघो
डालैकेअरलवजूकोलैकेराजानगारेवजायकेचल्यो॥दोहरा॥
सीतासीतापुत्रकीसुनसुन मनोचित्रकीपुत्रका मनवचक्रमनत
मेत॥२६॥वार्त्ता॥तवसीताजूपुत्रकीकथासुनसुनकेरकेव्याकु
लभए सोमानोमनवचक्रमकरकेचित्रकीपूतरीहै॥ ॥रिपुहा
यश्रीरघुकोसुतकोपरेकरतार पनदेवतासमकल्लज्योलवजी
मिलेइहवार रिषहीनहैकुसहीनहोलवलेयकोनछुडाय वन
मांफदेरसुनीतहीकुसआयडोअकुलाय॥२७॥वार्त्ता॥सत्रुके
हाथश्रीरामजूकेपुत्रहेव्रह्माकैसेपरेगो जोमेसमकालमेप
तिदेवताहोतोहेनाथयासमेमेअवमोकोलवजूमिलै मेरिषन
रहितहैअरसुकनेरहितहो लवजूकोकौनछिडायलैवे तिन
कोवनमैजवकुसजूनेटेरसुनीतवहीकुसजूव्याकुलहैकेआ
वतेभए॥दोहरा॥रिपहिमारकैचारदलजमतेलेऊंछिडाय॥

231A लवहि मिले हो देषहो माता तेरे पाय ॥ २८ ॥ वार्ता ॥ हे माता सत्रू को
मार कर के तिन को दलु सिंघार करके मैं लव को जमुने भी छुडाय
लैवोंगो लवा को मिलके हे माता मैं तेरे चरणो को देषोंगो ॥ विज
य ॥ गाहियो सिंधसरोवर ज्यो जिह वाल वलीवर सेवर पै स्यो हा
हि दीयो सिर रावन को गिरसे गुरजा नन जात न है स्यो सालसमू
ल उषार लीयो लवनासुर पीछे ते जाय मुहे स्यो राघव को दलम
त करी सुरत्र्यं कुसदै कुस के सव पै स्यो ॥ २९ ॥ वार्ता ॥ जिस दल रू
पी हाथी ने समुद्र को ताल की तरै गाह्या है अरु जिसने वाली जै
सो वली वलसो वर क्या जो रावरी से पेल दीयो है फेर परवतो से
भारी जो रावन के सिर थे सो हाहि दीपे जा की तरफ देष्या न ही
जाता था अरु लवणासुर जो है सो साल व्रिछ समजिसने मूल स
हित उषेड दी आ था सो हाथी कुसजूने पीछे ते ने जाय के हेरि
या रामजू को दल जो था उनमत्त हाथी सो कुसजूने समरूपी
अंकुस को दे के फेरि लीये ॥ दोहरा ॥ कुस की टेर सुनी जहीं फूल
फिरे सत्रुघन दीप विलोक पतंग ज्यो जद्यप भयो वहु विघन ॥
३० ॥ वार्ता ॥ जव कुसं की टेर सुनी तव सत्रुघनजू फूल के फिरे जै
से दीपक देषके पतंग पछी आवत है जद्यप तो को वहुत विघ
न भी होत है ॥ तारक छंद ॥ रघुनंदन को अवलो कत ही कुस
उर मांफ हूपे सरसु पति रंकुस तिगिरे रथ ऊपर लागत ही सरु ॥
गिर ऊपर ज्यो गजराज कलेवर ॥ ३१ ॥ वार्ता ॥ सत्रुघुन को दे
षते ही कुसजी ने हूंये मैं वान मारे सो रथ पै वाणों के लगते ही
गिर परे जैसे परवत पै हाथी को सरीर गिरे ॥ ॥ जूक परे जव
ही अरु हारत भाजगये तवही भट के मन का हलये जवही
लव को सर कंठ लगयो तवही ऊठ सो दूर ॥ ३२ ॥ वार्ता ॥ जव
सत्रुघनजू जुय करके गिरे तव सूरमे घोके सवूह भाज गये ज
वही लव को वाणों कुसजू ने निकार लीयो तवही ऊठ कै कंठ
सो लवजू लागत भाये ॥ दोहरा ॥ मिले सकुस लव कुस लल सो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वाजवां पतरूमूल रनमे ठाढे तो भि पेपम पति गलपनि तू
ल ॥३३॥ वार्त्ता॥ कुसल सो नवल वने कुसजू मिले यो ढेको व्रिछ
के नले वां पकर के ठोऊ रन मे ठाढे मिवजू ने गले सजू के समसे
मन है॥ इति श्रीमत सकल लोक लोचन चकोर चिंतामणि श्री
रामचंद्र चंद्रकायांस ब्रुचन समर मोहन नाम पंचत्रिंसत मः
प्रकासः॥३५॥ दोहरा॥ छतीस ये प्रकास मै कुसमंवाद वषा
न लछमण सो ओजु पमै लछमन मोहन ग्यान॥१॥ वार्त्ता॥
छतीसये प्रकास के विषे कुसजू को संवाद है। यग्यो लछमण
जू सो जु पमै स्वरलछमणजू को मूरछा होयगी॥ रूपमाला छंद॥
जग्य मंडल मैं हुते रघुनाथजी तिह काल चरम अंगकुरंग
को सुभ स्वरनकी संग बाल आसपास रिषी सुसोभन सूरसे
वरसाथ आय मंगल लेषावरनी जुपकी समगाथ॥२॥ वार्त्ता॥
तिस समे श्री रामजू जग्य के मंडल मेंषे म्रिग को चरम अंग मै
धा अरसुभ स्वरणके संग श्री सीताजू थे अरु आसपास तिन
के रिषीस्वर सोभत है अरु सूरमे ते भाई इनो के सहित है तव
मंगल का आगे हूपे जो लोक आप है तिनो ने जुपकी सम
कथा वरनी है॥ मंगल दोपक छंद॥ वालमीक थल वाजन
यो जू विप्रवालक न जेर लयो जू एक वाच पट छोटकवांध्यो॥
दौर दीह पनसायक साध्यो॥३॥ वार्त्ता॥ हे नाथ वालमीक
के अस्थान मैं घोडा गया था तहा व्राह्मण के वालकोने जो भा
ली आया था एकने पटा वांच कर के घोडा वांप ली आ अरु दौर
करके दीरघ धनुष वानसंधान्यो॥ भांत भांत वहु सैन संघारको
आय हाथ जनु रसमुपास्यो अस्त्र सस्त्र तु अवं पजु पास्यो॥
षंडषंड कर ता कहु डास्यो॥४॥ वार्त्ता॥ तिनो ने भांत भांत की
वहुत सैना संघारी सो वालक परमेस्वर ने मानो आपहाथसे
वनायो औसे सुंदर है सो तुमारे भाई ने सस्त्र अस्त्र धारन की
ए तिनको तानें षंडषंड कर डास्यो॥ ॥रेष वेष वहि वानलयो जू॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

232A

इंद्रजीतलगआपदयेजू कालरूपतुरमांफहस्योजू वीरमू रछितभूमपस्योजू ॥५॥ वार्ता ॥ फेरकोपके रूपसौसतुघनजू नेव ह कालली आ इंद्रके जीतनवारे जो लवनासुर ताके वासते जो आवनेही याया सो कालरूपजवही ये मे मान्यानव वहि सूरवीर मूरछितहूके भूमिपर पस्यो ॥ तोमर ॥ छंद ॥ वहि वीरलेअर वाज जवही चल्योदलसाज तवओरवालआन दलरोकियो तजकान ॥६॥ वार्ता ॥ तिससूरवीरको लैके अरजो हैं कोलैके प जवदलको साजके सत्रुघनजू चले तव एकओरवालकने रो केसकातजके ॥ ॥ तिहिमारियो तुव वंधु सवहूगयो तव अंय वरवाज लेवर वीर रनमेरह्यो रिपु धीर ॥७॥ वार्ता ॥ तिसवाल कने तुमरो भाईमास्यो तव हम सम अंप हैगये तव घोडे कोले करको सोवालक रणही मैं ठाडो रह्यो ॥ दोहरा ॥ वहु वल विक्र मसील गुन रूपतुमारे राम कालपछ परवाल हूँ जीते सवसंग्रा

वार्ता॥ म ॥८॥ तिनो मैवहूत वल अरपराक्रम अरसीलते गुन अररूप सो सवतुमारे सम हे ओरैसे काकपछ क्या पहियो के धारनवाले वालहै तिनोने समजुध मे जीते ॥ श्रीराम ॥ चोपई ॥ गुनगा नप्रतिवालकरिपुकुलघालके वालकतेरन रंता दसरथन्टि पसुतमेरो सोदरलवनासुरको हंता कोऊ है मुनसुतकाकप छ गुनसुनियत हैं जिनमारे जगतजालके करमकालके कुटल भयानकमारे ॥९॥ वार्ता ॥ तवश्रीरामजू कहिनलागे वहिवा लकगुणोके सवूहनको प्रतापालकहे समगुन तिनमेहे अर सत्रूनके कुलके नासकरनवारे हे जुधमे रवलवारे हे कौजि नोने राजादसरथको पुत्र अरमेरो भाई तेवललवनासुरके मार नवारो सो कोईकु जो मुनके हैवा वहै पहियोके धारनवारे ति नोने सुनाहे सो मरे हैं सो देषो जगतके सवूहके इसकालके वडे कुटल भयानक करमहै ॥ ॥ लछमनसुमलछन रघुकु ररथनलेहु वाज करसोय मु ति तिसुजनुमारो वंधु उधारे को

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पनकरहमवोध सहितदललख्यणादैपरदक्षनचलेपरमरण
धीर देषेमुनिबालकसोदरउज्योकरुनाम्रधिभुतवीर॥१०॥
वार्ता॥ताते हे सुभलनवारे श्रीलक्ष्मन रघुकुलरक्षाकरन
वारे तुमजाकेहो हैकी षवरलेवो तिनमुनियेवालककौको
मारनामतभाईकोउपाविउो क्रोधकौनहीकरनाविचारके
तवसहितदलकेलक्ष्मनजूपरदक्षनादेकरके जो परमजुध
मे धीरजवानहै सोचलेतहांमुनीसुरकेवालकअरभाईदेष
तवकरुणातेअवमुनरसउपज्यो॥कुसभाई ईद्रवज्रा॥लक्ष्मन
कोदलदीरवदेष्यो कालहूतेअतिभीमविसेष्यो दूमेकहोसु
कहादलुकीजे उोटगहाकेयोटकदीजे॥११॥वार्ता॥तिनो
नेलक्ष्मनजूकोवडोदलुदेष्यो जोकालतेभीअत्यंतभया
नकहै तवकुसजूनेकह्योहेलव कहो दोनोमेकहाकरीये
याते किसीअस्थानकीउोटपकरो याजोदादेदेवो॥लव॥
वूफतहोतोपहे प्रभुकीजे मोअसदेवरअसचनदीजे लक्ष्म
मनकोदलुसिंधुनिहारो ताकहिकाणअगसननिहारो॥१२॥
वार्ता॥जोमोकोपूछतेहोतोहेप्रभुअसेसकरीये मोरेप्राणदेई
ये परज्योहानादेइये अरलक्ष्मणजूकोदलुमैसमुद्रसमदेषत
होताकोतुमारोमाणअगमनमोहै॥ ॥कौनयहैयेटहैअपरि
जोरे नाहिनेहाथसरासनमेरे नैकुजहीदुचितेमनुकीजो सू
रवडोईसुधीपतुदीजो॥१३॥वार्ता॥कौनहै यहीमरपकयही
वारताहममेयटहै जोहाथमेपनुषवाननहीहै तवतिनोनेर
तीकुदुचितचितकीयो तवसूरजनेवडोतरकसतेपनुषदीयो
लेपनुवाननवलीतवध्यो पलवज्योदलुमारउडायो योदोऊ
सोदरसूरसिंधारे औचनपावकयोनविहारे॥१४॥वार्ता॥त
वपनुषवानकोलेकेकैसीदोस्यो पत्रनकेसमदलमारकेउडाय
दीयो असेसदोऊभाईयानेसूरमासिंघारेजैसेवनमेअगनते
पोनविहारकरे॥ ॥भागतहे भटयोतवआये रामकेनामते

233A

योंअद्रि मारे जूथपजूथ के मार भगाये वानवहेनु मेघउडाये ॥१५॥
वार्ता ॥ तब लछवन जु के आगे सूरमा जैसे भागत हैं जैसे सुग्रीव महाराज
के नाम ते पाप भागे सैना अरु सेनानी जैसे मार के भगाये हैं मानो
बडे पवन से मेघ उडाय दीये हैं ॥ विजय छंद ॥ आनि रो समर से कुस ५२
के सिव श्रीरघुनायक सेवन रीत रचे तिहू वारन कोमई बहु वार
२५ न षगाहू ने तगने विंचे तहं कुंभ फटे गज मोती कटे तिच लेव हिसा
णतरो चरचे परिपूरन पूर यनारि नतेज नु पीकेक पूरन की विरचे
१६॥ वार्ता ॥ अनंतर समै मिलेहू ये कुसलछमण जू सो जु पकीरे
तमे रचे तिस समै देरन ही भई है वहू ने वारन क्या हाथी तरवार
न सो मारे तहं जो हाथि डो के मस्तक फटे है तिनो ते मोतीक टे है
ते रूप रमै वह के चलने हूये थे सीक छि मै मिलै है मानो पनारि डो
ने परपूरण प्रवाह पीक के अरुक पूरन की किरचै परत है ॥ नाराज
छंद ॥ भगी चपे चमू चमू पछोड छोड लछमण भगो रथी महारथी
थी गई दबिंद को गने लवे कुसेन रंनु से विलोकचे पुरा मको ऊ
छो रिसायके हठी वं धो सुलाज दाम को ॥ १७ ॥ वार्ता ॥ तब चपे
का दलके सेना अरु सेनानी लछमन जू को छोड छोड कर के भा
गने भये अरु रथी ने महारथी भी भागे हाथीन के संबूहन को तो
को न गने तब लव कुस जू को निरंकुस लछमन जू देष कर तब
लाज रूपी रसी सो बांधे हुये हठवारो कोप है के उठ्यो ॥ कुस ॥
हनो मकरा छु न हो ई दुर्जित विलोक तु मे रण हो न मीत सदा
तुम लछमण उत्तम गाथ करो जिन आपनी मात अनाथ ॥ १८ ॥
वार्ता ॥ तब मुकवोले मै नातो मकरा छु हो अरु नाम मेघना द हो तु
मको देष के रण मे डरत नही हो सदा ते हे लछमन तु मारी उत्तम क
था है सो आज आपनी माता को अनाथ मत करो ॥ लछमण ॥
कहो कुस जो कहि आवत वान विलोक न हे उपजी ति हि गात ॥
इते परकाल व हिक मजान जी पेक रुना उपजे अति प्रात ॥ १९ ॥
वार्ता ॥ हे कुस जो तुम को कहि नी आवत है सो बात कहो क्यो मे

तुमारे सरीर में जनेऊ को देषत हैं उस तें उपरंत वाल अ
वस्था जान करके हीये में अत्यंत दया उपजत है॥ ॥वि
लोचन लोचत हैं अति तो हि तजो हठ आन भजो किन मो
हि हीये उपजाऊं न मात हिदा हू छमो अपराध अजो
घर जाहु॥२०॥वार्ता॥तुम को अत्यंत मरने उचाहत है
तुम हठ को त्यागे मो को क्यों नहीं भजते हो माता के हीये
में दाह ना उपजावो हमारो अपराध छमो अव तांई भी
घर जावो॥हरनीछंद॥हौं न तिहौं कवहूं नहि ताहि जु द्यप
वानन वेध हि मोहि वालक विप्र कहा हनीये लोक अलोक
न मे गननीये॥२१॥वार्ता॥मे तुम को कवी भी नहीं मारो
गो जद्यप तुम मा को वानन सौ वेधो क्यों वालक ते ब्राह्म
ण इन को के हा मारीये क्यों ता को जगत में अपजसी यो मे
गनीता है॥ ॥लव॥लछमण हाथ हथ्यार धरे जग
वियाम भु को न करो हो हय को कवहूं न तज्यो पट लिषओ
सोई देष लजो॥२२॥वार्ता॥हे लछमन तुम हाथ में हथ्यार
न को धारन करो अपने स्वामी के जगप वियाम न करो अरमे
अपने घोरे को कदी भी नहीं त्यागेगो जो पटे पर लिषओ है ता
ल को देष के र्जमान होवे॥दोधक छंद॥वानु पकत व लछमन
के उरो परम चरम वहू धाति न षंड्यो ताहि हीनकु सचित
हि मोहे धूम हीन जनु पावक सो है॥२३॥वार्ता॥तव लछ
मन जू ने वानक्षे उरो में जो अरु अरत्ताल वहुत प्रकार सो ति
नो ने षंडन की ऊ तिनो ने रहित कुसज चित को मोहत है मा
नो धूमते हीन पावक सो भत है॥ ॥रोष वेस कुस वान चलायो
पौन चक्र जिम चित भ्रमायो मो हि मोहि रथ ऊपर सोये ताहि दे
ष जह जंगम रोये॥२४॥वार्ता॥कोप के रूप हू के कुस जू ने वा
न चलायो पवन के चक्र के समान चित को भ्रमायो तव लछ
मन जू मूरछा होय होय करके रथ पै सोय गए तिन को देष के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

234A

आहतेजंगमरोवतेभये॥नाराजछंद॥विराम्रुरामजानके
भरथसोकयाकहै विचारचित्तमांफवीरवीरकेकहारहे स
द्रोषलछमणेत्रिलोकतोविलुपनहोय सदेवदेवताञसेक
होतिवालहीनहोय॥२५॥वार्ता॥रामजूनेहेरभईजानके
भरथजसेकहिनलागे विचारेचित्तमैहूवीरवहिमाई क
हारहू सहितद्रोषकेलछमनजूकोदेषकेतोतीनोलोकना
सहोतहै ताकसअरदेवतासभमैमानहोनहै तिनआगेते
दीनहालकहूकहाहै॥श्रीराम॥दूतप्रति॥रूपमालाछंद॥
जाऊसत्वरलछमनहैजहांइहकाल जायकेयहिवातवर
यो नोहूरषोमुनिवाल होसमरथसनाथवेअसमरथओर
अनाथ देषवेकहिलायसोमुनपुत्रेडतमगाथ॥२६॥वार्ता॥
हेदूतजहांलछमनजूहैतहांसताबीजावो जायकेयहिबा
तकहिनोमुनीस्वरोकेवालकोकीरछाकरनो तुमआपस
मरथहो औरसनाथहो औरवहिसमरथहैतेअनाथहै जि
नकीऊतमकथाहै तिनमुनकेपुत्रनकोहमारेदेषवेको
ल्याईये॥नाराज॥अंगुलआयआयेतवहीवहु वारपुकारत
आरतरवहु वेदहुभांतनसैनिसंघारहि लछमनतोउनको
वहिमारहि॥२७॥वार्ता॥तवहीभागेहूयेवहुतेलोगआयग
ये वारवारपुकारतेहूये पीरावानकीरछाकरो वहुतोंवहुत
प्रकारसोसेनाकोसंघारतेहै अरलछमनजूउनकोमारतेन
हीहै॥ ॥वालकजाननजेकेरुनाकर वेअतिढीठभयेद
लुसंचर क्योहुनभाजनगाजतहैरन वीरअनाथभयेविन
लछमन॥२८॥वार्ता॥तिनोनेमेवालकजानकेदयाकर
केत्यागे वेअत्यंतढीठभयेदलकोसिंघारकरतेहै किसी
तरांभीभाजतेनहीहै अररणमैगाजतेहै लछमनजूतेवि
नाहमभीअनाथभयेहै॥ ॥जानोनजीऊनकोमुनिवा
लकवेकोऊहैजगतीप्रतिपालकहैकोऊरावनकेकिसहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यक कैलवनासुरकेसुषदायक॥२९॥वार्ता॥तवतिनोनेक
ह्योहेनाथउनकोचितमैसुनकेबालकमनजानो वेकोऊप्रिथ
वीकेप्रतिपालककरनवारेहैं अथवाकोऊरावनकेसहाय
कहैं कैलवनासुरकेसुषदैनवारेहैं॥भरथ॥बालकरावनके
नसहायक तालवणासुरकेसुषदायक वेनिजपातकब्रिछ
नकेफल मोहितहेरघुवंसनकेवल॥३०॥वार्ता॥तवभरथजू
नेकह्यो वहिबालकनानेरावणकेसहायकहै तालवणासुर
केसुषदायकहैं वेअपनेपापरूपीब्रिछोकेफलहैं इसीतेरघु
वंसीउकेवलकोदूरकरतेहैं॥ ॥जीतहिकोरणमैसत्रुघनहि
कोकरिलछमणकेवलविघ्नहि लछमनसीयतजीजबते
बन लोकअलोकनपूररहेतनु॥३१॥वार्ता॥तहीतोकौनहै
जोरणमैसत्रुघनकोजीते अरकौनहैजोलछमनकेवलमैं
विघ्नकरे जबतेलछमनजूनेबनमैसीताजूतजेथे तबतेज
गतमैसरीरअपजसनसोपूरणहेरह्योथा॥ ॥छोड्योहीचा
हतसोतबतेतनु पायनमितुकरयोतनुपावन सत्रुघनज्योतन
सोदरलाजहि पूतभयेतजपापसमाजहि॥३२॥वार्ता॥सोतोत
बतेसरीरछोडेओहीतेचाहतेसे सोतिनोनेनमितपायकेसरी
रपवित्रकीयेहै अरसत्रुघननेभाईकोलाजनेसरीरत्याग्योहै
पापकेसमाजकोतजकेवहिभीपवित्रभये॥कुस॥पातककौ
नतजीतुमसीता पावनहोतसुनेजगगीता दोषबिहीनहिदो
षजलावहि सोप्रभुएफलकाहिनपावहि॥३३॥वार्ता॥तुमने
कौनपापतेसीतातजीथी जाकीकथासुननेजगतपवित्रहोत
हैं जोदोषरहितनकोदोषलगावतहैं सोप्रभुकौनाफलपावैं॥ ॥
हमहूतिहतीरथजायमरेंगे अवसंगतदोषअसेषहरेंगे वा
नररछसरिछसुमारे गरवबहेरघुवंसहिमारे तालगकैप
हिचानविचारी होप्रभुसंततगरवप्रहारी॥३४॥वार्ता॥हमभी
तिसीतीरथमैजायकेमरेंगे संगतकोसमदोषदूरकरेंगे अथ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

2354

वानरअरुरिछअररघुबीसीतेसमभारेगरवमैंवपगपसेकै
तुमनेतिनकेवासतेयहिवातविचारीहै कौतुमनिरंतरहूप्रभु
गरवकेदूरकरणवारेहो॥चंचरीकछंद॥कोपकेअतिभरथ
अंगदसंगसंगरकोचले जामवंतचलेविभीषनओरभूपभले
भले कोगनेचतुरंगसैननिरोदसीन्हिपतामरी जायकेअले
कियोरणमेगिरेगिरसेकरी॥२५॥वार्ता॥तवभरथजूकेसंगको
धकरकेअत्यंतअंगदजूचले अरजामवंतनेविभीषन अर
औरभलेभलेसूरमाचलतेभये कौनगनेतिसचारप्रकारकीसे
नाकोप्रिथवीआकासकोमधुराजियोकरके भरगयो जायकेम
रथजूनेदेषेरणमेजेगिरेहै परवतसमहाथी॥ इतिश्रीइंद्र
जितविरचतायांश्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामणि
मध श्रीरामचंद्रचंद्रकायांलदंतॣणसंग्राममोहनेनामषटत्रिंसतमः
प्रकासः॥२६॥दोहरा॥सैतीसयेप्रकासमैमोहनभरथवचित्र॥
सुग्रीवविभीषनकोकह्यो भंजनमानसचित्त॥१॥वार्ता॥सैती
समेप्रकासमैभरतजूकीमूरछाहोयगी सुग्रीवतेविभीषन
कोमानभंजन॥रूपमालाछंद॥भरथ॥जामवंतविलोकजेर
णभीमभूहनुवंत सोणकीसरताअनंतअनंतरूपदुरंत॥
जत्रतत्रध्वजापताकादीहदेहनभूप टूटटूटपरेमनोसुम
विछजालअनूप॥२॥वार्ता॥हेजामवंतहेहनूमानतुमदेषोये
रणकीजोभयानकप्रथवीहैताको अनंतदुसतररूपजाकोछे
सीरूपरकीदेषोअपारनदीहै अरजहांतहांवडेसरीरकेजो
हैराजातिनेधुजानेपताकाहै सोमानोतिसनदीमैटूटटूटके
व्रिछनकेसंवूहपरेहै॥पुंजकुंजरसुभ्रसंदनसोभिजेसुनसू
र ढोलठेलचलेगिरिसिनपेलसोणनपूर ग्राहतुंगतुरंगकछे
पचारचरमविसाल चक्रसेरथचक्रपैरनगीधग्रीधमराल॥३॥
वार्ता॥सोहरथमैजोथेहाथिडोकेसंवूहसोमतेहै सोमानो
रूपरकेप्रवाहमैपेलकेपरवतधकेलधकेलकेचलतेहै अरऊवे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जो छोटे हैं सोई याह हैं वडी जो हाल हैं सोई कछू हैं रथा के जोप
हीये सोई चूम न वानी है ता मे चील अर हं सतरते हैं॥४॥ केकरे
करवा हु मीन गईंद सुंड भुजंग चीर चोर सुदेस केस सिवाल मा
न सुरंग वालका वहु भांत है मणिमाल जाल प्रकास पैर पारम
पेलि द्वै मुनि वाल के सव दास॥४॥ वार्ता॥ हाथ सोई केकरे क्या के
कहां है भुजौ मीन है हाथी के सुंड सोई परप है फेर वस्त्र अर चीर
ते सुंदर केस सोई लाल रंग के सिवाल क्या नदी के जाल है मणि
ओं की मालान के जो है संबूह सोई रेता है तिस नदी को तर के हू
मुनीसुर के वालक पार भये हैं॥ दोहरा॥ नाम वरन लघु वेस लघु
कहि त रीफ हनुवंत इतो वडो विक्रम कीयो जीते जुध अनंत नाथ॥
वार्ता॥ हनूमान तव रीफ के कहिते भये देषो इन के नाम के अ
षर भी छोटे हैं अरु वेष भी छोटे हैं इतना वडा पराक्रम कीया है
जो अनेक जुध मैं जीते हैं॥ भरथ॥ दोधक छंद॥ हनुवंत तुं रत
नदी अव नाषो रघुनाथ सहोदर जो अभिलाषो तव जो तु सिंध
हि नाष गये हे वन नाष हुत्यौ कत भीत भये हौ॥ ८॥ वार्ता॥ तव
भरत जू ने कह्यो है हनूमान इस हु सतर नदी को तुम तिरो रघुना
थ जू के भाई अन को देषो तव जैसे तुम समुद्र को लंघ गये से अब
तैसे ही लंघो॥ दोहरा॥ हनुवंत॥ सीता पद सनमुष हुते गये सिंधु
के पार विमुष भये क्यो जात तर भरथ सुनो इह वार॥ दोधक छंद॥
धनुवान धरे मुनि वालक आये जनु मनमथ के जुग रूप सुहाये॥
करवे कहु सूरन को मदु हीनो रघुनायक मानहु द्वैव पु कीने॥
८॥ वार्ता॥ तव तो हमारे सनमुष सीता जू के चरण थे तां ते समुद्र के
पार गये थे सो चरण अव वेमुष भये हैं तौ कहो हे भरत जू इस
समे कैसे तरयो जाय॥ तव ही धनुषवान को धारे हुए मुनीसर के
वालक आये मानो काम के सुंदर दोऊ रूप हैं सूरमया के मद को
हीन करने को मानो श्री रामजू ने द्वै सरीर कीये हैं॥ भरथ॥ मुनि
वालक है तुम जय करावो॥ कियो वाका जिन वांपन पांवो अप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

236A

रा पकरयो अवधाम्रिव दीजे वरवारनजोजीयरोसन कीजे
॥वार्ता॥ तुम मुनीसुर के बालक हो करके जगत को करता के
देव हू यो है के वंधन को दोरत हो हमारे मन अवराप कमा करो
अरु अभीर बाद देवो सो हमको कस्याण है वो चित्त मै कोप मत क
रो॥ दोहरा॥ वाप्यो पदजुगीसयहि अवनकाज प्रकास रे
सक स्यो वितु काज तुम हम विप्रन के दास॥१०॥ वार्ता॥ यहि जो
मी सपैया को पदा वांध्यो है सो छत्री ऊं के वासते है अरु तुमते
विना प्रयोजन ही रोसकी या है क्यो हम तो ब्राह्मणोके सेवक
है॥ कुस॥ दोपक॥ बालक सवद कहो तुम का सो देहन सो की
व प्रभा सो हेजह एकु कहे सक कोई जीव सवालक विपन होई
॥११॥ वार्ता॥ तव कुस जू वोले तुम बालक सवद किसनूं कहित है
देहसो कहिते हो के जीव को कहिते हो सो देहतो जह है सब कोऊ
कहित है अरु जीव जो है सो ना बालक होत है ना बूढो होत है
हि४ ॥ ॥ जीऊ मरे न जरे न छीजे ता को सोच कहा कहि कीजे जी
व हि विप्रन के त्रियजामा केवल ब्रह्म ही ऐम हि जानो॥१२॥
वार्ता॥ जीव ना मरत है ना जरत है ना नास होत है ता को क
हा सोच करीता है सो जीव ना ब्राह्मण है ना छत्री है सो केवल
ब्रह्म है ही ऐसे मानो॥ ॥ केतुम देह हहमे कछु मिथ्या केहम दे
हु तुमे यह मिथ्या चित्त पर सुविचार सु कीजे दोष कछू न ह
मे अब दीजे॥१३॥ वार्ता॥ केतुम हम को या वात की कछू सिक्षा
देवो के हम तुम को येह केकी मिथ्या है मैरो जो चित्त मे विचार प
रे सो कीजीये अव हम को वकू दोस न लाईये॥ ॥ विप्र बालक
न की सुन रघुपी कू पस्रुरसुत भो अव मानो विप्र पुत्र तुम सीस
भरो राषले हि अव ताहि पुकरो॥१४॥ वार्ता॥ ऐसी ब्राह्मणो
के बालकनकी वानी सुन के तव सुग्रीव जू को पछताव भये हे ब्राह्म
णके पुत्र अव तुम सीस को सभारो जो तुम को राषले वे ता को पु
रो॥ कुस॥ सुग्रीव हा तुम सो रन मांड्यो तो को अति का तुर जांने

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तैछांडो वालतुमैवहुनाचनचाये कहारनमंडनमोबहुश्रा
ए॥१५॥वार्त्ता॥हेसुग्रीवमैतुमसौकहतजुपकरौ तोकेग्रान्ये
नकापरजानकेछोडतहो वालीनेतुमकौतौवहुतेनाचनचाये
है तुममेसोरणकहाकरणश्रापहो॥ ॥कलहीनसुता
कौवधचलायो ग्रतवानभ्रम्योवहुधासुरफायो तवद्यौ
रकेवाणविभीषणलीनो लवताहिविलोकतहीहसदीनो
॥१६॥वार्त्ता॥तवफलनेरहितताकोवानवलाया ताकौग्र
त्यंतपवनमैसुग्रीवभ्रम्यो फेरसूरछामये तवविभीष
णनेदौरकेवाणलीश्रा लवजूनेताकोदेषकेहसदीश्रा॥
लव॥श्राऊविभीषणतेंकुलदूषण एकतुहीकुलकोकि
लभूषन जूफजुरेजुभलेभयजीकै सत्रुहिश्रानिमिले
तुमनीके॥१७॥वार्त्ता॥देश्राऊहे विभीषनतेंकुलकोना
सकरनवारोहे श्ररश्रवएकतुहीकुलकोभूषनरहिगयो
हैजुधकेजुरेनेतुमतोचित्तकेभलेभयमानहो कौस
त्रुकोजोतुमभलीतरैश्रानमिलेथे॥ ॥देववधूजवहीहर
ल्यायो त्योतवहीतजताहिनश्रायो जोश्रपनेजीयकेडर
श्राये कुडसवेकुलछिड्रवताये॥१८॥वार्त्ता॥कौजोभगात
तेंश्रावतेतौजवरावणदेववधूकोहरकेल्यायाथा तवही
ताकेत्यागकेक्यानश्राये जोश्रपनेचित्तकेडरसोश्रापसेत
वहीहेनीचतुमनेकितकेछिद्रवताये॥दोहरा॥ जेठोभैया
ग्रनपदराजपितासमान ताकीत्रियतैंलैकरीपतनीमातसमा
न॥१९॥वार्त्ता॥जेठोभाईग्रनकेदैनवारोराजापकपिताके
समानहोतेहैं ताकीइस्त्रीलैकेतेंश्रपनीइस्त्रीकरीहै जोमाता
केसमानथी॥ ॥कोजानैकैईवारतैंकहीनहै हैमाय सो
ईतैंपतनीकरीसुनपापनिकेराय॥२०॥वार्त्ता॥कौनजानसकहैता
काकेइककारतैंमाताताकहीहोयगी सोईतैंइस्त्रीकरलई
हैपापीओकेराजासुनतूं॥दोधकछंद॥सगरेजगमांकहसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

237A ऊतहो रघुवंसहि पापनसाउतहो यकतो कहुतं आजुहू जुजी
ये वलजाय हलाहल क्योंनपीये ॥२२॥ वार्ता ॥ तुम सम जगत मै
हास को पावत हो रघुवंस को सीतु महीनासकरवावति हो पि
कार है तुम को जो अजों तांई जीवते हो हेदु हतुम जाय के जहि
रपीपके क्योंनहीं मरते हो ॥ ॥कछु है अव तो कहुं लजहि
ये कहिके न विचारहि प्यारलोए अवजाप करीष की आग
जरो गलवाय के सागर बूडमरो ॥२२॥ वार्ता ॥ जो कछु तुम
को हीये मै अव लाजहे तो कहो किस विचारसे हाथ मै सस्त्रय
करे हो अव जाय के या तो करीह की आगन मै जरजावो कै गलके
वांपके समुद्र मे डूव मरो ॥ ॥कहा कहो हो मरयसो जानत है
सवकोय तो मे वो पीसेग है क्यों न पराजय होय ॥२३॥ वार्ता ॥
अरमै मरयसो कहा कहो सभ को ऊ जानत है जाने ते रजै सेया
पीअ जाका सेयही को या तो क्यों ना हार होवे ॥ विजयछंद ॥ हास
नहीं कुसमार विभीषन प्रानन मै सरगे जनासूरा अमगिस्यो
ऊठ वैठे नहीं उर मै अन रोसके मार मरूरा सो हनदेतनि को कि
रवे विच छांडत लोहू के लोल दरूरा षायन मो लत सून के सूमक
रेजनु कांसी कपूर करूरा ॥२४॥ वार्ता ॥ तव हस न हीं मै कुसज
ने वभीषन के मुष मै वान मार्या गरव के दूर करन वस्ता तव प्रिय
वी मैं गिरपर्यो फेर उठके वैठ्यो हिदे मे कोप के मरोहे आ को मा
रकरके ताके मुष मै देतो कौ किर वैसो भत है तिनो के वीच लेहू चे
वल दरारे सैं छोडत है सो मानो रस्त्री के काम वासते पानन को षा
यकर के कामी कपूर की कुरली खा करत है ॥ दोहरा ॥ वहुत जु
ध भयो भरथ सो देव अदेव समान मोहिम हार षपर गिरे मा
रे मोहन वान ॥२५॥ वार्ता ॥ फेर वहुत जुध भरथ जू सो भयो देव
ता अर अदेवता दूनो के समान फेर मोहन वान के मारे ते मूरछा
पाय के रथ मै गिर पवरै ॥ इति श्री ई दु जित विरचतायां श्री मत स
कल लोक लोचन चकोर चिंतामणि श्री राम चंद्र चंद्रिकायां भ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रथसंमोहनंनामसपतिविंसतिमः प्रकास॥२७॥दोहरा॥अठ
तीसयेप्रकासमैआगमश्रीरघुराज वानभंग अंगदविजैल
वकुससोंमससमाज॥१॥वार्ता॥अठतीसयेप्रकासमेश्रीराम
जूकोआवन अरअंगदकोगरवभंग लवकुसकीजै॥दोहरा॥
भरथहिभयविलेपकछुआयगारघुनाथ देष्योवहिसंग्राम
थलुजूरूपस्योसवसाथ॥२॥वार्ता॥जवभरथजूकोकछूक
विलंवभयोतवश्रीरामजूआयगये॥वहिजुधकोअस्थान
देष्यो॥दोधकछंद॥रघुनाथहिआवतआयगये रनमेमुन
वालकरूपरये गुनरूपसुसीलनसोंअपने प्रतिविंवयथा
सुभदरपनमे॥३॥वार्ता॥श्रीरामजूआवतेहूयेआयगयेज
हांरणमेमुनीयोकेवालकरूपमेमिलेहूयेहैं गुनरूपअरसु
सीलइनसोंअपनेहीदरपनमेमानोप्रतिविंवदेषेहै॥श्रीराम
उपेंद्रवज्राछंद॥सीतासमानमुषचंद्रविलोकराम पूछेक
हांवसतहौतुमकौननाम॥४॥वार्ता॥सीताजूकेसमानमुष
चंद्रकोश्रीरामजूदेषकरकेतवपूछतेभयेतुमकहांवसते
होअरकहातुमारेनामहै॥ ॥मातापिताकवनकवनेक
रमकीन विद्याविनोदसिषयकहिकौनअस्त्रदीन॥५॥
न वार्ता॥कौनसेतुमारेमातापिताहै अरकिसनेतुमारेकरम
कीयेहै आयसविद्याकोआनंदकिसनेसीषेहो किसनेअ
स्त्रदीयेहै॥कुस॥चंचरीकछंद॥राज्यराजकहातुमैममवं
ससोंअवकास वूफलीजुदेवलोगनिजीतसवसंग्राम॥
॥६॥वार्ता॥हेराजनकेराजातुमकोअवमेरेवंससेकहा
कामहै जोहारतेतुमदेवलोकमैजाकेपूछलीजीये॥
नहीतोजुधकेजीतो॥ ॥होनजुधकरोकहेविसुविप्रवि
लोक वेगवीरकथाकहोतुमआपनीरिसरोक॥७॥वार्ता॥
मैतुमारेकहेविनाजुधकोनहीकरोगो क्योब्राह्मणकेवष
कोदेषकरके तातेहेवीरतुमआपनीरिसकोरोककरके

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

23अ

कह्याकहो ॥ कुस ॥ केन्यकामिथलेसकी हम पुत्रजायेदो
य वालमीक अ्सेषकरमकरे क्रिपा रस भोय अस्त्र सस्त्र सवे
द पेसव वेद भेद पढाय वानको नहि नाऊ जानत आज तौ रघु
राय ॥ ८ ॥ वार्ता ॥ तव कुसजू ने कह्यो राजा जनककी जो पुत्री
सीताजू तिसने हम द्वै पुत्र जाये है अर वालमीकजू ने हमारे
क्रिपा के रसमे मिलके सभ करम कीये है अर सस्त्र अस्त्र स
भही ये है वेदनके भेदको पढाय करके अर पिता के नामको
आज तोई हे श्रीरामजू हम जानत नही है ॥ दोपकछंद ॥ जा
नकी के मुष अक्षर आने रामतिही अपने सुत जाने विक्रम
साहस सील विचारे जु प्रत्रिया महि आयु पधारे ॥ ९ ॥ वार्ता ॥
जव सीताजू के तिनने मुषसे अक्षर लाये तव ही श्रीरामजू
ने अपने पुत्र जाने फेर वल अर धीरज ने सुसील तिनके वि
चारे तव त्रिया जु पजानके प्रिथवी मे सम्र गिरदीये ॥ श्रीराम
अंगदजी नइने गहिल्यावो के अपने वल मार भगावो वेगवु
फावो चित्त चिताको आज तिलोदक देहु पिताको ॥ १० ॥
वार्ता ॥ हे अंगद तुम जीतके इनको पकर ल्यावो के अपने वल
सो मारके भगाय देवो अव चित्त की चिता को सीघ्र वुफावो अ
पने पिता को आज तिलांजुली देवो ॥ अंगदतोअंगअंगानफू
ले पौन के पुत्र कह्यो अति भले जाय जुरे लव सो तफलै के वा
तकही सत षंड तुके के ॥ ११ ॥ वार्ता ॥ यहि सुनके तो अंगद अं
ग अंगमे फूल गये तव हनूमानजू ने कह्यो तुम अत्यंत भल ते
हो लवजू सो व्रिक्ष लेके अंगदजू जाय के जुरे लवजू ने ताके
१०० सो टुक है करके वारता कही अंगदजे तुम मे वल है तो
तो वहि सूरज को सुनको तो देषत ही जननी जु तुमारी सो
वनकासंगाज्यो निज नारी ॥ १२ ॥ वार्ता ॥ हे अंगदजे कर तुमा
रमे वल है तो तो वहि सुग्रीव कौ न क्या जो तुमारी माता सौं दे
षतहू ये सोवत है जैसे अपनी इस्त्री से को ऊसो वै ॥ ॥ जादिन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामचं
सटी
२२९

तेजुवराजकह्यायो विक्रमवुधविवेकवहायो जीवतपै कि मरे
पहजायहो क्यौंपितुकोमतलोदुकहयहो॥१३॥वार्ता॥जि
सदिनतेतुमवजीरकहायहो तिसीदिनतेप्राक्रमस्त्ररवुधने
ग्यानतुमनेवहायदियाहे अवतुमकहोकोनसेपिताकोतिलां
जलीदेवोगे जीवतेहूपेसुग्रीवपैजायकेताकोदेवोगे कैमरेहू
पवालीकोदेवोगे॥ ॥अंगदहाथगहेतरुजोई जानतनहीं
तिलसोकहिसोई परवतपुजजिनेउनमेले फूलकेतूलति
वाननकेले वाननभेटगईसवदेई वानरतेवरहीभयेसो
ही भूतलतेसरमारउडायो षेलकीगेंदकसोंपहुचायो॥१४॥
वार्ता॥तवअंगदजिसव्रिछकोहाथमेंपकरतहैसोतहांही
तिलसमकस्याजातहे परवतोकेसमूहताकेचलायेहै सो
फूलनकेसमानचाएलेपैरोके फेरवाणनसोअंगदकीसभ
देहीमिलगई मानोवानरतेजोरावरिमैंसहीहूगयेहे से
हीगोलकेडोवारेहोतहे फेरव्रिषवीलेवानमारकेआ
कासकोउडायदीये तवतिनेभेषेलनकीगुहोकेसमान
पदपाआ॥ ॥सोमतहैअपरूरथकैसे होतवटानटको
तमजैसे जानकहूनरतेउतपावे गोदलुचित्रदसेदिसपा
वे॥१५॥वार्ता॥हेठाकरकूपरकोआवतजानेहूयेऐसे
सोमतहे जैसेआकासमेनटकोवटाहोवे इधरतेउरप
केहूंजानानहींपावतहे वलसमजातरह्यो चित्रदसोदि
सामेदोरतहै॥ ॥वोलबढ्योजुभयेसरभंगी ह्वैगयोअं
गदिसंगकोसंगी हारघुनाइकहोजनुतेरो रावहुगरवग
योसवमेरो दीनसुनीजनकीजववानी जीककूनालववा
नतिआनी काडदयोगिरमूमपरसोई विमलह्वैगयोमा
नोमसोई॥१६॥वार्ता॥वोलघटगयोसुरभंगह्वैगयो अं
गदराजाविसंककोसंगीह्वैगयो क्यातासमलटकते
भयो तवकह्योहेरामजूमेतुमारोदासहो मेरोगरवजा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative